माहुर

केदार नाथ चौधरी

इंडिका इन्फोमीडिया
tudiqjh] ubZ fnYyhµ110 058

प्रस्तुत पोथीक समस्त चरित्र आ घटना काल्पनिक अछि। एकरा कोनो व्यक्ति एवं घटना सँ कोनो सम्बन्ध नहि छैक।

Kedar Nath Choudhary
Hidden Cottage, Bengali Tola
LaheriaSarai (Bihar) 846001
Mob : 93349 30715

ISBN : 81-89450-13-1

MAHUR
A Maithili Novel
by Kedar Nath Choudhary

प्रकाशक
इंडिका इन्फोमीडिया
जनकपुरी, नई दिल्ली–58
फोनः 93509 51555, 93127 93820

संस्करण, 2008

मूल्य
125 टका

आवरण
अवधेश, अमरनाथ झा

मुद्रक
छाबड़ा फाइन आर्ट प्रेस
फतेह नगर, नई दिल्ली–110 016

प्राक्कथन

हमर पहिल कृति थीक '**चमेलीरानी**' उपन्यास। एहि उपन्यास पर कतिपय प्रबुद्धवर्गक पाठकीय प्रतिक्रिया मे प्रशंसाक संगहि एकर आगूक कड़ी के आवश्यक कहल गेल। अही क्रम मे 'विद्यापति टाइम्स' पाक्षिक (16-31 जनवरी 2006, दरभंगा सँ प्रकाशित) मे डा. धीरेन्द्रनाथ मिश्र एकर समीक्षा करैत लिखलनि अछि : 'उपन्यासक रोचकताक कारणे जेना हास्य-सम्राट हरिमोहन बाबू कैँ 'कन्यादान'क पश्चात् 'द्विरागमन' लिखए पड़लनि तहिना 'चमेलीरानी'क दोसर भाग उपन्यासकार कैँ लिखए पड़तनि, किंवा संभव अछि जे ओकर चिंतन मे लागल होथि आ ओकर प्लॉट तैयार क' चुकल होथि, तखने ई उपन्यास पूर्ण लगतैक।'

पाठकीय आकांक्षा आ' डा. मिश्रक विचार कैँ सम्मान दैत 'चमेलीरानी'क आगूक कड़ी '**माहुर**' ल' अपने लोकनिक समक्ष प्रस्तुत छी। 'माहुर' कतेक बिखाह भेल से जिज्ञासा स्वभाविके।

प्रारंभे सँ डा. उमाकान्तजीक सहयोग भेटैत रहल। 'माहुर' लिख' लेल हुनक सतत प्रोत्साहन, उत्साह आ सहयोगक बलें अल्पावधि मे तेसर उपन्यास आबि सकल अछि। डा. झा कैँ हम हृदय सँ धन्यवाद दैत छियनि।

– केदार नाथ चौधरी

..1..

—"आह! भैया आबि गेला। हाथ मे पोटरी छनि। अबस्से ओहि मे 'मीट', अरे! नहि माता दुर्गाक परसाद हेतनि!"

रंजना बाजलि छलीह। ओ दौड़ैत आंगन सँ बाहर एलीह। हुनका भाइजीक हाथ मे ठीके पोटरी छलनि जाहि मे 'मीट' रहैक। भाइजी अपन हाथक पोटरी रंजनाक हाथ मे देब' चाहलनि। फेर, ने जानि हुनका की मोन पड़लनि जे अपन पोटरी बला हाथ कैँ पाछाँ घीचि लेलनि। ओ बूत बनि ठार भ' गेला। भाइजीक ठोर मे कंपन होब' लगलनि, आँखि सँ ढबढब नोर बह' लगलनि आ हुनक समग्र शरीर थर-थर काँपए लगलनि।

भाइजी अर्थात आकाश सँ हुनक एकमात्र छोट बहिन रंजना हुनका सँ बारह बर्खक छोट छलथिन जे आब पन्द्रहम मे पयर रखने छलीह। ओ सलवार-कुर्ती पहिरने छलीह। हाथ मे चूड़ीक स्थान पर घड़ी बान्हल छलनि। पुछू किएक? रंजना विधवा छलीह।

पछिला आषाढ़ मे रंजनाक विवाह कमीशन प्राप्त सेकेण्ड लेफ्टिनेन्ट भास्कर चौधरी सँ भेल रहनि। एक महिनाक अवकाश समाप्त भेला पर भास्कर चौधरी अपन ड्यूटी पर कश्मीर पहुँचल छला। ओतहि आतंकवादीक संग मुठभेर मे शहीद भ' गेलाह। रंजना विधवा भ' गेलीह।

आकाश लगक शहर दरिभंगाक एक बैंक मे कार्यरत रहथि। ओ गामहि सँ स्कूटर पर बैंक जाथि आ आबथि। अष्टमी रहैक आ बैंक दशहराक छुट्टी मे बन्द छलै। गामेक दुर्गा स्थान मे बलिप्रदान कएल छागरक भड़ाक माँउस पुजेगरीक आदेश सँ बिकाइत छलै। ओही ठाम सँ आकाश एक किलो 'मीट' आ की परसाद जे कहियौ कीनि क' अनने रहथि।

सम्प्रति जे दृश्य उपस्थित भेल छलै ओहि मे आकाश हाथ मे मीटक पोटरी टंगने थरथराइत ठार रहथि। हुनका आँखि सँ दहो-बहो नोर बहि रहल छलनि। हुनक पत्नी, पांच बर्खक बेटी सुजाता, माता-पिता सभ कियो ढलानक एक कात

ठार डबडबाएल आँखिए देखैत चुपचाप आकाश दिस ताकि रहल छलथिन। रंजना ठीक आकाशक सामने छलीह। हुनक बाल सुलभ सदृश मुख-मंडल पर बड़ी टा प्रश्न चिन्ह बनि गेल छल। काजर पोतल आँखि मे रंजनाक समग्र भविष्य धह-धह धधकि रहल छल। तँ नोरक एकोटा बून्न देखाइ नहि पड़ि रहल छल। परिवारक क्रंदन बीच रंजना एक अजीबे दृष्टि सँ अपन भ्राता, आकाश कँ निहारि रहल छलीह।

बड़ी काल सँ अंटकल आकाशक कंठ सँ कुहरैत शब्द बाहर भेल—"हे भगवान! हम ई की कएल? कियक हम 'मीट' कीनल?" एतबा बाजि आकाश मीट'क पोटरी कँ नाला मे फेकि, दुनू हाथे माथ पकड़ि, नीचा जमीन पर बैसि हबोढेकार कान' लगलाह।

आब रंजना कँ छोड़ि परिवारक सामूहिक क्रंदन सँ स्थान पीड़ादायक बनि गेल। मात्र रंजना अविचल ठार रहलीह आ शून्य नजरि सँ सभ किछु देखैत रहलीह।

हम कोन तरहक खिस्सा सुनाब लगलहुँ। इहो कोनो खिस्सा भेलै? रंजनाक विवाह लड़ाइक सिपाही संग भेल छलनि। ताहू मे एहन सिपाही सँ जनिक नियुक्ति कश्मीर मे आतंकवादी सँ भिड़न्त मे भेल होअय। तखन त' प्राण जायब करीब-करीब निश्चिते छलै। तँ रंजना विधवा बनलीह। अहि मे अजगुत बला कोनो बात नहि भेलै। दुखक बात जँ रहै त' एतबेटा जे जाहि जाति मे रंजनाक जन्म भेल रहनि ओहि जाति मे पुनर्विवाहक नियम नहि रहैक। ओहि जातिमे आ सनातन सँ आयल परम्परा मे विधवाक निदान हेतु कोनो टा व्यवस्था नहि रहैक। रंजना विधवा भेलीह त' भेलीह। पूर्वजन्मक पाप ओ नहि भोगती त' के भोगत? तँ ई मात्र ओहने आ ओतबेटा बात भेल जेना मनता मानल कोनो पाठीक बलि पड़ल होअय। आब अहाँ कहबै जे ई कोन तरहक मिलान भैलै? नहि अरघै अछि, त' सुनू।

मनता मानल पाठी-छागरक बलि पड़े काल बलि देनिहार, कबुला केनिहार एवं बाँकी सभटा तमाशा देखनिहार एतबे ने सोचैत छथि यौ जे हरदि, मिरचाइ आ मसल्ला मे भूजल एकर माँउस मे कतेक सुआद हेतै? तहिना विधवा भेलि रंजना द' सभ सोच' लागल छथि जे ई आब सासुर त' जेतीह नहि, गामहि मे रहतीह। गाम मे सभहक टहल-टिकोरा करतीह, अदौरी-कुम्हरौरी खोंटतीह, अँगने मे भानस-भात करतीह, एकरा-ओकरा संग तीर्थाटन जेबा काल भनसिया बनि क' जेतीह आ छौंड़ा सँ लगाति बूढ़बा तकक करेजक तपन मेटौती। तँ बरसामबाली काकी कहने रहथिन यौ, भगवान सभहक सभटा इन्तजाम बैसले-बैसल 'क' दैत छथिन। दूर जो, मनसा सभहक लप-लप करैत जिह्वा आ आँखिक खोराकक पूर्ति सदिकाल सँ बाल-विधवे सँ पूर्ति होइत रहलै अछि। ई कोनो नुकायल गप्प छैक?

आब अहीं कहू जे मनता मानल पाठी आ विधवा भेलि रंजना मे की फर्क? कोनो तरहक शिकायत करब सेहो युक्ति संगत नहि होयत। तँ आब नीक होयत जे अहि खिस्सा कैँ अही ठाम विराम द' क' ओही गाम मे ओही दिन घटल दोसर घटनाक जानकारी प्राप्त करी।

गामक नाम भेल पानापुर। पानापुर मे सभ जाति, समुदाय एवं सम्प्रदायक लोकक निवास। गाम आर्थिक रूपे सम्पन्न। ओहि गाम मे छल एकटा दुर्गा मंदिर, जे दस-बीस कोस दूर तक प्रसिद्ध छल। पैघ पोखरिक पूबरिया भीड़ पर तीन-चारि बीघा मे पसरल मंदिर आ मंदिरक परिसर। मंदिर मे दुर्गाक भव्य प्रतिमा। तकरबाद मंडप, पुजारीजीक आवास आ सदिकाल खल-खल हँसैत, स्वच्छ, विशाल समतल भूमि। दशहराक समय मे अही स्थान पर मेला, नौटंकी, नाच-गान आदि आयोजित होइत छल।

दुर्गा मंदिरक पुजारी छलाह काली कान्त ओझा। दुब्बर-पातर, साँची धोती, खोंसल ढेका, छाती पर उगल पंक्तिबद्ध हड्डीक उपर दू भत्ता फहराइत जनउ, गौ-खूँर बरोबरि टीक, पयर मे खराम आ ललाट पर सेनुरक ठोप। पुजारीजी सज्जन आ मृदुभाषी छलाह। वैष्णव त'ओ छलाहे आ सप्ताह मे अधिक दिन उपासे मे रहैत छलाह। मुदा हुनक पत्नी अढ़ाइ मोनक पट्टा छलथिन। थुलथुल देह, खुजल कारी केश, नाक सँ मांग तक पतिव्रताक निशानी स्वरूप सेनुरक डरीर, पान-जर्दा दुआरे कारी भेल दाँत आ बीड़ी त' ओ नैहरे सँ पिबैत आयल रहथि। जँ जुमनि त' नित्य माँउस-माँछ चाहबे करी। दू अगहनी जोड़ दू रब्बी गुण दू बरोबरि मंदिरक बर्ख भरिक अन्न-टाकाक आमदनी पर हुनक पूर्ण एकाधिकार छलनि।

पुजारीजी पत्नीक सोझा मे आब' मे कँपैत छलाह। शारीरिक दुर्बलता अथवा धार्मिक अजीर्णता, कारण जे हौउ, पुजारी जी सदिकाल पत्नी सँ डेरायल रहैत छलाह। तखन पुजारीजी के संतान स्वरूप पुत्रक प्राप्ति भेलनि कोना? ई रहस्यक विषय अवस्से छल। मुदा अहि रहस्यक छेदन नीति शास्त्र ज्ञाता कइएक बेर क' चुकल छथि। हुनका लोकनिक अनुसारे पति-पत्नीक ग्रह-नक्षत्र कतबो उल्टा-पुल्टा किएक ने हौउक, प्रचुरता एवं परिपक्कता बेला मे कखनहुँ काल अर्द्ध-विराम पूर्ण विराम भैए जाइत छैक। पुजारीजीक पुत्रक नाम रहनि यदुनाथ ओझा। पैघ भेला पर यदुनाथक उपनयन भेलनि आ बर्ख भरिक भीतरे विवाह सेहो भ'गेलनि।

यदुनाथक पत्नी अर्थात पुजारीजीक पुतहु जखन दुरागमन भेला पर सासुर अयलीह त' हुनक अनुपम सौन्दर्यक दुआरे सम्पूर्ण पानापुर गाम महमही सँ गमकि उठल। यदुनाथ त' अपन बापक कार्बन कॉपी छलाह। मुदा हुनक पत्नी जनिक नाम छल कामिनी, तनिका जे देखलक सैह विभोर होइत बाजल छल—"माइ गे

माइ! एतेक रूप पुजारी जीक सन्दुक-पेटार मे झाँपल कोना रहतैक? कोनो अनहोनी ने भ' जाइक?"

अष्टमीक निस्तब्ध राति। पानापुर गामक सभटा मनुक्ख भरि दिन नाच तमासा देखलक, इच्छा भरि नशा केलक आ भरि पेट माँउस-भात खाए थाकि क' झुरझमान भ' सुति रहल। मुदा चोर-उचक्का, अत्याचारी एवं व्यभिचारी किस्मक लोक कँ राति मे निन्न होइते ने छैक। ओहन लोक रातिए मे अपन इच्छा-पूर्तिक जोगार करैत अछि। ओहने राक्षस प्रवृतिक श्रेणी मे छल बिदेसरा कुएक। गाम मे एकटा अस्पताल अवस्से छलै। मुदा डाक्टर महिना, दू महिना मे कहिओ काल अबैत छलाह। गामक स्वास्थ्य विभाग कुएकक जिम्मा छल। ओना सड़क-छाप बहुतो कुएक छल। मुदा बिदेसरा कुएक सभ सँ तेज-तर्रार मानल जाइत छल। ज्वर-धाह राति-विराति कखनो-ककरो भ' सकैत छलै। ताहि कालक भगवान छल बिदेसरा कुएक। ककरा मे एतेक साहस रहै जे बिदेसरा कुएक सँ तकरार करितय। नाड़ी देखै लेल अथवा सूइया भोंकै लेल बिदेसरा कुएक ककरहु आंगन मे कखनहुँ प्रवेश क' जाइत छल। ओकरा कोनो रोक-टोक नहि रहैक।

जहिया सँ यदुनाथ दुरागमन करा क' अयलाह आ सुन्दर कनिआँक कारणें गाम भरिक छौंड़ा सभहक बीच इर्खाक मूर्ति बनलाह तहिया सँ बिदेसरा कुएक हुनका मे अधिक काल सटले रहैत छल। चाह-नास्ताक संग चोटगर-मिठगर गप-सप कहि बिदेसरा कुएक यदुनाथक मोन कँ मोहैत रहल आ अन्ततः हुनकर अभिन्न मित्र बनि गेल। एहना मे जिगरी यार बिदेसरा कुएकक फर्माइस यदुनाथ पूर्ति कोना नहि करितथि? ओही अष्टमीक राति बुझू निशा पूजा निमित्ते, दुनू यार बैसल रहथि। स्थान छल यदुनाथक शयन-कक्ष। पुजारीजीक आवास मे पहिने छल कनेटा खुजल दरबज्जा। तकरबादक कोठली मे पुजारीजी पत्नीक संग रात्रि विश्राम करैत छलाह। तकर सटले भंडार आ भनसाघर। सभ सँ अन्त मे जे कोठली छल सैह भेल यदुनाथक शयन-कक्ष। दुरगमनिआँ पलंगक एक कात टेबुल आ कुर्सी। देवाल पर सिनेमाक अभिनेत्रीक नयनाभिराम फोटोक बीच भगवतीक फोटो। खिड़की-केबाड़ पर्दा सँ झाँपल।

दू गोट कुर्सी पर यदुनाथ आ बिदेसरा कुएक आमने-सामने बैसल छल। बीचक टेबुल पर एकटा फूलदार विदेशी शराबक खुजल बोतल, पानि सँ भरल जग आ दू गोट शीशाक गिलास राखल रहैक। ताही काल यदुनाथक कनिआँ कामिनी छिपली मे भुजल माँउस टेबुल पर रखलनि आ पतिक अगिला आदेशक प्रतीक्षा मे एक कात ठार भ' गेलीह। हुनक गोरकी बाँहि मे सटल करिका ब्लॉउज ककरो एक बेर आरो देखीक' लोभ मे पटकि सकैत छल। बिदेसरा कुएक अपन नजरिक नोक कँ

कामिनीक उठल ब्लॉउज मे भोंकैत बाजल–"यार, एतय सभ ठर्रा पिबैत अछि। मुदा अहाँ लेल हम दरिभंगा सँ सय टाका मे असली अस्सी प्रतिशत प्रूफ अल्कोहलबला 'जीन' मंगौलहुँ अछि। आब बिलम्ब नहि क' एकरा टेस्ट करियौ।"

दू टा गिलास मे शराब ढारल गेल, पानि मिलाओल गेल, गिलास टकराओल गेल आ तखन दुनू यार पिअब शुरू केलनि। माँउस निघंटि गेल। कोनो बात ने, कामिनी छिपली भरी भूजल माँउस फेर सँ अनलनि।

यदुनाथ पहिले पैग मे डोलि गेल छलाह। शराब पचेबाक ने हुनका काया रहनि आ ने प्राइटिस। दोसर पैग समाप्त करैत-करैत यदुनाथक आँखिक डिम्हा सँ टर्चक फोक्सिंग बाहर होब' लगलनि। तेसर पेगक आरम्भे मे कामिनी फेर सँ भूजल माँउस आन' चलि गेल रहथि। जाबे ओ घूमि क' एलीह ताबे हुनक नाथ पलंग पर चित बेहोश पड़ल रहथिन आ हुनकर थुथून सँ सौं-सौंक अबाज प्रसारित भ' रहल छल।

कामिनीक हाथ मे तेसर खेपबला भूजल माँउसक छिपली छलनि। ओ थकमकाइत ठार भ' गेलीह आ पलंग पर पड़ल अपन स्वामी कैँ टकटक देख' लगलीह। किछु समय लेल कामिनीक मस्तिष्कक सोचक यंत्र मे ब्रेक लागि गेलनि।

बेगूसराय सँ खगड़िया जेबाक 'हाइ वे'क दक्षिण गंगाक तटपर बसल छल पिहुआ नामक गाँव। ओही गामक मंदिरक पुजारीक कन्या छलीह कामिनी। गंगाजल सँ घोअल मंदिरक पवित्र परिसर मे कामिनीक जन्म आ पालन-पोषण भेल रहनि। सासु-ससुरक सेवा एवं पतिक आदेशक पालन करबाक बीज मंत्र ल'क' कामिनी सासुर आयल रहथि। मुदा सासुरक वातावरण किछु अलगे तरहक रहैक। सासुक बीड़ी पिअल मुँहक गंध सँ कामिनी कैँ मितली होब' लागनि, असरधा होनि। मुदा ओ अपना कैँ रोकथि आ बुझबथि–कोनो बात नहि। नव स्थान मे एना प्रायः होइते छै। सभटा अपने आप ठीक भ' जेतै! केवल धैर्यक निर्वाह चाही। यद्यपि ई बात हुनका कियो सिखौने नहि छलनि। मुदा आन-आन नव विआहलि कन्या जकाँ एकर विश्वास हुनकर संस्कार मे पहिने सँ छलनि जे पति हुनकर रक्षक छथि, परमेश्वर छथि। तखन चिंता कथिक? मुदा एखन त' हुनकर रक्षक, परमेश्वर बेसुध भेल पड़ल छथि। एखुनका बयस तक कामिनी कैँ नीक-बेजायक कोनो टा ज्ञान नहि भेल छलनि। तैँ कामिनीक लेल एखुनका परिस्थिति अप्रत्याशित आ ओझरायल सन छल। ओ काठ बनलि ठार रहि गेलीह।

स्थितिक पूर्ण लाभ उठबैत बिदेसरा कुएक कामिनी दिस आगाँ बढ़ल आ हुनका मे सटैत बाजल–"यार बेसी नहि पिलनि अछि। मात्र मदिरा पिबै मे शीघ्रता केलनि अछि तैँ नशा हुनका पछारि देलकनि अछि। यार ने बेहोश छथि, मुदा हम

त' होश मे छी आ बुझू त' पूरा जोश मे सेहो छी। हयै कनिआँ, अहाँ हमरा मे सटि जाउ आ जवानीक मजा लुटू। ओहुना हमरा आ यार मे फर्के की? जैह यदुनाथ सैह बिदेसर।"

एतबा बाजि बिदेसरा कुएक कामिनीक बाँहि तिरैत हुनकर गाल सँ अपन मुँह सटौलक। शराबक भभक सँ कामिनीक सांस अवरुद्ध होब' लगलनि।

कामिनी उमड़ल नदीक ज्वार छलीह। ओ कली नहि पूर्ण विकसित गुलाबक फूल छलीह जनिका हुनक पतिदेव तोड़ने नहि रहथिन, मात्र स्पर्श कयने रहथिन। स्पर्शक मादकता आ अनुपम अनुभूति कामिनी कँ उन्मत अवस्से कयने छलनि। ओ अपन पति नामक देवताक आलिंगन मे समर्पण करबा लेल सदिखन आतुर रहैत छलीह। मुदा ई राक्षस के थिक? एकर एते टा साहस?

कामिनीक भीतर अष्टमीक दुर्गा जागि उठलखिन। कामिनी सुन्नरि त' छलीहे, ताहि पर सँ मजबूत कायाक से हो छलीह। हुनक आँखि सँ अंगार दहकि उठलनि। ओ माँउस बला छिपली कँ बिदेसरा कुएकक माथ पर पटकि बेग सँ छड़पि क' कोठलीक ओहि स्थान पर पहुँचि गेलीह जतए देवाल पर पतियानि मे पघरिया, खंती, कोदारि आ टेंगारी राखल छलै। भगवती बनल कामिनी पघरिया उठा लेलनि।

कामिनीक माथक लाल बिन्दी सँ झहरैत आगिक लपट कँ बिदेसरा कुएक देखलक। कइएक कुमारि आ बिआहलि कन्याक चीर हरण कर' बला बिदेसरा कुएक लफन्दरी विद्याक स्नातक छल। ओ सावधान भ'गेल आ ओकर निशा फुर्र सँ उड़ि गेलै। कामिनीक हाथ मे दिव्य अस्त्र स्वरूप पघरिया कँ एक पल निहारि ओ प्राण रक्षार्थ पर्दा के एक कात टारि बिन छड़बला खिड़की बाटे बाड़ी मे फानि गेल। ओतहु बिनु बिलम्ब कयने छहरदेवाली कँ तड़पैत बिदेसरा कुएक ओहि पार कुदि गेल।

छहर देवालीक ओहि पार अग्निपुष्प ताही काल लघुशंका समाप्त क' ठार भेल छल। बिदेसरा कुएक ठीक ओकरा सामने धराम सँ खसल। अग्निपुष्प अकचका गेल आ पाछाँ हटैक क्रम मे उनटा जमीन पर ओंघरा गेल। कहुना क' उठैत अग्निपुष्प कचकचाइत बाजल–"अरो बरगाँही के भाइ नहि तन! के छिएँ रौ सार?"

बिदेसरा कुएक अग्निपुष्प द्वारा विसर्जित मूत्रक पावन भूमि पर पिछड़ल, सम्हरल, फेर पिछड़ल आ चितंग धराम सँ खसल। मुदा ओहू दुर्दशाक स्थिति मे ओ अग्निपुष्प के चिन्ह गेल। इज्जति सभ सँ पैघ। बिदेसरा कुएकक प्राण बाँचि गेल रहै मुदा इज्जति खतरा मे पड़ि गेल छलै। ओकरा इज्जति बचौनाइ सभ सँ

अधिक जरूरी रहै। बिदेसरा कहुना उनटैत-पुनटैत ठार भेल आ जेम्हरे मुँह छलै तेम्हरे दौड़ि पड़ल।

अग्निपुष्प दिन-राति गोगुल्स पहिरैत छल। अष्टमीक राति मे ओहुना अन्हार त' भइए गेल छलै। तथापि बिदेसरा कुएक कैँ चिन्ह' मे अग्निपुष्प कैँ कनिओं बाधा नहि भेलै। ओ दुनू हाथ उठा क' माथ पर रखलक आ बाजल—"हे महादेव! मानल जे भूत-प्रेत अहीं बनौलहुँ। बिदेसरा नामक पिचास सेहो अहींक आविष्कार छी। मुदा अहि पिचास कैँ अहाँ कन्ट्रोल मे किएक ने रखैत छी? ई हरमजादा त' समूचा पानापुर मे टेमी लेसने घुमि रहल अछि।"

एतेक बजैत-बजैत अग्निपुष्प ठमकि क' चुप भ' गेल। फेर अपन दुनू कान कैँ प्रायश्चित स्वरूप अँइठैत बाजल—"बेकारे मे महादेव कैँ दोख लगा देली। एखनी त' सार खगड़ियाक चण्डी सँ प्राणबचा क' भागल होत तेना देखा पड़ल हएँ।"

अग्निपुष्पक जन्म वृहस्पति दिन भेल रहै। तैँ ओकर असली नाम वृहस्पतिया सदाय छलै। ओ समस्तीपुर जिलाक अमनौर गामक निवासी छल। जखन ओ पांच-छह बर्खक भेल छल तखने ओकर माय मरि गेलै। बाप दोसर संबंध क' लेलकै आ ओ टुग्गर भ' गेल। वृहस्पतिया सदायक नाना रामटहल सदाय कैँ ओकर नाइत छोड़ि आन कियो वारिस नहि छलै। तैँ ओ वृहस्पतिया कैँ पानापुर ल' अनलकै आ ओकर पालन-पोषण केलकै। वृहस्पतिया दलित जातिक होइतहुँ विलक्षण प्रतिभा सँ सम्पन्न छल। गामक स्कूल सँ ओ मिडिल एवं मैट्रिक प्रथम श्रेणी मे पास केलक। मुदा नानाक मृत्युक बाद ओ आरो पढ़ि नहि सकल। ओकरा अपन नाम कहिओ ने सोहेलै। स्कूलक संस्कृतक पंडितजी सँ आरजू-मिनती केलक। पंडितजी ओकर तीक्ष्ण बुद्धि दुआरे ओकरा बेटा जकाँ मानैत छलथिन। वैह एकर नव नाम राखि देलखिन—अग्निपुष्प। काले-क्रमे ओकर असली नाम बिला गेलै आ ओ अग्निपुष्पक नामे प्रसिद्ध भ' गेल।

अग्निपुष्प कैँ अपन नानाबला एक बीघा खेत आ सात घूरक घरारी प्राप्त भेलै। ओ मुसहर मे सभ सँ धनिक बनि गेल। मुदा खेत सँ बड़ थोड़ आमद। ओकर खुजल हाथ आ समूचा मुसहर टोलीक दुख-दर्द ओकरे जिम्मा। तैँ अग्निपुष्पक आर्थिक दशा सदिकाल सोचनीय बनल रहैत छलै। गामहि मे एम्हर-ओम्हर किछु-किछु करैत ओ दिन काटि रहल छल।

तेहने समय मे चमेलीरानीक 'लोक शक्ति जागरण परिषद'क आगमन पानापुर मे भेल छल। चमेलीरानीक बेगूसराय लगक पांचो कैम्प मे प्रशिक्षित हजारो युवक-युवतीक फौज प्रांतक गाँव-गाँव आ टोल-टोल मे पसरि गेल रहैक। लोक शक्ति जागरण परिषद अर्थात लोशजाप नामक राजनीतिक मान्यता प्राप्त पार्टीक

एकमात्र उद्देश्य छलै जे लोकतंत्र एवं संविधान मे आस्था रखैत अगिला चुनाव मे विजय प्राप्त क' प्रान्तक शासन पर अधिकार करब। चमेलीरानीक दक्ष गाइडेन्स मे 'लोशजाप' नामक पार्टी भोट समेटक उद्देश्य मे अपन कार्यक्रम कैँ आगाँ बढ़ा रहल छल आ ठाम-ठाम अपन मजबूत खुट्टा गारि रहल छल। चमेलीरानीक फौजक समूह मे युवकक टाइटिल 'बिहारी' आ युवतीक 'भारती' छल।

पानापुर पंचायत टुमाही प्रखण्डक अधीन छल। प्रखण्डक महानायक छलाह मल्लिक जी बिहारी। मल्लिक जी योग्य एवं अपन काज मे निपुण व्यक्ति रहथि। ओ टुमाही प्रखण्डक प्रत्येक पंचायतक सविस्तार अध्ययन करैत, प्रत्येक पंचायत मे बिहारी-भारती सेवक-सेविका कैँ नियुक्त करैत, पांच-छः पंचायत पर योग्य बिहारी कैँ नायक बनबैत पानापुर पहुँचलाह। पानापुर पंचायत आन-आन पंचायतक तुलना मे सर्वाधिक सम्पन्न पंचायत छल। मुदा अहि गामक प्रकृति अजीबे किस्मक रहै। मल्लिक जी कैँ गामक मनोविज्ञान बुझ' मे थोड़ेक ओझराहटि भेलनि। मुदा ओ धैर्य कैँ पकड़ने रहलाह।

पानापुर गामक सभ जाति मे थोड़े-थोड़े आर्थिक रूपे सम्पन्न तथा शिक्षाक दृष्टिएँ प्रबुद्ध। मुदा हुनका सभ मे राजनीतिक सोच या त' रहबे ने करनि अथवा रहबो करनि त' ओहि मे कल्पना आ जिज्ञासाक अभाव छलनि। 'कोइ नृप होहिं हमे क्या हानि' बला भाव। 'जाए दिऔ, एलेक्शन कियो जीतए, सभ एकहि तरहक भ्रष्ट होइत अछि', 'हम जहिना छी तहिना रहब', 'हम भोट खसाब' जाइते ने छी', 'के ओहि हुरदंग मे कपार फोराबए' आदि तरहक भावना सँ ग्रस्त पानापुरक एहने संभ्रान्त लोक छलाह जनिका खेबा-पिबाक कष्ट नै छलनि।

मल्लिक जी बिहारी पानापुर गामक भोटर लिस्टक गंभीर अध्ययन केलनि। अगाड़ी-पिछाड़ी जातिक संभ्रान्त परिवार मुश्किल सँ एगारह प्रतिशत। ओहि वर्गक लेबरा अथवा चमचा तीन प्रतिशत। बाँकी सभटा गरीब, मजदूर, लाचार आ बेबस मुदा भोट खसाब' मे साकाँक्ष। मानि लिअ जे सम्पन्न वर्गक बीस प्रतिशत कैँ बिसरि जाउ त' बाँकी बचल अस्सी प्रतिशतक बीच 'लोशजाप' अपन कार्यक्रम चला सकैत अछि। ओहू अस्सी प्रतिशत मे दलित सभ सँ अधिक। ओहि वर्ग कैँ जँ पाग पहिराओल जाए त' पागक सम्मान हेतैक। मुसहर टोली गाम सँ कनेक हटल। दलित जातिक मुखबीर अग्निपुष्प पढ़ल-लिखल, स्वस्थ, बाचाल, अविवाहित आ बिना कोनो बिकारक सभ सँ उपयुक्त व्यक्ति छल।

मल्लिक जी अग्निपुष्प कैँ प्रधान नियुक्ति केलनि। मुसहर टोली मे एक स्थानक चयन क' खर सँ छारल एक नव घरक निर्माण करौलनि। वैह लोशजापक मुख्यालय बनल। गाम भरिक गरीब आ दलित परिवारक धीया-पूता कैँ जमा क'

'लोशजाप'क बैनरक नीचा बिटगरहा सिखौनाइ, साफ वस्त्र पहिरौनाइ, निःशुल्क दूध पिऔनाइ, खेल-कूद मे कबड्डी, चिक्का आदि खेलबौनाइ अग्निपुष्पक देख-रेख मे आरम्भ भेल। गरीब महिलाक बीच भारतीक प्रवेश भेल। सिलाइ-फराइ सिखौनाइ, पापर-अँचार बनौनाइ, भानस-भात नीक जकाँ करौनाइ, घर-आंगन कँ स्वच्छ राखब इत्यादिक संग झगड़ा कर' काल नीक भाषाक उपयोग करथि तकर विचारक संग सभ तरहक काज शुरू भेल। गरीब-गुरबाक बेगरता काल बिना सूदिक कर्ज संगहि 'लोशजाप' दिस सँ गाय-महिंस सेहो कीनल गेल। सभटा काजक लेल पर्याप्त धन चमेलीरानीक 'हर-हर महादेव' नायक ट्रस्ट, जकर मुख्यालय वैद्यनाथ धाम मे छल, सँ आब' लागल। अग्निपुष्प लेल दू हजार टाका महिना, तकरो मंजूरी भेल।

अहि तरहें मल्लिक जी पानापुरक मुसहर टोली मे 'लोशजाप'क ऑफिस कायम केलनि। दू गोट 'बिहारी' युवक एवं दू गोट 'भारती' युवतीक नियुक्ति क' स्वयं मल्लिक जी, जे टुमाही प्रखण्डक महानायक छलाह, प्रखण्डक आफिस सँ अधिक पानापुर मे रहि काज कर' लगलाह। चमेलीरानीक कार्यशैली मे गोपनीयताक महत्त्व सभ सँ अधिक छल। मुसहर टोली मे स्थापित 'लोशजाप'क क्रिया-कलाप सँ पानापुरक धनिक वर्ग कँ ने कोनो जानकारी छलनि आ ने कोनो मतलब।

'लोशजाप'क कार्यक अलावा अग्निपुष्प देखार मे ब्रजनंदन बाबू द्वारा स्थापित एवं संचालित 'मिथिला कल्याण एवं विकास परिषद्क' प्रचार मंत्री छल।

ढहैत जवानी आ ढ़हैत जमींदारीक कथा कँ विषय बना एखन तक कोनो कवि कविता नहि लिखलनि अछि। मुदा दुनूक करुण कथा एकहि तरहक पीड़ा सँ भरल अछि। ब्रजनंदन बाबू ओही ढ़हल जवानी तथा ढहल जमींदारीक बाबू साहेब रहथि। हुनक नसीब नीक रहनि, पिता सबेरे-सकाल स्वर्गक लेल बिदा भ' गेलथिन। मांइ मे एसगरे रहलाक कारणें पिताक अर्जल सम्पत्तिक ओ एसगरे मालिक बनलाह। यद्यपि जमींदारी समाप्त भ' गेल रहै मुदा तौजीक छेंट गरमजरुआ खास, कास्त आ बकास्तक पैघ ढेरी ब्रजनंदन बाबू कँ हाथ लगलनि। बिना परिश्रमक प्राप्त सम्पति भेल माया आ ब्रजनंदन बाबू भेलाह मायापति। ओ जमीन कँ बेचि-बेचि क' जीवन जीब' लगलाह। पानक संग सिगरेट, भांगक संग स्कॉच, थिएटरक संग सिनेमा आ आंगनक संग चतुर्भुज स्थानक मौज-मस्ती हुनक जीवनक श्रृंगार बनि गेल। किएक ने हो? कोनो वस्तुक अभाव छलनि थोड़बे?

मुदा ब्रजनंदन बाबू बहुत दिन तक जिनगी मे चिनगी उड़ा नहि सकलाह। भांग पिसैक श्रम स्वरूप धन्नू चौधरी कँ अनुदान मे देल दस कठ्ठा आ लगभग दू बीघा धनहा खेत छोड़ि बाँकी सभटा जमीन ओ बेचि चुकलाह तखन हुनका होश

भेलनि। ओ जाबे जगलाह ताबे तक चिंताक लकीर हुनका कपार पर झिझिर कोना खेलाए लागल। मुदा ब्रजनंदन बाबू बड़ पैघ सुखक मोटरी ल' क' धरती पर आयल छलाह। हुनक दुनू पुत्र नीक नौकरी मे नीक पोस्ट पर नीक तनखाह पबैत रहथि। दुनू बालक अपन पिता के प्रत्येक महिना निश्चित मात्रा मे खोरिस पठाब' लगलखिन। ब्रजनंदन बाबू फेर सँ बाबू सैहबे रहलाह।

जाहि घड़ी ब्रजनंदन बाबू साकिन होयबाक स्थिति मे आबि गेल रहथि, नौकर चाकर, कर-कमतीआ आ लगुआ-भगुआ हुनका सँ मुँह मोड़ि दुखक मझधार मे छोड़ि बिला गेल रहए, ताहि काल हुनक मुँह लगुआ, पोसुआ आ भांग पिसुआ धन्नु चौधरीए एक मात्र हुनक संग नहि छोड़लनि। मानल जे आब बदाम-इलायचीक अभाव भ' गेल रहै मुदा मरिच द' ओ भांग पिसिते रहलाह। दिनक ठीक दू बजे नियमित रूपे धन्नु चौधरी लोढ़ी-सिलौट ल' क' बैसि जाथि आ चारि बजैत-बजैत भांगक गोला तैयार क' लेथि। मालिक छलथिन ब्रजनंदन बाबू। तैँ भांगक गोलाक तीन-चौथाइ भाग हुनका अर्पित क' बचल एक-चौथाइ कैँ स्वयं उदरस्त क' धन्नु चौधरी ब्रजनंदन बाबूक प्रत्येक विचार मे सहमतिक सोंगर लगा हुनकर हिया मे प्रसन्नताक घोल ढ़ारैत रहलाह।

एक दिन ओहने भांगक गुलाबी निशाक झोंक मे सराबोर ब्रजनंदन बाबू एकाएक मिथिलाक दुख सँ द्रवित भ' गेलाह आ मोनक दारुण पीड़ा सँ धन्नू चौधरी कैँ परिचित करौलनि। ब्रजनंदन बाबूक दुखक ताप सँ धन्नू चौधरीक हृदय दग्ध भ' गेलनि आ फाटय लगलनि। ओ अपन उदवेग पर नियंत्रण करैत अपन निचोड़ल विचार कैँ ब्रजनंदन बाबू सँ व्यक्त करैत निवेदित केलनि—"मिथिला घोर विपति मे अछि। एकर कष्ट निवारण लेल कोनो महान आत्माधारी पुरुषक आवश्यकता अछि। श्रीमान, सम्प्रति ओहि महान आत्माक छाँह हम अहीं मे देखि रहल छी। अहाँ योग्य छी, विचारवान छी। अहाँ जे मार्ग बतेबै तकरा सभ शिरोधार्य करबे करत।"

विभिन्न एंगिल सँ ब्रजनंदन बाबू एवं धन्नु चौधरी मिथिलांचलक घनघोर विपत्तिक कारण पर विचार केलनि। विचार मंथन सँ सहमत होइत दुनू मिलि 'मिथिला कल्याण एवं विकास परिषद'क स्थापना केलनि। आब अही परिषदक द्वारा मिथिलाक सर्वांगीण विकास होयत एवं मिथिला नामक फराक राज्यक निर्माणक पथ सेहो प्रशस्त होयत। ब्राम्हण जाति काज कम आ विवाद अधिक करैत छथि। चंदा देबा मे भुसकौल त' छथिहे। ओहुना मिथिला मे बास केनिहार सभ मैथिले छथि। सभहक विकास होयत तखने ने मिथिला उन्नति करत। तैँ निश्चय भेल जे परिषदक कार्यकारिणी मे सभ जाति, समुदाय एवं सम्प्रदायक लोक

कँ राखल जाए। मात्र ब्राह्मने टा जँ परिषद मे ढूकल रहताह त’मिथिलाक उन्नति की सुथनी करताह।

पानापुर गाम मे सभ जातिक लोक मे थोड़े-थोड़े सुखी-सम्पन्न रहथि। तँ ब्रजनंदन बाबू निर्मित ‘मिथिला कल्याण एवं विकास परिषद’क कार्यकारिणी समिति मे सभ जाति एवं धर्मक लोक कँ स्थान भेटलैक। चंदा उगाही मे सेहो कोनो अड़चन नहि भेलैक। अग्निपुष्प अहि परिषदक प्रचार मंत्री छल। आजुका अष्टमीक दिन परिषदक कार्यकारिणीक बैसार राखल गेल छल। ब्रजनंदन बाबू अग्निपुष्प कँ भार देने रहथि जे कहुना पोलहा क’, बहटारि क’, खररि आ बटोरि क’ कार्यकारिणीक सभ सदस्य कँ मिटिंग मे आनय।

दुर्गा स्थान मे मंदिर सँ सटल सामियाना टाँगल छल। ओकर एक कात राति मे खेला होइबला नाटकक स्टेज बनल रहै। सामियानाक अन्दर जतय पब्लिक बैसि क’ नाटक देखतथि, खालिए छल। ओही ठाम धन्नु चौधरी एक पैघ सतरंजी ओछा मिथिला कल्याण एवं विकास परिषद’क मिटिंग लेल जगह बनौलनि। ब्रजनंदन बाबू आसन ग्रहण केलनि। ठीक हुनकर सटले बगल मे धन्नु चौधरी बैसलाह आ खैनी चुनौनाइ शुरू केलनि। धन्नु चौधरी गुणी व्यक्ति रहथि। मुदा हुनकर सभ सँ पैघ गुण रहनि हाजिर जबाबी। अहाँ ब्रजनंदन बाबू कँ प्रश्न पुछियौन, उत्तर धन्नु चौधरी देताह। थोड़ेक हटि क’ परिषदक स्थायी कोषाध्यक्ष राम सुंदर पटवा कएक गोट बही-खाता संग बैसलाह आ बही मे आँखि रोपैत ठोर पटपटब’ लगलाह। अपन देश मे मनुक्खक कमी नहि। तँ भटकल मुसाफिर जकाँ तीस-चालिस गोट लोक सेहो ओहि ठाम बैसि रहलाह।

परिषदक उपाध्यक्ष फजले खाँ मिटिंगक मोकर्रर टाइम पर पहुँच गेला। ओ पानापुरक प्रतिष्ठित आ बुझनुक लोक मे रहथि। अध्यक्ष कँ आदाब कहि संतरंजी पर कनेटा बगबग उज्जर चद्दरि ओछा आ ओहि पर बैसैत फजले खाँ बजला– “हौउ बिरजननन बाबू! तोरे परिषदक पहिला मांग का हइ? मांग हइ मिथिला के अलग राज्य बनाब’के। आबत’ओ मांग तोरा बैसले-बैसले मिल जेतह।”

–“से कोना यौ फजले बाबू?” तपाक सँ धन्नु चौधरी प्रश्न केलनि।

फजले खाँ मुसलमान होइतो गप-सप मे हिन्दू ग्रंथक खिस्सा-पिहानी कँ उदाहरण मे पेश कर’मे ओस्ताज रहथि। तँ पानापुरक लोक कँ हुनकर वार्तालाप सुनै मे नीक लगैत छलै। फजले खाँ कनेकाल तक अपन अधपक्कू दाढ़ी के सहल’बैत रहलाह। तकरबाद जबाब देलनि–“मिथिला आ मैथिल का देखाँउस भोजपुरबला कँ लाग गेलै हएँ। ओ सभ भोजपुरी भाषा का मान्यता आ भोजपुर का अलग प्रान्त बनबै का मांग उठा देलकै हएँ। भोजपुरबला लड़ाका टाइप का इन्सान

हई। समूचा इन्डियाक सिपाही ओकरे जुवान बजै हई! अब का त' बोलै हई, भोजपुर अलग प्रान्त बनके रहतै। जभिए भोजपुर अलग प्रान्त बन जेतै त' मिथिला अलग राज्य अपने-आप हो जेतै। बखेड़ा खड़ा करतै जरासंघ का मगध, कर्ण का अंग आ का बोले हई, आम्रपाली का वैशाली। मगध कैँ कोनो चारा नईं होतै। ओ भोजपुर से निकाह करके ओकर बहुरिया बन जेतै। अंगबला के खान-पान, बोली आ का बोलै हइ सन्सकार, सब कुछ मिथिला के माफिक हेबे करै। अंग मिथिला मे ना मिलतै त' झंझट मे फंस जेतै। ओकर थोड़ा हिस्सा बंगाल आ थोड़ा हिस्सा झारखण्ड हड़पि लेतै। अब का बोलै हई, बचल नगरवधु का वैशाली। खुदा झूठ ना बोलाबै, बैशाली थोड़ा एमहर थोड़ा ओमहर मिलि के मामला के फिट बैठा देतै।"

सभा मे सभ चुपे रहल। फजले खाँ अपन भाषण चालू रखलनि–"सरहद का ओइ पार मधेशी का करान्ती का बिगुल फूका गेलै हेएँ। जैसन करान्ती अइबेर शुरू होलै हेएँ अब का बोलै हई, ओइसन कहिओ ने भेल रहलै हेएँ। नेपाल का पहाड़ी लोगन मधेशी पर सभ दिन राज केलकै। मधेशी के कंगाल बना के रखलकै। अब की बार मधेशी जाग गेलै हैँ। अब की लड़ाइ अइपार ओइपार बला हइ। मधेशी, का बोलै हई, माने होलै मैथिल। आब नेपाल मे मिथिला राज्य बनतै, आ का बोलै हई, जनकपुर ओकर राजधानी। सरहद का एमहर मिथिला परान्त बनतै आ सरहद का ओमहर मिथिला राज्य। आब बुझ लहू जे इतिहास का पन्ना उलट जेतै, भूगोल मे जलजला आ जेतै। हम त' बिरजननन कैँ का बोलै हई, अगाह करै छियहि जे समूचा मिथिला का राजधानी जनकपुर होतै आ की बेगूसराय? अबत' नया किसिम से विचार करै का टाइम आ गेलै हई?"

फजले खाँ की बजला से ब्रजनंदन बाबूक बुझदानी मे प्रवेश कइए ने सकल। भांगक निशा बुढ़ाढ़िओ मे विलासिए टा होइत अछि। केवल धन्नु चौधरी फुसफुसेलाह– अधिक काल फजले फूसिए टा बजैत अछि।

फजले खाँक नेपाल मे शुरू भेल मधेशी आन्दोलनक बखान औरो नहि भ'सकल। कारण ताही काल हहाइत-फुहाइत कतहुँ सँ अग्निपुष्प आबि सोझे ब्रजनंदन बाबूक सोझा मे ठार भेल, अपन गोगुल्स पोछलक आ रिपोट देब शुरू क' देलक–जेनाकी अध्यक्षजीक आदेश छल सकाले सभ सँ पहिने हम बिलट ठाकुरक दुरा पर पहुँचली। बिलट ठाकुर अपन परिषदक महामंत्री छथ, सभ सँ अधिक चंदा सेहो दै छथ। बिलट ठाकुरक हबेली मे गाना-बजाना हो रहल छल। हम हांक देली त' बिलट ठाकुर बाहर एलाह आ हमरा ध' के नाच' लगलाह। हुनका आँखि सँ खुशीक नोर बहि रहल छल आ ओ फुदकि रहल छलाह।

बीचहि मे धन्नु चौधरी टोकारा देलनि—कोन बातक बिलट कैँ एतेक प्रसन्नता भेल रहनि जे ओ नचै छलाह, फुदकै छलाह! फरिछा के'बाज'हौ प्रचार मंत्री?

गोगुल्सक भीतरे सँ अग्निपुष्प धन्नु चौधरी के आँखि तरेरि क' देखलक आ बाजल—अहाँ की गाम भरिक लोक कैँ बुझल छै जे बिलट ठाकुरक बेटा कुशेसरा एक बर्ख पहिने एक पेटी गहना आ रूपैया ल'क' पड़ा गेल छलै। छै की ने हौ भाइ सभ?

सभा मे सुननिहार एकर मूड़ी डोला क' अनुमोदन केलक। तखन अग्निपुष्प जे रिपोट दाखिल केलक तकर आशय छल बिलट ठाकुर सोनार जातिक शिरोमणि पानापुरक सभ सँ अधिक धनिक व्यक्ति। चाँदी आ चाँदी सँ बनल गहनाक ओ थौक व्यापारी छलाह। लहनाक कारोबार मे हुनकर समतुल्य कियो छले ने। मुदा सभ सँ अधिक धनोपार्जन जाहि धंधा सँ बिलट के होइत छलनि से छल एक अलग किस्मक बुद्धिक खेल। पानापुर गामक पश्चिम आ उत्तर मे चारि-पांच गोट खाँटी मुसलमानक गाम। बिलट ठाकुर सय मे नहि, हजार मे स्त्रीगणे-पुरुष मुसलमान कैँ अपना खर्च सँ हज करै लेल मक्का पठबैत छलाह। हाजी बनल मुसलमान त' बेइमानी कैइए ने सकैत छल। घुमती मे ओ लोकनि चौबीस करेटबला सोनाक बिस्कुट आ आन-आन दामिल वस्तु आनिक'बिलट ठाकुर कैँ दैत छलनि। अहि तरहें बिलट ठाकुर कैँ अकूत सम्पत्ति जमा होइत छलनि।

मुदा दू नम्बरी धनक प्रभाव संतान पर डाइरेक्ट पड़ैत छैक। बिलट ठाकुरक एक मात्र संतान कुशेसरा पर हुनक अर्जित सम्पतिक उनटा प्रभाव पड़लै आ ओ अपन टाइमक सभ सँ पैघ अबारा बनि गेल। एक दिन कुशेसरा एक पेटी गहना आ रूपैया ल' क' पार भ' गेल। बिलट ठाकुरक गारा मे दुखक मोटरी लटकि गेलनि। कुशेसरा एक बर्खक बाद सिनेमाक एकटा हिरोइन, रम्भा कैँ ल'क' वापस आयल छल। बेटा आ बझौए सही, पुतहु कैँ देखि बिलट ठाकुर हर्ष मे नाचए लगलाह, फुदक' लगलाह।

रिपोटक अन्त करैत अग्निपुष्प बाजल—एहन तरंगित भेल मनोदशा मे बिलट ठाकुर कैँ परिषदक मिटिंग द' कहब ठीक नहि होइत। तैँ हम हुनका दुरा सँ बैरंग वापस भ' गेली।

—महामंत्रीक लाचारीद' बुझल। मुदा बिलट ठाकुरक घरक लगहि मे फनी ककाक घर छन्हि। ओतए गेलहक की नहि? धन्नु चौधरी पुछलखिन।

—गेली ने। दू नम्बर मे फनी ककाक इहाँ गेली। हुनका प्रणाम केली। अध्यक्षक निवेदन द' कहली जे ओ मिटिंग मे पधारि क' परिषद के आशीर्वाद देभु, मुदा ओ की जवाब देलनि से बुझली?

सभा मे उपस्थित अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, धन्नु चौधरी एवं आन-आन सभटा पब्लिक फनी कका की जवाब देलखिन तकरा सुनै लेल कान पाथि क' प्रतीक्षा कर लागल।

अग्निपुष्प आगाँ कहलक—फनी कका थकुचल दातमनि सँ टुटलाहा दाँतक उपर मुसहरी कँ रगड़ैत कहलनि जे जँ ब्रजनंदन गूंड़ देल आ अछिंजल मे बनल चाहक इन्तजाम क'सकथि तखने ओ मिटिंग मे आबि सकैत छथ, अन्यथा नहि।

फनी झा मिडिल स्कूलक हेडमास्टर रहथि। जाहि स्कूल मे ओ पदस्थापित भेलाह तकर भवन रहबे ने करै। स्कूलक सभटा क्रिया-कलाप हुनक कुर्त्ताक जेबी मे समटल रहैत छल। फनी झा पढ़बै लेल कहिओ ने त' स्कूल गेलाह आ ने कोनो चटिया हुनकर मुँहे देखलक। मुदा जिला शिक्षा पदाधिकारीक मेल-मिलाप सँ ओ प्रत्येक महिनाक दरमाहा पबैत रहलाह। समय पर फनी झा रिटायर केलनि आ गामहि मे रह' लगलाह। रिटायर भेलाक बाद ओ एकटा लेख लिखलनि—नैतिक मूल्यक अवमूल्यन : मूल्यांकन एवं उपचार। फनीझाक एक गोट भातिज राजधानी सँ प्रकाशित होब' बला मैथिली भाषाक पत्रिकाक उपसम्पादक रहथि। ओ अपन पत्रिका मे फनी झाक लेख कँ छापि देलनि। ओहि पत्रिका कँ पढ़निहार बड़ कम। मुदा जे कियो ओहि पत्रिका कँ पढ़ैत रहथि से सभ अहि सारगर्भित लेख कँ भूरि-भूरि प्रशंसा केलनि—फनी झाक लेख मे देल गेल विचार उत्तम आ अकाट्य अछि। अहि लेख सँ व्यक्ति एवं समाज उपदेश अवस्से ग्रहण करत' आदि आदि। फनी झाक प्रशंसा एतेक ने भेल जे राजधानीक विख्यात मैथिल संस्था हुनका पाग-दोपटा द' हुनक सम्मान केलक आ हुनकर स्थान मिथिला विभूतिक पांती मे सुरक्षित क' देलक। फनी झा सनक चरित्रवान एवं रत्न पानापुर मे रहैत छथि तकर ज्ञान जखन गामवासी कँ भेलनि त' उचिते सभहक छाती गौरव सँ फूलि गेलैक। फनी झाक अही यश एवं प्रतिष्ठा दुआरे ब्रजनंदन बाबू हुनका सँ परिषद कँ आशीर्वाद दिआब' चाहैत छलाह। मुदा फनी ककाक फरमाइस द' सुनि सभहक मोन उदास भ' गेलै। कारण मिटिंगक हुड़दंगी मे अछिंजलक इन्तजाम कोना होइत? एक क्षण लेल सभा मर्माहत भ' गेल।

एखन तक अग्निपुष्प ठारे भेल रिपोट द' रहल छल। आब ओ गोगुल्स कँ आँखि सँ फराक करैत सतरंजी पर बैसि गेल। धन्नु चौधरी फेरसँ प्रश्न केलनि— "अइ दुनूक अलाबे आरो किनको टोकलहुन?"

—"यौ धन्नु बाबू! हमरा एक पल लेल सांसो त' लिअ दिअ। गेली ने, सभठाम गेली। भूख लागल छल। फनी ककाक घर सँ घुमली त' चौबटिया लग सरूपाक दोकान मे गेली। ओकरा इसारा केली। ओ एक नप्पा मूरही आ दू टा कचड़ी पत्ता

पर देलक आ कहलक—निकालू तीन रूपैया! ओकरा तीन टका देली। मूरहीक एक फक्का आ आधा कचड़ी कैँ मुँह मे राखि पहिले खेप मुँह चलौनहि छलहुँ की हल्ला सुनली। पोखरीक ओहि पार सुखदेव भाइ जे अपन परिषदक संगठन मंत्री छथ, तिनके आंगन सँ चिकरै-भोकरैक अवाज आबि रहल छल। हल्ला जबरदस्त छलै। हमरा रहल नै गेल। मूरही-कचड़ीक मोह छोड़ छाड़ दौड़ि पड़ली। टपैत-टुपैत जखन सुखदेव भाइक आंगन मे पहुँचली त' माजरा देखि दंग रह गेली। सुखदेव भाइ आ हुनक दुनू बेटाक बीच उद्दम-बजरा भ' रहल छल। तेहन ने तुफानी पटका-पटकी हो रहल छल जे हमरा चोन्हरा लागि गेल। एक कात सुखदेव भाइक दुनू पुतहु तमतमायल हाथ मे बड़की टा लाठी लेने ठार छलथिन। तमासा देखैबला बहुत लोक छला मुदा कियो झगड़ा छोड़बै लेल आगाँ नहि बढ़ला। हम चिचिया-चिचिया क' पुछली—सुखदेव भाइ! अहाँ कत' छी? संगठन मंत्री जवाब देलनि—हम बीच मे छी।

—"आब साफ-साफ देखली। सुखदेव भाइ अपन जेठका बेटाक छाती पर चढ़ल ओकरा मुकिया रहल छथ। हुनकर छोटका बेटा हुनकर पीठ पर चढ़ल हुनकर ठोंठी दबने ललकार दे रहल हएँ। अब अइ झगड़ा के बीच हम जइती त' हमरो भरकूस्सा हो जाइत। एहन मे की करु, अपन संगठन मंत्रीक प्राण कोना बचाउ, तकर तारतम मे फँस गेली। तखनिए एगो बात हमरा फुरायल। हम जोर-जोर सँ चिचियैली—अरे बाप रे बाप! थानाक चार गोट सिपाही एमहरे आ रहलै हएँ। आइ तीन टा अमात एरेस्ट होत आ हाजत चल जैत।

—"एकर जादू-मंतर बला असर भेलै। तीनू हड़बड़ा के अलग होइत अलग-अलग खड़ा भ' गेल। सुखदेव भाइक दुनू कान भूच्च छन्ह आ बामा कानक छिपंगी पर कनैलक दोग सँ रिस-रिस क लहू बहै छलन। हमरा सविस्तर सभ बातक पता लागल। सुखदेव भाइ आ हुनक दुनू बेटाक बीच बँटबारा हो रहल छल। अमीन सभटा जमीन कैँ तीन टुकड़ा मे बाँटि देने छलै। मुदा सुखदेव भाइ के अहू उमिर मे नियत दुरुस्त नहि रहलनि। एकटा पितरिया लोटा अमीन के घूस मे द' के कृष्णभोग आमक गाछ अपन हिस्सा मे नापी करा लेलनि। हुनकर दुनू बेटा कैँ एकर भाँज लगि गेलै। दुनू बेटा जे एक दोसराक दुश्मन छल से एक पेट बना क' सुखदेव भाइ के चैलेन्ज ठोकि देलक। अपन संगठन मंत्री त' दुर्वासाक अवतारे छथि। ओ एक थापर बड़का बेटाक गाल पर मारि देलखिन। बस मल्ल युद्ध शुरू हो गेलै। सुखदेव भाइ जेठका कैँ पटकि ओकरा मुकियैब शुरू केलनि त' छोटका जे काया मे पहलमान जंकती अछि, हुनका पर चढ़ि हुनकर ठोंठ दाबि हुनकर इहलीला समाप्त करै मे लागि गेल। खैर, तीनूक झगड़ा त' रुकल। मुदा सुखदेव

भाइ कैँ ततेक ने पिटाइ कएल गेल छल जे हुनकर थोबड़ा सिलावक सनपापड़ी जकती भहरि गेल रहनि। ओहना हालत मे हम हुनका परिषदक मिटिंग द' कोना कहिती।"

सभा मे एखन तक सय सँ उपर लोक पहुँचि चुकल रहथि। चारुकात सँ खीं खीं करैत सभ हँस' लागल। मुदा फजले खाँ भभा-भभा क' हँसब शुरू क' देलनि आ हँसिते बजला—"बिरजी ननन के मिटिंग मे आ के मजा आ गइले। वाह रे! अगनी पुष्पी!! तोहर रिपोट पेश करै का अन्दाज गजब का हौउ। अच्छा बता, संगठन मंत्री के बाद दोसरा कोन-कोन मंत्री से मुलाकात केलहू?"

अग्निपुष्प फेर सँ गोगुल्स पोछैत ठार भेल आ कहब शुरू केलक—"कुलभूषण मड़र कैँ टाइटिल बदल गेलन हैं। आब ओ छथि कुलभूषण सिंह। परिषदक पहिल उपाध्यक्ष छथि फजले खाँ आ दोसर छथि कुलभूषण सिंह। हुनका दू टा घरवाली छथिन।"

सभाक बीच सँ कियो टोकलक—"एँ यौ अग्निपुष्प, एकहि टा घरबाली घरबलाक ढोंढि ढील कयने रहै छै तखन कुलभूषण दू टा पत्नी किएक केलनि?"

अग्निपुष्प अपन अबाज कैँ बुलन्द करैत जवाब देलक—"की कहल, दू टा पत्नी किएक छनि? एक महींस चरौथिन, दोसर ओकरा दुहथिन। एक भानस करथिन त' दोसर खेत मे कमठौनी। अपन-अपन जातिक कानून-कायदा मनुक्ख कैँ गछाड़ने छै। अहि मे कियो किछु कैए ने सकैत अछि। बीचमे टोक-टाक नै करू। हँ त' हम की कहै छली? मोन पड़ल। कुलभूषण कैँ दू टा पत्नी छनि। बड़की लदनियाँबाली मोटगरि, नमगरि आ हुनक दुनू बाँहि मे गोदना गोदल छनि। छोटकी पचहियाबाली बड़ सुन्नरि। सिनुरिया आम जाहित चमड़ीक रंग, नाक मे बुलकी आ सातमा पास। छोटकी बहु कैँ त' ओहिना घरबला बेसी मानै छै, ताहू पर सँ एक दिन कुलभूषण पचहियाबाली कैँ अखबार पढ़ैत देखि लेलखिन त' हुनकर परेम मे डबलफोर्स आ गेलनि। राति मे कुलभूषण अपन छोटकी कैँ दुलार करैत कहलखिन जे पानापुर महिला लेल आरक्षित पंचायत बनि रहल अछि। अगिला मुखियाक चुनाव मे ओ हुनके कन्डिडेट बनौथिन तकर शपथो ओ खा लेलनि अछि। खरही टाटक ओहि पार बला कोठली मे लदनियाँबाली कुलभूषणक सभटा गप सुनि रहल छलथिन। ओ इर्खाक आगि मे धधकि क' कोयला बनि गेली।

—"आइ जखन कुलभूषण हरजोत कैँ दूरा पर एलथिन आ पचहियाबाली कैँ पानि लाबै लेल हॉक देलथिन त' ओही काल घैल उठौने लदनियाँबाली एलथिन आ पूरा घैल कुलभूषणक कपार पर पटकि क' कहलथिन—'पी रे सरधुआ, पानि पी'।

—"संयोग कहियौ जे परिषदक समाद ल' क' ठीक ओही काल हम कुलभूषणक

द्वार पर पहुँचल रही। हुनकर माथा पर डिग्गा कौड़ी जांहित टेटर उगल रहनि आ चारुकात सँ पानि चुबि रहल छलनि। कुलभूषणक आँखि लाल भ'गेल रहनि। ओ जाहि तरहक गारि बाजि रहल छलाह तकरा बजै मे हमरा लाज होइ अछि। हम कुलभूषण कँ परिषदक समाद की कहिती। हम ओतय सँ घसकै मे अधिक बुधियारी बुझली। आब कुलभूषण सिंह लदनियाँबाली कँ बज्जारि क' पिटलथिन आ की शरीर सँ कमजोर अपन जेठकी बहु हाथे मारि खेलथिन, ताइ द' हम किछु ने बोलि सकै छी।"

धन्नु चौधरी थपड़ी बजा क' तमाकू सँ चून झाड़लनि आ एक चुटकी ब्रजनंदन बाबू दिस बढ़बैत कहलनि–"हाय रे कुलभूषण। जखन कपार मे मारि खायब लिखल रहैत छै तखन मारि खाइए पड़ैत छैक। मुदा बहुक हाथे मारि खायब सभ सँ खराब बात भेल। जे भेलै से भेलै। अच्छे, तकरबाद तोँ किनकर दरबज्जा खटखटेलहुन, से ने बाज'?"

अग्निपुष्प कनेकाल चुप रहलाक बाद पुछलक–"बताउ त,' सोलह जोड़ पांच कतेक होइत छै?"

अहि काल रामसुंदर पटवाक फूर्ती देखबा योग्य छल। ओ तपाक सँ उत्तर देलनि–"बीस!"

धन्नु चौधरी दुनू हाथे कपार पिटैत कहलनि–"पटवा सन कोषाध्यक्ष जाहि परिषदक होअय तकर भविष्य केहन हेतै? कहू त' सोलह जोड़ पांच कहूँ बीस होअय?"

कोषाध्यक्ष रामसुंदर पटवाक वर्ण ने गोर ने कैलू, भूल्ल छलनि। चेहरा पर चेचकक दाग छलनि अदौरी साइजक। ओ मोंछ रखने रहथि। मुदा वामा कातक उपरका ठोर पर लहसुनियाँक दाग हुनक मोंछ फिफ्टी परसेन्ट कतरि देने छल। तेँ हुनक चेहरा पर मोंछ एना देखा रहल छल जेना ठाम-ठाम पर कुकुरमाँछी बैसल होअय। पटवा दुखी मनुक्ख रहथि आ दयाक पात्र सेहो छलाह। पचहतरि नामक अंक हुनक जीवन के बीख घोरि देने छल। 'मिथिला कल्याण एवं विकास परिषदक' बैलेन्स सीट मे पचहतरि पाइक 'सौटेज' रहै जकरा पटवा जी विगत एक सप्ताह सँ ताकै मे ब्याकुल रहथि। अइ सँ पहिने जखन ओ सुरजमल-भूरामल सिंधिक भट्ठा मे नौकरी करैत छलाह त' गिनती मे कमजोर रहबाक दुआरे पचहतरि गोट ईंट्टा टायरगाड़ी पर अधिक लदबा देने रहथि। मुंशी पकड़ि लेने रहनि आ नौकरी सँ निकालि देने रहनि। मुदा हुनकर तेसर दुःख सभ सँ पैघ छल। हुनक पूज्य पिता श्यामसुंदर पटवा पचहतरि बर्खक भ' गेल रहथिन, मुदा धरती त्याग करबाक हुनका मे कोनो टा लक्षण विद्यमान नहि छलनि। परिवारक सभटा

आमदनी कैँ ओ अपन चाँगुर मे दबोचने रहैत छलखिन। रामसुंदर कैँ घरबाली लेल सेनुर-टिकली कीनब सेहो दुभर भ' गेल रहनि।

कोषाध्यक्ष असहनीय दुख सँ ब्रजनंदन बाबू परिचित रहथि। ओहुना अधिक काबिल देवानजी खतरनाक होइत छै। ओ रामसुंदर पटवाक पक्ष लैत सभा मे पहिल बेर अपन मुँह कैँ कष्ट देलनि–"मिसिया भरि भूल-चूक लेल रामसुंदर कैँ एतेक दुर्गति नहि करियनि। हौ अग्निपुष्प, सोलह जोड़ पांच एक्कैस होइत त' छैक मुदा तोँ एहन बुझौअलि किएक पूछि रहल छहुन?"

गोगुल्स कैँ आँगुरक नोक सँ ठेलैत अग्निपुष्प बाजल–"बोल भाइ विश्वकर्मा जे अपन परिषदक संयुक्त मंत्री छथ तनिके बात कहि रहल छी। दाँतक डाक्टर हुनकर सोलह दाँत पहिने उखारि चुकल छलथिन। आइ सकाले हुनकर पांच दाँत कैँ एकहि संगे उखारि डाक्टर हिदायत केलथिन जे बाँकी एगारह दाँत कैँ जल्दिए उखरबा लिअ, नहि त' पेटक आंत मे पेरिया ढुकि क' परफोरेसन क' देत।"

सभा मे बित्तुआ सेहो बैसल छल। ओ कहार जातिक छल, बाजल–"अदौ सँ दलित पर अत्याचार होइत रहलै अछि। कहू त' पांच-पांच दाँत कहीँ एके बेर उखारल जाइक?"

बित्तुआ कैँ बगल मे टुनकी साहु बैसल रहथि। ओ बित्तुआक विरोध करैत कहलनि–"सरकार दलित कैँ आरक्षण दैत-दैत समूचा देश कैँ भूस्सा-थैर बैसा देलक मुदा दलित मूर्खक मूर्खे रहि गेल। हौ चपाट! एकैटा फीस मे पांच गोट दाँत उखरि गेलै तकर नफा दिस धियान नै जाइत छह।"

अग्निपुष्प अनकर वार्तालाप सँ मतलब नहि राखि अपन रिपोट देब जारी रखलक–"बोलभाइ विश्वकर्माक फूलल मुँह ओहिना सभहक मुँह दूसि रहल छल। हुनकर ओहि पीड़ाक घड़ी मे परिषदक मिटिंग द' किछु कहब हम व्यर्थ बुझि वापिस आबि गेली।"

–"तकर अर्थ भेल जे अझुका परिषदक बैसार मे कार्यकारिणीक कोनो टा सदस्य आबि नै रहल छथि।" धन्नु चौधरी निरास भेल कहलनि।

–"हाँऽऽऽहाँ। एना जुनि बाजू यौ धन्नु बाबू। अहाँक परिषदक उपमंत्री आबि गेल छथि।" कतहु सँ कुदैत-फनैत बसुदेवा आयल आ फजले खाँक बगल मे सतरंजी पर बैसि रहल।

जखन 'मिथिला कल्याण एवं विकास परिषदक' कार्यकारिणीक गठन भ' रहल छल तखन बसुदेवा कैँ परिषदक साधारण सदस्य बनाओल गेल छल। मुदा बसुदेवा अड़ि गेल छल। टुमाही प्रखण्डक साफी समुदायक महामंत्री कहूँ साधारण सदस्य बनए? कथमपि नहि। मंत्री पद सँ नीचाक पोस्ट लेबा लेल ओ तैयारे नै भेल।

कतेक नेहोरा केलाक बाद बसुदेवा उपमंत्री बनब स्वीकार केलक।

एत' बसुदेवा कैँ देखिते अग्निपुष्पक भौँ तनि गेलै। ओ अध्यक्ष दिस तकैत बाजल—"श्रीमान, भोरे जखन परिषदक काजे घर सँ निकलली त' अही हरशंखा अठन्नियाँ पर पहिल नजरि पड़ल छल। तखने बुझि गेल रही जे आजुक सभटा काज चौपट होत आ सैह भेल।"

पानापुर मे सदिकाल एकटा चर्चा उधियाइत रहैत छलै जे जँ बसुदेवा कैँ कियो भोरे-भोरे देखि लेत त' ओकरा ओइ दिन अन्न-जलक दर्शन नहि हेतै। बसुदेवा कैँ सभ अठन्नी नाम सँ सम्बोधन करैत छलै आ ओ सभ कैँ खिसिया-खिसिया क' गारि पढ़ैत छलै। एखन भरल सभा मे अग्निपुष्पक कटाक्ष सुनि बसुदेवा कैँ बर्दास्त नै भेलै। ढाबुस बेंग जकाँ ओ छड़पल आ खोंखियाति बाजल—"एँ रौ मुसहरबा! तोरा की होइ छौ जे तौँ बड़ भारी खच्चर छेएँ। आइए तोहर एक-एक हड्डी तोड़ि नै दिऔ त' हम अपन बापक जनमल नहि।"

हाँ, हाँ करैत सभा मे बहुतो लोक ठार भ' गेल। हड़बड़ाइत फजले खाँ आ धन्नु चौधरी सेहो ठार भ' बसुदेवा कैँ रोकैक प्रयास केलनि। बसुदेवा ढठ्ठबला धोती पहिरने छल। मुदा ओकर कुर्त्ता ठेहुन सँ नीचा तक झुलै छलै। ओ जोश आ क्रोध मे अग्निपुष्प दिस बढ़िते रहल। फजले खाँक मुट्ठी मे ओकर धोती आ धन्नु चौधरीक हाथ मे ओकर कुर्ता पकड़ा गेलै। परिणाम ई भेलै जे धोती खुजि क' नीचा खसि पड़लै आ कुर्ता चर्राक सँ दू फाँक मे फाटि गेलै।

ई त' सुकुर छलै जे परिषदक मिटिंग मे ने धीया-पुता छल आ ने महिला, नइं त' जुलमे भ' जइतय। नांगट भेल बसुदेवा के देखि चारुकात पिहकारी पड़' लागल। फजले खाँ बजलाह—"तौबा, तौबा। बिरजी ननन मिटिंग मे बुला के हमरा कौन-कौन चीज का दीदार करा देलकै हौउ अल्ला।" ताहीकाल भीड़ सँ कियो चिचिआयल—"देखहक हौ, देखै जाहक हौ। अठन्नियाँक विक्टोरियाबला पचटकही लटकल छै।"

बसुदेवाबला करतब औरो बेसी नहि भ' सकल। कारण ताहीकाल दोसरे तरहक धमगज्जर शुरू भ' गेल। कतहु सँ बिहारि जकाँ हहाइत बीस-पच्चीस गोट छौंड़ा, धोती आ गंजी पहिरने ओतय पहुँचि गेल। सभटा छौंड़ा अपन-अपन हाथक लाठी पटक' लागल आ एके स्वरे चिचिआयल—रूप यादव जिन्दाबाद, जिन्दाबाद। मटकू यादव मुर्दाबाद, मुर्दाबाद।

रूप यादव भू.पू. विधायक छलाह। हुनका अपनहि भतिजा पछिला एलेक्शन मे पटकनियाँ द' देलकनि। यद्यपि चुनावक एखनहुँ पांच-छह महिनाक बिलम्ब छलै मुदा रूप यादव अपन प्रचार अभियान सबेरे-सकाल शुरू क' देने रहथि। छौंड़ा

सभहक लाठी पार्टी संगहि आरो सभ तरहक तैयारी क'रूप यादव मैदान मे कूदल छलाह। हुनकर जय जय केनिहार एवं तमासा देखनिहारक विशाल भीड़ दुर्गा मंदिर लग खाली स्थान कैँ खचाखच भरि देलक। तुरंते लाउडस्पीकरक मुँह सोझ कयल गेल, बैटरी कैँ तार सँ जोड़ल गेल आ माइक कैँ रूप यादवक आगाँ ठार कयल गेल।

रूप यादव माथ मे बान्हल गमछा कैँ कन्हा पर रखलनि आ माइकक डन्टा कैँ मुट्ठी सँ पकड़ि भाषण देब शुरू केलनि—"सभ सँ पहिने हम दुर्गा माता कैँ नमन करैत छी। तब ब्रजनंदन बाबू कैँ जे मिथिला कल्याण एवं विकास परिषद बनौने हथ, प्रणाम करैत छी। एतय जे उपस्थित जन समुदाय छथ हुनका हम नमस्कार करै छी। हम कर जोड़ि के एतबे निहोरा करब ने हमरा नीक जकाँ चिन्ह, हमर बात कैँ धियान से सुनू। एतुका लोग अर्द्ध-निद्रा मे छथ। इनारे मे भांग घोरल होअय तेना सभ निशा के झोंक मे झखै छथ। किनको की मिथिलाक दुर्दशा दिस नजरि जाइत छनि। समूचा देश उन्नत क' कैँ कहाँ से कहाँ चल गेल। मुदा हमरा सभ पचास-साठ पहिलुका समय सँ घुरमुरिया कटैत छी। एकर दोखी के? अहाँ कहबै नेता। हम कहब नेता के साथे यहाँक पब्लिक। पब्लिक एहन जे जँ हुनका जगेबनि त'ओ लोटा ल' पोखरि दिए बिदा भ' जेताह। कहता जे करान्ती मे खतरा छै, जान-माल जेबाक अंदेशा छै, हमरा छोड़ि दिअ हमरा एखन फुर्सति नै अछि।

—"हम पुछै छी जे बिना करान्तीक किछु मिलैबला छै? बिना बलिदानक आइ तक किछुओ भेटलै हेएँ? तैँ हम ब्रजनंदन बाबू कैँ आग्रह करबनि जे ओ एतुका लोक कैँ चिन्हथु, एतुका पूरबा-पछबा बहैबला हवा कैँ परखथु आ तखन मिथिला के अलग राज्य बनबै लेल परिषद बनाबथु। नहि त' सभटा बखेरा बेमतलबक थिक। एहना हालत मे हिनकर परिषद टिटही जकाँ पयर उठौने-उठौने मरि जायत।

—"एखन जमाना छै प्रजातंत्र के, लोकतंत्र के। तैँ हम कहब जे बिना राजनीति मे घुसियने एक लीटर मटियाक तेल तक नै मिलत, मिथिला राज्य त' दूरक बात भेल। जे पार्टीबला अहाँक बात सुनय, मिथिलाक सर्बांगीण विकास करैक वादा करए, ओकरा मे मिलि जाउ। अगर पार्टीबला अहाँक बात नहि सुनए, अहाँक अवहेलना करए त' एक नव राजनीतिक पार्टी बना क' ओकरा सभ कैँ मुँह-तोड़ जवाब दिऔ। एतुका लोक के जगाउ, ओकरा अपन अधिकार सँ परिचित कराउ, फेर देखिऔ तमासा। एखन देश मे नव-नव प्रान्त कोना बनलै अछि तकर इतिहास के देखिऔ। यौ भाइ लोकन! एखनी त' गठजोड़क राजनीति देश मे पसरल छै। एखन नेता भेल हरबाहा। ओकरा सँ पांच कठ्ठा मेहीं चासबला खेत जोताउ। ओ

जायत कत? जखने नेताक कुर्सी खतरा मे पड़तै त' मिथिला राज्य अपने-आप बनि जायत।

—"हम कोनो पार्टीक बंधुआ नै छी, स्वतंत्र रहि एलेक्शन लड़ै छी। हमहुँ मिथिलाक छी, मैथिल छी। हमरो किछु कर्त्तव्य बनै अछि आ हम सभतरहक बलिदान देबा लेल तैयार छी। मिथिलांचलक आर्थिक उन्नति लेल मिथिला अलग प्रान्त बनै से जरूरी छै आ एकर हम अनुमोदन करै छी। अहाँ सभ हमरा चुनाव मे जीत' मे मदति करु। हम अहि सभा मे जन समुदायक बीच माता दुर्गाक समक्ष शपथ लैत छी जे हम चुनाव जीति जायब त' एसेम्बली मे गरजि-गरजि क' मिथिलांचलक बात उठायब आ सभ तरहक प्रयास करब। तँ ब्रजनंदन बाबू सँ हम आग्रह करबनि, निवेदन करबनि जे हमरा 'मिथिला कल्याण एवं विकास परिषदक' मेम्बर बनाबथु। निकालू रसीद बही आ बाजू कतेक चंदा चाही।"

ताहीकाल सभा मे बैसल भीड़ मे सँ कियो टाहि देलक—"सभ भाइ परेम सँ बाजू ब्रजनंदन बाबूक जय। जय, जय जय। मिथिला कल्याण एवं विकास परिषदक जय। जय, जय, जय। रूप यादवक जय। जय, जय, जय।"

तखने भीड़ मे सँ दोसर कियो चिचिआयल—"अठन्नियाँ उपमंत्रीक जय। जय, जय, जय।"

आ की भ' गेल। खीर मे नोन, मिरचाइक बुकनी फेंटा गेल। एकाएक सभा मे हड़बिर्रो मचि गेल। रूप यादव भाषण दैते रहला, मुदा खीं खीं, खों खों क संगहि हल्ला एतेक ने जबर्दस्त होब' लागल जे कानक परदा फाट' लागल। धन्नु चौधरी ब्रजनंदन बाबूक कान मे चिचियाति कहलनि—"बहुत दिन सँ रूपा यादव अपन परिषद के गिरैक ब्योंत क' रहल छल। आइ त' प्रत्यक्षे भ' गेल। कतेक परिश्रम सँ अहाँ परिषद कैँ ठार केलहुँ, पल्लवित-पुष्पवित केलहुँ आ सम्पूर्ण मिथिलांचल मे एकर यश-प्रतिष्ठाक पताखा फहरेलहुँ से नीक जकाँ हमहीं टा जनैत छी। ई रक्षसबा अपन परिषद कैँ घोंटि जेबा लेल तैयार भ' क' आयल अछि। ई सभ राजनीतिक खेलाड़ी छी। एकरा सभ सँ जतेक हटल रही ततेक नीक। हम विचार देब जे एतय एको क्षण रूकब ठीक नहि होयत। एतय सँ घसकैए मे बुद्धिमानी होयत।"

ब्रजनंदन बाबू मात्र मनोरंजन लेल एवं अपन अहृमक पूर्ति लेल 'मिथिला कल्याण एवं विकास परिषदक' गठन कयने छलाह। मुँह कुरिएबाक लेल परिषद हुनका पर्याप्त अवसर दैत छल। ब्रजनंदन बाबू परिषदक स्थाइ अध्यक्ष रहथि एवं एकर प्रगति सँ कंठ तक संतुष्ठ छलाह। हुनक संसार हुनका लग सँ शुरू भ' क' धन्नु चौधरी लग पहुँचि समाप्त भ' जाइत छल। मिथिलाक समस्या सँ हुनका की

मतलब? रूपा यादव अपन भाषण मे की कहलनि, कोन यथार्थ विषय-वस्तु दिस इशारा केलनि, आजुक परिदृश्य मे ओहि कथनक की महत्त्व छल इत्यादि ब्रजनंदन बाबूक कल्पना सँ परे छल। रूपा यादवक एकोटा आखर हुनका माथ मे प्रवेश कैए ने सकल। ओहुना परिषद राजनीति विहीन छल। ब्रजनंदन बाबू धन्नु चौधरी सँ सहमत होइत उठलाह आ घर लेल बिदाह भ' गेलाह।

भांगक निशा मे बूत्त ब्रजनंदन बाबू जखन अपन दलान पर पहुँचलाह त' हुनक पत्नी कहुआबाली दुरुखे सँ अबाज देलखिन–"हाथ-पयर धो क' सोझे आंगन चलि आउ। भोजन तैयार अछि।"

भीजल पयर जखनहि ब्रजनंदन बाबू पिरही पर रखलनि, पिरही उछटि क' हुनकर छाबा पर चोट केलक। 'आहि, आहि' बजैत ओ चुक्की-माली जमीन पर बैसि गेला आ छाबा कैँ सहलाब' लगला। कहुआबाली लग मे आबि पूछलनि–"बड़ चोट त' ने लागल? ई सरधुआ भांग जे ने करए?"

ब्रजनंदन बाबू फुफकारैत बजला–"हमर मातृक महादेव पांजि मे आ विवाह बेलोंचे मे। जहिए हमर विवाह कहुआ भेल छल आ सियावर राय हमर ससुर बनल छलाह तहिए ततेक ने जोर सँ चोट लागल छल जे आब की चोट लागत? कतेक बेर कहि चुकाल छी चटुआ नहि, आसनी ओछाओल करु। मुदा अहाँ पर एकर असरि होअय तखन ने!" ब्रजनंदन बाबू अपन बैलेन्स ठीक करैत पिरही पर बैसलाह आ गुम्हरैत बजला–"लाउ, थाड़ी लाउ।"

भोजनक मध्य तथा भांगक उचकी मे ब्रजनंदन बाबू पत्नी सँ कहलनि–"भाटा-अदौरी अपूर्व बनल अछि। एक करौछ आउरो दिअ त'।"

कहुआबाली भरल करछु भाँटा-अदौरी थाड़ी मे उझलैत बजली–"अइ भाँटा-अदौरी सँ मिथिला राज्य कोना भेटत? सौंसे गाम भरिक लोक आइ माँउस-भात खेलकए आ अहाँ भाँटा अदौरी!"

ब्रजनंदन बाबू कैँ रंज टिकासन पर चढ़ि गेलनि। ओ अपमान कैँ घोंटि नहि सकला। खायब छोड़ि उठि क' ठार भेलाह आ अँइठें हाथे हाथ उठा क' भीष्म प्रतिज्ञा केलनि–"आइ सँ हम दलाने पर सुतब।"

राति करीब आधा बितल हेतैक की ब्रजनंदन बाबू आंगन आबि पत्नीक कोठलीक केबाड़ पिट' लगलाह। कहुआबालीक निन्न टुटलनि। ओ एक क्षण गुरुर-मुरुर करैत रहलीह–"बुढ़बाक भक त' भुरुकबा उगलाक बाद टूटै छलै मुदा एखन त' अधहो राति ने बितलैए?" ओ केबाड़क छिटकिल्ली खोलैत प्रश्न केलनि–"की भेल? टेहुनक दर्द फेर सँ उखड़ि गेल की?"

ब्रजनंदन बाबू डरे थरथर कँपैत छलाह। ओ सुट द' कोठली मे आबि ओछौन

पर सुटकैत बजला–"एखन हम प्रेतीन कैं देखलौं हेएँ। ओ दक्षिण सँ आबि उत्तर मुँहे गेल हेएँ। ओकर सर्वांग शरीर कारी वस्त्र सँ झाँपल रहै।"

कहुआबली कराहि उठलीह–"जकर अंदेशा छलै सैह भेलै। रंजना घर सँ निकलि गेलीह। हौ बाबा बैद्यनाथ! एतनीटा छौंड़ीक आब की हेतै?"

सही मे ओ प्रेतीन रंजने छलीह। काल्हि तक 'अटकन-मटकन' खेलाइबाली रंजना, सम्पूर्ण गामक सिनेह मे पागलि रंजना, माय-बाप, भाउज-भातिजक दुलार मे सानल रंजना, मात्र पन्द्रह बर्खक विधवा बनलि रंजना अपन कोठली मे जमीन पर बैसलि छलीह। एखन तक हुनकर पयरक अलता, हाथक मेहदी आ आँखिक काजर ओहिनाक ओहिना छल। मुग्धावस्था मे देखल रंजनाक सपनाक प्रतीक कल्पना चावलाक फोटो देवाल पर टाँगले छल।

रात्रि निस्तब्ध रहै। रंजनाक आँखि मे नोरक स्थान पर शून्य भेल विवेक आ दिशाहीन भेल भविष्य भरल छलै। ओ टकटक ताकि रहल छलीह मुदा किछु देखि नहि रहल छलीह। डुबैत आ की डुबल सूर्यक नाम कहूँ भास्कर होअय? भास्कर नामक लड़ाइक सिपाही संग हुनक विवाह भेल रहनि। एकहि मास मे भास्कर कश्मीर मे शहीद भ' गेलाह। तिरंगा मे लपेटल हुनक लाश गाम पहुँचल छल। हजारो मनुक्ख एवं नामी-गरामी राजनीतिक नेताक सोझा मे भास्करक समाधि-स्थल बनल। पुरस्कार आ सरकार दिस सँ अनुदान दुःख सँ द्रवित भेल हुनक पिता स्वीकार केलनि। भास्करक संगहि हुनक पिताक आ हुनक समस्त खानदानक जय जयकार भेल। मुदा रंजनाक खोज-पुछरि कियो ने केलक। बिना कोनो अपराधक रंजना परिवार सँ, समाज सँ तिरस्कृत भ' गेली। सभ किछु कैं ओ देखलनि, सुनलनि, बुझलनि आ सहलनि। किएक त' रंजना कैं अपन भ्राता, आकाश पर अटूट विश्वास छलनि–भैया अवस्से कोनो मार्ग ताकि लेथिन्ह आ रंजनाक दुखक अन्त भ' जेतनि।

मुदा अजुका आकाशक व्यवहार, हुनक मीट'क पोटरी कैं नाला मे फेकब, दुनू हाथे माथ पकड़ि क' बिलखि-बिलखि कानब रंजनाक विश्वास कैं चकनाचूर क' देलक। कहबी छै जे प्रेम कहिओ मरैत नहि अछि। मुदा आकाशक अपन छोट बहिन, रंजनाक प्रति प्रेम रीति रिवाजक चौखटि पर थकुचा गेल, दम तोड़ि देलक। सही मे रंजना आब एसगरि छली, कियो सहायक नहि, कियो मददतिगार नहि।

राति आधा बीति चुकल छलै। हवा मे सिहरन छले। नभ मंडलक सतभैंयाँ तारा दक्षिण कात झुकल धरती कैं निहारि रहल छल। कारी सलबार-कुर्ती पहिरने, कारी ओढ़नी ओढ़ने रंजना आंगन सँ बाहर निकलि गेलीह। रंजना के कियो ने देखलक। देखलनि मात्र ब्रजनंदन बाबू 'मिथिला कल्याण एवं विकास परिषदक' अध्यक्ष।

मुदा ब्रजनंदन बाबू ककरा देखलनि? रंजना आब पानापुरक बेटी थोड़बे छलीह, ओ त' प्रेतीन छलीह।

रस्ता आगाँ बढ़ैत गेल। गामक सीमा समाप्त भेल। खाली स्थान आ चारुकात खेत। तकरबाद दूर-दूर तक पसरल सघन घनगर गाछी। गाछीक मध्य गहिंर मुदा सुखायल धार जे केवल बर्खा ऋतु मे उफान आ उदंड़ताक परिचय दैत छल। धारक दुनू कात श्मशान, जतय लग-पासक पांच-छः गामक मुर्दा जराओल जाइत छल। एखनहुँ धारक तीर पर टटका अचिया सँ ठाम-ठाम धुआँ उठि रहल छलै। स्थान एतेक ने भयानक आ डेराओन जे दिनहुँ मे डेराओन लगैत छल। मुदा रंजनाक मोन आ हृदय सँ डर समाप्त भ' चुकल छल। रंजना एक-दू बेर आकाशक संगे गाछी मे आम तोड़ैक समय आयलि रहथि। दूरहि सँ आकाश ओहि स्थान दिस इशारा करैत कहने रहथिन–"देखिऔ, ओ झमटगरहा बिज्जूक गाछ। ओकरे नीचा दादी कैँ जराओल गेल रहनि।" बलपूर्वक अपना कैँ ठेलैत रंजना ओहि विशाल बिज्जूक गाछक नीचा पहुँचि ठार भेलीह आ हुकरैत बजलीह–"गै दादी! हमर मदति कर। हमरा कह जे हम की करी?"

रंजनाक आँखि सँ पहिल बेर दहो-बहो नोर बहल छलनि। दादीक सिनेह मे डुबल ओ हिचुकि-हिचुकि क' कनलीह। मुदा असहाय भेलि रंजना कैँ दादीक कोनोटा उत्तर नहि भेटलनि। मात्र हुनक पयरक नीचा धरती मे कंपन होइत रहल। प्रशान्त भेल वातावरण मे कतहु दूर सँ कोनो प्रेत बाजल छल–'नारिज्य यत्र पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।' देवता त' नहि, बिज्जू गाछक सुखायल डारि पर बैसल उल्लू जकर मुँह पहिले सँ दुसल रहै मुँह दुसैत फड़फड़ा क' उड़ि गेल।

ओही राति आ करीब-करीब ओही समय मे गामक दोसर नव-वधु कामिनी क्रोध आ क्षोभक बशीभूत दामनी बनि अपन शयन-कक्ष मे ठार छलीह। युग-युग सँ संतप्त नारीक विद्रोह दावानल बनि हुनका भीतर धधकि रहल छलनि। बिदेसरा कुएक खिड़कीक रस्ते कुदि क' पड़ा चुकल छल। कामिनी शराबक निशा मे बेहोश पलंग पर पड़ल अपन पति परमेसर कैँ देखि रहल छलीह। हुनकर चेहरा सँ घृणा टपकि रहल छलनि। कामिनी कैँ अपन पति लेल, सासु-ससुर लेल, पानापुर गामक लेल आ बुझूत' समस्त संसारक लेल आब घृणा छोड़ि किछु ने बाँचल छलनि। ओहने मनोदशा मे कामिनी घर सँ बाहर निकलि गेलीह।

नव कनियाँ कामिनी कैँ गामक रस्ता द' किछु ने बुझल छलनि। जे डगर भेटलनि ओही पर चलैत रहलीह। ओ पति सँ, पतिक गृह सँ दूर, बहुत दूर जेबा लेल डेग उठा रहल छलीह। चलैत-चलैत कामिनी ओतहि पहुँचलीह जतय पहिने सँ रंजना पहुँचलि रहथि।

श्मशान मे पसरल भगजोगनीक पथारक बीच कामिनी कैँ अबैत रंजना देखलनि। नजदिक एला पर एक प्रेतनी दोसर प्रेतनी कैँ चिन्हलनि। मरघट मे जीवन नहि होइत छै, गति नहि होइत छै। समय ठहरल रहै छै, पल मे पल समायल रहै छै। तैँ दुनूक दुख, दुनूक उत्पीड़न मिलि क' एकाकार भ' गेल। आब रंजना आ कामिनी सौन्दर्यक मंदाकिनी नहि रहलीह, चढ़ैत जवानीक ज्वार नहि छलीह, कविक कल्पनाक विह्वल वियोगिनी सेहो नहि छलीह। छलीह समाजक तुलिका सँ रचल मात्र परित्यक्ता आ माया तथा जीवनक अंत, श्मशान मे ठारि विद्रोहक आगि सँ निकलल लपट-लहरि। दुनू कैँ आब दयाक भीख नै चाही, समाजक कर्त्ताक करुणा नै चाही। तखन चाही की? हम आ अहाँ अही समाजक नालीक टभकैत प्राणी छी। रंजना आ कामिनी कैँ 'की चाही' तकर जिज्ञासा करैक अधिकार हमरा सभ कैँ अछि की? नै ने, तखन अनर्गल प्रश्न कैँ पूछि शाश्वत सत्य कैँ अपमान किएक करी।

जखन नसीब संग नहि दिअए त' की हर्ज, जीवनक रस्ते बदलि ली। जामे नसीब लिखनिहार विधाता साकाँक्ष हेताह तामे तक अहाँ कइएक कोस आगाँ बढ़ि गेल रहब, अपन नसीब अपनहि लिखि लेने रहब। विधाता मुँह तकिते रहि जेताह। सैह भेलै। गाछी सँ निकलि रंजना आ कामिनी खेतक आरि पर बैसि रहलीह। सामने थोड़ेक हटि क' एकटा मंदिर छलै।

मंदिर पुरान, जीर्ण-शीर्ण आ करबीरक घनघर जंगल सँ घेरल छलै। मंदिरक पुजारी रहथि गिरि जी। मंदिरक निर्माण केनिहार थोड़ेक जमीन मंदिरक देख-रेख लेल द' क' सुरधाम चलि गेल रहथि। मुदा जमीन सँ आमद बड़ थोड़। तखन पूजा लेल आयल अभ्यर्थी सँ सेहो बड़ आशा नहि। गाम-गाम घुमि क' महादेवक विभूत बाँटि क' गिरिजी कैँ जे सिदहा भेटनि ओही सँ कहुना क' पेट भरैत छलाह। तकर अलाबा एकटा आरो व्यवसाय गिरिजी कैँ रहनि जे कहिओ काल फलीभूत होइत छल। आब प्रत्येक व्यवसाय लेल प्रचार अनिवार्य। ओहि प्रचारक निमित्ते विभूत बँटैत काल गिरिजी कतेको बेर रंजनाक कान मे मंत्र फूँकने छलाह—"अहि विधवाक संसार सँ बाहर निकलि आउ! गाम मे कतेको विधवा छथि। हुनका देखियौन। ने अपन घर आ ने अपन ठेकान। ने अपन देह आ ने अपन प्राण। छी, छी! इहो कोनो जीवन भैले? कोनो राति नुका क' अहाँ मंदिर पहुँचि जाउ। दाइ! हम एहन ठाम, अहाँ कैँ पहुँचा देब जतय सुखक सूर्य कहिओ अस्त नहि होइत छै। हँ यै! हमर विश्वास करु। हम अहाँ पर परोपकार क' धर्मक आदेश पालन कर' चाहैत छी। अहाँक दुखक अन्त भ' जेबे करत तकर आश्वासन दैत छी। जतेक जल्दी होअय अहाँ राति मे मंदिर पहुँचि जाउ।"

बाल-विधवा एवं अन्य कारणें प्रताड़ित नव आ सुन्दर कन्याक उद्धारकर्त्ता छलाह गिरिजी। आर्थिक संकट मे सदिकाल घेरायल रह'बला गिरिजी एक छोड़ि दू गोट चुनमुनियाँ कैँ देखि अत्यधिक प्रसन्न भेलाह। एक निश्चित आमदनी होयत आ पछिला सभटा कर्जा उतरि जैत, मात्र एतबे सोचि हुनकर त्रिपुण्डक नीचा पकलाहा भौं मे हलचल मचि गेल। ओ दुनू कन्या कैँ मंदिरक परिसर मे बनल एकटा कोठली मे ल' गेलाह। डिबिया लेसलनि आ कहलनि–"दुनू दाइक हम स्वागत करैत छी। दुनू चौकी पर आराम सँ बैसू आ विश्राम करु। हम अगिला यात्रा लेल शीघ्रे टायरगाड़ी ल' क' अबैत छी। भोर होइत-होइत अहाँ दुनू ओतए पहुँचि जायब जतए सुख छै आओर सुखेटा छै।"

मुदा ई की? गिरिजीक प्लान पर बज्रपात भेल। कैएक पुस्त सँ अहि धंधा मे लागल गिरिजी कैँ कोनो बाधा नहि भेल रहनि। कहिओ ने कोनो बातक आशंका भेल रहनि आ ने ककरो एकर भनक तक लागल रहै। मंदिरक मुख्य फाटक सँ जखने गिरिजी बाहर भेला सामने मे एक युवती आ दू टा युवक कैँ ठार देखलनि। तीनू युवक-युवती टाइट पेन्ट-सर्ट मे आ पयर मे गमबूट पहिरने छल। डाँड़ मे तीनू कैँ पिस्तौल लटकल रहै। गिरिजी कैँ डरे थरथरी पैसि गेलनि।

ओ तीनू चमेलीरानी द्वारा स्थापित 'लोशजाप'क प्रशिक्षित बिहारी एवं भारती छलीह। सदिखन सचेत रह' बला टुमाही प्रखण्डक महानायक कैँ रंजना आ कामिनीक दशा द' सूचना समय पर भेटि चुकल रहनि। महानायक मल्लिकजी बिहारी निर्मली मे स्थापित बी.एन. भट्टाचार्य उर्फ भाटाजी क मार्फदे चमेलीरानी कैँ संदेश पठौलनि। हुनका आदेश भेटलनि जे रंजना तथा कामिनी कैँ मुक्त करा क' वैद्यनाथ धाम मे स्थापित 'हर हर महादेव' ट्रस्टक मुख्यालय कैलाश कुंज पहुँचा देल जाए। संगहि अहि तरहक अबला कैँ गिरिजी कत' बेचै छथि, अहि काज मे के सभ संलग्न अछि, एकर कार्य पद्यति कोन तरहक छैक आ कतेक दूर धरि एकर जाल पसरल छैक तकर विस्तृत जानकारी प्राप्त क' प्रेषित करथि। तैँ मल्लिक जी बिहारी, साबिर बिहारी आओर मीरा भारती एखन मंदिर पहुँचल रहथि।

गिरिजीक संगहि बिहारी एवं भारती मंदिरक भीतर ओहि स्थान पर पहुँचलाह जतय कोठली मे डिबिया जरैत छलै आ रंजना एवं कामिनी चौकी पर बैसलि छलीह। मीरा भारती रंजना आ कामिनीक लग मे पहुँचि कहलनि–"बहिन दाइ! अहाँ दुनू थोड़बो भय नहि करब। हम सभ अहाँ दुनूक शत्रु नहि मित्र छी।"

कोठलीक सटले बाहर मे मल्लिक जी बिहारी गिरिजी कैँ सोझ प्रश्न केलनि– "गिरिजी, साफ-साफ बताउ। अहि दुनू कन्या कैँ बेचि क' अहाँ कैँ कतेक टाका भेटत?"

गिरिजी कैँ डरे कल्ला बैसि गेल रहनि। रहि-रहि क' हुनक समूचा गात भुलकनि आ कखनहुँ बेहोश भ' खसि पड़ताह तेहन स्थिति मे ओ पहुँच गेल रहथि। आब ओ की बजितथि? मल्लिकजीक प्रश्न सुनलाक बादो बौक बनल रहला।

मल्लिक जी बिहारी फेर हुनका कहलनि—"नइं बाजब त' पछतायब। कियक त' आन अहाँ कैँ जतेक विक्रय मूल्य देत ताहि सँ अधिक मूल्य हम देब। हम व्यापारी छी आ अहि दुनू सुंदरी कैँ किनय चाहैत छी। तैँ अहाँ बिना कोनो भय कयने हिनका सभहक मूल्य बताउ।"

मल्लिक जी बिहारी आन कियो नहि, मात्र व्यापारी छिआह ई जानि गिरिजी कैँ आश्चर्य भेलनि। हुनक शरीर मे रुकल रक्त-प्रवाह मे फेर सँ गति आबि गेलनि। ओ खखसैत कहुना अपन फंसल वाणी कैँ बाहर केलनि—"पुरना समय मे गयाक पंडा जीक संग बेपार करैत छलहुँ। मुदा ओ सभ बइमान भ' गेला। माल चाही उधारी मुदा उधारीक चुकता कहिओ ने केलनि। हुनका सभहक संग कारबार बन्द केलहुँ। लगे पास मे गहिंकी तकलहुँ। ई लोकनि बड़ विश्वासी। लगले हाथे लेलहुँ आ मूल्य चुकता नगदी केलहुँ। आब कहू जे अहाँ सभ के छी? अहाँ सभहक मादे त' कनेको भनक तक हमरा नइं छल। अहूँ सभ अही धंधा मे छी जाहि मे पचकौड़िया अछि! आश्चर्य भ' रहल अछि।"

—"आश्चर्य नहि करु। नीक मालक हम सभ क्रेता छी। पचकौड़िया द' हम किछु नै बाजब। ओ घटिया आ ठक अछि। ओ की ककरो सही-सही मूल्य देलकै हेएँ? मुदा हम सभ तेहन नहि छी। अहाँ दूनूक मूल्य बाजू। हमरा समय कम अछि। हम नगदी मे मूल्य चुका क' माल कीनब।"

गिरिजी थोड़े काल तक चुपे रहला। फेर सँ ओ रंजना आ कामिनी कैँ निहारलनि। अपन चित्त कैँ मजबूत केलनि। हुनक कारी मुखमंडल पर जखन कसाइक कांइयापना नीक जकाँ पसरि गेलनि तखन बजला—"एकक मूल्य भेल उनैस सय टाका। दुनूक क्रय करब त' अड़तीस सय टाका लागत। हम एतबहि मूल्य पचकौड़िया मियाँ सँ पैबतहुँ। तखन बचल टायरगाड़ीक भाड़ा दू सय टाका। पचकौड़िया दू सय टाका दैत की नहि से कहब कठिन अछि। ओ दलाल मे सभ सँ पैघ घाघ अछि। ओ दमड़ी तक कैँ दाँत सँ पकड़ने रहैत अछि। अच्छे! बाजू, अहाँ कतेक मूल्य देब' चाहैत छी।"

—"पचकौड़िया लग माल पहुँचाबै मे टायरगाड़ीक भाड़ा दू सय टाका? बहुत अधिक भ' गेलै यौ गिरिजी?"

—"समय महग भ' गेलै ने। नहि त' तारसराय टीसनक लगहि मे पचकौड़ियाक

ठेकान गुरखा गाँव। एतय सँ आधो कोस दूर नहि हेतैक। तखन करबै की? टायरगाड़ी दोसरक आ अहि तरहक काज मे बेसी बहश कयलो ने जा सकैत अछि।

गिरिजीक उत्तर सँ मल्लिकजी बिहारी कैँ जतबा जरूरी जानकारी चाहैत छलनि से भेटि चुकल छलनि। ओ बटुआ सँ चारि हजार टाका निकालि गिरिजी कैँ गनि देलनि। तकरबाद दुनू कन्या एवं अपन सहयोगीक संग मंदिर सँ बाहर आबि गेलाह।

पंजाबी भाषा मे कहबी छै 'की फर्क पेन्दा'। रंजना आ कामिनी लेल आब की फर्क होअबला छल। जेहने पचकौड़िया तेहने 'लोशजाप'क कार्यकर्ता। दुनूक शरीर सँ आत्मा निकलिए गेल रहनि, बचल छल हाड़-मांसक ठठ्ठर देह टा। एकरा किओ ने नोचए, की फर्क पेन्दा।

❀❀

..2..

—"श्रीमान, सूचित करबाक अछि जे गुलाब मिसिर, सी.एम. राजधानी मे सकाले सकुशल करीब पांच बजे अपन निवास स्थान पर पहुँचि चुकल छथि। एखन दिनुक एगारह बाजल अछि आ गुलाब मिसिरक प्रेस कन्फ्रेन्स चलि रहल अछि। ओ सही मे अज्ञातवास मे गेल रहथि। हुनका किएक अज्ञातवास मे जाए पड़लनि तकर कारण कैँ फरिछा-फरिछा क' कहि रहल छथि। जँ आदेश होए त' हम टी.भी. कैँ ऑन क' दी?"

सूचना देनिहार मैथिली भाषाक दैनिक समाचार-पत्र 'स्वयं प्रकाश'क व्यवस्थापक धर्माकर जी छला। सूचना पौनिहार 'फैक्ट्स फाइंडिंग्स' समितिक अध्यक्ष गणपति चौबे जी रहथि। बिगत पन्द्रह दिन सँ प्रांतक सी.एम. गुलाब मिसिर हेरायल छलाह। हुनकर अता-पता नहि छलनि। प्रांत सँ ल' क' केन्द्र सरकार तक ओझरायल छल। गुलाब मिसिर अपहरित भेल छथि से समाचार छपल छल। मुदा ओकर प्रति 'स्वयं प्रकाश' अखबार मे माउल्डी जे सी.एम.क प्रधान पी.ए. छली, तनिक बयान सेहो छल जे सी.एम. अज्ञातवास मे गेल छथि। केन्द्र मे गठबंधन सरकार बड़ बिकट परिस्थिति मे बाप-बाप डिरिया रहल छल। राष्ट्रपति शासनक प्राबधान रहितहुँ केन्द्र सरकार एकर उपयोग नहि क' सकैत छल। बहुत सोच-विचार केलाक बाद छह विभागक सेक्रेटरी एवं गृह विभागक राज्य मंत्री गणपति चौबेक अध्यक्षता मे एकटा 'फैक्ट्स फाइंडिंग्स' समितिक निर्माण कयल गेल जकरा ई काज देल गेलैक जे ओ प्रांतक राजधानी जा क' वस्तु स्थितिक पता लगाबए आ तदनुसार केन्द्र कैँ सही सूचना पठाबए।

'फैक्टस फाइंडिंग्स' समिति जखन राजधानीक एअर-पोर्ट पर पहुँचल त' प्रांतक तमाम अँग्रेजी आ हिन्दी भाषाक समाचार-पत्रक सम्पादक ओहि समिति कैँ घेरि लेलक आ कहलक जे अपहरण एवं अज्ञातवास बला दुनू समाचार बेगूसराय सँ प्रकाशित होब' बला मैथिली भाषाक दैनिक 'स्वयं प्रकाश' अखबार मे बेराबेरी छपल अछि। तकर अर्थ भेल जे ओहि अखबार कैँ गुलाब मिसिरक रत्ती-रत्तीक खबरि छैक। तँ ओतहि सँ इनक्वाइरी करब ठीक रहत। सभटा अखबार बला मैथिल दैनिकक मात्र किछु महिना मे तीन लाखक सरकुलेशन सँ सौतिया डाह मे

जरि रहल छल। तँ ओ सभ मिलि क' 'फैक्टस फाइंडिंग्स' समिति कँ हुलका क' बेगूसराय पठा देलक।

समिति 'स्वयं प्रकाश' क दफ्तर मे पहुँचि अखबारक व्यवस्थापक धर्माकर जी कँ कसिक' धेलक आ 'सोर्स ऑफ इन्फोरमेशन'क दरियाफ्त केलक। धर्माकर जी संयत रहि अखबारक स्थापना, एकर फिनानसियल अपटूडेट फिगर, बैलेन्स सीट, कर्मचारीक ब्यौरा, सर्कुलेशन इत्यादि सभ किछु चौबे जी कँ देखा क' संतुष्ट केलनि। एकरा संगहि चौहान नामक सहकारिता मंत्रीक वक्तव्य जे सी.एम. क अपहरण संबंधी छल आ माउल्डीक स्टेटमेंट जे अज्ञातवास दिस इशारा करैत छल तकर सी.डी. कँ समितिक आगाँ राखि देलनि। सी.डी. देखि चौबेजी एवं आन-आन सभटा सदस्य वस्तु स्थिति सँ अवगत होइत गेलाह। धर्माकर जी जे महाराष्ट्र प्रांतक लिंगुएस्टीक विषयक प्रकांड विद्वान रहथि तनिका मैथिली भाषा मे बजैत देखि एवं हुनका सँ मिथिलाक गरिमा तथा मैथिल पंडितक इतिहास सुनि चौबे जी अत्यन्त प्रभावित भेलाह। राति मे चौबेजी धर्माकरजी सँ बहुत किछु सुनलनि आ सी.एम.क सोनपुर मेला मे भेल कार्यक्रमक सी.डी. सेहो देखलनि। सोनपुर मेलाक कार्यक्रम सांस्कृतिक कथमपि नै छल। ओ छल अश्लील, कामुकता एवं राजनीतिक भ्रष्टाचारक लीला जकरा देखि स्वयं राजनीति मे रहलाक बादो चौबेजी घोंटि नहि सकला। ओ सी.डी. देखि अत्यन्त पीड़ित भेल रहथि। धर्माकर जी सँ चौबेजी कँ चमेलीरानीक परिचय भेटलनि। राजनीतिक चौपड़ि भांजैबला चौबेजी कँ सहजहि बहुत किछु बुझ' मे आबि गेलनि। राति मे करीब तीन बजे ओ बिछौन पर गेल रहथि। तँ एखन दिनुक एगारह बजे हुनक आँखि खुजल रहनि। धर्माकर जी सँ गुलाब मिसिरक सूचना पाबि चौबे जी किछु बजला नहि, चुपचाप हुनका दिस टक-टक तकैत रहला।

चौबेजी जखन मुँह नहि खोललनि त' धर्माकर जी पुनः कहलथिन—"श्रीमान, हमरा विचारे आब 'फैक्टस फाइंडिंग्स' समिति कँ राजधानी जायब व्यर्थ अछि। गुलाब मिसिर त' भेटिए चुकल छथि आ चुनाव आयोग सेहो अगामी मार्च-अप्रैल मास मे प्रांतक चुनावक घोषणा क' देलक अछि। चुनाव चारि चरण मे होयत आ अझुके तारीख सँ अचार-संहिता सेहो लागू मानल जायत। 'लोक शक्ति जागरण परिषद'क अध्यक्षा चमेलीरानीक आदेश सँ अहाँ सभहक वापसी यात्राक आरक्षण हम क' चुकल छी। पटना सँ दिल्ली जेबाक लेल प्लेन पांच बजे उड़त। एखन त' मात्र साढ़े एग्गारह बाजल अछि। बेगूसराय सँ पटना तकक सफर तीन सँ चारि घंटाक छैक।"

वापस जेबा काल चौबेजी धर्माकरजी सँ कहलनि—"अहि प्रांतक अगिला शपथ

ग्रहण काल हम सशरीर उपस्थित रहब। तखने हमरा प्रजातंत्रक अजूबा सत्य केँ देखबाक अभिलाषा पूर्ण होयत। नव बात अवस्से हेतैक आ ओ लोकतंत्रक हित मे हेतैक। राजनीति मे रहितो हम अपन दायित्य एवं कर्त्तव्य, दुनू लेल जागरूक छी। हमरा एतय आबि क' जे जानकारी भेटल अछि ओ उपलब्धि छी जाहि सँ हम प्रसन्न छी। धर्माकरजी! अहाँ केँ कोटिशः धन्यवाद!"

सही मे गुलाब मिसिर अपन आवास पर पहुँच चुकल छला। हम आ अहाँ जनैत छी जे भीमा मोट बुद्धिक अछि। मुदा गुलाब मिसिर केँ सभ सँ कठिन समय मे वैह कीर्तमूखक दोसर बेटा, भीमा मदतगार भेलैक। ओकरा संग देलकै गुलाब मिसिरक पत्नी ननकिरबी देवीक विश्वस्त ड्राइभर पवन कुमार बटोही। भीमा एवं बटोही अपन-अपन प्राण केँ दांव पर चढ़ा कोना गुलाब मिसिर केँ उद्धार केलकै तकर बृतान्त सेहो सुनिये लिअ।

राति आधा सँ अधिक बीति चुकल छलै। जाड़क प्रकोप अति पर पहुँचि हड्डी तक केँ छेदि रहल छलै। पछिला पन्द्रह दिन सँ भीमा आ बटोही पन्ना भाइ द्वारा अपहरित गुलाब मिसिर तथा माउल्डीक पछोर धेने छल। पन्ना भाइ सन घाघक व्यूह रचना के बुझब आ तोड़ब साधारण काज नहि छल। मुदा भीमाक इच्छा-शक्ति बड़ प्रबल छलैक। कइएक बेरक हेरायल-भुतिआयल भीमा आखिर काल सूत्र ताकिए लेलक। सोन नदीक कछेर। बालु बिकाइबला स्थान सँ मीलो उत्तर एक सुनसान स्थली मे एकटा खपरैल मकान। एकर आगाँ दूर-दूर तक नदीक काते-कात श्मशान। खपरैल घरक आगाँ सुखायल चेराक पैघ-पैघ ढेरी। मुर्दा जरबै लेल चेरा बिकाइत छलै। चेरा बेचैक स्थान पर बैसल छल पन्ना भाइक पठ्ठा, तीन-चारि गोट मनुक्ख, शातिर आ चालाक। सभटा मनुक्खक डाँड़ मे पिस्तौल आ हाथ मे राइफल। सही मे ई स्थान पन्ना भाइक अड्डा छल। ओतहि ओही खपरैल घरक कोठली मे गुलाब मिसिर आ माउल्डी कैद छल।

ककर बापक मजाल छलै जे पन्ना भाइक अड्डा मे दाखिल होइत? मुदा भीमा गुलाब मिसिर सन स्वामीक भक्त, अपन मालिकक दुर्दशा सँ अत्यन्त दुखी, अवसरक तलास मे सावधान छल। अन्हरिया राति आ कुहेस सँ छारल सोन नदीक धार। अवसर भेटलै। भीमा आ बटोही टोहैत-टोहैत कहुना खपरैल घरक पछुआर मे पहुँचल। भीमा खन्ती सँ देवाल मे सेन्ह खोदलक। सेन्ह एतेटा भेलै जे भीमा ओहि मे पैसि सकैत छल। बटोही पहरा पर मोस्तैज रहल आ भीमा सेन्ह बाटे कोठली मे प्रवेश केलक। भीमा पहिने माउल्डी केँ बाहर केलक जकरा बटोही अपन पीठ पर लदलक। तखन भीमा प्रांतक कर्णधार गुलाब मिसिर केँ बाहर अनलक। गुलाब मिसिर आ माउल्डी अचेत बेहोश छलाह। कुर्त्ता-पैजामा मे करोड़ो टाकाक

गर्मी भरल रहैत छैक, मुदा तखन गुलाब मिसिर जाड़ सँ कठुआ क' ठकुआ बनि चुकल छल। गुलाब मिसिर आ माउल्डी यद्यपि मूर्छित भेल मुर्दा तुल्य छल, मुदा दुनूक छातीक धूकधूकी बन्न नहि भेल छलै। भीमा आ बटोही दुनू जीबैत मुर्दा कैँ पीठ पर उठौने करीब दू मील हटल कार तक अनलक आ पछिला सीट पर पाड़ि देलक। कार मे हीटर लागल रहैक। बटोही ओकरा फूल ब्लास्ट मे चालू केलक।

करीब आधा घंटाक बाद गुलाब मिसिरक देह गरमेलै, ओकर आँखिक पिपनी डोललै आ ओ सन्धिपातक रोगी जकाँ बौआय लगलै। मुदा ओकर पटपटाइत ठोर सँ एकोटा स्पष्ट शब्द बाहर नहि भेलै।

गन्हाइत गुलाब मिसिर आ माउल्डीक वस्त्र पर भीमा दोसर बेर ए.डी. क्लोन छीटलक। फेर अपन गलमोच्छाक उपर नाकक फोंफी सँ जबर्दस्ती थोड़ेक दुषित वायु कैँ फी फी क' बाहर केलक। ताही काल ओकर ध्यान बटोही दिस गेलै। ओ धड़फराइत बटोही कैँ हाथे सँ टोकलक आ कार सँ बाहर एबाक इशारा केलक।

दुनू जखन कार सँ थोड़े हटि गेल तखन भीमा फुसफुसाइत बटोही कैँ कहलक– "अएँ यौ बटोही भाइ! अहाँ मेम साहिबाक देह कैँ बड़ बेसी टीप-टाप क' रहल छलहुँ। कहूँ गोरकी चमड़ी वाली चुड़ैल त' ने अहाँ पर सवारी कसि देने छल।"

–"राम, राम। नै यो। हम त' देख' लगलियै जे प्राण अपन स्थान पर बाँचल छै की निकसि गेलै।"

–"प्राण त' छातिए मे रहैत छै। मुदा छाती मे आरो बहुत किछु रहैत छै। ओम्हर सँ ध्यान हटाउ। एकरा सभ कैँ भादव मास मे चौरक करिया माटि सँ भगवान गढ़ने छथिन्ह। एकरा सभ कैँ यातना सहैक असीम शक्ति होइत छैक। जल्दी मे प्राण निकलि जेतै तकर अंदेशा छोड़ि दियौ। दोसर बात जे हमरा अहाँक ड्यूटी बाघक बन्द पिजरा मे अछि। कनियों टा गलती जानलेबा हैत।"

दुनू कारक नजदीक आयल। भीमा बैग सँ पांच सय लीटरबला जीनक बोतल निकालक। बोतलक कॉर्क कैँ तोड़लक आ बोतल गुलाब मिसिरक खुजल मुँह मे उनटा देलक। कतेको दिनक पिआसल गुलाब मिसिर बोतलक आधा अर्क कैँ गटागट पीबि गेल। माउल्डीक मुँह मे सेहो जीन नामक शराब ढारल गेल आ हुनकहुँ नील आँखि मे हलचल मचल।

गुलाब मिसिर थोड़े होश मे आयल। मुदा ओकर मूर्छा नीक जकाँ टूटल नहि छलै। ओ भसियाति बाजल–"आरो तोरा केतना चाही हौउ पन्ना। दू सय करोड़ हम देली आ तूँ ओकरा डकार गैल'। आब हमरा कैँ हलाल कर देबहू ने तइयो तोरा के कुछो ना मिली।"

भीमा एक नजरि बटोही दिस तकलक आ कनखी मारैत कनखिए मे गप-सप

केलक। फेर गुलाब मिसिरक कान मे मुँह सटबैत बाजल–"हजूर, एतय पन्ना नहि अछि। हम अहाँक सेवक, अहाँक बडीगार्ड भीमा बाजि रहल छी। अहाँ पन्नाक कैद सँ बाहर छी। होश करु आ पन्नाक डर कैँ भगाउ।"

गुलाब मिसिर कैँ होश आबि गेलै। माउल्डी सेहो अपन नयनपट खोललनि। भीमाक देल सैन्डवीच दुनू गिरलक आ थोड़े-थोड़े जल पिलक। आब गुलाब मिसिर चकचक फेर सँ सी.एम. छल आ ओकर प्राणेश्वरी गमगम फेर सँ पी.ए.।

भीमा टकटक गुलाब मिसिर दिस ताकि रहल छल। जखने गुलाब मिसिरक नजरि ओकर आँखि सँ टकरेलै ओ प्रश्न केलक–"हजूर, ई सार पन्ना के थिक?"

गुलाब मिसिर चुप। माउल्डी सेहो चुप। भीमा फेर सँ अपन उद्‌गार प्रगट केलक–"हजूर, पछिला पन्द्रह दिन सँ हम आ मलिकानिक ड्राइभर बटोही, अहाँ दुनूक पछोर धेने बौआइत रहलहुँ अछि। हम त' खुलि क' एडमिनिस्ट्रेशनक मदति लिअ चाहलहुँ। मुदा बटोही भाइ हमरा चेतौलक जे इजोत मे आबै मे खतरा छै। बटोहीक कहब छलै जे किछु गुप्त बात तेहन ने छै जाहि सँ हजूर आ मेमसाहिबा, दुनू पैबन्द छथि, बेबस छथि आ पन्नाक गुलाम छथि। तखन पन्नाक गैंग सँ लुक्का-छिप्पी करैत एतय तक पहुँचलहुँ। आइ ओहि श्मशान मे जारनि बेच'बाला स्थान मे पहरा कम भेलैक। ओफा भेटल। सेन्ह काटि क' अहाँ दुनू कैँ बाहर केलहुँ। मुदा पन्ना बला गुथ्थी की छै से बुझि नहि रहलियै अछि? अहाँ सँ ओ दू सय करोड़ टाका कोन बातक लेलक? एकर की रहस्य छै? हजूर, अहाँ प्रांतक वादशाह छी आ पन्ना एकटा मामूली चोर। हम अहाँक बडीगार्ड, अहाँक सेवक, अहाँक नोन खेनिहार। हजूर! हुकूम दिअ त' एखनहि ओहि सारक जीवन-लीला कैँ समाप्त क' दी। की हौउ बटोही, हमर कहब ठीक अछि की नै?"

बटोही की जवाब दितैक, जवाब त' गुलाब मिसिर कैँ देबाक छलै। मुदा ओ मनहिमन किछु आरो बात सोचि रहल छल। जतबा जानकारी भीमा आ बटोही कैँ भ' चुकल छलै ततबा ओहि दुनू कैँ मृत्यु दंड देबा लेल पर्याप्त छलै। मुदा तकर समय एखन नहि छलै। ओ भीमा कैँ चाब्बसी दैत कहलक–"तुम दोनो ने मेरा और माउल्डी का प्राण बचाया है। तुम दोनो बहुत बड़ा इनाम का हकदार हो। इनाम तुम दोनो को अवश्य मिलेगा। आज से तुम मेरा खासमखास बडीगार्ड हो और क्या नाम बताया इसका, हाँ बटोही, मेरा खासमखास ड्राइभर बनकर मेरा कार ड्राइभ करेगा। अभी चुपचाप यहाँ से चलो। किसी को किसी बात की खबर नहीं होनी चाहिए। रात में ही हम वापस अपना घर पहुँचना चाहते हैं।"

खैर, गुलाब मिसिर कैँ की भेलनि, ओ अपन आवास पर पहुँचि की सभ केलनि, तमाम जानकारी अखबार मे छपबे करतै आ अहाँ पढ़ब, रेडियो सँ

एनाउन्स कैले जेतै आ अहाँ तकरा सुनब, टी.भी. पर देखाओल जेबे करतै आ तकरा अहाँ देखब। मुदा हमरा सभ कैँ चमेलीरानी लग चल'क चाही। चुनाव तिथिक घोषणा भ' चुकल छैक। 'लोक शक्ति जागरण परिषदक' अध्यक्ष चमेलीरानी चुपचाप त' नहिए बैसलि हेतीह?

नक्शा उनटा क' देखियौ। हजारीबाग शहरक दक्षिण, हँ, हँ ओही ठाम जतय एकटा पैघ महलक भग्न भेल अस्ति छिड़ियैल पड़ल अछि आ जतय दोसरकात धनपाल पटेलक बड़ी टा ट्रान्सपोर्ट कम्पनीक मुख्यालय छै, ठीक ओही स्थान मे पहाड़ी आ पठारक बीच बनल एकटा पगडन्डी। लोहरदग्गा आ राँचीक मध्य बाटे, गुमला सँ पूवे हटल, उड़ीसा आ छत्तीसगढ़क सीमा कैँ छुबैत, सारंगगढ़, बंगपुर एवं कोकनारक लगहि द' क' चिलका झीलक बहुत दक्षिणे छतपुरा लग ई पगडन्डी बंगालक खाढ़ी मे जा क' समाप्त होइत अछि। ओही पगडन्डी पर चमेलीरानी आ पन्ना भाइ चलल जा' रहल छथि।

दू गोट मोटर साइकिल। मोटर साइकिलक अजीबे मेक। अगिला-पछिला फ्रॉक मे डबल स्प्रीङ्ग। अगिलका मोटर साइकिलक पाछाँ बैसल छथि पन्ना भाइ आ ड्राइभर छथि हुनकर पठ्ठा उग्रदेव। पछिला मोटर साइकिल कैँ ड्राइभ क' रहल छथिन्ह चमेलीरानी आ हुनकर पाछाँ मे बैसलि छथि बेबी सुकोरानी। तैयारी आ माल-असबाब एतेक जेना चारुक लेल दुर्गम एवं खतरनाक यात्रा कइएक दिनक होनि।

पगडन्डी उबर-खाम्हर, पाथर आ ठाम-ठाम पर झाड़-फनूस सँ छारल। रस्ता कखनहुँ चढ़ि क' पठारक कपार पर पहुँचि जाए त' कखनहुँ नीचा उतरैत-उतरैत खाधि मे गोंता खाय लागए। चारुकात पहाड़ी आ जंगल। प्राणी विहीन पगडन्डी मे मोटर साइकिलक भटभटी अबाज पाथर सँ टकड़ा-टकड़ा क' सुनसान स्थान कैँ सनसनौने छल। कतहु-कतहु कोनो चिड़इ पाँखि फर्रफड़ा क' उड़ि जाए त' कतहु खरहा आ की ओहने छोट-छोट जानवर छलाँग मारिक' एक कात कुदि पड़ाए। पैघ जानवरक खतरा। तँ पन्ना भाइक हाथ मे छोट मेकक स्टेनगन तैयार छल।

पगडन्डीक उटपटाँग रस्ता विरान, खतरनाक आ अन्तहीन सीमा तक पसरल। के कहत जे इहो इलाका अपनहि देश मे अछि। हँ यौ, छै ने। आदिवासीक घर-आंगन एवं धरोहर जतय एखन तक आजुक प्रगतिक एकोटा कण, कनिओंटा प्रकाश नहि पहुँचलैक अछि। दूर-दूर पर कतहु-कतहु आदिवासीक गाँव देखाइ पड़ि जाइत छल। मुदा ओहि पगडन्डी पर एखन तक एकोटा मनुक्खक दर्शन नहि भेल छल। ई पगडन्डी त' हजारीबागक विरान इलाका सँ शुरू भ' लगाइत बंगालक खाढ़ी तक चारि पांच सय किलोमीटर मे पसरल छलै। मुदा चमेलीरानी एवं पन्ना

भाइक गन्तव्य स्थान छत्तीसगढ़ राज्य मे जसपुरक समीपे कतहु अज्ञात स्थान भे छलै जे मुस्किल सँ साठि किलोमीटर पर छल।

सात बजे भोर मे ओ लोकनि बिदा भेल रहथि। एखन बारह बजैत आछि। एक ठाम रुकि क' चारु गोटे हाँइ-हाँइ किछु खेलनि, पानि पिलनि आ फेर आगाँ बिदा भ' जाइत गेला। करीब तीन बजे एक स्थान पर पहुँचि पन्ना भाइ सभ कैँ रुकबाक लेल इशारा केलनि आ कहलनि–"अही जगह के झमुआहो बोलल जात ह'। ई सरौं पूरा का पूरा इलाका आदिवासी के बा।" जखने चमेलीरानीक पार्टी झमुआहो पहुँचि ठार भेल तखने बगलक झाड़ी सँ निकलि क' एकटा मनुक्ख हुनका सभहक लग मे पहुँचि गेल। कारी वर्ण, गठल शरीर, डाँड़ मे धोतीक स्थान मे कोनो खास किस्मक छाल लपेटने आ बाँकी सभटा देह उधार। ओकरा हाथ मे लोहाक नोंक बला भाला छलैक। पन्ना भाइ परिचय देलनि–"एकर नाम कॉमटी बा। ई झमुआहो गाम का सरदार हमरा सभ कैँ रस्ता देखबै खातीर आइल बा। अही ठाम मोटर साइकिल के छोड़े के पड़ी। एकर बाद पैदल जाए के होइ।"

कनेकाल तक बिस्कुट आ पानि पिबैक काज भेल। ताही बीच पन्ना भाइ आ कॉमटी मे बिचित्रे बोली मे गप-सप होइत रहल। तखन कॉमटी अपन ठोर कैँ गोल क' सीटी बजौलक जे चारुकात पसरल जंगल आ पहाड़ी कैँ झनझना देलक। तीन गोट मनुक्ख ओहि थरथराइत जंगल सँ आबि क, ओतय ठार भ' गेल। सभहक काया आ वस्त्र कॉमटी जकाँ छलै। कॉमटी अपन बोली मे आदेश देलकै। सभ किओ ओतए सँ आगाँ बिदाह भेलाह।

सभ सँ आगाँ भाला उठौने कॉमटी, तकर पाछाँ दू गोट आदिवासी दुनू मोटर साइकिल कैँ गुरकबैत बिदा भेल। तकरबाद चमेलीरानी, पन्ना भाइ, बेबी सुकोरानी आ उग्रदेव। सभहक पाछाँ एकटा आदिवासी सभटा असबाब कैँ लत्तीक रस्सी मे बान्हि पीठ पर लटकाक'चल' लागल। पन्ना भाइक हाथ मे एखनहुँ स्टेनगन छलनिहें।

पहाड़ीक ओहि पार उतार पर बसल आदिवासीक गाँव। खर-खरही सँ बनल ओकर सभहक घर पहाड़ीक ढलाउ पर नीचा-उपर छिड़िआयल छल। प्रत्येक घरक आगाँ आदिवासी महिला-पुरुष आ तकर चेंगना-मेंगना अर्द्धनग्न परिधान मे भय एवं आश्चर्य मिश्रित भाव सँ हिनका सभ कैँ निहारि रहल छल। सभटा घरक आगाँ एक-एकटा कुकुर बान्हल रहै। कुकुरक नश्ल जे हौउक मुदा ओकर आकृति भयानक आ आँखि लाल-लाल छलै।

चमेलीरानीक टोली चलैत रहल। आदिवासीक गाम समाप्त भेल। टोली पठार मे बनल एकटा खोह लग पहुँचल। कॉमटी मशाल जरौलक आ खोह मे प्रवेश

केलक। तकर पश्चात सभ कियो बेराबेरी खोह मे प्रवेश केलनि। खोह सुरंग जकाँ छल जे मानव नहि प्रकृति द्वारा निर्मित छल। मशालक क्षीण इजोत मे सभ चलैत रहला। खोह मे रस्ता नीचा दिस झुकल जा रहल छलै। जखन सभ कियो ओहि सुरंगक अन्त मे पहुँचल त' दिनक प्रकाश छलैहे, कारण सूर्य अस्त नहि भेल रहथि, अस्त होयबा पर रहथि।

आब सभ किओ एकटा घाटी मे छला। घाटी चारुकात सँ पहाड़ी सँ घेरल छलै। एक बट्टा चारि किलोमीटर व्यास मे घाटी गोलाकार पसरल छल। घाटीक बीच मे नहि काते-कात अनगिनत खोह आ कन्दरा जाहि मे अनेकों महिला-पुरुष कार्यरत रहथि।

कॉमटीक अगुआइ मे चमेलीरानी आ पन्ना भाइ अपन ग्रूप संगे घाटीक एक खास स्थान पर पहुँचैत गेलाह। ओतुका कन्दरा मे मानव निर्मित छोट-छोट बहुतो कोठली छलै। कॉमटी आ ओकरा संग आयल आदिवासी सभटा असबाब आ मोटर साइकिल कैँ ओतय पहुँचा अन्तर्ध्यान भ' गेल।

एकटा महिला अयलीह। महिलाक रूप-रंग आ वस्त्र सभ किछु आदिवासी महिलाक अनुरूपे छल। ओ चमेलीरानी तथा बेबी सुकोरानी कैँ एकटा खास कोठली मे ल' गेली। कोठली छोट मुदा सजल। पलंग, सोफा, टेबुल, ड्रेसिंग टेबुल आ एटैच्ड बाथरूम जेना की नीक-नीक होटल मे रहैत छैक। तत्काल हुनका सभहक असबाब सेहो ओतय पहुँचि गेल। संग मे आयलि आदिवासी महिला चमेलीरानी सँ अंग्रेजी भाषा मे कहलनि—"अहाँ दुनू लेल हम पानि आ चाह ल' क' आबि रहल छी।"

चमेलीरानी आ बेबी सुकोरानी आदिवासी महिला के अँगेजी भाषा मे बजैत सुनि आश्चर्य सँ एक दोसरा दिस तकलनि मुदा चुपे रहली। आदिवासी महिलाक गेलाक बाद चमेलीरानी पलंग पर ओंगठि गेलीह आ बेबी सुकोरानी सोफा पर पसरि गेलीह। ताही काल दू गोट छौंड़ी ओहि कोठली मे पहुँचि गेलि।

दुनू छौंड़ीक वयस आठ-नौ बर्खक रहल हेतैक। करिया शंख मर्रमर्र जकाँ स्वच्छ झलकैत दुनूक गोल-गोल चेहरा, खुजल आ लम्बा केश, आदिवासीक अनुरूप परिधान आ दुनूक पयर मे घूघरु लागल चाँदीक पायल। एकटा छौंड़ी चमेलीरानी लग पहुँचि हुनक पयर जाँत' लागलि। दोसर बेबी सुकोरानीक बगल मे हुनकर देह मे सटिक' बैसि गेलि। दुनू छौंड़ी एक दोसरा सँ हटल रहितहुँ अपना मे बरोबरि चों चों बला बोली मे गप-सप क' रहलि छलि। ने तामिल आ ने तेलगू। ने कन्नड़ आ ने मलयालम तखन छलै कोन भाषा जाहि मे दुनू छौंड़ी बाजि रहलि छलि? आब बुझल। ई छल पाथर पर फुलायल फूलक सुगंधि सँ सुभाषित भाषा जकर खनकैत

ध्वनि मे सितारक सरगम भरल छलै। बजैत काल दुनू छौंड़ीक काजर पोतल आँखिक पिपनी खुजै आ बन्द भ' जाइत छलै।

जखनहि दुनू छौंड़ी ओहि कोठली मे प्रवेश कयने छलि चमेलीरानी आ बेबी सुकोरानी तखनहि दुनू सँ आकर्षित भ' गेलि छलीह। दुनूक बोली मे चिड़ैक चुनचुनाहटि आ मिठास भरल छलै। चमेलीरानी आ बेबी सुकोरानी कँ रस्ताक थकान आ कष्ट मेटा गेलनि। अपना लग मे बैसलि छौंड़ीक केश कँ बेबी सुकोरानी सहलाबय लगलीह। छौंड़ी हुनका मे आरो सटि गेलि। ओहन विकट आ विरान स्थान मे दुनू छौंड़ीक सौन्दर्य मे तरासल मूर्तिक आभा देखि चमेलीरानी आ बेबी सुकोरानी विभोर भ' गेलीह।

आदिवासी महिला पानि आ चाह ल'क' अयलीह। पानि आ चाह कँ टेबुल पर रखैत कहलनि—"अहाँ दुनू फ्रेस भ' जाउ। अहि स्थान पर संध्या होइत-होइत खायब-पियब तथा आन-आन सभटा काज समाप्त भ' जाइत छै। राति भरि कोनो तरहक प्रकाश नहि होअय तकर ध्यान राखल जाइत छै। कारण जान' चाहब? एतुका क्रिया-कलाप एवं साम्यवादी सिद्धान्तक दुश्मन अछि एतुका सरकार। आकाश मे सदिकाल हेलीकॉप्टर घुमैत रहैत अछि। कनियों प्रकाश भेला सँ हेलीकॉप्टर सँ बम खसबेटा करत। तखन हेतै की? कल्पना करब निरर्थक, यथार्थ बुझि लेब पर्याप्त होयत। प्राण दे आ कि प्राण ले बला माहौल सदिखन बनल रहैत छै। एतुका लोक कँ मृत्यु सदिकाल ल'ग मे रहैत छै। तँ सावधानी अनिवार्य छैक। करीब एक घंटाक बाद अहाँ सभहक भोजनक समय भ' जायत। सुतै सँ पहिले दूध पिबाक नियम छै। समय पर दूध हम पहुँचा जैब।"

आगुन्तक आदिवासी महिला पहिने आयलि दुनू छौंड़ी सँ ओही चुनचुनियाँ बोली मे किछु कहलनि। दुनू छौंड़ी सहटि क' हुनका लग पहुँचि गेल। तीनू जखन कोठली सँ बाहर निकल' लगलीह चमेलीरानी ओहि महिलाक लग मे पहुँचि अँग्रेजी मे कहलनि—"अहाँक अँग्रेजी बजैक कला मे चमत्कार अछि। 'लूसिड' संगहि 'प्रिपोजिशन'क बिहारि। सुनै मे बड़ नीक लागल। एहन अँग्रेजी त' वैह बाजि सकैत छथि जिनकर मातृभाषा अँग्रेजी होअय तथा जिनकर शिक्षा इंगलैंडक कोनो नामी विश्वविद्यालय मे भेल होअय। जँ अहाँ कँ असोकर्ज नहि होअय त' हम अहाँक परिचय जान' चाहब। की अहाँ क्रिश्चन छी?"

—"नहि, नहि, हम क्रिश्चन नहि छी। हम साम्यवादी छी। धर्म मे हम सभ विश्वास नहि करैत छी। हमरा अपन परिचय देबा मे कोनो असुविधा नहि होयत। मुदा एखन नहि। साँझक भोजन समाप्त भेला पर जखन हम दूध ल' क' आयब तखन एक घंटा, दू घंटा अर्थात अहाँ जतेक चाहब हम अपन परिचय देब। अहाँ

जे किछु जान' चाहब से सब कहबा मे हमरा प्रसन्नते हैत।"

चमेलीरानी ओहि महिला सँ फेर निवेदन केलनि–"ठीक। मुदा अहाँ जखन आयब त' अहि दुनू चुलबुलिया कँ सेहो नेने आयब। एकरा दुनू कँ देखि हमरा दुनू कँ सहजहि सुकुन भेटैत अछि। अहाँ हमरबात कँ अवस्से मोन राखब तकर हम आशा करैत छी।"

आदिवासी महिला एक क्षण लेल दुनू छौंड़ी कँ निहारलनि। ममता उमंग सँ उमड़ि क' दुनू छौंड़ी पर बरसि गेल। तीनू कोठली सँ बाहर चलि गेलीह।

चमेलीरानी एवं बेबी सुकोरानी फ्रेस भ' क' बाहर अयलीह। पन्ना भाइ आ उग्रदेव पहिने सँ ठार छला। सभ एकटा हॉल मे पहुँचला। करीब पचास गोट आदिवासी महिला-पुरुष पांत मे बैसल छल। सभहक आगाँ पात, पात पर भात, पिआज आ नोन परसल छल। एक कात मे आसनी जकाँ किछु ओछाओल रहैक। ओतहि चमेलीरानी, बेबी सुकोरानी, पन्ना भाइ तथा उग्रदेव कँ आग्रह पूर्वक बैसाओल गेल। सभहक आगाँ धोअल-पोछल पातक थाड़ी, बाटी राखल गेल। थाड़ी मे भात आ विभिन्न बाटी मे क्रमशः तीतर, बटेर एवं खरहाक माँउस परसल गेल। माँउस चारकोल पर पकाओल गेल छल तँ रोस्टेड माँउस मे भूख जगबै बला सुगन्धि भरल छल। पन्ना भाइ चमेलीरानी कँ सम्बोधित करैत कहलनि–"बिटिया, अपन देश मे राजा, महाराजा अइसन पदार्थ खैलन। अब अहि जंगली जात कँ ई भोग प्राप्त भइल हेएँ। एकरा पकबै का तरीका ई सभ सीख गैलन हेएँ। ई बड़ा निमन होत बा। हमरा से पूछ कँ एकर तैयारी भेल ह'। चख कँ देखीं, कैसन बनल बा?"

सही मे भोजन अपूर्व स्वादिष्ट आ रुचिगर छल। परसीया केनिहारि वैह अँग्रेजी बाज' बाली महिला छलीह। उग्रदेव चारि बेर परसन लेलक। बेबी सुकोरानी कँ लाज भेलनि, ओ परसन नहि लेलनि।

खेबा काल एकटा भव्य पुरुष ओतय अयलाह। हुनक आयु पचास-पचपन बर्खक रहल होयत। हुनक चौरगर ललाट सँ चमचमाहटि पसरि सहजहि सभहक ध्यान अपना दिस आकृष्ट करैत छल। अतिथि कँ सत्कार कर' क उद्देश्य सँ ओ सज्जन ओतय आयल छलाह। पन्ना भाइ सँ नमस्कारक आदान-प्रदान भेल, मुदा दुनू मे सँ कियो एको आखर बजला नहि। भोजन समाप्त भेल। चमेलीरानी आ बेबी सुकोरानी वापस अपन कोठली मे अयलीह।

पहिने चनचनाइत वैह दुनू छौंड़ी आयलि आ बेबी सुकोरानीक दुनू कात सोफा पर सटि क' बैसि गेलि। दुनूक व्यवहार उन्मुक्त एवं बाल सुलभ छल जेना दुनूक परिचय हिनका सभ सँ बहुत दिनक होअय। तकरबाद अँग्रेजी बाजैबाली महिला दू

गिलास दूध लेने अयलीह। ओ दूधक गिलास टेबुल पर रखलनि। कोठली मे पहिने सँ राखल कारी पर्दा कैँ दरबज्जा लग टँगलनि आ एकटा लैम्प जड़ौलनि। लैम्पक इजोत मध्यम छल, मुदा एतेक अवस्से छल जाहि सँ एक दोसरा कैँ देखि सकैत छल।

बिना कोनो औपराचिकताक ओ महिला चमेलीरानीक पलंग पर बैसली आ कहब शुरू केलनि–"हमर नाम भेल पद्मा। खेबाकाल जे अहाँ सभहक लग भद्र पुरुष आयल छलाह ओ भेलाह राजू। पूरा नाम परम वीर सेठ्ठी राजू हमर पति छथि। अहि दुनू छौंड़ीक नाम लोपामुद्रा आ लोमहर्षिणी अछि। लोपा आ लोमा हमर बेटी थिकी। ई दुनू जौआँ जनमलि आ एखन दुनूक वयस आठ बर्खक छैक। हम अहि कन्दरा कहू आकी खोह मे पछिला बीस बर्ख सँ रहि रहलहुँ अछि। आइ तक अइ स्थान मे अतिथि नहि आयल छला। अहाँ लोकनि हमर अन्हार संसारक पहिल अतिथि थिकहुँ। ताहू पर सँ अहि भागक एरिया कमान्डर जे बुझू त' सुप्रिम कमान्डरे छथि आ जिनकर नाम छनि कोठण्डा पाणि, तनिक स्पेशल आदेश जे अतिथिक सत्कार नीक जकाँ आदर संग कयल जानि, सुनि आश्चर्य भेल छल। हम जीवन मे कहिओ अतिथि-सेवा कयने नहि छलहुँ। जे त्रुटि रहि गेल होअय तकरा क्षमा क' देल जेतै।"

पद्मा एकहि सांस मे धाराप्रवाह एतेक बात कहि' चुप भ' गेलीह आ विशेष अनुराग सँ अपन दुनू बेटी, लोपा एवं लोमा कैँ निहार' लगलीह। ताबे तक बेबी सुकोरानी एगोक केश कैँ ककबा सँ थकरि अपन लेडी बैग सँ क्लिप निकालि केश मे लगबैत रहथि। मानि लिअ ओ लोपा छलीह। लोमा चुपचाप पूर्ण मनोयोग सँ बेबी सुकोरानीक अद्भूत कारीगरी जे ओ कहिओ देखनहि ने छलि, देखि रहल छलि।

चमेलीरानी पलंग पर ससरि आगाँ बढ़ि पद्माक दुनू हाथ कैँ स्नेह सँ पकड़ि क' कहलनि–"अहाँ अन्यथा नहि सोचू। अहाँक व्यवहार अत्यन्त कोमल आ विनम्र अछि। हम त' अहाँक अतिथि-सत्कारक मधुर भाव सँ अप्लावित छी। अहाँ सन विशिष्ट चरित्रक नारीसँ अहि उजार स्थान मे समागम होयत तकर त' कल्पनो ने छल। हमरा अपन सौभाग्य सँ अपनहि इर्खा भ' रहल अछि। अहाँ सँ भेंट क' हमरा अनमोल उपलब्धि प्राप्त भेल अछि। अहाँ कैँ कतेक धन्यवाद दिअ। एकटा बात कहू जे की अहाँकैँ राजूक संग प्रेम विवाह भेल अछि?" पद्मा जवाब देलनि–"हमर पिता इंग्लैंड मे एफ.आर.सी.एस. कर' गेल रहथि। पढ़ाइ समाप्त क' ओहि ठामक बासी बनि गेलाह। हमर जन्म इंग्लैंडे मे भेल। शिक्षा-दीक्षा सेहो ओतहि भेल। हम लंदन विश्वविद्यालय सँ अँग्रेजी तथा इतिहास विषय मे स्नातक भेलहुँ। हमर

माता-पिता कर्नाटक प्रांतक छथि। हुनक मातृ-भाषा कन्नड़ छनि। तँ हम कन्नड़ आ अँग्रेजी भाषाक ज्ञाता छी। एतय ऐलाक बाद अहि ठामक आदिवासी बोली त' ओहिना सिखा गेल।

—"परम वीर सेठ्ठी राजूक पिता लैंड-स्केप इन्जीनियर छलाह। लैंडस्केप इन्जीनियर कँ अपना देश मे माली कहल जाइत छैक। अहि विषयक ज्ञाता कँ यूरोप मे बड़ आदर होइत छैक। राजूक पिता पेरिस मे घर कीनि अपन परिवार कँ ओही ठाम रखने रहथि। अपने ओ यूरोपक विभिन्न देशक खरबपतिक बगीचा कँ सजा क' प्रचूर धन कमाइत छलाह। राजू फ्रांस मे जनमला आ ओतहि शिक्षा प्राप्त केलनि। जखन ओ फिजिक्स विषय मे पेरिस विश्वविद्यालय सँ प्रथम श्रेणी मे प्रथम स्थान प्राप्त केलनि त' सम्पूर्ण यूरोपक अखबार मे हुनक नाम एवं यशक चर्चा छपल। ईंगलैंड मे सेहो राजूक स्वागत समारोह भेल छल। ओही ठाम पहिले-पहिल हम फिजिक्सक टॉपर राजू कँ देखलहुँ आ गप-सप केलहुँ। विदेश मे रह'बला भारतीय कँ अपन देश, अपन देशक लोक एवं अपन देशक संस्कृति सँ विशेष अनुराग भइए जाइत छैक। राजूक कृतिमान उपलब्धि हमरा हुनका प्रति आकर्षण की भेल जे हम पेरिस जा'क' कतेको बेर हुनका सँ भेंट केलियनि। इएह भेंट अन्त मे प्रेम मे परिणत भ'गेल। हमरा दुनूक माता-पिताक रजामंदी सँ हमर आ राजूक विवाह भेल।

—"एखन तक जीवनक आगामी कार्यक्रम द' ने राजू किछु सोचने रहथि आ ने हमहीं कोनो प्रोग्राम बनौने रही। टटके विवाह भेल छल। विवाहित जीवनक आरम्भ मे जे 'थ्रील' अथवा उमंग होइत छैक ओहि मे सराबोर हम आ राजू विभिन्न देशक भ्रमण क' विभिन्न तरहें 'हनीमून' मनबैत आनन्द मे जीवन बिता रहल छलहुँ। ताही समयमे एकटा नव बात भेलै। वैह नव बात हमर आ राजूक जीवन दशा कँ मोड़ि देलक आओर हमरा दुनू कँ अहि पतालपुरी मे पहुँचा देलक।"

एतबा कहि पद्मा चुप भ' गेलीह। अपन बीतल संसार मे ओ किछु काल तक उब-डुब करैत रहलीह। फेर जेना होश करैत आगाँ कहलनि—"अहाँ जनैत छी जे दिल्ली मे प्रसिद्ध मुगल गार्डेन अछि। रख-रखावक अभाव मे ओकर दशा दयनीय भ' गेल रहैक। मुगल गार्डेन भेल देशक सम्मान एवं प्रतिष्ठाक प्रतीक। मुगल गार्डेनक दशा सुधारक लेल अन्तरराष्ट्रीय टेंडर निकललै। राजूक पिता सेहो ओहि टेंडर कँ भरलनि आ अन्ततोगत्वा हुनकहिं ओ काज भेटलनि। ओ भारत जएबा लेल तैयार भेलाह। राजू कँ एकर खबरि भेटलनि। ओ भारत अपन देश आ विशेष क' अपन सय बर्खक जीबैत दादी कँ देखबाक इच्छा कँ पिता लग रखलनि। पिता राजी भेलथिन्ह आ पिताक संगे ओ भारतक धरती पर पयर रखलनि।

—"राजूक पिता त' मुगल गार्डेनक काज मे ओझड़ा गेला। मुदा, राजू अपन पिताक जन्म स्थान हुनक गाँव पहुँचलाह। सिकन्दराबाद सँ बेंगलुर जायबला 'हाइ-वे' क कात मे आंध्र प्रदेशक धर्मावरम जिलाक अन्दरे राजूक पिताक गाम भेल पटाधम। राजू जखन पटाधम पहुँचलाह त' सन्न रहि गेला। हुनकर अन्तर्रात्मा तक सिहरि उठलनि। पृथ्वी पर दरिद्रक पहिले-पहिल दर्शन राजू कैँ अपनहि गाम मे भेलनि। एक दिस यूरोपक वैभव, खास क' पेरिसक विलासिता आ दोसर दिस पटाधमक गरीबी। गामवासीक दशा एवं विवशता राजू कैँ झिकझोरि देलकनि। कत' विदेशक शिक्षा, फिजिक्स (भौतकी) विषयक टॉपर राजू विक्षुब्ध, लाचार भेल गाम मे टहल' बुल' लगला।

—"पटाधम गाँव मे कृष्णन मावलंकर नैयर नामक एकटा वृद्ध रहैत छलाह। ओ ओही गामक मिडिल स्कूलक रिटायर्ड शिक्षक छला। यद्यपि ओ वृद्ध रहथि, शरीर सँ रुग्न रहथि मुदा हुनक वाणी मे ओज रहनि आ साम्यवादी विचारक चिनगारी बरसैत रहनि। राजू नैयरक परिचय परिधि मे अयलाह। ओतहि कोठण्डा पाणि सँ हुनकर भेंट सेहो भेलनि। कोठण्डा पाणि नैयरक सब सँ अधिक देदीप्यमान शिष्य मे सँ छलथिन। पाणिक हृदय मे पूंजीपतिक समूल नाशक साम्यवादी योजनाक टेमी सदिकाल प्रज्वलित होइत रहैत छलनि। नैयर एवं पाणिक सत्संग मे राजू कैँ अहिबातक अटूट विश्वास भ' गेलनि जे पश्चिमी देशक पूंजीपति द्वारा शोषित अपन देशक एवं लोकक रुग्नावस्थाक निदान मात्र साम्यवादी द्वारा भ' सकैत अछि। ओ कोठण्डा पाणिक अनुशासित सिपाही बनि प्रतिशोध स्वरूप विद्रोहक झंडा उठा लेलनि आ घुमिक' पेरिस नहि गेलाह। राजूक प्रेम-फांस मे फंसल हमहुँ एतय आबि गेलहुँ आ एतुके बनि क' रहि गेलहुँ।

"सम्प्रति राजू झमुआहो मे स्थापित नक्सलवादीक विध्वंशकारी योजनाक आयुधक मुख्य इनचार्ज छथि। बन्दूक, राइफल, पिस्तौल, ग्रेनेड, बम आदि आयुधक निर्माण, बाहर सँ आयल आयुधक जाँच एवं आवश्यक सुधार सभ किछु राजूक दिशा-निर्देश मे होइत अछि आ कोठण्डा पाणिक अदेशानुसार ठाम-ठाम पर पठाओल जाइत अछि।"

पद्मा कैँ चुप होइतहिं चमेलीरानी प्रश्न केलनि—"ई कोठण्डा पाणि के थिकाह? हिनक जीवन-परिचय द' की अहाँ कैँ बुझल अछि?"

चमेलीरानीक प्रश्नक जवाब देबा लेल पद्मा मुँह खोललनि। मुदा ओ मुँह बौने रहि गेलीह। कारण जे ताही काल हेलिकैप्टरक अबाज ओतय पहुँच लागल। पद्मा सभ कैँ चुप रहबाक इशारा केलनि आ झटपट जरैत लैम्प कैँ मिझा देलनि। हेलिकैप्टरक अबाज मे तेजी होइत गेलै। आब ओ ठीक झमुआहोक उपर पहुँच

गेल छल। कक्ष मे दम सधने सभ गोटे चुप रहला। लोपा एवं लोमा कँ पहिने सँ एकर ज्ञान छलै किएक त' दुनू शान्त आ स्थिर भ' गेलि छलि।

हेलिकैप्टर आब दूर चलि गेल छल। ओकर अबाजो क्षीण होइत-होइत मेटा गेलै। पद्मा एकटा पेन्सिल टर्च लेसलनि। लैम्प कँ फेर सँ जरौलनि आ चमेलीरानी लग मे बैसैत कहलनि—"पहाड़ी प्रदेश मे प्रकाश एवं आवाजक 'भैब्रेशन' बड़ अधिक होइत छैक। हेलिकैप्टर मे अहि 'भैब्रेशन' कँ 'रिसिभ' करैक यंत्र फिट रहैत छैक। कनियों टा संशय भेला पर बम खसबे टा करत। अहि तरहक बमबाजी मे भेल नोकसान समाचार मे नहि अबैत अछि। समाचार मे त' केवल नक्सली द्वारा कयल गेल संहारक खबरि टा अबैत अछि। तँ हम 'प्रीकॉशन' लेलहुँ।"

फेर पद्मा चमेलीरानी सँ कहलनि—"अहाँ कोठण्डा पाणि द' प्रश्न कयने रही। हुनका द' हमरा जतबा बुझल अछि से हम कहैत छी। कोठण्डा पाणिक जन्म सेहो पटाधम नामक गाँव मे एक अत्यन्त निर्धन परिवार मे भेलनि। पाणि नेनहि सँ कुशाग्र बुद्धिक छथि। कृष्णन मावलंकर नैयर आरम्भे सँ हुनकर गुरु रहला आ वैह हिनक शिक्षा-दीक्षा केलनि। पाणि 'स्कॉलरशिप' प्राप्त करैत अपन पढ़ाइ पूर्ण केलनि। हुनक पहिल नियुक्ति भाभा इन्स्टिच्युट मे भेल छल। फिजीक्सक दू टा विषय 'साउन्ड' एवं 'लाइट' पर हुनक कएकटा लेख विश्वविख्यात जर्नल मे छपल। तँ शीघ्रहि 'माइक्रोवेभ' नामक विषय मे हुनका फेलोसिप भेटि गेलनि आ पाणि अमेरिकाक स्टैनफोर्ड मे उच्च शिक्षा लेल चलि गेलाह। ओतय अपन रिसर्च पूर्ण क' ओ 'स्पेश रिसर्च'क लेल 'नासा' मे 'ज्वाइन' केलनि।

—"मुदा कृष्णन मावलंकर नैयरक वाम पंथी दीक्षा हुनक मस्तिष्क मे बीज बनि सदिकाल कायमे रहल। ताहू पर सँ अमेरिकाक धन-सम्पति संसार कँ शोषित करबाक ओकर शस्त्र-व्यापार, विलासिता, अल्कोहलिज्म, प्रोनोग्राफी इत्यादि एक कात आ मातृ-भूमिक दरिद्रता दोसर कात, पाणि कँ चैन सँ रह' नहि देलकनि। पूंजीपतिक प्रति असीम घृणा हुनका मे क्रोधक बंबडर आनि देलक। अमेरिकाक सुख-सुविधा कँ त्यागि कोठण्डा पाणि वापस अपन देश मे नैयरक शिष्यत्व मे फेर सँ आबि गेलाह। पाणि कार्ल-मार्क्स कँ अपन इष्ट बनौलनि आ नैयरक योजना कँ फलिभूत करैत कट्टर वामपंथी मार्ग अपनौलनि। बाद मे हमर पति परम वीर सेठ्ठी राजू संग मिलि की सभ केलनि, की सभ क' रहल छथि से त' प्रत्यक्षे अछि।

—"प्रारम्भे मे राजूक इच्छानुसार हम सभटा काज सम्हारि लेलहुँ। राजूक प्रति प्रेम, साम्यवादी नामक नव विचारक स्फूरण, सर्वहारा मानवक सेवाक चैलेन्ज हमरा भीतर तेहन ने भाव भरि देलक जे हम आन किछु द' सोचिए ने पौलहुँ। तेज धार मे एकटा तृण बनि बहैत रहलहुँ। मुदा जखन लोपामुद्रा एवं लोमहर्षिणीक जन्म

भेलै, खास क' जखन दुनू पैघ होब' लागलि हमर विचारधारा कैँ जबर्दस्त धक्का लागल। मस्तिष्कक जेना कोनो बंद कपाट खुजि गेल। चिंता हमर मोन मे घर बसा लेलक। पहिलुक सब किछु भ्रम बनि टुटि गेल। ई इश्वर! हमर दुनू बेटीक भविष्यक आब की हेतै? एतय किछु भ' सकैत छै? दुनू बेटीक भविष्य हमरे नसीब जकाँ मात्र अन्हार पाथर सँ टकराइत रहतै? प्रकाशक एकोटा कण ओकरा दुनू कैँ कहिओ ने भेटतै? हम की करियैक? हे परमेश्वर! हम दुनू बेटी कैँ जन्म किएक देलियै?"

बजैत-बजैत पद्मा थकमका क' ठार भ' गेलीह। अनजाने मे हुनकर फोंरा मे बबूरक काँट भोंका गेलनि। दर्द सँ ओ कराहि उठली। पद्माक आँखि सँ नोरक धार बह' लगलनि।

पद्माक आक्रोश मे मानव जातिक संवेदना, संतानक लेल वात्सल्य प्रेम एवं ममता हुकरि रहल छलनि जकर झमुआहो मे पूर्ण अभाव छलै। ताबत काल तक बेबी सुकोरानी लोपा एवं लोमाक सम्पूर्ण श्रृंगार क' चुकल रहथि। केशक जूट्टी गूहि, पाउडर-स्नोक मालिश क' दुनूक ललाट पर एक-एक गोट बिंदी साटि देने रहथि। आब लोपा आ लोमाक सौन्दर्यक निखार देख'बला छल। दुनू छौंड़ी बेबी सुकोरानीक दुनू बाहिँ पर मूड़ी रखने सुति रहल छलि। पद्मा दुनू बेटी दिस देखलनि। ओ आरो कलपि उठलीह। पद्मा उदास भ' गेलीह।

चमेलीरानी उठि क' पद्माक पीठ सहलाब' लगलीह आ आश्वासन दैत कहलनि—"धैर्य राखू हे पद्मा बहिन। मनुक्खक शक्ति अपार होइत छै। सभटा दुखक अन्त छै। धैर्य राखि मार्ग ताकल जा सकैत अछि। अहाँ अहि प्रसंग द' की राजूक संग गप-सप कहियो नहि केलहुँ?"

पद्माक आँखि मे नोर भरले छलनि, कहलनि—"संवेदन हीन मनुक्खक आचरण मे ममता, करुणा, दयाक भाव रहिए ने जाइत छैक। आदर्शक टोपी पहिरि क' राजू मानवीय गुणसँ रिक्त भ' चुकल छथि। अहाँ पहिले-पहिल अतिथि पछिला बीस बर्खक जीवन मे हमरा भेटलहुँ अछि। तँ हमर अन्तर्वेदना अहाँ लग प्रगट भ' गेल। हमरा क्षमा क' दिअ।"

चमेलीरानी अपन हैंड बैग सँ एकटा छोटसन डायरी निकाललनि। डायरीक सादा पन्ना आ कलम पद्माक आगाँ रखैत कहलनि—"अहाँ ईंगलैंड मे रह' बला अपन पिताक नाम आ पता अहि पर लिखि दिअ।"

एक क्षण तक पद्मा चमेलीरानीक आँखि मे तकैत रहलीह। हुनक पिता जिबैत छथिन वा नहि ओहि द' ओ किछु नै कहलनि, कोनोटा जिज्ञासा नहि केलनि। पद्मा कलम उठा सुन्दर अक्षर मे पता लिखि देलनि। तखने हुनक कम्पित ठोर सँ

स्वर निकलल–"राजू आब पांच बर्खक नेना सदृश छथि। हुनका त्यागि क' की हम जीवित रहि सकब?"

चमेलीरानी कैँ आश्चर्य नहि भेलनि। हुनक हृदयाकाश मे एकटा शीतल भाव भरि गेलनि। ओ अपन कान मे ककरो दूर सँ अबैत अबाजो सुनलनि–ईश्वरक निवास स्थान छनि प्रेम सागर मे, ओतए जेबाक एकहि टा मार्ग छै समर्पण। पद्माक समर्पण मे प्रेम-धन प्राप्त भ' चुकल छथि। अही धन प्राप्त कर' लेल मनुक्ख कतेको जीवन तक तप करैत अछि।

पद्मा चों चों बला बोली बजैत अपन दुनू बेटी कैँ जगौलनि। औंधायलि लोपामुद्रा एवं लोमहर्षिणीक हाथ पकड़ने ओ कक्ष सँ बाहर निकलि गेलीह।

प्रातःकाल किलियरेन्स भेटि गेल। चमेलीरानी एवं पन्ना भाइक टोली अगिला एवं अन्तिम मंजिलक लेल प्रस्थान केलनि। भाला उठौने कॉमटी मार्ग-दर्शक बनल आगाँ मे आ माल-असबाब पीठ पर टँगने किराँत स्वरूप एक गोट आदिवासी पाछाँ मे। रस्ताक पूर्ण जानकारी मात्र कॉमटी कैँ छलै। पता नहि ओहि पाथरक देश मे कतेक बिहरि छल। एकटा छोट सन खोह कैँ पार करितहि झमुआहोक विशाल घाटी लुप्त भ' गेल। आब सभ कियो खुजल स्थान मे पठारक उपर बाटे जा रहल छलाह।

पहाड़ी प्रदेश आ पठारक सख्त चट्टान पर बनल पगडन्डी। चारुकात सुखायल, टटायल आ पिआसल छोट-छोट झाड़ी सँ बनल जंगल। खरहा, नढ़िया, बिज्जी, सनगोहि, मूस आदि तरहक छोट-छोट जानवर सभ दिशा मे निर्भीक टहलैत-बुलैत। चिड़ैया सभ अजीबे तरहक। करँकुल, कठ-फोड़बा आ गिद्ध सदृश। विभिन्न किस्मक साँप, छुछूनरि, गिरगिट, कीड़ा-मकोड़ा, फतिंगाक भरमार। ओहि सभ जीव-जन्तु लेल भोजनक कमी नहि, कारण एक जीव दोसर जीव पर आश्रित छल। सभ कियो माथ पर टोपी पहिरने छल, किएक त' एतय सूगबा साँप सेहो छलै जे उड़ि क' माथे मे काटि लैत अछि। कहबाक अभिप्राय जे प्रकृतिक खजाना मे जतेक तरहक अधलाह जीव छलै से सभटा ओहि क्षेत्र मे मौजूदे छलै। पाथर त' कजरी सँ पोतल। पिछड़ैत पयर कैँ सम्हारने चलू नहित' कखनहुँ ओंधरा जायब। डेरा उठब' मे आ राख' मे पूर्ण सावधानी त' रहबे करै।

दुपहरियाक समय मे ओ सभ एकटा झील, क्षमा करब, झील नहि, पोखरिक कात मे पहुँचैत गेलाह। पोखरीक जल मटमैल छलै जाहि मे कोनो खनिज-द्रव्य एतेक ने मिझ्झर रहै जे जानवरो ओकर पानि पिब' सँ परहेज करैत छल। सम्पूर्ण टोली पोखरीक कात मे एकटा नमरल चट्टानक औढ़ मे बैसल, जाहि सँ आकाश सँ कियो हुनका सभ कैँ देखि ने सकय। बेबी सुकोरानी सुखायल मेवा, बिस्कुट आ

बोतलक पानि सभ कँ बँटलनि, अपनो लेलनि आ संग मे आयल आदिवासी तकरो देलनि।

कॉमटी पन्ना भाइ सँ अहि ठामक बोली मे किछु कहलक आ अपन भाला उठा क' कतहु जेबा लेल ठार भेल। तखने आकाश मे अबैत हेलिकैप्टरक ध्वनि पाथर सँ टकरायल। कॉमटी ठामे बैसि गेल आ हाँइ-हाँइ पन्ना भाइ सँ किछु बाजल। पन्ना भाइ सभ कँ सम्बोधित करैत कहलनि–"सावधान! कोनो तरह का ससर-फसर ना करै के बा। एकदम मुर्दा का माफिक पड़ल रहै के बा। जब हेलिकैप्टर पास कर जाइ तभिए हिलै-डोलै का काज होइ। देखा जाइब ना त'ससुरा सीधे बम गिरा दिहें।"

आकाश सँ हेलिकैप्टर हुनका सभ कँ देखि नै पौलक। जहिना आयल तहिना भर्राति-हहाति उपरे-उपर पास क' गेल। ओकर अबाजो छितरा क' गुम भ' गेलै। तखन कॉमटी उठल आ एक दिस बिदाह भ' गेल। चमेलीरानी घड़ी दिस तकलनि। बारह बाजि क' पांच मिनट। पांच बजे भोर मे ओ सभ परम वीर सेठ्ठी राजूक कैम्प सँ बिदा भेल रहथि।

एहन कठिन यात्रा आ एहन कठोर जीवन। सेहो अपनहि देश मे। एकर आवश्यकता किएक? कोन तरहक विद्रोह? कोन तरहक युद्ध? एकर परिणति की? की अहि तरहक प्रश्नक उत्तर छैक? उत्तर की तकै छी, सत्य त' आगूए मे ठार अछि। 1967 ई. मे उत्तरी बंगालक एक छोट सन स्थान नक्सलवाड़ी। ओतहि साम्यवादी विद्रोहक चिनगारी बाहर निकलल जे एखन विभिन्न प्रदेशक लगभग एक सय पचास जिला मे प्रचंड अग्निशिखा बनि प्रज्जवलित भ' रहल अछि। एकरा रोकल किएक ने गेलै? रोकितै के? लोकतंत्र पर आधारित सरकार आ जनतंत्र मे चुनल नेता? लोकतंत्र मे नेताक अपन मजबूरी छै। ओकरा भोट आ अधिकसँ अधिक धन चाही। ओही जोगार मे ओ ततेक ने बाझल रहैत अछि जे नक्सलवादी समस्या दिस तकबाक ओकरा ने अवकाश छै आ ने सोच। सत्य त' एते तक छै जे नक्सली समस्या कँ बुझैक ओहि नेता कँ क्षमतो नहि छैक। नक्सली अथवा माओवादी विद्रोहक ईंधन थिकै गरीबी, अशिक्षा, बेकारी आ भ्रष्ट स्तम्भ पर ठार लोकतंत्र। अहि देशक किछुए लोक आर्थिक रूपे सम्पन्न अछि आ की सम्पन्न भ' रहल अछि। दलित आ आदिवासीक एकटा पैघ जनसंख्या एखनहुँ देशक प्रगति सँ दूर, अति दूर अछि। इएह दलित आ आदिवासी माओवादी युद्धक सेना छी। सभ्य समाजक विलासिताक पूर्ति लेल पहाड़, पहाड़ी, पठार, जंगलक दोहन भ' रहल छै। इएह सभटा स्थान आदिवासीक घर-आंगन थिकै। ओकर हजार बर्खक जंगल संस्कृति कँ बुलडोजर सँ नष्ट कयल जा रहल छै। तकरे प्रतिकार स्वरूप निहत्था,

कमजोर, दलित आदिवासी साम्यवादी बनि लड़ि रहल अछि। मुदा अपना सँ जबर्दस्त दुश्मन सँ लड़ि क' साम्यवादी की पौताह? तकर विचार त' ओ ने करए जे आरामक जिनगी जिबैत अछि। साम्यवादी पछिला पचास बर्ख सँ लड़ि रहल अछि आ आगाँ सेहो लड़ैत रहत। दमकल सँ आगि मिझौल जाइत अछि। मुदा साम्यवादी आगि त' गरीबक आत्मा सँ निकलैत अछि। एकरा कोन दमकल मिझा सकत?

अहि स्थानक यात्रा सँ चमेलीरानी कैँ एकटा कटु सत्य सँ साक्षात्कार भ' रहल छलनि जकर कल्पना ओ कहिओ ने कयने रहथि। किछुए दिन पहिनहि चमेलीरानी पन्ना ककाक संग अगिला चुनावक तिरजा मिलान क' रहल छलीह। गंगाक दक्षिण बला हिस्साक सभटा भार पन्ना भाइ पर छल। ओहि विषयक प्रसंगे माओवादीक समस्या द' गप-सप भेल छल। पन्ना भाइ कोना क' सम्पर्क स्थापित केलनि से त' वैह बुझताह। मुदा ओ माओवादीक सुप्रिम कमान्डर कोठण्डा पाणिक सम्बाद अनलनि। कोठण्डा पाणिक संवाद-संदेश छल जे मदति भेटतनि, मुदा एक बेर चमेलीरानी कैँ स्वयं पाणिक शिविर तक यात्रा कर' पड़तनि। अदम्य साहस आ पैघ उद्देश्यक पूर्तिक हेतु समर्पित चमेलीरानी एखन पन्ना कका संग पाणिक खोप मे जा रहल छलीह।

पन्ना भाइ बजलाह—"बिटिया! सामने का पहाड़ी जे लौखता एकर ओइ पार जाइ के होइ। ई जगह का चप्पा-चप्पा पर पाणि का पहरा बा। पहरुदार के चेताबै खातिर कॉमटी गइलन ह'। सावधानी ना रही त' केमहरो से तीर आ के हमरा सभ का छाती चीर दिहैँ। आखिर मे साम्यवादी का बेताज बादशाह कोठण्डा पाणि का शिविर मे ढूकै के बा नू? कोनो की खेल बा? इहाँ तो यमराजो के परमिशन का दरकार होइ। लेकिन घबड़ाइ के बात नहिखे। पाणि का निमंत्रण पाइए के ने हमरा सभ जात बानी। सभी कुछ ठीके-ठाक होइ।"

कॉमटी वापस आयल। पन्ना भाइ सँ चौँ चौँ बला बोली मे किछु बाजल। पन्ना भाइ अपन डाँड़ मे लटकल थैला सँ चारि जोड़ी दस्ताना निकाललनि। दस्ताना चमड़ाक बनल छल। एक जोड़ी दस्ताना पन्ना भाइ अपनहि पहिरलनि। बाँकी तीन जोड़ी उग्रदेव कैँ दैत कहलनि—"बिटिया आ बेबी सुकोरानी के एक-एक जोड़ी दस्ताना दे दहु। बाँकी एक जोड़ी तौँहू पहिर लहू। एकर जरूरत पड़ी।"

चमेलीरानी आ बेबी सुकोरानी थोड़े हटल अढ़ मे गेलि छलीह। जखन वापस अयलीह त' दुनू दस्ताना पहिर लेलनि। सभ बिदा भेलाह। पोखरीक काते-कात सभ एकटा पहाड़ीक जड़ि मे पहुँचैत गेलाह। पहाड़ी ढलाउ छल आ ओकर उपर सँ नीचा तक एकटा रस्सा बान्हल छलै। रस्सा ओही ठाम उपजल लत्ती सँ बनल

छल जे देख' मे मजबूत छलै। ओही लत्तीबला रस्सा कैँ पकड़ि कॉमटी उपर चढ़' लागल। ओकरे देखादेखी चमेलीरानी एवं बेबी सुकोरानी रस्सा कैँ मजबूती सँ पकड़लनि। तकरबाद पन्ना भाइ आ उग्रदेव। सभहक अन्त मे पोटरी पीठ पर टँगने आदिवासी। आब ओहि चमड़ाक दस्तानाक उपयोगिताक बोध भेलनि। पहाड़ी पर चढ़' काल चमेलीरानी बेबी सुकोरानी सँ पूछलनि–"डर त' नै होइए?"

–"डर! डर कैँ त' हमरा सँ डर होइत छै दीदी। डर नहि मुदा दुख अवस्से होइत अछि। पद्माक दुनू बेटी लोपा आ लोमा जखन-जखन मोन पड़ैत अछि त' कलेजा फाट' लगैत अछि। दुनू छौंड़ी आँखिक पल सँ हटिते ने अछि। एहन पाथरक देश मे ओहन दू टा कोमल कली की जीबैत रहि पौतै? ई त' अहि पापी संसारक बड़ पैघ पाप भेलै ने? मनुक्खक अहि पाप कैँ की गंगाक सभटा जलो धो सकतै?"

चमेलीरानी किछु जवाब नहि देलनि। सभ अपन-अपन हाथ सँ रस्सा पकड़ने पहाड़ीक उपर दिस बढ़ैत रहलाह। जँ लत्तीबला रस्सा नहि रहितैक त' ओहि पहाड़ीक ढलान पर पयर रोपनाइ संभव नहि होइतैक। खसक ई जिमनास्टिक बला खेल एक घंटाक बाद समाप्त भेलै। समूचा टोली पहाड़ीक शिखर पर पहुँचल। तकर आगाँ रस्ता ढलान पर नीचा मुँहे जाइत छलै। एक स्थान पर पहुँचि सभ कियो ठार भेला। सामने खूब झमटर झारी छलै आ ओकरा बीचो-बीच एकटा सुरंगक मुहाना छल। सुरंग मे एक आदमी कहुना क' प्रवेश क' सकैत छल ततबे जगह छलै। ताहू पर सँ सुरंग धूप-अन्हार। कॉमटी मशाल जरौलक आ सुरंग मे प्रवेश केलक। अनुशासित सिपाही जकाँ सभ कियो बेरा-बेरी सुरंग मे प्रवेश केलनि। सुरंगक उँचाइ बड़ कम आ टेढ़-मेढ़। उबर-खाम्हर पथरीली रस्ता। सुरंगक छत सँ रिस-रिसक' ठोपे-ठोप चुबैत पानि। आन सभ तरहक असुविधाक संगहि सुरंग बादुर सँ भरल छल। बादुरक सभ सँ पैघ दुश्मन इजोत। कॉमटी हाथक मशाल सँ निकलैत प्रकाश मे झूंडक झूंड बादुर अपन-अपन पाँखि फरफराब' लागल छल। कहूँ ई झपटि ने लिअए तकर चिंता होयब त' स्वभाविके छलै। मुदा टोली मे ने कियो साधारण पुरुष छल आ ने अबला महिला। साहस, समर्पण आ कर्त्तव्य सभ मे ततेक ने उर्जा भरि देने छल जे डर कथीक?

सभ कियो सुरंगक दोसर कात पहुँचल। ओहि कात अस्त होइत सूर्यक रक्ताभ लालिमा मे घाटी पसरल छल। घाटी संकीर्ण आ एना देखि पड़ि रहल छल जेना कूप होअए। चमेलीरानी घड़ी मे समय देखलनि, चारि बाज' मे एक मिनटक बिलम्ब छलै।

कोठण्डा पाणिक अड्डाक प्रारूप ठीक ओहिना छल जेना की परम वीर सेठ्ठी राजूक अड्डा छल। मुदा आकार मे छोट आ गहींर। पहाड़ी मे स्वतः बनल कन्दरा

मे कोठलीक पथार, किछु-किछु तिलस्मि जकाँ। चमेलीरानी एवं बेबी सुकोरानी एकटा कोठली मे पहुँचली। थाकनि सँ चूर भेल दुनू पलंग आ सोफा पर पड़ि रहलीह। थोड़बहि समय मे दुनूक मोटरी-पोटरी सेहो पहुँचि गेल। एक आदिवासी महिला बिना दूधक भफाइत चाह पहुँचा गेलनि। एत' ने पद्मा छली आ ने हुनक दुनू बेटी। कोठण्डा पाणि अविवाहित रहथि।

भोजन-साजन आदिक औपचारिकता समाप्त भेल। चमेलीरानी पन्ना भाइक टोली पूर्णतः तैयार भ' क' कोठण्डा पाणिक कक्ष मे पहुँचली। कक्ष टेढ़-मेढ़ एकटा पैघ हॉल सदृश छल जकर छत कतहु सटल आ कतहु हटल रहैक। कोनो वृक्षक छाल सँ हॉल कैँ अहि प्रकारे घेरि देल गेल छलै जे कोठलीक रोशनी बाहर नै जाइक। चारि ठाम छोट-छोट लैम्प लेसल रहैक। यद्यपि कोठलीक हॉल पैघ साइजक मुदा ओतय एतेक प्रकाश अवस्से छलै जे सभ किछु साफ-साफ देखाइ पड़ि रहल छलैक।

एकटा चौकी जाहि मे मसहरी लागल रहैक। ओही मसहरीक भीतर कोठण्डा पाणि बैसल रहथि। चौकी लग चारि गोट कुर्सी छलै। अगिला दुनू कुर्सी पर चमेलीरानी तथा पन्ना भाइ आ पछिला दुनू कुर्सी पर बेबी सुकोरानी एवं उग्रदेव बैसला। कोठण्डा पाणिक मसहरी लागल चौकीक पाछाँ देवाल पर तीन गोट कन्वास टाँगल रहैक।

चमेलीरानी ओहि कन्वास दिस तकलनि। तीनू कन्वास छह गुणा चारि फीट साइजक छल। पहिल कन्वास मे 9/11 क अमेरिकाक न्यूयार्क शहरक आतंकवादीक आक्रमणक दृश्य रहैक। एकटा टॉवर ध्वस्त भेल धुआँ मे डुबल आ दोसर टॉवर मे टक्कर मारक लेल हवाइ जहाज पहुँच रहल छल। ओही विशाल चित्रक नीचा कनिएँ टा छोट चित्र जाहि मे एक गरीब आदमी माथ मे मुरेठा बन्हने निश्चिन्त भेल बीड़ी पीबि रहल छल। दोसर कन्वास मे अकड़-बकड़ वस्तु सँ भरल गंगाक जल मे एक गोट सन्यासी कैँ अर्घ दैत, तकर बड़ी टा चित्र। निचला छोट फोटो मे एक जोड़ी युवक-युवतीक प्रेमालाप करैत दृश्य। तेसर कन्वास मे संसारक दस खरबपतिक एक पाँती मे फोटो जाहि मे भारतक तीन खरबपतिक खूब जगजगार फोटो। नीचाबला फोटो मे फाटल-चिटल वस्त्र पहिरने एकटा बुढ़िया नाँगट नेनाक मुँह मे भातक कौर द' रहल छलि।

तीनू कन्वास मे अंकित दृश्य कैँ देखलाक बाद चमेलीरानी पारदर्शी मसहरीक भीतर बैसल पाणि दिस तकलनि। अस्सी-पचासी बर्खक आसपास हुनक वयस, चंडुल माथक काते-कात पाकल घनगर औंठिया केशक गुच्छा कान कैँ झंपने, कोयलो सँ बेसी कारी वर्ण, ठार नाक, पाकल भौं, गोल चश्माक भीतर आँखि मे

गहींर तक संवेदनाक भाव। कोठण्डा पाणिक मुखमंडल केँ दिव्य कहब उचित नहि होयत। मुदा ओतय विशिष्टताक एहन भाव झहरैत रहै जे एक महापुरुष मे जे होइत छैक तेहने। चमेलीरानी कोठण्डा पाणिक चुंबकिए आकर्षण सँ नीक जकाँ प्रभावित भेलीह। पाणिक तकियाक बगल मे एकटा पुस्तक राखल छल जकरा चमेलीरानी तत्काल चिन्हि गेली। ओ पुस्तक छल 'एडगर स्नो' लिखित 'रेड स्टार ओभर चयना'।

एडगर स्नो नामक व्यक्ति अपना समयक ख्यातिप्राप्त जर्नलिस्ट रहथि। द्वितीय विश्व-युद्धक बाद ओ अदृश्य भ' गेल रहथि। स्नोक खोज पुछारि विश्व-स्तर पर भेल छल। भेल ई रहै जे एडगर स्नो सात बर्ख धरि माउत्से तुंगक संगहि रहला। कोना क' माउत्से तुंग सम्पूर्ण चीनक जनता केँ जगौलनि, सेनाक निर्माण केलनि, चांग काइ सेक जकर मदति मे अमेरिका छल तकरा युद्ध मे परास्त क' ओकरा फारमोसा टापू पर निर्वासित केलनि आ अन्ततोगत्वा मेन लैंड सम्पूर्ण चीन केँ स्वतंत्र क' साम्यवादी सरकारक नींव रखलनि, तकर एक-एक दिनक व्यौरा, माउत्से तुंगक जीवन चरितक नजदीकक अध्ययन, साम्यवादी विचार-धाराक माउत्से तुंग द्वारा सफल प्रयोग एवं पुष्टिकरण तथा एकर विस्तार सँ विवेचना सम्बन्धी पुस्तक 'रेड स्टार ओभर चयना' केँ लिखि क' एडगर स्नो प्रसिद्धि भ' गेला। अहि पुस्तक केँ विश्व-स्तर पर सम्मान भेटलैक आ साम्यवादी लेल त' ई 'गीता' बनि गेल। वैह पुस्तक पाणि लग मे छलनि।

एडगर स्नो लिखित वृतान्त मे इहो रहै जे माउत्से तुंग केँ एकहि टा विलासिताक वस्तु उपयोग मे रहनि। ओ वस्तु छल मसहरी। माउत्से तुंग जत' जाथि मसहरी हुनकर संगहि जानि। मसहरी हुनकर शयन कक्षक अतिरिक्त हुनक ऑफिस एवं आदेश निर्गत करैक प्लेटफार्म सेहो छल।

जहिना माउत्से तुंग मसहरीक भीतरे बैसि अपन सभटा कार्य सम्पादन करैत छलाह तहिना कोठण्डा पाणि मसहरीक भीतरे बैसि अपन सभटा कार्य सम्पादन करैत छलाह। मसहरीक भीतरे सँ आगन्तुक सभ अतिथि केँ स्वागत केलनि। अहि क्षण पाणि ने बर्बर छलाह आ ने निर्दयी। सम्प्रति हुनक आँखि सँ आद्रता एवं करुणाक बर्खा भ' रहल छलनि। ओ अँग्रेजी भाषा मे वार्तालाप शुरू केलनि। कहलनि—"अहाँ सभ केँ एतय तक पहुँच' मे थोड़ेक कष्ट अवस्से भेल हैत। चमेलीक सम्वाद पन्ना हमरा लग अनने रहथि। चमेलीक योजना बड़ी टा छनि। ओहि योजनाक पूर्ति लेल आ की सभ तरहक राजनीतिक विचार-धारा केँ आकलन करक हेतु जे थोड़ेक शारीरिक कष्ट चमेली केँ भेल होनि त' ताहि मे हर्जे की? चमेलीक अभिलाषा मे हमरो रुचि अछि। मार्ग अलग-अलग भ' सकैत अछि मुदा

जँ उपलब्धि मे समानता होअ त' चमेली कँ अवस्से मदति होयबाक चाही। खैर एकर त' समय प्रमाण देत। मुदा हमरा विचार मे लोकतंत्र अथवा भोटक राजनीति भ्रष्टाचारक जननी थिक। कर्मठ एवं चरित्रवान व्यक्ति सेहो भोटक राजनीति मे ताबते तक टीकि सकैत छथि जाबे तक की ओ भ्रष्ट आचरण कँ पकड़ने रहथि। लोकतंत्र व्यवस्थे भ्रष्टाचार पर आधारित अछि। एमहर भ्रष्टाचार कँ समूल नष्ट करब हमर मूल उद्देश्य अछि। तँ चमेलीक मार्ग सँ हमर मार्ग भिन्न अछि। तथापि हम प्रतीक्षा करब। चमेलीक सेवाक भाव सँ प्रेरित राजनीतिक कोन स्वरूप प्रगट होइत अछि तकरा लेल हमर जिज्ञासा रहत। चमेली सँ व्यक्तिगत रूपे हम भेंट कर' चाहैत छलहुँ तकर आन कारण छै आ से हम चमेली सँ एसगर मे कहबनि। सम्प्रति हम अहाँ चारु सँ गप-सप कर' चाहैत छी। एकरा लेल किछु घंटाक फूर्सति बना क' हम बैसल छी। चमेली! की हमर बाजब अहाँ कँ सोहाइत अछि?"

—"जी, श्रीमान।" चमेलीरानी संक्षिप्त उत्तर देलनि।

बिना रुकनहि कोठण्डा पाणि फेर पूछलनि—"समाचार मे माओवादीक विद्रोह एवं हिंसाक खबरि सुनैत-पढ़ैत हेबैक। एखन अहाँ ओकरा साक्षात देखि रहल छी। केहन लगैत अछि?"

देवाल पर टाँगल कन्वास मे अंकित फोटो, बिछौन पर पड़ल एडगर स्नोक 'रेड स्टार ओभर चयना' नामक पुस्तक, पद्मा सँ सुनल कोठण्डा पाणिक अद्भूत जीवनी तथा स्थानक भयावहता, सभटा मिलि क' चमेलीरानी कँ अस्थिर कयने छल। ओ जवाब नहि द' चुपे रहलीह।

पाणिक ठोर पर मृदुलता पसरि गेलनि। ओ स्पष्ट मुदा भारी अबाज मे कहलनि—"डकैत भूखन सिंहक धर्मकन्या, कनही मोदियानिक एकमात्र पुत्री, कीर्तमूखक तेसर बेटा अर्जुनक पत्नी, हर-हर महादेव ट्रस्टक अध्यक्षा, ठाकुर नांगटनाथक कामुकता एवं अहमदुल्लाक दर्प, दुनूक चूर्ण कर' बाली तथा 'लोक शक्ति जागरण परिषद'क प्रणेता सँ एखन पाणि गप-सप क'रहल छथि। चमेली! अहाँ स्वतंत्र, निर्भीक आ बेफिक्र भ' क' बाजु।"

चमेलीरानीक अलाबा पन्ना भाइ, बेबी सुकोरानी एवं उग्रदेव ओत' बैसल छलाह। अँगेजी भाषा बाज' मे ओ तीनू समर्थ नहि छला। मुदा अँगेजी भाषा मे पाणिक एक-एक आखर कँ बुझ' मे हुनका तीनू कँ कोनो तरहक असुविधा नै रहनि। प्रान्त एवं केन्द्र सरकारक सभटा इन्टेलिजेन्स सँ चमेलीरानीक व्यक्तित्व एवं कार्यकलाप एखनो तक अज्ञाते छल। मुदा पाणि कँ हुनका द' रत्ती-रत्तीक खबरि रहनि। आश्चर्य! आश्चर्य सभ कँ भेलनि। चमेलीरानी पाणिक आग्रहक बादो चुपे रहलीह। शेरनीक मुँह मे जेना जाबी लागि गेल होनि।

पाणि अपन कहल वृतान्त कँ थोड़ेक स्पष्ट करैत बजलाह–"चमेली! अहाँ अचम्भित नहि होउ, सहज भ' जाउ। अहाँक धर्मपिता भूखन सिंह हमर सम्पर्क मे छलाह।"

आब चमेलीरानी प्रश्न केलनि–"साम्यवादी एतेक तीक्ख किएक होइत छथि? खास क' नक्सली आ की माओवादी एतेक कट्टर एवं हिंसा मे विश्वास कर'बला किएक होइत छथि?"

कोठण्डा पाणि साम्यवादी द्वारा चलाओल युद्धक सुप्रिम कमान्डर होइतहुँ तखन 'इजी' मूड मे छला। ओ चमेलीरानीक प्रश्नक जवाब देब शुरू केलनि–"संक्षेप मे साम्यवादी जकरा कम्युनिस्ट सेहो कहल जाइत छै तकर जन्म किएक भेलै तथा ओकरा द्वारा कयल क्रियाक इतिहास की छै से जानि ली त' बात के बुझ' मे सुविधा होयत। भारत, चीन, मिश्र एवं मेसोपोटामिया कँ मनुक्खक सभ्यताक उद्गम स्थान मानल जाइत अछि। मुदा ओकरा बिसरि जाउ। दजला-फुरातक बौद्धिक जागरण पारसी धर्म कँ पृथ्वी पर स्थापित केलक। तकरो एक कात राखि दियौ। रोमन सभ्यता एवं रोमन साम्राज्यक इतिहास सँ एखुनका खिस्सा कँ प्रारम्भ करु। कैथोलिक धर्मक प्रभाव सँ यूरोप सात सय बर्ख धरि अन्धकार युग मे रहल। ओहि अन्हार युग सँ जखन यूरोप बाहर आयल त' नव-नव देश जेना फ्रांस, स्पेन, पूर्त्तगाल, डच, इग्लैंड आदि बनल। अहि सभ देश मे राजतंत्र छलै मुदा राजा पूर्णतः सामंत एवं पादरी पर आश्रित छल। नव-जागरण दुआरे अहि देश सभ मे उत्साह, उमंग, साहस भरल छलै। एकर लाभ धूर्त सामंत उठौलक। यूरोपक सभटा देश नहि, किछु देश आ ओहि देशक सभटा लोक नहि, मात्र मूट्ठी भरि सामंतक अहंकार, महत्वाकाँक्षा एवं लोभ एतेक ने पैघ भ' गेलै जे समस्त संसारक दुःखक कारण बनल। ओही लोभी आ धूर्त सामंतक टाका-पाइ सँ नव-नव मशीनक आविष्कार भेल' तथा समुद्र मे नव-नव मार्ग ताकल गेल। नतीजा ई भेलै जे उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया एवं हजारो टापूक पता लगलै। पृथ्वीक ई विशाल भू-भाग प्राकृतिक सम्पदा सँ परिपूर्ण आकी खाली पड़ल। यूरोपक किछु देश आ तकर सामंत अपन-अपन देशक राजा-रानीक नाम पर अहि खाली पड़ल समस्त भू-भाग पर कब्जा क' लेलक। आब अहि सामंतक ध्यान संसारक ओहि देश दिस गेलै जतय की आबादी छलै, सभ्यता छलै, इतिहास छलै, मुदा नव-नव आविष्कारक आयुध नहि छलै। तकरा संगहि एशियाक तमाम देश प्रगतिक मार्ग मे सुसुप्तावस्था मे छल। चीन त' अफीमक निशा मे बेहोश, भारत त' एतुका बादशाह शासन करैक स्थान पर शायरी करैत, एशियाक दक्षिण-पूर्वक देश मे 'बुद्धं शरणं गच्छामि'; एशियाक दक्षिण-पश्चिम देश मे लुटेरा सभहक वर्चस्व। बचल

अफ्रिका। अफ्रिका आदिम युग मे, पूर्णतः अन्धकार मे। अहि कुंठित भेल सभ्यताक देश मे यूरोपक सामंतकँ मुकाबला करबाक ने शक्ति रहैक आ ने सामर्थ। मात्र सूर्य-पुत्र जापान आ इक्का-दुक्का देश कँ छोड़ि दियौ त' सम्पूर्ण एशिया एवं अफ्रिकाक देश पर अहि धूर्त आ लोभी सामंतक कब्जा भ' गेलै। ईंगलैंड त' धूर्तबाजी मे सब सँ आगाँ। एकर साम्राज्य त' एतेक टा ने भ' गेलै जतय सूर्यक अस्त होइतहि ने छलै। अहि तरहें यूरोपक किछु देशक राजा आ सामंत सम्पूर्ण विश्व के शोषण कर' लागल। पृथ्वीक सभटा धन-सम्पदा अहि किछु देश मे जमा होब' लागल।

—"एकर बाद जनमल पूंजीपतिक दैत्य, संयुक्त राज्य अमेरिका। क्रिस्टो कोलम्बस अमेरिकाक खोज केलक। भौतिक सम्पदा सँ परिपूर्ण विशाल भू-भाग मे ओतुका बासी मनुक्खक हत्या क' यूरोपक संभ्रान्त सामंतक संतति ओतए बसैत गेल। ताबे तक अफ्रिका आ एशियाक देश यूरोपक उपनिवेश बनि चुकल छल। एशिया आ अफ्रिका सँ दास आनल गेल। सड़क, रेल, भवन, फैक्टरी इत्यादि मे ओही दासक सभटा श्रम फेंटल छै जाहि सँ अमेरिका संसारक सभ सँ शक्तिशाली देश बनि गेल अछि। अमेरिकाक उदय सँ दासक शोषण ततेक ने भेल जे एहन कहिओ भेले ने छल। अहि शोषणक इतिहास पीड़ा आ दर्द सँ भरल अछि। अमेरिका जखन स्वतंत्र देश बनल तखन एकर अर्थव्यवस्था पूर्णतः यहूदीक देख-रेख मे आबि गेल। संसार मे यहूदी सँ अधिक चालाक आ बुद्धियार कोनो आरो कौम होइतहि ने अछि। तँ यहूदी मे भीखमंगा नहि होइत छै। अमेरिकाक अर्थव्यवस्थाक एक मात्र नीति छैक जे येन-केन-प्रकारे संसारक दोहन कयल जाए। संसार मे कतहु युद्ध किएक ने हौउक दुनू दिसक अस्त्र-शस्त्र अमेरिके सँ प्राप्त होइत रहल अछि। अस्त्र-शस्त्रक व्यपार सँ अमेरिका संसारक तीन-चौथाइ सोनाक स्वामी बनि गेल। आब अहि शक्तिशाली राक्षस सँ टक्कर के लेत? अहि संयुक्त राज्य अमेरिकाक शोषण सँ संसार कँ के बँचाओत?

—"मुदा सृष्टिक अपन नियम छै। जहिना बीज माटि मे सुरक्षित रहैत अछि आ समय पर गाछ बनि उगि जाइत अछि, तहिना विचार मानव मस्तिष्क मे सुरक्षित रहैत अछि आ मानव मूल्यक ह्रास भेला पर प्रतिकार लेल उदित भ' जाइत अछि। यूरोपक धनाढ्य लोकक घिया-पूता 'समाजवाद' शब्दक आविष्कार केलक। मुदा समाजवाद ओकरा सभहक लेल मनोरंजने टा छल। हाथ मे सैम्पनक गिलास, मुँह मे क्यूबाक सिगार आ पायर मे दासक नवजात शिशुक चमड़ा सँ बनल मुलायम जूत्ता पहिरि ओ सामंती पोआ समाजवादक नव-नव परिभाषा गढ़' लागल। अही पूंजीपतिक संतति 'यूटोपियन' नामक एक टा नव संस्था बनौलक। बाद मे अही

यूटोपियन संस्कृतिक वर्चस्व सम्पूर्ण यूरोप मे रहल जकर काज रहै गरीब सँ आ गरीबी सँ घृणा करब।

—"मुदा ओही देश मे किछु एहनो लोक छल जकरा हृदय मे गरीबक लेल करुणा, पीड़ा, ममता आ दया भरल छलै। ओ सभ संसार मे पूंजीपतिक दुष्कर्म सँ परिचित छल आ अत्यन्त क्लेश सँ ओहि पाप कैँ देख रहल छल। ओ सभ शोषित भेल मनुक्खक दर्द सँ कराहि रहल छल। ओहने लोकक बीच एक नवीन विचारक जन्म भेलै जकर नाम भेलै साम्यवादी विचारधारा। अही विचारक लोकक बीच सँ अयलाह अछि कार्ल मार्क्स।

—"कार्ल मार्क्स कैँ अपन देश जर्मनी मे पूंजीपति नामक यूटोपियन समाज खूब प्रताड़ित केलक, अपमानित केलक। हुनका अन्ततः अपन देश छोड़' पड़लनि। मुदा मार्क्स एवं एंजिल मिलि क' साम्यवाद नामक पुख्ता सिद्धान्त बनौलनि। ओ सिद्धान्त छल संसार भरिक सर्वहारा कैँ उद्धार करबाक हेतु एक मंत्र, एक विचार 'हैभ' एवं 'हैभ नॉट' अर्थात शोषित एवं शोषण कर' बलाक बीच विभाजन रेखा। रेखा खींचा गेल आ संसार दू भाग मे बँटि गेल। गरीब, लाचार, बेबस, अनपढ़ आ भूख सँ मरैत मनुक्ख एक कात आ दोसर कात छल मनुक्खक शोषण कर' बला-चुस'बला पूंजीपतिक समूह। संसार मे गरीब आ धनिकक बीच युद्धक बिगुल बाजि गेल। अहि विचारक प्रतिक्रियास्वरूप ने जाति रहल आ ने देशक सीमा। ने धर्म रहल आ ने परिपाटी। रहि गेल सर्वहारा आ सर्वशोषकक बीचक लड़ाइ। साम्यवादीक समक्ष सर्वहाराक अस्मिताक प्रश्न ठार रहैत छै, तखन ओकर ठोर पर हँसी? हँसी कोमहर सँ औतैक? चमेली! यैह कारण अछि जे साम्यवादी तीक्ख होइत छथि, हिंसक होइत छथि आ कट्टर होइत छथि।"

कोठण्डा पाणिक अबाज मे कोनो हलचल नहि छल। ओ स्थिर एवं संतुलित भेल एकहि सांस मे चमेलीरानीक प्रश्नक जवाब द' चुप भ' गेलाह। तत्काल चमेलीरानी फेर प्रश्न केलनि—"अहि देश मे कम्युनिस्टक खिधान्स होइत अछि। हुनका सभ कैँ हेय दृष्टि सँ देखल जाइत अछि। कहल आइत अछि जे जखन भारतक स्वतंत्रता संग्राम अपन चरम पर छल, अन्त मे भारत कैँ स्वतंत्र होयबाक समयो आबि गेलै, तखनो एतुका कम्युनिस्ट भारतक दुश्मन आ अँग्रेजक मित्र बनल रहला। एहन बात किएक भेलै? जँ भेलै त' साम्यवादी लेल की सद्भावना रहि पौतैक?"

चमेलीरानीक प्रश्न सुनि पाणि कैँ कोनो तरहक उत्तेजना नहि भेलनि। ओ ओहने धीर-गम्भीर वाणी मे कहलनि—"हम कहि चुकल छी जे साम्यवादी विचारधारा कैँ कोनो देशक सीमा मे बान्हल नहि जा सकैत अछि। एकरा कोनो एक देशक

आजादीक परिप्रेक्ष्य मे बुझलो ने जा सकैत अछि। मार्क्सक सिद्धान्त मे मात्र एकटा विभाजन रेखा छै। संसार भरिक सर्वहारा एक कात आ दानवस्वरूप पूंजीपति दोसर कात। उत्पीड़ित, दलित, शोषित मनुक्खक रक्षार्थ साम्यवादी विचारक उत्पत्ति भेल जकरा कोनो देशक सीमाक अन्दर रखलो ने जा सकैत अछि। आगि, पानि, हवा आ मानवी विचार कैँ की एक स्थान पर पकड़िक' राखल जा सकैत अछि? नहि ने! सोवियत साम्राज्य मे निकोलस जारक हुकूमत स्थापित छल। जारक निरंकुश शासन मे तमाम जनता सदियो सँ प्रताड़ित भ' रहल छल। लेनिन पहिल व्यक्ति भेलाह जे साम्यवादी सिद्धान्तक अनुरूप ओतय क्रान्तिक आह्वान केलनि आ 1917 ई.क अक्तूबर माह मे सोवियत कैँ मुक्त करा सोवियत गण राज्यक स्थापना केलनि। सोवियत संघ मे पहिल बेर मार्क्सक वामपंथी मार्गक अनुरूप सर्वहाराक शासन व्यवस्था कायम भेल। स्वभाविके लेनिन सम्पूर्ण विश्वक साम्यवादी लेल आदर्श पुरुष आ सोवियत संघ आदर्श भूमि बनल। अमेरिका सन शक्तिशाली पूंजीपतिक विरोध मे एकटा एहन शक्तिक उदय भेलै जे ओकरा सँ टक्कर ल' सकैत छल। द्वितीय विश्व-युद्धक समय छल। हिटलर सोवियत संघ पर आक्रमण क' देलक। इच्छा नहि रहितो स्टालिन कैँ अँग्रेजक खेमा मे आब' पड़लनि। भारत सहित समग्र विश्वक साम्यवादी समुदाय अनुशासित भ' स्टालिनक पद चिन्ह पर चलैत छल। इएह कारण भेलै जे भारत कैँ ताहि कालक साम्यवादी विचारक कैँ अँग्रेजक मित्र बन' पड़लनि। एकरा जँ पैघ परिप्रेक्ष्य मे जाँचल जायत आ जँ संसार भरिक सर्वहाराक विद्रोहस्वरूप मे देखल जायत' अहि मे कोनो अतिशयोक्ति नजरि नहि आओत। भारतक ओहि कालक साम्यवादीक दोख कतहु देखाइ नहि पड़त। हँ, एकरा दुर्भाग्य द' कहि सकैत छियैक। आह! जँ ओहि समय भारतो मे माउत्से तुंग सनक नेता भेल रहितथि, जँ एतुका चाँग काइ शेख कैँ ठेलि क' समुद्र मे डुबा देने रहितथि त' आइ ई देश कठपुतली प्रजातंत्रक दुर्दशा मे नहि पड़ैत।"

चमेलीरानी हड़बड़ाइत कहलनि—"अहाँ अहि देश मे स्थापित प्रजातंत्रक विरोध किएक करैत छियैक? प्रजातंत्र त' एहन शासन व्यवस्था भेल जाहि मे मौलिक अधिकार सभ कैँ प्राप्त छनि। एतुका गरीबो कैँ त' 'अधिकार' उपहारस्वरूप भेटल छन्हिहँ। तखन हिंसाक मार्गक की औचित्य रहि गेलै? कम्युनिस्टो त' विभिन्न तरहक पार्टीक निर्माण क' चुनावक राजनीति मे सक्रिय छथिहे। वामपंथी सेहो विभिन्न राजनीतिक पार्टीक माध्यमे गरीबक सेवा त' कइए रहल छथि।

कोठण्डा पाणि तकिया पर ओंगठल रहथि, से सोझ भ' गेलाह आ कह' लगला—"गरीबक सेवा! नहि अपन सेवा करैत छथि, अपन अहूमक सेवा करैत

छथि। पंच सितारा होटल मे रह' बला, हवाइ जहाज मे घुम' बला गरीब, नाङ्गट, लाचारक की सेवा करत! चमेली! हम एकटा उदाहरण द' क' अपन बात कैँ स्पष्ट कर' चाहैत छी, सुनू। मानि लिअ जे एकटा बगान अछि। बगान मे फल सँ लदल अनेकों वृक्ष अछि। ओतुका लोक कैँ जखन भूख लगैत छैक त' ओ फल कैँ तोड़ि क' खाइत अछि। जकरा जतेक भूख से ततेक फल तोड़ैत अछि। कोनो रोक-टोक नहि, कोनो व्यवधान नहि। किछु बाद ओतय धूर्तबाजक प्रवेश भेल। ओ भय देखौलक जे दुश्मन आबि क' बगान कैँ कहूँ हथिया ने लौक। ओ प्रपंची दाँव चलौलक। दाँव लहि गेलैक। ओ थोड़ेक लोक कैँ देलकै आ अपन मे मिला लेलकै। ओ आरो तरहक चालि चलल आ बगान पर कब्जा क' ओकर मालिक बनि गेल। आब जकरा फल चाही से मूल्य दौक। मूल्य नहि छै त' भरि दिन फलक मालिकक बगान मे श्रम कर' तखने ओकरा भूख मेटेबाक लेल फल भेटतै। की कहलहुँ! मूल्य नहि देतै, श्रम नहि करितै, त' ओकरा भूखे मर' पड़ितै। इएह भेल पूंजीपतिक उदयक खिस्सा। छल सँ, बल सँ बगान पर कब्जा क' शोषण शुरू क' देलक।

—"आब मानि लिअ जे कोनो कारणें व्यवस्था मे फर्क भेलै। प्रजातंत्र कायम भेलै। फलक बगान पर लोकतंत्र नामक संस्थाक अधिकार भेलै। ओकर अधिकारी कहलक जे तोरा भोट दैक अधिकार देलिऔ तकर बदला मे सरकार चलबै लेल, बगानक देख-भाल करक लेल टैक्स दे। टैक्स दू प्रकारक—प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष। प्रत्यक्ष टैक्स देब' बला वैह पूंजीपति जकरा चोरि करबाक सभटा सुबिधा प्राप्त छै। अप्रत्यक्ष टैक्स देब' बला गरीब जनता। वस्त्रक एक-एक सूत पर, भोजनक एक-एक दाना पर, घरक एक-एक ईंटा पर, यात्राक एक-एक डेग पर, दवाइक एक-एक बून्द पर अप्रत्यक्ष टैक्स। कहबाक अर्थ जे जीवन मे उपयोगक प्रत्येक वस्तु पर अप्रत्यक्ष टैक्स। गरीब टैक्स मे बन्हा गेल, थकुचा गेल, आ मुंह बाबि देलक। सभ तरहक असली भेल टैक्स पर वैह पूंजीपति अधिकार क' भोटक नाटक शुरू केलक। भोट मे त' ओही पूंजीपतिक संतति आ लेबरा ठार छौ रे? तखन भोट देबही त' देबही ककरा? अहि प्रजातंत्र नामक व्यवस्था मे त' शोषित होब' बला आ शोषण कर' बला मे दूरी बनले रहि गेलै। सही मे गरीब आरो गरीब बनि गेल आ पूंजीपति नामक दैत्य जकरा सभटा वस्तुक उत्पादन करैक लाइसेन्स छैक तकरा धोधि आरो फूलि गेलै। लोकतंत्र अयला सँ फर्क एतबे भेलै जे पूंजीपतिक सखा मे वृद्धि भेलै। साम्यवादी अही पूंजीपतिक नाश कर' लेल प्रतिबद्ध अछि। तखन प्रजातंत्रक कोखि सँ जनमल नव-नव पूंजीपतिक संरक्षण कोना करत?

—"अहाँ कहलहुँ जे प्रजातंत्र गरीब कैँ अधिकार दैत छै। हम कहब जे

'अधिकार' शब्द एकटा छल थिक। गरीब कँ ठकैक भूल-भुलैया थिक, धोखा थिक। ओकरा अधिकार चाहबे ने करै। ओकरा चाही भोजन, वस्त्र आ आवास। ओकरा चाही एहन स्वस्थ व्यवस्था जे भ्रष्टाचार सँ मुक्त होइक। प्रत्येक व्यक्ति कँ उन्नति करबाक वातावरण होइक जाहि सँ दलित, पिछड़ा, हरिजन आदि शब्दक लोप भ' जाइक।

—"लोभ आ अहंकार सदिकाल सँ मनुक्खक दुश्मन रहल अछि। हमर साम्यवादी भ्राता लोकनि मे सँ किछु सत्ताक लोभ मे आ की हम सभ सँ बेसी बुधियार छी तकर अहंकार मे ओ लोकनि भोटक राजनीति मे प्रवेश केलनि। एकर प्रतिफल भेल की? एक नवीन किस्मक पूंजीपतिक जन्म।

—"भोटक सांगि पर ठार प्रजातंत्र एखन सिंहासन पर बैसल अछि। मुदा जहिना राजा-महाराजाक वंशवाद सँ उपजल राजतंत्रक सत्यानाश भ' गेलै तहिना प्रजातंत्र नामक व्यवस्थाक नाश हेबेटा करतैक। परिवारवादक प्रवेश प्रजातंत्र मे भ' चुकल अछि। पूंजीपति साहुकार बनि जनताक रक्त चूसि रहल अछि। व्यवस्था मे नियुक्त कर्मचारी जकरा की जनताक सेवा करक चाहियैक से जनता कँ घृणा सँ देखि रहल अछि। ई तमाम रोग प्रजातंत्रक तंत्र कँ विघटन करक लेल पर्याप्त अछि। प्रजातंत्र कँ कियो मारत नहि, ओ अपनहि आप मरि जैत।

—"तखन आओत साम्यवाद। 1967 ई. मे नक्सलबाड़ी मे फूंकल गेल रणदुन्दुभी जे पूंजीपतिक विध्वंस करक लेल सम्पूर्ण भारत मे निनाद करैत आबि रहल अछि तकर वर्चस्व हेबेटा करतैक। एकेटा नीति चलत साम्यवाद। एकरे भीतर चुनाव, एकरे आदर्श, एकरे मूल्यांकन आ एकरे उत्कर्ष। मात्र साम्यवादिए टा गरीबक कल्याण क' सकैत अछि। आन तरहक विचार अनर्गल थिक, फूसि थिक।"

जाहि विषय कँ कोठण्डा पाणि अपन युक्ति सँ संगत बना रहल छलाह ताहि मे चमेलीरानी कँ अनेकों छिद्र देखाइ पड़ि रहल छलनि। यद्यपि विचार कँ विचारे सँ दुरुस्त कयल जा सकैत अछि, बन्दूक सँ नहि। तथापि चमेलीरानी कँ की एतेक टा साहस छलनि जे अपन तर्क आगू राखि सकितथि? ओहुना कोठण्डा पाणिक विचार कँ अवहेलना नहि होयबाक चाहैत छल। कहल जाइत अछि जे नक्सली कँ, माओवादी कँ, आदिवासी कँ आर्थिक विपन्नता दूर क' देशक मुख्य धारा मे आनल जा सकैत अछि। मुदा पाणि लग विद्रोहक आगि पौती मे झाँपल नहि छल। हजारो, लाखो बर्ख सँ प्रताड़ित गरीबक जीवन ज्वालामुखी बनि घुमड़ि रहल छल। कखनो काल ओहि मे एक दू गोट चिनगारी छिटकि क' आधुनिक युगक आधुनिक मनुक्ख कँ चेता' रहल छल सावधान, विस्फोट कखनहुँ भ' सकैत अछि।

कोठण्डा पाणिक समर्पित विचार कँ की बदलल जा सकैत छल? की ओतय

समझौताक कोनो टा गुंजाइस छलै? के कहत? मुदा चमेलीरानी आ पन्ना भाइक सामर्थ सँ ई बाहरक बात छल। सभ कियो मानसिक रूपे असंतुलित रहितो चुपे रहला। विरामक स्थिति कैँ स्वयं पाणि तोड़लनि। किछु काल पहिने साम्यवादीक विचार कैँ प्रगट कर मे हुनक स्वर आगिक लपट जकाँ धधकि रहल छल। मुदा एखन हुनक शब्द शांत, स्थिर आ मृदुल छल। ओ कहलनि–“चमेली! साम्यवादी विषयक प्रवचन सुनाब’लेल हम अहाँ कैँ अहि ठाम नहि बजलहुँ अछि। साम्यवादी चर्चा बहुत भेल। एकरा आब समाप्त मानल जाए। चमेली! हम एकटा खास विषयक चर्चा अहाँ लग कर’ चाहैत छी आ से एकांत मे।”

पन्ना भाइ, बेबी सुकोरानी एवं उग्रदेव ओही विलक्षण हॉल मे कने हटल एक कात मे राखल कुर्सी पर जा क’ बैसि रहलाह। एकांत होइते कोठण्डा पाणि संयत आ मध्यम स्वर मे चमेलीरानी सँ कहलनि–“हमर सभहक श्रेष्ठ एवं आदरणीय कृष्णन मावलंकर नैयर कइएक बेर एकटा खिस्सा हमरा कहने रहथि। हम वैह खिस्सा अहाँ कैँ सुनायब। खिस्साक अन्त मे एकटा प्रश्न उपस्थित होइत छैक जकर उत्तर अहाँ दी से हमर इच्छा रहत। हमर नियुक्ति अहि ठाम 1981 ई. मे भेल छल। मुदा एखुनका खिस्सा 1974 ई. क अछि। चमेली! अच्छा, बताउ जे जखन अहाँ अहि स्थानक लेल बिदाह भेलहुँ आ हजारीबाग सँ हटल पगडन्डी धेलहुँ त’ ओतय अहाँ की देखलियै?”

चमेलीरानी जवाब देलनि–“दाहिना कात भग्न भेल एकटा महल आ वामा कात पटेल ट्रान्सपोर्टक बड़ी टा हत्ता। तकर अलावा...।”

बीचहि मे कोठण्डा पाणि चमेलीरानी कैँ चुप होयबाक इशारा केलनि आ कहलनि–“बस, बस। ओही भग्न भेल महल आ पटेल ट्रान्सपोर्ट सँ हमर खिस्सा कैँ मतलब अछि। ओहि महलक मालिक समरेन्द्र प्रताप सिंह छलाह। कतेको पुस्त सँ एक छोट रियासतक राजा छलाह समरेन्द्र प्रताप सिंह। अपन पिताक मृत्युक बाद 1970 ई. मे समरेन्द्र ओहि महलक एकक्षत्र मालिक बनल रहथि। आजादीक बाद रियासत सम्बन्धी बहुतो कानून बनल आ ओहि मे फेर बदल सेहो कयल गेल। तकरबादो समरेन्द्रक सम्पति बड़ पैघ रहलनि। बम्बइ विश्वविद्यालय सँ हुनका वाणिज्य मे मास्टर डिग्री भेटल रहनि। हुनक विवाह हुनके समकक्ष झाँसी लग कोनो रियासतक राजाक पुत्री सँ भेल रहनि। पत्नीक नाम छलनि कौशल्या देवी।

–“समरेन्द्र प्रगतिशील विचारक लोक रहथि। मावलंकर जीक ओहिठाम हुनक आयब-जायब रहनि। मावलंकर जीक सानिध्य अथवा हुनक निजक चिंतन, सत्य जे हौउक, समरेन्द्र अपन हजारो बीघा जमीन कैँ प्रजा मे बाँटि देलनि। जमीनक

रजिस्ट्री आ आन तरहक खर्च ओ स्वयं बहन केलनि। गरीब जनता मे हुनकर यश ओहिना पसरि गेलनि जेना प्रातःकालिन सूर्यक प्रकाश पृथ्वी पर पसरि जाइत अछि। समरेन्द्र तकरबादो निश्चिन्त नहि भेलाह। एकरबाद ओ अपन विशाल महल कैँ अपन कर्मचारीक बीच बाँटि देबाक मोन बनौलनि। इन्जीनियर कैँ बजा क' ओकरा महल कोना बाँटल जाए ताहि विषय पर राय लेलनि। इन्जीनियर विचार देलकनि जे ठाम-ठाम पर महल कैँ तोड़ल जाए या ठाम ठाम पर नव निर्माण कयल जाए तखनहि अधिक सँ अधिक महलक कर्मचारी लाभान्वित भ' सकैत छथि। समरेन्द्र ताहि अनुकले तिथि, समय एवं खर्चाक हिसाब इन्जीनियर सँ तय करबौलनि।

—"समरेन्द्रक महलक कर्मचारी मे धनपाल पटेल नामक एकटा कर्मचारी सेहो छल। ओ गुजरात प्रांत सँ आयल छल। ओकर पछिला जीवन आरम्भे सँ अज्ञात रहलै, मुदा समरेन्द्रक पितेक समय सँ ओ महलक खजाँची पद पर आसीन छल। ओ स्वभाव सँ धूर्त एवं आचरण सँ पापी सेहो छल। ओकरा समरेन्द्रक ई महादानी बला कृत्य कनिओं नै सोहेलै। ओ धूर्तइ के एकटा योजना बनौलक आ ताही अनुसारे षट्यंत्र रचलक। स्थनीय धाकर नेता सँ धनपाल सम्पर्क बनौलक। ओ नेता पछिला पन्द्रह बर्ख सँ ओहि इलाकाक सांसद चुनल जाइत छल। ओकर राजनीतिक पहुँच एवं शक्ति बहुत अधिक रहै। धनपाल ओकर कान भरब शुरू केलक आ अन्ततः ओकरा बुझाब' मे सफल भ' गेल। ओ सांसदक मोन मे पैसा देलकै जे समरेन्द्र अपन सम्पतिक बँटबारा मात्र सांसद बनक लेल क' रहल अछि। समरेन्द्र कैँ लोक देवता सदृश आदर करैत छल। जँ ओ अगिला चुनाव मे सांसद लेल प्रत्याशी होयत त' सांसद बनिए क' रहत। वर्तमान सांसद कैँ घनघोर चिंता भेलै। तखन कयल की जाए तकर योजना धनपालक दिमाग मे पहिने सँ फिट छलैक। योजनानुसार समरेन्द्रक महल मे तथा हुनकर सासुर झाँसीक महल मे एकहि दिन, एकहि समय मे आक्रमण भेलै। निश्चित तारीख क' पचास गोट भाड़ाक शातीर बन्दूकधारी समरेन्द्रक महल मे प्रवेश केलक आ अन्धाधुन फाइरिंग केलक। अहि फाइरिंग मे कर्मचारीक संगहि समरेन्द्र मारल गेलाह। केवल धनपाल बाँचि गेल छल। बन्दूकक ताबड़तोड़ फाइरिंग सँ समरेन्द्रक पत्नी कौशल्या देवी सेहो घायल भ' गेल छलीह। मुदा अपन खास दासीक चतुराइक दुआरे ओ चोर दरबज्जा बाटे पड़ेबा मे सफल भेलीह।

—"समरेन्द्रक महल मे भेल नरसंहार कैँ नक्सलवादीक कृत्यक संज्ञा देल गेलै। समरेन्द्रक सासुर झाँसी मे भेल नरसंहारेँ चम्बलक डाकू सँ जोड़ल गेलै। धनपाल पटेल कौशल्या देवीक लाश कैँ सभ ठाम महल मे तकलक, मुदा ओ कतौ ने

भेटलै। धनपाल इलाका कँ छानि देलक, मुदा कौशल्या देवीक अत्ता-पत्ता ओकरा भेटि नहि सकलै। धनपाल महलक खजाँची छलैक। ओकरा महलक खजाना सँ करोड़ो रूपैयाक सोना, चाँदी एवं जवाहरात हाथ लगलै। एखनहुँ समरेन्द्रक महलक आसपास हुनक सैकड़ो बीघा मे पसरल पहाड़ी, झील, जंगल आ समतल भूमि अछिए। धनपाल सहजहिं ओकर मालिक बनि गेल। धनपाल पटेल एखनहुँ जीबिते अछि। आकूत धन सँ आ विशाल खाली पड़ल जमीन मे धूर्तबाज धनपाल पटेल ट्रान्सपोर्ट कम्पनी खोललक। ई ट्रान्सपोर्ट कम्पनी धनपालक मुखौटा मात्र छियै। असल मे ओकर आन-आन तरहक महाभ्रष्ट धंधा छैक जाहि सँ ओकरा साल मे करोड़ोक आमदनी होइत छैक। आब हम सभ फेर कौशल्या देवी लग वापस आबी।"

एतबा कहि कोठण्डा पाणि सांस कँ आराम देबाक निमित्ते कनेकाल लेल चुप भ'गेलाह। चमेलीरानी कँ अहि खिस्सा मे कोनो आकर्षण भेटि नहि रहल छलनि। कोठण्डा पाणि सन अद्भुत व्यक्ति आ सेहो पूर्ण मनोयोग सँ समरेन्द्र प्रताप सिंहक खिस्सा कहि रहल छथि तँ ओकरा सुनि दी, मात्र एतबेटा चमेलीरानीक अभिप्राय छलनि। ओ चुप भेलि कुर्सी पर बैसल रहलीह। पाणि फेर कहब आरम्भ केलनि– "कौशल्या देवीक अगिला जीवनक वृतान्त हमरा अहाँक धर्मपिता भूखन सिंह सँ ज्ञात भेल जे अहि प्रकारक अछि। कौशल्या देवीक पतिक महल आ पिताक झाँसीक महल ध्वस्त भ' चुकल छलै। धनपाल पटेलक भयक भूत अलगे हुनकर हत्या करबाक लेल हुनका ताकि रहल छल। आब कौशल्या देवी आश्रय लेल जैतथि त' जैतथि कत'? हुनकर कुल सम्पति हुनकर देह परहक गहने टा छलनि। लाचार भ' ओ अपन सेविकाक संग ओकरे गाम पहुँचली। कौशल्या देवीक दासीक मूल निवास बिहार प्रांत मे बछबाड़ा टीसन लग मिरचैया गाम छल। महल मे भेल फाइरिंग मे कौशल्या देवीक एक आँखि नोकशान भ' गेल छलनि। ओ मिरचैया गाम मे कनही मोदियानि बनि अपन जीवनक अन्तिम समय बितौलनि। चमेली! आब हमर प्रश्न अहाँ लग उपस्थित होइत अछि। जखन कौशल्या देवी घायल अवस्था मे अपन दासी संगे महलक गुप्त रस्ते पड़ायल छलीह ताहि काल हुनक कोरा मे चारि महिनाक पुत्री छलनि। ओ आब कत' छथि?"

अँग्रेजी मे कहबी छै 'स्टोन फेसड' अर्थात पाथर भेल मुखाकृति। कोठण्डा पाणि सँ खिस्सा सुनि चमेलीरानी सन्न रहि गेलीह। हुनक चेहराक आकृति पाथर सदृश बनि गेलनि। संवेग आ की संवेदना सभटा हुनका लग सँ तिरोहित भ' गेल। हुनका एहन अनुभव होब' लगलनि जेना हुनक कुर्सी पाथरक फर्स कँ फोड़ि जमीन मे धसि रहल होनि। चमेलीरानी चेतना शून्य होबए लगलीह। ओ कुर्सीक हत्था कँ

जोर सँ पकरि लेलनि।

कोठण्डा पाणिक बाजब बन्द नहि भेल छलनि। ओ आगाँ कहलनि—"हम किएक समरेन्द्र प्रताप सिंहक खिस्सा अहाँ कैँ एकांत मे कहलहुँ, किएक अहाँ कैँ एतय तक आब' लेल बाध्य केलहुँ, हम आशा करै छी जे आब सभ किछु अहाँ लग स्पष्ट भ' गेल होयत। चमेली! हम आ भूखन सिंह अहि सत्य सँ परिचित रहलहुँ अछि। भूखन सिंहक पेशा डकैतीक छलनि। मुदा उनका हृदय मे गरीबक लेल करुणा, अत्याचारीक लेल प्रतिशोध, व्यभिचारीक लेल दंड आ असहायक लेल मदति करबाक भाव भरल छलनि। भूखन सिंह अहाँक उदय देखलनि त'अनायासे हुनका एकटा उद्‌देश्य, एकटा सही मार्ग भेटि गेलनि। तँ अहाँक सहायता अथवा सहयोग कर' लेल ओ सदिखन तैयार रहैत छलाह। हम सेहो अहाँ मे जिज्ञासा राखब शुरू केलहुँ। समरेन्द्र प्रताप सिंहक बीज कल्पना चमेली मे प्रगट भ' रहल छल से देखि हमरा कौतुहल भेल। हिन्दू धर्म मे गोत्र आ मूल कैँ किएक एतेक महत्त्व छैक सेहो बुझ' मे आयल।

—"चमेली! हम कथमपि ने ई बात कहब जे हमरे टा मार्ग गरीबक सेवा लेल सर्वोतम अछि। विकल्प आरो भ'सकैत अछि। साम्यवादी विचार कैँ मूलमंत्र बना उद्‌देश्यक पूर्ति लेल आरो रस्ता ताकल जा सकैत अछि। जकरा हृदय मे गरीबक लेल दर्द छै, सहानुभूति छै ओ सभ त' साम्यवादिए अछि। भारतक कोण-कोण साम्यवादी सँ भरल अछि। गरीबक बिकट समस्याक न्याय हेतु जे नक्सलबाड़ी मे विद्रोह भेल छल आ जकर आगि एखन सम्पूर्ण भारत मे पसरल अछि, हमहुँ त' ओही विद्रोहक एक चिनगारीक ताप कैँ एतय बचा क' रखने छी। किएक त' हमर अटल विश्वास अछि जे मात्र साम्यवादी विचार सँ अहि गरीब देशक कल्याण भ' सकैत अछि। तथापि हम आन्हर नहि छी। हम अहाँक कार्यकलाप कैँ धैर्यक संग देखि रहल छी आ अहाँक उद्‌देश्यक प्राप्ति बाद अहाँक सही-सही मूल्यांकन करब तकर विचार रखने छी।"

कोठण्डा पाणिक वाणी मे दग्ध भेल मानवीय दुःखक चित्कार भरल छल। मुदा हुनक एकोटा शब्द की चमेलीरानीक कान मे प्रवेश क' रहल छल? नहि, नहि। चमेलीरानीक मोन मे त' भूचाल आबि गेल छल। ओ अपन जन्म-स्थान, अपन माता-पिता, अपन कुल मर्यादा सभ किछुक परिचय पौलनि। तकरा संगहि अपन माता कौशल्या देवीक मोदियानि बनि जियब, कल्पने मे सही समरेन्द्र प्रताप सिंहक भव्य आकृति कैँ देखब एक कात आ दुनू पर भेल धनपालक अमानवीय अत्याचार दोसर कात। चमेलीरानीक मोन मे त' अन्हर-बिहारि उठि गेलनि। ओ दुःख मे कानथि आ की हर्षे कुदथि? की करथि? एक विकट स्थिति मे हुनक चेतना

उब-डूब कर’लागल। एहने क्षण शैलेन्द्र लिखित एक गोट हिन्दी गीतक स्मरण भ’ अबैत अछिः “है सब से मधुर वो गीत जिसे हम दर्द के सुर में गाते हैं। जब हद से गुजर जाती है खुशी, आंसू भी छलक आते हैं।”

ताहीकाल कतौ सँ एकटा आदिवासी आयल आ कोठण्डा पाणिक मसहरी लगक चौकी लग ठार भ’ चाँ चाँ बला स्थानीय बोली मे कोनो खास तरहक रिपोट चिचिया-चिचिया क’ देब’ लागल। ओही हॉल मे कने दूर हटल पन्ना भाइ बैसल छलाह। ओ आदिवासीक बोली सुनलनि, तकर अर्थ बुझलनि आ हड़बड़ाइत चमेलीरानीक कुर्सी लग पहुँचला। हुनके पाछाँ-पाछाँ बेबी सुकोरानी आ उग्रदेव सेहो ओतय पहुँचला। पन्ना भाइ बेबी सुकोरानी कँ आदेश देलनि—“फौरन तूँ बिटिया कँ अपन कोठली मे ले जाहू। हम पाछू से आ रहल बानी।”

बेबी सुकोरानी चमेलीरानी कँ बल द’ ठार केलनि आ सहारा दैत कोठली दिस बिदा भेलीह। कोठली मे पहुँचि बेजान भेलि चमेलीरानी सोझे बिछौन पर पड़ि रहलीह। बेबी सुकोरानीक माथ पर चिंताक रेखा खींचा गेल छलनि, किएक त’ एहन रूग्न अवस्था मे ओ चमेलीरानी कँ कहिओ ने देखने रहथि।

थोड़बहि कालक बाद पन्ना भाइ अयलाह आ कोठलीक दरबज्जा लग ठार भ’ कहलनि—“बिटिया! पाणि रौआ के एकांत मे का का कहलन हमरा बुझैके जरूरी नहिखे बा। मुदा ओ का का बोललन जे हमर बिटिया के मूर्छा आ गइल तकर चिंता हो रहल बा। खैर, हीयाँ तो दोसरे खबर आ गइल हेएँ। आइ दिन का चार बजे परम वीर सेठ्ठी राजू का अड्डा पर जबर्दस्त बमबारी भइल हेएँ। बम साइज मे नापाम बम का बरोबर रहल हेएँ। कुछो ना बाँचल। सभ मारल गइलन। राजू, तकर पत्नी पद्मा आ छोट-छोट ओकर दुनू बेटी, सभ का सभ अपन प्राण गवाँ बैसलन। हीयाँ हीनका सभ के अफसोच परगट करै का चलन नै हन। बदला, केवल बदलालै का परिपाटी हन। कोठण्डा पाणि ओकरे जोगार मे लाग गेइलन हैं। हे राम! हमरा सभ के वापस दोसरा रस्ते जाइ के पड़ी।”

चमेलीरानी कँ छोड़ि दियौन। अनेक आपद-विपत्तिक असगरे मुकाबिला कर’ बाली बेबी सुकोरानी, लोपामुद्रा आ लोमहर्षिणीक मृत्युक समाचार सुनि कराहि उठलीह। ओ चमेलीरानी कँ भरिपाँज क’ पकड़ि चित्कार क’ उठलीह—“दीदी... दीदी...दीदी...!”

❀❀

..3..

—"रे हे फुलहसना साला! जा...,जा के देखह। का भैले बाराती का? बड़ा टेम लगा देलकै।" पचकौड़ी मियाँ अपन लड़िका कैँ डँटैत कहलकै।

फुलहसना अपन माथ परहक टोपी कैँ सोझ करैत जवाब देलक—"हम त' अभिए बाराती के देख के आ रहलियइहैँ। साला सभ पँचमोरा का बगल बाला पसिखाना मे ताड़ी पी रहलै हइ। हम दुल्हा का अब्बा से दरियाफ्त केलियै। साला कहलकै जे बाराती दू घंटा के भीतरे दूरा पर आ जेतै।"

—"ठीक से देखलहु? समधी साला का का लाबै हइ रे?"

—"अब्बा, तोरे पूछै का जरूरत ना हइ। ढोल हइ, पीपही हइ, फुतुरिया साला का नाच हइ।"

—"आँए रे! टेड़बम्की ला रहलै हइ कि ना?"

—"ना हौउ अब्बा, हम टेड़बम्की कहूँ ना देखलीहएँ।"

—"मर्र रे साला! टेड़बम्की ना लेलकै त' कनियाँ बिदागरी होइहे मेरे...पर।"

कनियाँ भेलीह पचकौड़ी मियाँक लड़िकी, रेहाना। टेड़बम्की भेल महफा अथवा खरखरिया। सही मे निकाह भेलाक बाद कनियाँक बिदागरी होब' लेल टेड़बम्कीक होयब नितांत जरूरी छलै। पचकौड़ीक चिंता स्वभाविके छल।

गुरखा गाम मे एकछाहा मुसलमान। गामक सब सँ मातवर आ इज्जतदार छल पचकौड़ी। खस्सी-बकरी, बुढ़िया गाय आ बुढ़ बड़दक सभ सँ पैघ व्यापारी आ तकर अलावा आम फसिलक मौसम मे ओकर आढ़तक काज दूर-दूर तक पसरि जाइत छलै। अल्ला-तालाक मेहरबानी सँ ओकरा जमीन-जत्था, टाका-पाइक कोनो कमी नै रहै। कमी रहै औलादक। पचकौड़ी तीन बेर निकाह केलक आ खुदाक फजिल सँ तीनू बीबी एखनहुँ जिंदे छलै। मुदा औलादक नाम पर एकटा लड़िका फुलहसना आ एकटा लड़की रेहाना। ताहु मे दुनू औलाद कोलिपद्द आ पैदार। फुलहसना कैँ नेनहि मे ममर्खा रोग पछारि देलकै। ओ सुखायल टांग पर कुदि-कुदिक' चलैत अछि। रेहाना कैँ कतेको झाड़-फूक भेलै, मस्जिदक मौलवीक बदनाक पानिओं पिआओल गेलै तथापि ओकर मिर्गीबला भूत नहिए उतरलै। रेहानाक निकाह पचकौड़ी लेल बड़ पैघ समस्या बनि गेल छल। एगारह हजार नगद, एक

भरिक सोनाक चेन, चानीक अगेली-पिछेली, सूति डाँड़क डरकस, कपड़ा-लत्ता आ लड़िका लेल घड़ी-साइकिल जखन पचकौड़ी एकरार केलक तखन कहूँ जलील कुजरा अपन लड़िकाक निकाह रेहाना के साथे करै लेल मंजूरी मे मूड़ी डोलौलक। आइए निकाहक दिन तय छलै।

पचकौड़ी अपन हैसियतक हिसाबे तैयारी कयने छल। खरिहान मे सामियाना टाँगल रहै आ लाउड-स्पीकरक कनफोड़ा संगीत स्थान कैँ उधियौने छल। बरियातीक संगे गाम भरिक विरादरी लेल भोजन तैयार भ'रहल छलै। किछु हटल तीर खूनल रहै जाहि पर पैघ-पैघ डेक्ची मे गोस्त, पोलाव, बिरयानी आदि बनि रहल छलै। पचकौड़ीक आंगन सँ ल'क' दरबज्जा तक मनुक्ख सँ स्थान खचाखच भरल छल। जाड़क मास छल तँ माल जालक थैरि लग घेरि क' मुसलमान भाइ आगि तापि रहल छला आ कौवालीक ताल पर माथक टोपी कैँ झुला रहल छला। तिलिया-फूलिया सँ सजल रंग-बिरंगी-चहकदार नुआ-आंगी पहिरने जनाना लोकनि रेहना कैँ छेकने गीत गाबि रहल छलीह।

एहने हुलि-मालि मे एक गोट मनुक्ख पचकौड़ी लग आबि क' ठार भ' गेल। आगुन्तक थरमोकोटक ट्रॉउजर पर सँ धोती पहिरने छल आ ओकर देह मे मोचरल कमीजक उपर स्वेटर ठेहुन तक नमरल रहै। पांच हाथक जवान, शरीर सँ हृष्ट-पुष्ट, माथ मे मफलरक मुरेठा बन्हने ओ टकटक पचकौड़ी दिस ताकि रहल छल। पचकौड़ी ठार भेल, नीक जकाँ ओहि व्यक्ति कैँ तजबीज केलक आ अपन बक्कर दाढ़ी कैँ कुरियबैत पूछलक–"तूँ के ह'? तोरा हमरा से की चाही?"

नवागन्तुक अपन दाबल ठोर कैँ पटपटौलक–"हमर नाम भेल बजरंगी। पानापुर मंदिरक गिरि पुजारीक हम भागिन छी। मामा हमरा अहाँ लग पठौलनि अछि। एखन हम तीन गोट सनेश ल' क' आयल छी। लोक-लाज एवं पुलिस-दरोगा सँ बचैक लेल ओहि तीनू कन्या कैँ हम तारसराय टीशनक मुसाफिरखाना मे बैसा क' एतय अयलहुँ अछि। तीनू कन्या बूरका पहिरने छथि आ सुरक्षित छथि। मामा कहलनि हेएँ जे यद्यपि अहि बेरुक माल बासमती चाउर जकाँ गमगम करैत अछि तथापि पुरनके दर सँ उन्नैस सय टाका प्रति कन्या अर्थात तीनूक एकमुस्त मूल्य पांच हजार सात सय आ टायरगाड़ीक भाड़ा दू सय, कुल पांच हजार नौ सय टाका ल' माल कैँ पचकौड़ी कैँ सुपुर्द क' जल्दी सँ घुमि आब'। हम ताही काजे आयल छी। आब अहाँ की कहैत छी से कहू।"

पचकौड़ी यद्यपि अपन लड़िकी रेहानाक निकाह मे बाझल छल। ओकर बेटी मिर्गियाहि छै तकर भय ओकर पेटक पानि कैँ डोलौने छलै। तथापि बजरंगीक आनल तीन सनेश अर्थात तीन कन्याक भावार्थ बुझै मे ओकरा कनियो भाङ्गठ नहि

भेलै। गिरिक मेहनतनामा आउर टायरगाड़ीक भाड़ा देलाक बादो तीन गुणा पांच, कुल पन्द्रह हजार टकाक चिक्कन नफा ओकरा हेतै तकर अनुमान सेहो भ' गेलै। रेहानाक निकाह मे भेल खर्चक जँ चौथाइओ उपर भ' जाइक त' अहि सँ बेसी पचकौड़ी कैँ चाहबे की करी? एहन सौदा कैँ हाथ सँ निकल' नहि दी। अपन नफाक इतमीनान करैत पचकौड़ी बजरंगी सँ कहलक–"तूँ गिरिया का भगिना ह' त' हमरो भगिने ने भेलह। पहिले बैठ जाहू, चाह-पान करहू आ हमरा सोचैके थोड़ा टेम दहू। सभ काम हो ने जेतै हौउ बजलंगी बाबू।"

गरदनिक नीचा हाथ ढूका क' बजरंगी जनउ निकाललक, खजूरक पात सँ बनल पटिया पर बैसि गेल आ तखन बाजल–"की कहल' चाह-पान? नारायण, नारायण! तोरा ओइ ठामक जल ल' क' लघुशंको तक नै करब, तखन चाह-पानक गप कत' सँ उठैत अछि? मामा कहलनि हेएँ जे शिघ्रातिशीघ्र माल कैँ पचकौड़ीक जिम्मा सुपूर्द क' मूल्य ल' वापिस पहुँच जाह। अइ तरहक काज मे आफद माथे पर ठेकल रहैत छै। तैँ यौ पचकौड़ी बाबू! अहाँ हमरा संगे तारसराय टीशन तक चलू। तीनू कन्या कैँ अपना आँखि सँ देखि लिअ, परखि लिअ आ जँ पसिन्न होअय त' हमरा मूल्य चुकता क' क' फुरसति दिअ। हम पहिले-पहिल एहन काज मे बझलहुँ अछि। डर सँ हमर मोन भीतरे-भीतर घिघिया रहल अछि। कनिओं टा बिलम्ब बुझू विपत्तिक निमंत्रण देब होयत।"

–"हँ भाइ हँ। अहि तरह का धन्धा मे गिरिया हमर यार आज से नइं, बहुतो साल से हइ। लेकिन अभी इहाँ का हो रहलै हेएँ से त' तूँ आँख से देखिए रहल' ह'। हमरा लड़िकी का निकाह का बखत हइ। साला बाराती आबै का टेम हो गेलै हेएँ। बड़ा गड़बड़ बखत पर, का त' तोहर नाम ह' हाँ, हाँ बजलूंगी बाबू, तूँ अइल' ह'।"

–"बजलूंगी नहि, बजरंगी हमर नाम थिक। तखन हम करू की से अहीं बाजू? की हम तीनू कन्या संगे पानापुर वापस चलि जाउ?"

–"हइ देख' बभ्भन जात का गुस्सा। इतना जल्दी फैसला त' शैतान का हुअ हइ। जरा हमरे खोपड़ी के सोचे का मौका त' दहू।"

एक क्षण ठहरि क' पचकौड़ी अपन लड़िका फुलहसना के हॉक, द' क' बजौलक आ कहलक–"जभिए बाराती पसिखाना मे बैठि गेलै त दू-तीन घंटा से पहिले की उठितइ? मुफ्त का माल, साला सभ एक-एक घैला ताड़ी पितै तब खड़ा होतै। हम हिनका जौरे टीशन तक जैबे। कूद के जेबै आ फान के ऐबै, आधा घंटा मे वापस आ जेबै। काम जरूरी का ह' आरो फायदा का ह'। तब तलक तूँ साला इहाँ का कमान होशियारी से सम्हाल लहू।"

पचकौड़ीक उमेर कब्र तक जेबा मे एके डेग पाछाँ छलै, मुदा एखनुका ओकर फुर्ती देखबाक काबिल छल। ओ टोपीक गर्दा कैँ झटकि-झटकि क' झाड़लक, माथ मे पहिरलक आ बजरंगी संगे बिदाह भेल। पचकौड़ीक पयर सँ पयर मिला क' बजरंगी चलि नै रहल छल, दौड़ि रहल छल। दुनू तारसराय टीशन पहुँचल।

राति करीब नौ बाजल हेतै। तारसराय टीसन पर सन्नाटा रहैक। बड़ी लाइनक पटरी ओछाओल जाइत छलै, टेनक आबाजाही बन्द छलै आ तेँ रेलवेक एकोटा कर्मचारी टीसन पर उपस्थित नहि छल। मात्र मालदह जिलाक झुंडक झुंड महिला-पुरुष जे रेलवेक पटरी ओछबै मे कुली छल, समूचा प्लेटफार्म पर पसरल छल। ठाम-ठाम आगि जरौने, कम्बल ओढ़ने सभटा कुली सुतल छल। मुसाफिरखानाक एक कात ब्रेंच पर तीन बुरका बाली चुपचाप बैसल छलीह। पचकौड़ी आ बजरंगी हुनका सभहक लग मे पहुँचल। बजरंगी अपन लटपटायल धोती कें ठीक केलक, नमरल स्वेटर के समटैत अपन खूजल ढेका कैँ नीक जकाँ खोंसलक। तखन बाजल—"अहाँ तीनूक भाग्य विधाता आबि चुकल छथि। अपन-अपन झँपना कैँ हटाउ। पचकौड़ी बाबू अहाँ तीनू कैँ देख' चाहैत छथि।"

तीनू बुरकाक झँपना कैँ हटौलनि। लागल जेना एक संगहि तीन गोट चन्द्रमा उगि गेल होअय। हजारो कन्याक बिक्रय कर' बला महा अनुभवी पचकौड़ी जखन तीनू कैँ एकहि संग देखलक त' ओकर होश फाक्ता भ' गेलै, आँखिक पल खसब बिसरा गेलै। ओ 'अल्ला हो अल्ला' बजैत एकटा खाली ब्रेंच पर धब्ब द' बैसि गेल। पचकौड़ी मनहि मन सोच' लागल—'एता हुश्न आ सो एके साथे। तीनू त' आफताब हइ। इतना हसीन लड़िकी कैँ त' हम कहिओ ने देखलीह हो अल्ला। सही मे तीनू तुलसीफूल चावल हई। एकर पोलाब! ना, ना, खुदा हमरा दोजख ना भेजितइ। लेकिन ऐसन माल का खरीदार कहाँ मिलतै? हाँ याद पड़ल। लहठीबाइ एकरा जरुरे खरीद लिहइ। पचास-पचास का भाव से बेचबइ त' डेढ़ लाख। हाँ, हाँ ओइ से कम का होइ हइ?'

पचकौड़ी ब्रेंच पर कनेकाल तक पोन रगड़लक। फेर उठि क' बजरंगीक हाथ पकड़लक आ ओकरा तीरने-तीरने थोड़े आगाँ ल'गेल। तखन कहलक—"हौउ बजलूंगी भाइ! न, न तोरा नाम कुछ आरो हौउ। जाए दहू जे नाम तोहर होइ तूँ अपने पास मे रख'। अभी हमर बात के गौर से सुन'। अभीए थोड़ा सबूर रखैक जरूरत हइ। अइ तीनू चुलबुलिया का बड़ा अच्छा दाम मिलिहइ। तोहर मामा का जित्ता मांग ह' ओकर दुगुणा, तेगुणा आ साला तकदीर साथ देलकै त' चार गुणा। तब हमर नफा अलग से। तीनू लड़िकी हुश्न का मल्लिका हइ। लेकिन दाम मिलतै मुजफ्फरपुर मे। तोरा हमरा साथे वहाँ तक जाय के पड़िह'। हमर लड़िकपन का

एकटा यार हइ साला बसीरबा। ओकर घर नजदीके हइ। ओकरे जीप किराया पर लेबै आ फौरन से पेस्तर मुजफ्फरपुर पहुँच जेबइ। तूँ हमरा बात का यकीन करहू बजलूंगी भाइ।"

पचकौड़ीक मनसुबा देखबा योग्य छल। ओ अपन लड़िकी रेहानाक निकाह बला बात नीक जकाँ बिसरि चुकल छल। ओ तत्काल बजरंगीक संगे अपन यार बसीरक घर दिस बिदाह भेल।

सुखायल धारक ओहि पार एकटा टोल रहै। ढहल मस्जिद आ तकरबाद खोपड़ीनुमा घरक पतियानी। पचकौड़ी एकटा खपरैल घरक दरबजाक जंजीर कैं जोर-जोर सँ झनकौलक। भीतर सँ कारी फुदनाबला टोपी पहिरने एकटा छौंड़ा बाहर आयल। पचकौड़ी कैं देखिते ओ बाजल—"सलाम वालेकुम चचु। एतना रात मे काहे एलहु हेएँ?"

—"वालेकुम सलाम। सभ कुछ खैरियत हइ। तोहर बाप साला बसीरबा कहाँ हौउ? ओकरा से एक ठो जरूरी काम हइ।"

आयल छौंड़क मुँह तीत भ' गेलै। ओ अफसोच करैत बाजल—"जब अपन मुसलमाने भाइ दोसरा मुसलमान का इज्जत ना करतै त'दोसरा कौम का कोन गरज हइ। अब्बा हज करके अइलै हेएँ आ तूँ कहै हतहू साला बसीरबा। हाजी बसीर खाँ ने कहबूहू।"

—"अच्छा, अच्छा। हाजी बसीर खाँ वल्द हाजी जमील खाँ वल्द हाजी-काजी उसमान खाँ कहाँ हौउ? सुन रे नूर महमद! हम तफरी का वास्ते नै, एक बहुत जरूरी काम के वास्ते बसीर के खोजैत हतियइ। बरखुरदार, जल्दी से ओकरा बुला दहू।"

नूर महमद मुँह बिचकबैत जवाब देलक—"अब्बा अभी इहाँ ना अइहएँ। एलेक्शन का टेम ह'। पांच बरख पर साला एइसन टाइम आब हइ। अब्बा के बहुत बड़ा ऑडर मिल' हइ। छोटा-बड़ा मिला के एक सौ चालीस बम का ऑडर हइ। एक से तीन रोज के अन्दरे पूरा के पूरा बम बना के सप्लाइ करैके हइ। अब्बा एखुन बम बनबै मे मस्तगुल हइ। ओकरा इहाँ आना नामुमकिन हइ।"

पचकौड़ी अपन कुर्ताक जेबी सँ एकटा पूड़िया निकाललक आ नूर महमदक हाथ मे रखैत बाजल—"हमरा मालूम हइ जे बिना घूसका तूँ साला सीधा ने होइह'। ई खाँटी नेपाली दू सौ ग्राम गाजा हौउ। जा, जाके जिनगी मे चिनगी उड़ा आ हाजी बसीर मियाँ के जल्दी भेज।"

नूर महमदक चेहराक पहटा पर प्रसन्नता पसरि गेलै। गाजाक पूड़िया कैं सूंघि ओ ओकरा अपन पॉकिट मे रखलक। फेर पाछाँ हटैत ओ पचकौड़ी आ बजरंगी

के भीतर आंगन मे अबैक इशारा केलक।

भीतर आंगन मे चारुकात घर। प्रायः एक दर्जन मुसलमान परिवार ओहि आंगन मे रहैत छल। धिया-पूताक चीख-पुकार आ जनानी सभहक गारा-गारी सँ आंगन मे अनघोल मचल छलै। नूर महमद आगन्तुक अतिथि कैँ एक खाश कोठरी मे ल'गेलै। ओ कोठली बसीरक बैठकखाना छल। नूर महमद एकटा पटिया कैँ पटकि-पटकि क' झारलक, जमीन पर औछौलक आ तखन बाजल–"चचू, तूँ आ तोरा साथे ई कौन साला हइ, खैर जे हइ से हइ, दुनू इहाँ तसरीफ रखह। हम अब्बा कैँ बुला के लाबैत ही।"

बसीर आयल। पचकौड़ी ओकर लंगोटिया यार। दुनू छाती एवं गरदनिक मिलान केलक। सभ कियो पटिया पर बैसल। ताबे कियो तीन गिलास कॉफी सँ मिलैत-जुलैत कोनो पेय पदार्थ आ हुक्का राखि गेल। हुक्का मे 'पीनी'क स्थान पर प्रायः चरस भरल छलै। हुक्काक तीख गंध सम्पूर्ण कोठली मे पसरि गेल छलै। बड़ी टा मुँह बाबिक' बसीर पचकौड़ी सँ पुछलक–"का बात हइ रे साला पचकौड़िया? कौन ऐसन जरूरी काम तोरा हौउ?"

–"पहिने हमरा साथे जे एलै हए ओका पहचान लहू। ई हइ गिरि पुजारी का भगिना साला बजलूंगी...।"

बीचहि मे बजरंगी पिनकि क' ठार भ' गेल आ फोंफियाइत बाजल–"हम एको क्षण एतय रुकि नहि सकैत छी। हे लिअ, हम जा रहल छी।"

–"हे ल'। तूँ काहे गुस्सा मे फनकै का कारोबार शुरू कर देलहू। तोरा कोनो डाँस बिन्ह लेलक' हएँ की?" आश्चर्य करैत पचकौड़ी पुछलक।

–"अहाँ लोकनि बात-बात मे 'साला' शब्दक सम्बोधन करैत छी। साला माने भेल गारि। हम गारि कैँ बर्दास्त कथमपि ने क' सकैत छी।"

पचकौड़ी एवं बसीर भभा क' हँसि पड़ल आ बजरंगीक अज्ञानता पर बड़ी काल धरि हँसैत रहल। फेर बसीर बजरंगी कैँ बुझाब' लागल–"जइ तरह से तोरा सब मे हुअ हइ हौउ आप, ठीक ओही माफिक हमरा सब मे हुअ हइ रे साला। साला कोनो गाली ना हइ। खैर, अभी से हम दुनू एकर ठेकाना राखब आ तोरा साला बजलूंगी ना बोलब। ठीक हइ ने रे साला पचकौड़िया।"

बुझेला-सुझेला पर बजरंगी पुनः पटिया पर बैसल। बसीर आग्रह केलकै– "गिलास मे कहवा हइ। ल', एकरा पी ल'।"

–"नइ, हम कहवा-तहवा नै पिबैत छी।"

–"अरे भाइ! ईमुलतान का कहवा ह'। पी के देखहू ने, मिजाज टनटना जइह। अही कहवा पी-पी के उहाँ के लोग जाड़ा से बचै हइ आ साले-साल औलाद पैदा

करै हइ।”

मुदा बसीरक आग्रह कैँ बजरंगी कोनो तरहें स्वीकार नहि केलक। जाहि काजे आयल छल से एकाएक पचकौड़ी कैँ मोन पड़लै। ओ बसीर सँ कहलक—“गिरि पुजारी तीन ठो कबुतरी भेजलकै हेएँ। यार बसीर, ओ के देखबूहू ने देखिते रहि जेबहु। एक के मानि लहू सुरैया, दोसरा कैँ नूरजहाँ आ तेसरा साली का नाम रहलै हेएँ...नामे भूला गइल।”

बसीर हुक्काक गुड़गुड़ी कैँ मुँह सँ हटा छींटा भरि धूआँक उगला केलक आ तखन तेसर हिरोइनक नाम बाजल—“निगार सुल्ताना।”

—“हाँ-हाँ। ठीके कहलहू। तेसरा का नाम निगार सुल्ताना। भाइ बसीर, गिरिया जे भेजलकै हएँ ने से सभ आफताब हइ, गुल सनोवर का माफिक कड़क माल हइ।”

हुक्काक कमाल होइ अथवा कहवाक परताप। बसीर मियाँ अपन पकलाहा दाढ़ी कैँ झुलबैत किछु काल लेल अपन बीतल संसार मे डुबि गेल। फेर होश मे आयल आ बुदबुदाइत बाजल—“पुरना हिरोइन का किरदार, ‘सैंयां दिल मे आना रे, आ के फिर ना जाना रे, टन, टनाटन टन।’ रे साला पचकौड़िया, तूँ हमरा पुरना हिरोइन का याद करा के हमरा दिल का टुकड़ा-टुकड़ा कर देलहू। निगार सुल्ताना हमरा जिगर मे जे खंजर भोंकलकै तकर चेन्हा आज तक हई। देखबूहू, अच्छे त’ देखहू।”

बसीर मियाँ होश मे नहि छल, केवल जोश मे छल। ओ पटिया पर ठार भ’ गेल आ निगार सुल्तानाक भोंकल खंजरक चेन्हा देखेबाक जनून मे जिगरक स्थान गंजी उठेबाक बदला लूंगी उठा लेलक।

बजरंगी के रद्द होयबाक सम्भावना भ’ गेलनि। हुनका तालिबान एवं अलकयदा, दुनूक दर्शन एकहि ठाम भ’ गेलनि। ओ ओकियाइत बजला—“राम-राम। मामा हमरा केहन काज मे झोंकि देलनि जे सभटा पाप हमरे वहन कर’ पड़ि रहल अछि। ताहू पर सँ लोभ जे मुजफ्फरपुर मे कन्याक बिक्री सँ अधिक लाभ होयत। कहि ने, अहि काज मे हमरा की की ने देख’ पड़त।”

पचकौड़ी एखनो होश मे छले। ओ ठार भेल आ तीर क’ बसीरक उठल लूंगी कैँ नीचा खसौलक। फेर ओकर गट्टा पकड़ि पटियापर बैसबैत बाजल—“भूल जाहू जवानी का बात। जवानी साली बेइमान, दगाबाज। जवानी अइलै आ आ के चला गइलै। अरे, असल चिज हइ बुढ़ापा। बुढ़ापा से कन्कशन जोड़ने रहू। ई हमरा-तोरा जनाजा तक साथे रहतै, कफन-दफन तक साथ नइं छोड़तै। लेकिन सुन रे बसीरबा, अइ तरहका बात करके हम बखत का बरबादी ना करबै। अभी तीनू

छौंकड़ी को मुजफ्फरपुर पहुँचाबै के बात ह' । एकटा जीप का इन्तजाम कर दहू।"

—"हमरा जीप त' छह महिना से दाँत खिसोरने पड़ल हइ। अइ एलेक्शन मे जे कमेबइ से अही साली मे खर्च करबइ।"

बजरंगी हतोत्साहित होइत पचकौड़ी केँ कहलनि—"भ' गेल, सभटा गूंड़ गोबर। तखन बैसल मुँह की तकै छी? चलू, एतय सँ चलू।"

पचकौड़ी हुक्काक टोंटीक मुँह अपना दिस करैत बाजल—"हौउ बजलूंगी भाइ! तूँ बड़ा जल्दीए मे बोझा पटकि दिअ ह' । बसीर के पास अइल'ह' त' सबूर राख' । ई साला अपना जोड़ का असगरे कइयाँ ह' । एकरा पास सभ दुख का दवाइ हइ।"

ओही काल बाहर सँ एकटा छौंड़ा आयल। ओकरा हाथ मे एकटा टिनही छिपली रहै। छिपली मे काँटी आ शीशाक कुन्नी भरल रहै। ओ बसीरक आगाँ छिपली राखि देलक आ कहलक—"अब्बा, छोटकी काँटी त' मिललै मुदा शीशा का कुन्नी खोजै मे हमर जान निकल गइलह। बड़ा मुस्किल से ममर्खा ठीक करैबला दबाइ का बोतल डोमनी के इहाँ मिललै। ओ हरमजादी चार बोतल का आठ रूपैया डॉउन पेमेन्ट करा लेलकै तबे बोतल देलकै। ओही बोतल के चूरचार केलियै तब इतना माल तैयार होलै। देखहू ने, ठीक हइ कि आरोमाल लगतै?"

बसीर हुक्काक टोंटी सँ माथ ठोकलक आ अफसोच करैत बाजल—"तीन बीबी से सतरह ठो औलाद पैदा केलियइ। लेकिन एको ठो हरामी काम का ना भेलै। रे साला, इतना माल से मुस्किल से दस-पन्द्रह ठू बम बनिहइ। इहाँ दू सौ बम का अरजेन्ट ऑडर पड़ल हइ। खैर, तूँ अभी ई काम को छोड़। अभी जा, बड़की सड़क के गुमती के पास जहाँ हीरबा हलुआइ का दुकान हइ ना, वहाँ जा। एकटा मारुति कार, नहीं रे, मारुति भान के देखबहू। मारुति भान का चारो तरफ मोबाइल का इस्तहारबला पोस्टर टाँगल होतै। हाँ, हाँ, वही भान का ड्राइभर से कहबहू जे बसीर खाँ फौरन से पेस्तर बुलौलकौ हेएँ। ड्राइभर का नाम हइ, फिर साला भुला गइली। हिन्दू जात का नामे अइसन ने हुअ हइ जे...हाँ, हाँ, याद पड़ल बेलदार। पूरा नाम हइ अक्खे लाल बेलदार। मधुबनी जिला का कोनो एम.एल.ए. का ड्राइभर हइ। ओकरा चालीस ठो बम चाही। एडभान्स दे गेइलै हेएँ। लेकिन बम कल शाम से पहिले थोड़े तैयार होतै? तब तलक बेलदरवा साला पचकौड़ी का तीनू छिपकली के मुजफ्फरपुर पहुँचा के वापस आ जेतै। पचकौड़ी अपन यार हइ, विरादरी का हइ, जिगर का टुकड़ा हइ। एकर धन्धा मे नोकशान हमरा से बर्दास्त ना होइतइ। जा, जा के डराइभर साला को बुला के ला।"

ड्राइभर आयल। हील-हुजैत भेल। मुदा ओ तैयार भ' गेल। एक हजार भाड़ा आ मारुति भान पेट्रोल जतेक पियत से पचकौड़ी के दिअ पड़तै। अक्खे लाल

बेलदार भान ल' क' तारसराय टीशनक हात्ता मे पहुँचत तकर एकरार क' क' ओ वापस गेल।

एमहर पचकौड़ी आ बजरंगी सेहो बसीर कैँ अलविदा कहि तारसराय टीशन लेल वापस बिदा भेल। जखन दुनू सुखायल धारक पेट मे पहुँचल त' नहि जानि की भेलै पचकौड़ी एकटा धिमकी पर बैसि गेल आ ठुनकि-ठुनकि क' कानय लागल। शायद ओकरा अपन बेटी रेहानाक निकाह बला गप मोन पड़ि एलै। कनेकाल तक नोर बहा पचकौड़ी अपना पर काबू केलक। तखन बजरंगी सँ कहलक—"बड़ा मुस्किल का टेम ह'। दूरा पर बाराती पहुँच गेल होतइ आ एमहर हमरा मुजफ्फरपुर जाना जरूरी हइ। बहुत बड़ा नफा का सौदा हइ। का करब आ का ना करब, दिमागे साला फेल हो गइल हइ।"

बजरंगी ओहुना पचकौड़ी सँ अकछा गेल छल। तथापि ओ अपना पर काबू करैत आ चुचकारैत ओकरा विचार देलक—"अहाँक समस्या ठीके विकट अछि। हम विचार देब जे अहाँ स्वयं मुजफ्फरपुर नहि जाउ। अहाँ अपन बालक फूलहसन कैँ हमरा संग मुजफ्फरपुर जाए दिअ। फुलहसन कैँ मुजफ्फरपुरक सभटा अड्डाक परिचय त' हेबे करतनि।"

—"हँ, हँ, ओकरा सभ ठेकाना का पता हइ। हमरा साथे तीन-चार दफा फुलहसना मुजफ्फरपुर गइल हैँ। मुदा बजलूंगी भाइ! फुलहसना की आदमी हइ, पूरा बंडल हइ बंडल। दू-दू बेर ओकर निकाह करेलियै। लेकिन साला अपना जोरू के डेब नइ सकलइ। महिना भर के अन्दरे ओकरा मेहरारु भाग के नैहर चला गेलइ। आब त' तूँ हमर राजदार ह'। तैँ सभ बात के खोल के कहै छिअ। हम फुलहसना के वास्ते बहुतो माथा खपेलियइ। अन्त मे ओकरा पाकिस्तान भेज देलियइ। सोचलियै जे आरो किछु ना बनतै त आतंकियो बनके जिनगी काट लेतै। लेकिन साला ओहू से बैरंग वापस आ गेलै। ओ आतंकियो ने बन सकलइ।"

पचकौड़ीक बोली सँ पीड़ा टपकि रहल छलै। आब बजरंगी कैँ पचकौड़ीक असली दुखक कारण द' पता चललै। फुलहसना ओकर एकमात्र पुत्र। पुत्रक भविष्य लेल पिता कैँ चिंता होयब स्वभाविके छल। बजरंगी अपनैतीक भाव सँ पचकौड़ी सँ जिज्ञासा केलक—"की भेलै जे फुलहसना पाकिस्तान जाइओ क' आतंकी नहि बनि सकल? एकरा कने फरिछा क' ने कहू?"

पचकौड़ी सुखायल धारक धिमकी पर एक दू बेर पोन रगड़लक। तखन द्रवित वाणी मे अपन दुखनामा कह' लागल—"फुलहसना पक्का दू साल पाकिस्तान मे रहलै। कश्मीर से कन्धार तक, बहुतो कैम्प मे एकरा ट्रेनिंग पड़लै, लेकिन साला कछुओ ने सिखलकइ। ई गोबर का चोत ह' से जुमला एकरा द' के वापिस भेज

देलकइ। हम त' माथा पिट के रह गेलियइ। थोड़ा टेम जब पास हो गेलै तब एकरा एक दिन कहलियै जे परसूराम के घर मे बहुतो माल हइ। रे साला तूँ पाकिस्तान बाला तमंचा ले के जो आ परसूराम के घर मे डाका डाल। कुछो तो कमा के ला। साला परसूराम के घर डाका डालै के वास्ते गइलै। लेकिन डकैती ना करके पंच बनके वापस आ गेलइ।"

सही मे पचकौड़ी अपन दुनू हाथे कपार पिट' लागल। बजरंगीक मोन पसीज गेलनि। ओ पचकौड़ी कँ सान्तुना देब' लागला। पचकौड़ी धिमकी पर अहुछिया कटैत, हिचुकि-हिचुकि क' कनैत अपन व्यथा कथा बजरंगी सँ कह' लागल।

परशुराम चौधरीक जेठका सारक छोटका बेटा हरे कृष्ण पढ़' मे पचपन नम्बरक छूड़ी छल। हिसाब मे त' ओ सय मे सय अनैत छल। पढ़ि-लिखि क' ओ सिविल इन्जीनियर बनल आ प्रांतक पी.डब्लू.डी. मे एस.डी.ओ पद पर नियुक्त भेल। शुरू मे हरे कृष्णक कमाइ बहुत बेसी नहि रहै। मुदा जखन ओ एक्सक्यूटिभ बनल त' अकाशे मे भूर भ' गेलै। ओ हजार मे नहि, लाख मे नहि, करोड़ मे कमेलक। टाका कमायब एक बात मुदा ओकरा नुका क' राखब दोसर बात भेल जाहि मे हरे कृष्ण भुसकौल छल। ओ अपन पिता सँ अहि विषयक लेल मंत्रणा केलक। हरे कृष्णक पिताक बहनोइ परशुराम चौधरी चौबीस घंटा मे अड़तालिस घंटा पूजा-पाठ करैत छलाह। ठरका चानन मे सेनूरक ठोप आ गरदनि मे तीन भत्ता कंठीक हार पहिर क' परशुराम चौधरी सभ कँ आशीर्वाद दैत अपन-जीवन यापन करैत छलाह। आब परशुराम चौधरी सन धार्मिक आ विश्वासी के भ' सकैत छल? हरे कृष्ण परशुराम चौधरीक नामे सम्पति कीनए लागल आ सम्पति करोड़ मे होअय त'ककर बापक सक छियै जे ओ अपन नेत ठीक-ठाक राखि सकत। ओहुना परशुराम चौधरी करितथि की? हुनको सखा-बात त' रहबे करनि। आखिर मे हुनक नेत डोलि गेलनि आ ओ हरे कृष्णक बड़ कठिने कमायल करोड़ मे सम्पति कँ गिरि गेला। हरे कृष्ण त' बताह बनल एखन तक जीविते छथि, मुदा हुनकर पिता परशुराम चौधरी बेइमानक दुआरे गो-लोक बासी भ'गेलाह।

परशुराम चौधरी सभटा जत्था-जमीन कँ बेचि करोड़ो टका कँ अपन सन्दूक आ कोठी मे भरि लेलनि। आब हुनको अहि विशाल सम्पति कँ नुका' क राखब कठिन भ' गेलनि। मनुक्ख केहनो स्वभावक होअय, मित्र सबकँ होइत छै। एहन कठिन परिस्थिति मे परशुराम चौधरीक सहायक भेल हुनक एक मात्र मित्र एवं हित चिंतक गत्तीराम साहु। गत्तीराम परशुराम कँ विचार देलक जे जँ सभटा टाका कँ असफी बना देल जाए त' थोड़बे जगह मे सभटा धन कँ सुरक्षित राखल जा सकैत अछि। परशुराम चौधरी कँ गत्तीरामक विचार युक्तिसंगत लगलनि। गत्तीराम

परशुराम सँ थोड़-थोड़ रूपैया ल' जाथि आ ओकरा असर्फी मे परिवर्तित क' क' पहुँचा जाथि। अहि तरहें बिना कोनो तरबदुत कैँ गत्तीराम सन मित्रक सहयोग सँ परशुराम चौधरीक सभटा रूपैया असर्फी बनि गेल।

धनक अपन गंध होइत छैक। धनक मालिक कैँ छोड़ि ई गंध सभकैँ स्वतः लागि जाइत छैक। आजाद भारत मे वी.डी.ओ. भेल जमींदारक जमींदार। स्थानीय वी.डी.ओ. कैँ परशुराम चौधरीक धनक गंध नाक धरि पहुँचि गेलै। ओ परशुराम चौधरी कैँ बजबौलक आ हरकौलक जे ओ हुनक घर मे रेड करा देत आ हुनका जहल पठबा देत। कंठीधारी परशुराम चौधरी डबल गेयर मे फँसि गेलाह। बहुतो मोल-भाव केलाक बाद वी.डी.ओ. चालिस असर्फी पर चुप रहबाक सर्त केलक। परशुराम चौधरी चालीस गोट असर्फी बी.डी.ओ. कैँ पहुँचा देलनि। एतहि आबि क' पोल खुजि गेल। वी.डी.ओ. असर्फीक जाँच करौलक। अहि रे बा...! ई त' रांगा पर सोनाक पानि चढ़ाओल असर्फी निकलल। चोरीक धन छिपारे खाय। मुदा छिपारक धन के खाय? बुद्धिजीवी लेल ई उत्तम प्रश्न अछि।

परशुराम चौधरी जाहि घड़ी बहुरुपिया बनल अपन नसीबक दहो-बहो नोर बहा रहल छलाह ओही राति फुलहसना पाकिस्तान सँ आनल अपन पिस्तौल मे टोटा भरलक आ बापक आज्ञा सँ परशुराम चौधरीक घर एसगरे डकैती कर' पहुँचि गेल। कनैत-बिलखैत परशुराम चौधरी अपन दारुण दुख सँ भरल खिस्सा फुलहसना कैँ सुना देलनि। फुलहसना टटके मर्द बनि पाकिस्तान सँ आयल छल। ओकर दिमागक हॉर्स पॉवर फूल स्पीड मे काज क' रहल छलै। ओ तत्काल बुझि गेल जे सभटा किरदानी गत्तीराम साहु कयने अछि। पंचक हैसियत सँ फुलहसना परशुराम चौधरीक डेन पकड़ने गत्ती राम साहुक दरबज्जा पर पहुँचि गेल।

गत्तीराम साहुक पुतहु गामक मुखिया। मुखिया लग लठैत रहिते छैक। लठैत कैँ ऑडर निर्गत भेल आ ओ सभ फुलहसना कैँ लठिआयब शुरू क' देलक। खिस्सा कैँ उपसंहार लग पहुँचा पचकौड़ी बाजल—"खाट पर लादिक' फुलहसना के लौ ली। आब तोहीं बोल हौउ बजलंगी भाइ, फुलहसनाक अकिल पर हमरा की कोनो टा उम्मीद राखै का काम है?"

पचकौड़ीक सभटा खिस्सा सुनलाक बाद बजरंगी ओकर माथ कैँ ठोकि-ठोकि ओकर हिम्मत कैँ वापस अनलनि। फेर टिटकारी दैत, पुचकारैत आ फुसलबैत कहुना ओकरा तारसराय टीशन तक अनलनि।

जाहि व्यक्तिक दिव्य जीवन चरित कैँ सुनैत बजरंगी आबि रहल छला ओ महान पुरुष अर्थात फुलहसना पहिने सँ तारसराय टीशन पर पहुँचल छल आ तीनू बुरकाबालीक इर्द-गिर्द टहलि-बुलि रहल छल। पचकौड़ी कैँ देखिते ओ हहाइत बाप

लग पहुँचल आ कहलक–"अब्बा जुलूम हो गइलै। जब से तोहर समधी दूरा अइलइ हइ कूद-फान क' रहलै हइ। ओ पहिले तोरा खोजलकै, तूँ ना मिललहू आ कि बस, ताल ठोक' लगलै हइ। साला कहै हइ कि जब तलक समधी मिलान ना होतइ तब तलक लड़िका निकाह ना करतइ। ओ गुस्सा मे चून-चून के गाली बक रहलै हअ। कच्छीबला टोपी पहिरले हमरा हुकुम देलकै–'बुला बाप के। नइ त' हम बाराती के वापस ले के चला जैबउ।' अब्बा हौउ अब्बा! तोरा वहाँ जल्दी मे पहुँचै के ह'। नइ पहुँचबहु त' साला बाराती ले के वापस चला जइहइ।"

पचकौड़ी मियाँ लेल असमंजसक स्थिति भ'गेलै। एमहर तीन-तीन गोट पौड़की, हुश्नक शाहजादी, तीस चालिस हजारक जीतल लॉटरी। ओमहर मिर्गियाही बेटी रेहानाक निकाह आ ताहू सँ अधिक गुरखा गाम मे ओकर इज्जतक सवाल। सही विचार कँ माथ मे आनैक प्रयत्न पचकौड़ी लेल कठिन भ' रहल छलै। ओकरा खोपड़ी मे त'बसीर मियाँक चरसबला हुक्काक धुआँ कबड्डी खेलि रहल छलै। मुदा पचकौड़ी इलमदार मनुक्ख छल। एहन विकट परिस्थिति मे ओकरा की करक चाही से ओकरा बुझल रहै। ओ ठामहि जमीन पर बैसि गेल आ पोन के टीशनक पक्का फर्स पर रगड़' लागल। ओकर माथ महक सोचैक यंत्र फकद'खुलि गेलै। बजरंगी लग आबि क' पचकौड़ी बाजल–"हमरा जाइ के होतै। साला, कोनो दोसर रास्ता ना हइ। अब कमान तोरे हाथ मे हइ बजलूंगी भाइ। फुलहसना साला हॉफ एच. पी. का आदमी हइ। एकरा पर हमरा कोनो एतबार ना हइ। लेकिन ई तोरा साथे जैह'। एकरा लहठीबाइ का ठेकाना देखल हइ। सीधे लहठीबाइ के इहाँ जाइ के हौउ। माल तगड़ा हइ। कीमत के नीचा नइं करबुहू। तीनो बुलबुल का एके साथे डेड़ लाख। समझ गेलहू ने बजलूंगी भाइ! अल्ला जरुरे वरक्कत दिहइ।"

पचकौड़ी अफसोच करैत वापस गेल। ओकर पुत्र फुलहसना मुसाफिरखनाक ब्रेंच पर बैसलि तीनू बुरकाबाली कँ चाव सँ निहारि रहल छल। तखने बसीर मियाँक ठीक कयल मारुति भान हनू द' टीशनक हाता मे प्रवेश केलक। भानक चारुकात नोकिया, रिलायन्स, टाटा, एअरटेल आदि मोबाइल कम्पनीक पोस्टर टाँगल छलै। भान सँ उतरि ड्राइभर बजरंगी लग आयल आ पुछलक–"के सभ मुसाफिर छथि? कुल संख्या कतेक अछि? ओ बूढ़बा मियाँ कत' गेल? आहि रे बा! तखन हमर भाड़ा के देत?"

फेर ड्राइभर फुलहसना कँ तजबीज करैत मुँह बिजकौलक आ बाजल–"ई सार के थिक? ई त' हिजड़ा सन लगैत अछि? इहो जायत की?"

ड्राइभरक अपना लेल 'हिजड़ा' शब्दक सम्बोधन प्रायः फुलहसना कँ नीक नहि लागल हेतै तथापि ओ क्रोधित नहि भेल। खुशामदी अबाज मे ओ ड्राइभर कँ

कहलक–"बूढ़वा मियाँ हमर बाप रहले हेएँ जे चला गेलै। तोहर भाड़ा का हजार रूपैया हम मुजफ्फरपुर मे पेमेन्ट कर देबहु। पेट्रोल आ रस्ता मे चाय-पानी का खर्चा हमरा पॉकिटे मे ह'। कोनो फिकिर ना करहू? अच्छे डराइभर तोहर नाम का' ह'?"

–"भाइ अक्खेलाल बेलदार।"

–"बेलदार? ऐसनो की नाम होलै हइ? तोहर जात कौने होउ? तूँ हिन्दू ह' आ कि मुसलमान?"

–"बेलदार हमर जातिक टाइटिल अछि। हम हिन्दू छी। जहिना तोहर मुसलमान मे कुजरा, धुनियाँ, डफाली, नट, पररिया, साँइ, फकीर, मदार, मोमिन, इदरीसी, दर्जी, इब्राहिम, टिकुलहारा आदि जाति होइत छह तहिना हमर हिन्दू मे कपरिया, कलंदर, खटिक, तांती, पाण्डी, सेखड़ा, बागदी, बनपार, अमात संगे बेलदार सेहो जाति होइत अछि। हमरा हिन्दू मे जतेक तरहक जाति छैक तकरा जँ कह' लगब' ने त' साँझ सँ भोर भ' जेत'। बूड़ि खटोलिया नहि तन।"

"गुस्सा ने करहू हौ बेलदार भाइ। अइसने पूछ देलिहऊ। अच्छे! बतबहु जे तोहर ठेकाना कहाँ ह'? अइ भान का मालिक के ह'?"

–"गामक नाम भुटका जिला सहरसा के हम बासी छी। अहि भानक मालिक छथि लड्डू लाल आजाद। ओ कपचिया प्रखण्ड सँ विधायक छथि। हम हुनक खासमखास ड्राइभर छी। अगिला चुनावक तैयारी भ' रहल छै। ओही मे हम सभ बाझल छी। एखन हम एलेक्शनक काज मे प्रयोग होब' बला कम पावरक चालिस गोट बम कीनै लेल बसीर मियाँ लग आयल रही। बीचहि मे ओ नवका काज फरमा देलनि।"

फेर भाइ अक्खेलाल बेलदार नामक ड्राइभर बजरंगी दिस घुमैत बाजल–"अइ सड़ल मियाँक प्रश्नक जबाब दैत-दैत त' एतहि भोर भ' जायत। एखन रातुक बारह बाजल अछि। जल्दिए बिदाह होइत जाउ। मालिक छथि विधायक आ समय छै चुनावक। एखुनका एक-एक मिनट अनमोल छै। हमरा मुजफ्फरपुर सँ वापिस आ बसीर मियाँ सँ बमक डलेभरी ल' कपचिया पहुँचैक आतुरता अछि।"

तीनू बुरकाबाली महिला मारुति भानक पछिला सीट पर बैसलीह। मफलरक मुरेठा आ ढेका खोंसने बजरंगी ड्राइभर बेलदारक बगल मे आगू बैसला, सभ सँ पाछाँ मोटा रखैक जगह पर राखल स्टूल पर फुलहसना के स्थान भेटलैक। भान बिदाह भेल। औंधी ने लागि जाय तैँ ड्राइभर भाइ अक्खेलाल बेलदार सिसकारी दैत हिन्दीक गीत गाबए लागल–'दिल को निकालकर रख दिया चाकू के नोक पर...'।

पाछाँ बैसल फुलहसना चिचिया उठल–"बेलदार भाइ। ऐसन गीत ने गबहू।

हमरा अपना छोटकी बीबी का याद आ जा हइ। साली धोखा देलकइ, दोसरा मरद के साथे उड़हर गेलइ। रहलइ हे बड़ी कटीली। ओकर याद अभियो दिल के तड़पा रहलइ हए।"

ड्राइभर बेलदार एकाएक हार्ड ब्रेक मारलक। पछिला स्टूल पर बैसल अपंग फुलहसना सोझे चदरा मे ढाही मारलक आ बफारि काट' लागल–"मार देलकै। जान से मार देलकै रे साला! कपार फोड़ देलकै! या अल्ला!"

बजरंगीक कहला पर बेलदार भान कैँ ठार केलक। जल्दी सँ बजरंगी मारुतिक पछिला दरवज्जा खोलि फुलहसना लग पहुँचला। फुलहसना भानक फर्स पर चित पड़ल छल। ओकर माथ मे सरिसबक लड्डूक बरोबरि टेटर उगि गेल रहै। बजरंगी सहारा दैत फुलहसना कैँ अगिला सीट पर अपन बगल मे बैसोलनि आ बेलदार कैँ विनती केलनि–"भाइ अक्खेलाल! मुजफ्फरपुर मे अपन सभहक ठेकाना जननिहार यैह फूलहसन बाबू छथि। डरेबर बाबू! हिनका पर रहम करियौ।"

बेलदार भान कैँ फेर सँ स्टॉर्ट केलक। मेन रोड पर पहुँचैत देरी ओ भान कैँ टॉप गेयर मे द' फूल स्पीड लेल एक्सलेटर कैँ दबलक। तइयो रस्ता महक लाइन होटल मे खाइत-पिबैत ओकरा सभ कैँ मुजफ्फरपुर पहुँचैत-पहुँचैत रातुक तीन बाजि गेलै।

शहर पहुँचिते फुलहसना डाइरेक्शन देब शुरू केलक–"अइ ठाम बायाँ। हाँ, हाँ एखन सोझे चलै के हइ। ओ देखियह दिलवहार बाइ का कोठा। बस, बस सामने सुल्ताना बेगम का बगल बाला दू मंजिला कोठी ह'। इहाँ रोक दहू। एही सामने बला चकला लहठी बाइ जी का महल हइ। लहठी बाइ का टक्कर का बाइ मुजफ्फरपुर का बात छोड़ दहू, पुरा इन्डिया मे ने हइ।"

बेलदार एकटा दू मंजिला मकानक आगाँ भान कैँ ठार केलक। फुलहसना भान सँ उतरि क' मकान मे ढूकल। आधा घंटाक बाद ओ वापस आयल। ओकरा संगे एकटा जनाना छलै। जनानाक पोशाक एहन रहै जेना कोनो ठेंगा कैँ नुआ पहिरा ठार क'देल गेल होअय। ओहि जनानाक नाम छलै सुन्नरी। तत्काल सुन्नरीक देहक इतरक सुगन्धि चारुकात पसरि गेल। फुलहसना बजरंगी एवं बेलदार, दुनू कैँ एकहि संग सम्बोधित करैत बाजल–"ई मुजफ्फरपुर का दिलोजान, बोतल का शराब, आशिक का ख्वाब, जिगर का टुकड़ा, जाने मन नामी चतुर्भुज स्थान ह'। एकर बहार समूचा परान्त मे पसरल हइ। इहाँ एक से बढ़कर एक दिल का दुनियाँ का मुकाबला करै बाली बाइ जी का चकला ह'। जैसन माल तकबूहू, जैसन पैसा फेकबूहू तइसन तोरा माल मिल जइह..."

बजरंगीक क्रोध टिकासन पर चढ़ि गेलै। फुलहसना द्वारा चतुर्भुज स्थानक वर्णिका सुनि ओ रंजे माहुर भ'गेला। ओ खोंखियाति बजला–"चुप! सार नहि तन।

हरौ खच्चर, पहिने जाहि काजे आयल छी तकर की भेलौ से ने कह?"

फुलहसना अपन माथक टेटर कँ सहलबैत जवाब देलक—"बजलूंगी भाइ! गुस्सा ना करहू। जैसन काम ले के एलहू हेएँ ओकर इमान दोसरे किसिम का हइ। एलहु हँ कुत्ता के बधिया करे त' मिजाज के काबू मे रखहू। शराफत का चोंगा उतार लहू, नइं त' तोरा कुत्तो काट लिह आ तूँ हराम का हाजत मे पहुँच जेबहू।"

एक क्षण रुकि कँ फुलहसना फेर बाजल—"इहाँ के रिवाज का मोताबिक इहाँ का हाट एक घंटा कवल उठ गइलहइ। सभटा रंडी सुतै का खातिर अपना-अपना खोली मे चला गइलइ। लहठी बाइ का ऑडर होलै ह' जे सभ के चार-पांच घंटा आराम करै के होइहइ। काल दस बजे बाइजी का इजलास लगतइ। वहीं सभ कोइ नहा-धो, नास्ता-पानी करे बाइजी के हजूर मे हाजिर होइ के हइ। ई हथिन बाइजी का खाश खबासिन सुन्नरी। सुन्नरी तीनू छौंकड़ी के अपना साथे आराम करै के वास्ते ले जेथिन। काल लहठी बाइ के दरबार मे सभ काम होतइ। दाम-दिगर आ बजलूंगी भाइ, हमरा-तोरा तकदीर का फैसला वहीं होतइ।"

सभ जागल, थाकल एवं सुतबा लेल व्याकुल छले। सुन्नरि तीनू बुरका बाली कँ ल' गेलनि। बेलदार भानक पछिला सीट पर लम्बा-लम्बी भ' गेल। बजरंगी एवं फुलहसना ओही मकानक एक कोठली मे पहुँचल। फर्स पर तोशक-जाजीम ओछाओल रहै। दुनू ओही पर ओंघरा गेल आ फोंफ काट' लागल।

दोसर दिन ठीक दस बजे लहठी बाइक इजलास लागल। दरबारक रौनक नयनाभिराम छल। सजल-सजाओल बड़ी टा हॉल, चारुकात सँ रेशमी पर्दा सँ घेरल। झाड़-फनूस बला बिजलीक बल्ब हॉलक छत सँ लटकल। सभ दिस उज्जर जाजीम सँ झाँपल छोट-छोट तोशक आ ताहि पर ठाम-ठाम मसनद राखल छल। जेमहर गुम्बज जकाँ बॉलकोनी रहै ततए जुगनू कौआल, ठूठा पाखनबाज, उमेर हुसैन तबालची, रंगीला नाच मास्टर तथा मेहदी खाँ हारमोनियम ओस्ताद पतियानी मे चुपचाप बैसल छलाह। प्रवेश द्वार जतय नीचा जेबा लेल सीढ़ी छल, लहठी बाइक चारि गोट अंगरक्षक, जकर आकृति आ भेष राक्षस सदृश डेराओन रहै, लाठी पकड़ने ठार छल।

एक कात किमती इरानी कालीन आ ताहि पर सिम्मर तूर सँ बनल तथा मखमली खोल सँ झाँपल मुलायम तोशक ओछाओल रहै। एतहि मसनद सँ ओंगठल पानक बीड़ा कँ चिबबैत लहठी बाइ बैसलि रहथि। हुनकर अगल-बगल मे केशर बाइ, गुलबदन बाइ, अमीरिकी बाइ, बिजली बाइ एवं सुल्ताना बेगम सेहो बैसलि छलीह। सभ बाइ जी जड़ीबला साड़ी, पानकट ब्लाउज, उपर सँ नीचा तक सोना-चानीक गहना आ ढहल जवानीक मुँह दुस' बला श्रृंगार कयने रहथि।

लहठीबाइक पयर लग हुनक सभ सँ पैघ चहेती सलमा नामक रंडी बैसलि छलि। सलमाक वामा गाल पर तिल छलै आ ओ एखुनका समयक सभ सँ महग वेश्या छल।

नव-नव छौंड़ीक खरीद पर चकलाक आयु आश्रित छल। ओना सौन्दर्य मे, गायकी मे, नृत्य मे आ धन मे लहठी बाइ सभ सँ श्रेष्ठ छलीह। मुदा जँ कोनो कारणें आयलि छौंड़ी कैँ ओ नहि खरीदती, माल कैँ नापसंद क' देतीह त' आन-आन चकलाक बाइजी ओइ लेल बोली लगौती आ मूल्य अनुकूल भेला पर छौंड़ी के खरीद लेतीह। छौंड़ीक रूप मे सम्पति अर्जनक समय छल। सभटा बाइ जी सतर्क एवं सावधान छलीह।

लहठी बाइक दरबार सभ तरहें परिपूर्ण आ अगिला कार्यक्रमक लेल तैयार छल। ताही काल ओतए एकटा अजीबे मनुक्खक प्रवेश भेल। ओकर एक हाथ मे चुट्टा आ दोसर हाथ मे धुआँ उगलैत चिलम रहै। आगुन्तकक कनिए टा परिचय छलनि। एखनहुँ बहुतोक घर मे पुरना सरौता, पुरना पनबट्टी तथा पुरना पीकदान होयत। ई सभटा वस्त्र बितल समयक परिपाटी एवं सभ्यताक प्रतीक थिक। अही मे जोड़ि दियौ पुरना रंडीक यार। जखन लहठी बाइक जवानी उठानी पर छलनि आ ओ चतुर्भुज स्थानक महारानी पद पर आसीन छलीह त' हुनक सौन्दर्य-वेदी पर बहुतो रइशक बलिदान भेल छल। मुदा ने किनको नाम छनि आ ने ककरो यश-कीर्तिक गाथा लोक सुनैत अछि। मुदा एखन जनिक लहठी बाइक दरबार मे पदार्पण भेल छल ओ वैह यशस्वी महानुभाव छथि जिनका ल' क' रंडी-यारक प्रथा एवं परिपाटी एखनहुँ जीवंत बनल अछि। अहि चिलमधारी महात्माक असली नाम भेल गजानन्द महथा उर्फ बच्चा बाबू। ई खत्री जातिक राजकुमार छलाह। हिनका मुजफ्फरपुर शहर मे चारि गोट कोठी आ लगभग तीन सय बीघा जमीन छलनि। जखन हुनक तीन गोट मकान आ दू सय बीघा जमीन लहठी बाइक पूजा-अर्चना मे स्वाहा भ' गेलनि तखन हुनक पत्नी आ संतान मिलिक' हुनका ठोंठिया क' घर सँ निकालि देलकनि। अतिशय प्रेम मे लज्या स्वतः तिरोहित भ' जाइत अछि। लहठीबाइ मे हुनक समर्पण एतेक ने छल जे गजानन्द महथा कैँ पश्चाताप नहि भेलनि। भारत प्राचीन काल सँ महात्मा एवं भिखमंगाक देश रहल अछि। गृह त्यागक बाद गजानन्द महथा अपन नाम आ चोला बदलि लेलनि। आब ओ गेरुआ वस्त्र पहिरै छथि आ स्वामी बचबानन्दक नाम सँ प्रसिद्ध छथि। अधिकांश समय अभिनव जयदेवक शृंगार रसक गीत गबैत स्वामी जी मथुरा, काशी एवं प्रयाग मे रहैत छथि। एहि कर्म मे अर्जित दक्षिणा कैँ अक्षत सदृश अपन इष्ट देवी अर्थात लहठी बाइक चरण मे अर्पण करक लेल बीच-बीच मे मुजफ्फरपुर आबि जाइत

छथि। ई संयोग कहियौ जे तौजी किनै काल स्वामी बचबानन्द देवी-दर्शन निमिते सशरीर एखन आयल रहथि। स्वामी बचबानन्द आसन ग्रहण केलनि आ लहठी बाइक मुखार वृन्द सँ बरसैत अमृत तुल्य सौन्दर्य सुधा-रसक पान कर' लगलाह।

वेश्यालयक व्यवसाय किछु होउक, मुदा एकर शालीनता सदिखन प्रशंसनीय रहल अछि। दरबार शान्त आ विनम्र छल। मसलंग सँ ओंगठल लहठी बाइ अपन कोमल ओष्ट कँ कष्ट देलनि—"हाँ तो फुलहसना! तुम जो फूल लाए हो उसके जलवे का मैं दीदार करना पसंद करूँगी।"

फुलहसना बजरंगी सँ कहलक—"मालकिन को तीनू फुलझड़ी का सूरत दिखा दहू।"

तीनू कन्या बुरका सँ मुँह झँपने हॉलक बीचोबीच बैसल रहथि। ओहि ठाम तखन उपस्थित सभटा जीव हुनकें सभकँ निहारि रहल छल। बजरंगीक इशारा पाबि जखन तीनू कली अपन-अपन घूंघट उठौलनि त' तीन गोट प्रस्फुटित भेल गुलाबक फूल खिलखिला क' हँसि पड़ल। लहठीबाइक कोठा हिल गेल। देखनिहार सभहक हृदयक स्पंदन रुकि गेल, आँखिक पल खसब बिसरा गेल आ सभहक खुजल मुँह खुजले रहि गेल। एकाएक हुसैन खाँ तबालचीक हाथ तबला पर बजरा गेलै आ तकर थापक आबाज लहठी बाइक सुसज्जित हॉल कँ थरथरा देलक।

वेश्यालय मे वसंत नहि अबैत अछि आ ने मनुक्ख ख्वाब देखैत अछि। वासनाक ज्वार, हवसक पूर्ति आ धनक संचयक स्थान थिक वेश्यालय। मुदा एखुनका नजारा किछु दोसरे तरहक भ' गेल छल। रूपक हाट मे तीनू युवतीक सौन्दर्य चतुर्भुज स्थानक गरिमा एवं उर्जा कँ जरा क' राख क' देलक। ओहि तीनू कन्याक रूप मे मादकता नहि छल, शवाब नहि छल आने छलकैत शराबक उमंगे छल। तखन छल की? छल स्वच्छ परिधान मे प्रस्कृत गंगोत्रीक निर्मल जलक प्रवाह। की वेश्यालय अहि पवित्र प्रवाह कँ आत्मशात क' सकत? विषय विचारणीय छल। अप्रतिम लहठीबाइ एहि विषय पर विचारि रहल छलीह। वेश्यालय चलाब' मे निपुण लहठीबाइ एतेक सौन्दर्य कँ एकहि ठाम एकत्र भेल देखि स्वयं तिलमिला गेल छलीह। एकरा सम्हारब हुनको लेल कठिन भ' गेल। ओ असमंजस मे अपन सहायक जुगनू कौआल दिस तकलनि।

जुगनू कौआल बेर परहक काबिल मदतगार छल। ओ बजरंगीक लग मे आयल आ सोझ सवाल केलक—"पसंद हुआ। दाम बताओ?"

—"एहन उत्तम वस्तुक जोगार मे समय त' लगिते छै, प्राण जेबाक सम्भावना सेहो भ' जाइत छै। अहाँ विक्रय मूल्यक जिज्ञासा केलहुँ अछि त' सुनू। एकक मूल्य पचास हजार। जँ तीनूक क्रय एकहि संग करब त' कुल मूल्य मे दस हजार कम

क' दियौ। कुल एक लाख चालिस हजार दिअ। एको पाइ कम पर सौदा नहि होयत।"

जुगनू कौआल फुलहसना दिस मुखातिब होइत खुशामदी लहजा मे आरजू केलक–"सही मे इदगाह का कबूतरी को तराजू पर तौलना बेइमानी है। लेकिन दुनियाँ का दस्तुर भी अपनी जगह है और हमलोगों का रोजी-रोटी का सवाल है। खरीद करना हमारा लाजमी है। तुम ठीक-ठीक कीमत बताओ?"

अगर-मगर होइत-होइत तीनूक किमत नब्बे हजार पर ठहरल। लहठी बाइ स्वामी बचबानन्द दिस तकलनि। स्वामी जी निहाल भ' गेलाह। ओ अपन गाजा बला झोड़ाक बगल सँ दोसर झोड़ा निकाललनि। अपन अहि खेपक अक्षत रूपी संचय कँ जुगनू कौआलक हाथ मे द' देलनि। जुगनू कौआल ठामहि बैसि गेल, आँखि पर लटकल केशक लटकँ हाथ सँ टारलक आ झोड़ा महक रूपैया कँ गनए लागल।

गनलाक बाद स्वामी बचबानन्दक कुल अक्षत भेल छियालिस हजार छह सय छियासी। नब्बे हजार मे सँ जुगनू कौआल ओकरा घटौलक आ हिसाब कँ तेरिज क'लहठी बाइ सँ कहलक–"तैंतालिस हजार तीन सौ चौदह टाका आरो चाही।"

वेश्यालयक इर्द-गिर्द प्रत्येक बैंकक शाखा रहिते छैक। लहठीबाइ अपन खबासिन सुन्नरी कँ चेक-बूक अनबाक लेल निर्देशित केलनि। मुदा ठीक ओही काल एकटा चाण्डाल पिस्तौल तनने ओहि हॉल मे प्रवेश केलक आ बीच मे आबि तनि क' ठार भ' गेल।

आयल असुर करीब छह फूट लम्बा, कारी धुथुर, गुंडा छाप चेहरा आ ओ पिस्तौलक घोड़ा पर अंगुरी रखने छल। जेना अमीरिकाक सातवाँ बेड़ा बंगालक खाड़ी मे पहुँच गेल होअय, तहिना ओतए उपस्थित सभ बाइजीक चेहरा भय सँ उज्जर भ' गेलनि। काले खाँक नाम के ने सुनने अछि। ओकर नामे सुनि मुजफ्फरपुर सिहरि उठैत अछि। एखन त' साक्षात यमदूत ओतय पहुँच चुकल छल। लहठी बाइक दरबारक वातावरण एकाएक विषाक्त भ' गेल।

लहठी बाइ रंडी समुदायक सरताज छलीह। ओ साहस क' मुँह सँ शब्द बाहर केलनि–"यहाँ क्यों आये हो, काले खाँ? तुम्हें क्या चाहिए?"

काले खाँक लाल-लाल आँखि लहठी बाइक माथक बिन्दी मे सुल्फा भोंक' लागल। ओकर चेहरा कसाइ सन कठोर भ'उठलै। पिस्तौलक नोक सँ तीनू बिकाइ लेल आयलि युवती दिस इशारा करैत काले खाँ गर्जना केलक–"तीनू छौंकड़ी को ले जाने के लिए आया हूँ। आज और अभी। उपर का ऑडर है।"

लहठी बाइक दरबार मे सन्नाटा व्याप्त भ' गेल छल। ककरहु मे काले खाँक

सामना करैक साहस नहि छलै। मुदा बजरंगी भिन्न माटि-पानिक लोक छला। प्रायः हुनका काले खाँक खूंखार प्रवृति द' बुझलो नहि छलनि। ओ धोतीक ढेका खोंसैत आ सीना तानि क' काले खाँक आगाँ ठार भेला आ कहलनि—"जोर जबर्दस्ती नहि चलत। हमरा मामाक हुकूम अछि। बिना मूल्य चुकौने अहि तीनू कन्या कैँ कियो छुबियौ ने सेकैत अछि।"

तकर बाद जे किछु भेलै से यद्यपि अवर्णनीय अछि तथापि सुनि लिअ। काले खाँक पिस्तौल सँ फायर भेल। लहठी बाइक हॉल मे टांगल विभिन्न सिनेमाक हिरोइन मे सँ बैजयन्ती मालाक फोटो अर्रा क' नीचा पक्का फर्स पर खसल आ ओकर फ्रेम महक शीशा झन्न सँ टूटि क' छिड़िया गेलै, संगे काले खाँक हथौड़ा सन हाथक थापर बजरंगीक कनपट्टी पर बजरलै आ ओ घिरनी जकाँ नचैत जमीन पर खसि पड़ला।

बजरंगीक जमीन पर खसिते बिकाइ लेल आयलि तीनू युवतीक भृकुटि तनि गेलनि आ तीनू चोटायल नागीन जकाँ फूफकारए लगलीह। मुदा तखने खूब फुर्ती सँ बजरंगी उठला आ तीनू युवतीक सोझा मे ठार होइत बजला—"नहि, नहि। अहाँ तीनू एकदम सँ शान्त भ' जाउ। अगिला काज हमरा पर छोड़ि दिअ'।"

ई की भेलै? ई किएक भेलै? बिकाइ लेल आयलि युवती कैँ त' अबला, असहाय होयबाक चाही? मुदा तीनू त' बजरंगी पर भेल प्रहारक कारणें फुफकार छोड़' लगलीह। चकला मे बिकाइ लेल आयलि युवतीक एतेक टा साहस कोना भेलनि? आब सत्य बात की छलै तकर जिज्ञासा होयब स्वभाविके।

एलेक्शनक तैयारी जोर-सोर सँ प्रारम्भ भ' चुकल छलै। चमेलीरानी एवं पन्ना भाइ कोठण्डा पाणिक अड्डा सँ वापस वैद्यनाथ धाम स्थित कैलाश कुंज पहुँच चुकल छलाह। ओतए कीर्तमुखक दोसर पुत्र, भीमाक संवाद पहुँचल छल।

हमरा-अहाँ कैँ बुझल अछि जे भीमा, गुलाब मिसिर, सी.एम.क खास बडीगार्ड आ बटोही खाय ड्राइभर बनि अपन-अपन जगह पकड़ि नेने छल। दुनू मिलि कैँ गुलाब मिसिरक गति-विधिक समाचार एकत्र करैत छल आ योजनानुसार ओकरा बी.एन. भट्टाचार्य उर्फ भाटाजीक निर्मली मे स्थापित हुनक हेड क्वॉटर मे पठबैत जाइत छल। भाटाजी सभटा समाचार कैँ निचोरि अपन विचार संगे चमेलीरानी लग पठा दैत छलथिन। एखन जे भीमाक पठाओल संवाद आयल छल तकर निष्कर्ष छल जे अमुख तारीख क' नावानगर, बिहार-नेपालक सीमा पर स्थित एकटा स्थान जतए गुलाब मिसिर एवं नेपाल महक आइ.एस.आइक चीफ कमान्डर-नसरत फजले अली खाँक गुप्त बैसार होयत।

भीमाक पठाओल संवाद विशेष अर्थ रखैत छल। पन्ना भाइ द्वारा अपहरित

गुलाब मिसिर कैँ जतबा मानसिक एवं शारीरिक यंत्रणा देल गेल रहै से साधारण मनुक्खक मृत्यु लेल काफी छलै। मुदा गुलाब मिसिर लेल नहि। शासनक सुखद स्वाद मे एतेक ने तीव्र आकर्षण होइत छैक जे ओ मनुक्ख कैँ असाधारण बना दैत अछि। गुलाब मिसिर पन्ना भाइक कैद सँ मुक्त भ' सी.एम.क कुर्सी पर बैसि चुकल छल आ ओकर धुर्तइबला स्वभाव फुल भोल्टेज मे आबि चुकल रहै। सभ सँ पहिने ओ अपन सहकारिता मंत्री चौहान कैँ एकान्त मे बजा सोनपुर मेला मे भेल सांस्कृतिक सम्मेलनक पूर्ण जानकारी हासिल केलक। ओतहि ओकरा चौहानक 'पियारा' कीर्तमुखक प्रथम पुत्र, युधिष्ठिरक क्रिया-कलाप द' पता चललै। मुदा युधिष्ठिर निपता भ' गेल छल। माउल्डी कोना पन्ना भाइक कैद मे पहुँचली तकर जिज्ञासा सेहो गुलाब मिसिर केलक। मुदा माउल्डी सही बात कैँ नहि कहि अनाप-सनाप तरहें ओकरा टारैत रहलि। षट्यंत्र त' छलै आ से बड़ पैघ दायरा मे। की पन्ना भाइ एकर एसगरे संचालक छल अथवा आन किओ आओर? संशय गुलाब मिसिर कैँ अचैन कयने छल।

गुलाब मिसिर विचारलक आ निश्चय सेहो केलक जे ओकर दुश्मन नम्बर एक पन्ना भाइ त' छलैहे आ ओकरा समूल नष्ट बिना कयने गद्दी कैँ सुरक्षित राखब असंभवे छल। मुदा माउल्डी, भीमा एवं बटोही कैँ पन्ना भाइ सम्बन्धी जतबा जानकारी भेटि चुकल रहै तकरबाद ओहि तीनू कैँ जीबैत छोड़ि देबक माने छल अपन पयर पर स्वयं कुरहरि मारब। मुदा एकरा लेल कयल की जाए? गुलाब मिसिर विपत्तिक जाल मे ओझरा चुकल छल। चुनावक समय तथा आन-आन कठिन समय मे ओकर सहायक रहै अहमदुल्ला खाँ। अस्त्र-शस्त्र, टका-पाइ आ गुंडाक मदति केनिहार अहमदुल्ला खाँ मारल गेल छल। यद्यपि शासन पर गुलाब मिसिरक पकड़ मजबूत रहै तथापि अपन अधीन इन्टेलिजेन्स सँ खुलि क' मदति लेब' मे खतरे-खतरा रहैक। एहना विकट परिस्थिति मे गुलाब मिसिरक ध्यान विनायक राम चँदवा दिस गेलै। चँदवा ओकर शासनक अन्तर्गत सभ सँ पैघ एवं खूंखार ठीकेदार छल। चँदवा पर विश्वास करब अथवा नहि करब, तकर ने समय छलै आ ने विकल्प। विनायक राम चँदवाक मार्फते गुलाब मिसिर नेपालक आइ. एस.आइ चीफ नसरत फजले अली खाँक संगे नावानगर मे गुप्त रूपे भेंट करबाक योजना बनौलक।

जखन कैलाश कुंज मे गुलाब मिसिर एवं नसरत फजले अली खाँक निश्चित मिटिंग होयबाक सूचना आबि गेलै तखन चमेलीरानी अपन सहयोगी आ खाश क' पन्ना भाइक उपस्थित मे बैसार केलनि। सभ तरहक आलोचना-समालोचना भेल। योजनाक प्रारूप तैयार भेल। नावानगर बला बैसार मे अपन आदमीक निर्विघ्न

प्रवेश कोना होअय तकर उपाय सेहो ताकल गेल।

बी.एन. भट्टाचार्य उर्फ भाटा जी एखनो के.जी.बी.क जासूस छलाहे। हुनक पैठ संसार भरिक इन्टेलिजेन्स मे छलै। ओ नेपाल एवं बिहार प्रांतक आइ.एस.आइ.क प्रमुख एजेन्टक नामक लिस्ट कैँ अपन कम्प्युटर पर लाब' मे सफल भेलाह। अही लिस्ट मे पचकौड़ीक पुत्र फुलहसना नाम उभरि क' आयल। मुदा ई संभव कोना छलै। फुलहसना त' शरीर सँ अपाहिज आ रुग्न छल। भाटाजी फेर सँ एजेन्टक नामक 'कन्फरमेशन' केलनि। फुलहसनाक एजेन्ट सम्बन्धी गुप्त नम्बर, मोबाइलक नम्बर तथा महिना भरिक लेल पासवर्ड 'नेकी कर, कुँएं में डाल' तकरो पता लगा लेलनि।

फुलहसनाक नाम अबिते देरी गुरखा गामक पचकौड़ीक नाम, पानापुर मंदिरक पुजारी गिरिजीक नाम, दुनूक छौंड़ी बेचबाक धंधा इत्यादि सभ किछु सामने आबि गेल। आब चमेलीरानी अपन योजनाकैँ मूर्त रूप देब शुरू केलनि।

करीब चारि मास पहिने मल्लिकजी बिहारी नामक 'लोशजाप'क कार्यकर्ता कामिनी एवं रंजना नामक कन्या कैँ गिरिजीक चांगुर सँ मुक्त क' कैलाश कुंज चमेलीरानी लग पहुँचा देने रहथि। सभ तरहें निराश भेलि कामिनी एवं रंजना कैँ जखन चमेलीरानीक अद्‍भुत परिचय, उद्‍देश्य एवं कार्य प्रणालीक जानकारी भेटलनि त' दुनू कैँ अत्यधिक आश्चर्य भेल छलनि। कल्पना चावला कैँ अपन आदर्श बनौनिहार कामिनी आ खगड़ियाक मंदिरक चण्डी स्वरूपा रंजना कैँ सहजहि धरती पर जीबैक लेल एकटा उद्‍देश्य, एकटा मार्ग भेटि गेलनि। ओ दुनू अपन तन-मन सँ चमेलीरानीक कार्यक्रम मे सक्रिय भाग लेबा लेल अपन-अपन इच्छा प्रगट केलनि। चारि मास तक दुनू कैँ कठिन एवं परिश्रमबला ट्रेनिंग देल गेल। कूदब, फानब, दौड़ब, जूडो, कैराटे इत्यादिक संगहि विभिन्न मेकक हथियार चलेबा मे दुनू निपुण भ' गेल छलीह।

आब टीम तैयार भेल। कीर्तमुखक पांचम पुत्र सहदेव गिरिजीक भागिन बजरंगी बनला। ताही अनुरूपे हुनक धोतीबला ड्रेसक चयन भेल। बिकाइबाली कन्या मे कामिनी आ रंजना त' छलीहे। मुदा दुनूक अनुभव एखन कम छलनि तैँ सहदेवक पत्नी एवं ठाकुर नांगट नाथ सिंहक बखिया उधेर' बाली मैना कैँ सेहो सम्मलित कयल गेलनि।

भूखन सिंहक विश्वस्त आ एखन चमेलीरानीक दाहिना हाथ शालीग्राम जनकपुर पहुँचलाह। हुनक बढ़ल दाढ़ी, ठेहुन सँ नीचा छाबा तक नमरल, घोंकचल पैजामा आ कुर्ता, संगहि नव नाम अब्दुल रसीद छलनि। बादशाह खाँ बनि क' अहमदुल्ला खाँक सत्यानाश एवं खोपड़कर बनि गुलाब मिसिरक अपहरण, दुनू काज मे

शालीग्रामक निपुणताक परिचय पहिनहि भेटि चुकल अछि। एखन अब्दुल रसीद पाकिस्तानक तानाशाहक भूतपूर्व बाबूर्ची बनल ओ जनकपुरक आइ.एस.आइ.क एजेन्टक बीच अपन खुट्टा गारि चुकल रहथि। बिहार आ नेपालक सीमा पर टटका सैकरो मस्जिद एवं मदरसाक एक मात्र काज छल भारत मे आतंक पसारब। भारत कँ घृणा करबाक मुख्य तत्व पर ठार भेल पाकिस्तान विध्वंशक काज मे जी-जान सँ जुटल छल। नेपालक कमजोर कानून एवं शासन तथा शांतिप्रिय जनताक बीच आइ.एस.आइ. कँ अपन विस्तार कर' क अनुकूल परिस्थिति छल। मुदा अहि तरहक जँहपटार विस्तार ओकरा लेल घातक सेहो छलै। कोनो टा मुसलमान जे इस्लामक प्रचार-प्रसार मे रुचि रखैत छल सहजहि आइ.एस.आइ.क एजेन्ट बनि सकैत छल। तँ ओकर गोपनीयता नहि कँ बरोबरि रहि गेल रहैक। संसार भरिक गुप्तचर संस्थाक एजेन्ट कँ आइ.एस.आइ.क एजेन्टक बीच घुसियाइ मे कोनो दिक्कत नहि रहै। तखन शालीग्राम कँ जे सम्प्रति अब्दुल रसीद छला, ओहि मे प्रवेश करबा मे अधिक बाधा किएक होइतनि। अब्दुल रसीदक हाथक बनल तन्दूरी चिकेन, चारकोल परहक फीस फर्राइ, सीक कबाब आ शुद्ध जीन सँ छौंकल बिरयानी जे खेलक से वाह, वाह क' उठल। आस्ते-आस्ते अब्दुल रसीद चीफ बॉस नसरत फजले अली खाँक स्वागत मंडलीक खासम खास एजेन्ट बनि गेलाह।

भाटाजीक संदेश पाबि ठीक समय पर अब्दूल रसीद डबल जीरो बला मोबाइलक नम्बर पर फुलहसना मोबाइलक घंटी बजौलक आ पासवर्ड बाजल—"नेकी कर।" फुलहसना तुरंत जवाब देलकै—"कुएं में डाल।" सांकेतिक भाषा मे अब्दुल रसीद फुलहसना कँ आदेश निर्गत केलनि—"तीन खूबसूरत छौंकड़ी तुम्हारे बाप के पास बिकने गइ है। हाँ बोलो या ना।"

ताहि काल फुलहसनाक बहिन रेहानाक निकाह होब' बला रहै। बाराती कँ अएबाक समय भ' चुकल रहै। ओकर बाप कोनो जरूरी काज निपटाब' लेल तारसराय टीशन गेल छलै आ बारातीक स्वागतक भाड़ फुलहसना कँ द' गेल छलै। तेज तर्रार आ पाकिस्तान मे ट्रेन्ड आइ.एस.आइ.क एरिया कमान्डर फुलहसना कँ अबिलम्ब बुझ' मे आबि गेलै जे ओकर बाप तारसराय टीशन किएक गेल छल। ओ मोबाइल मे मुँह सटौने छल, बाजल—"हाँ, तीन छौंकड़ी बिकने आइ है।"

ओमहर सँ अब्दुल रसीदक फरमान आयल—"अपना चीफ बॉस नसरत फजले अली खाँ कल काठमाण्डु से जनकपुर तशरीफ लायेंगे। फिर सरहद के पास कटबसबा मदरसा मे पहुँचेगे। सरहद के पास गुलाब मिसिर के साथ उनका गफ्तगू है। जगह है नावानगर गाँव के पूरब विनायक राम चँदवा का भाठा। तुमको मालूम है कि नसरत फजले अली खाँ आशियाना मिजाज के हैं। उनको लजीज खाना,

उम्दा शराब और नया-नया हुरे बहार का शौक है। चीफ बॉस के तफरी के लिए तीनो छौंकड़ी को लेकर नावानगर पहुँचो। कल शाम तक का आखरी वक्त है। चीफ अगर खुश हुआ तो तुम्हें बक्सीस से नवाजा जाएगा। खैर सलामती, अल्ला ताला।"

तकर बादे फुलहसना तारसराय टीशन पहुँचल छल आ अपन बाप, पचकौड़ीक जगह मारुति भान मे अपन स्थान बनौने छल। मुजफ्फरपुर पहुँचि, सभटा काज निपटा क' जखन फुलहसना आ बजरंगी लहठी बाइक कोठाक एक कोठली मे ओछाओल तोशक पर सुति रहल त' वास्तव मे दुनू मे सँ कियो सुतल नै छल। दुनू सुतैक नाटक मात्र कयने छल। जखन फुलहसना कँ इत्मीनान भ' गेल रहै जे बजरंगी सुति रहल अछि तखन ओ आस्ते सँ उठल छल आ मकानक मुख्य दरबज्जा बाटे निकलि क' एक कात चलि गेल छल। ओकरे पाछाँ बजरंगी सेहो उठल छलाह आ बाहर आयल छला। मुदा ओ फुलहसनाक पाछाँ नहि केलनि। किएक त' हुनका बुझल छलनि जे एखन फुलहसना अपन सम्पर्कक कोनो आइ. एस.आइ. एजेन्टसँ भेंट करत। सही मे फुलहसना काले खाँ सँ सम्पर्क कयने छल आ मदति कर' लेल काले खाँ समय पर लहठी बाइक इजलास मे पहुँच गेल रहै। बजरंगी सोझे मारुति भान लग अयलाह। भानक ड्राइभर भाइ अक्खे लाल बेलदार कियो आन नहि, पन्ना भाइक पठ्ठा उग्रदेव छल। उग्रदेव सेहो जगले छल। भानक भीतर मे फिट यंत्र सँ बजरंगी भाटाजी सँ सम्पर्क केलनि आ एखन तकक सभटा समाचार पठौलनि। बिना बिलम्ब कयने बजरंगी वापस कोठली मे आबि सुति रहलाह। थोड़बे कालक बाद फुलहसना सेहो आयल आ सुति रहल।

आब खिस्साक लग आउ। जखन काले खाँक पिस्तौल सँ फायर भेल, ओकर थापड़क दुआरे बजरंगी फर्स पर खसि पड़लाह आ ताहि क्षण बिकाइ लेल आयलि तीनू युवती फूफकार छोड़' लगलीह त' परिस्थिति प्रतिकुल बनि गेल। योजना छलै जे तीनू युवती बजरंगी आ भाइ अक्खेलाल बेलदार बिना कोनो तरबदुत कँ नावानगरक ओहि स्थान मे बेरोकटोक प्रवेश क' जेताह जतय नसरत फजले अली खाँ एवं गुलाब मिसिरक गुप्त बैसार होब'बला छल। मुदा तीनू युवतीक अकस्मात कयल व्यवहार सँ फुलहसना कँ सतर्क भ' जयबाक आशंका बनि गेलै। चमेलीरानीक योजनाक पोल खुलि जयबाक परिस्थिति सेहो भ' गेलै। फुलहसना के छल तकर पूर्ण जानकारी बजरंगी कँ छलनि। युवती सभहक अकस्मात भेल उत्तेजना काल फुलहसनाक आँखि मे एक सेकेण्ड लेल विस्मयक भाव छिटकल रहै जकरा बजरंगी देखि चुकल रहथि। मुदा फुलहसना पहुँचल मे सँ ट्रेन्ड एजेन्ट छल। ओ सभ किछु कँ अनदेखी करैत तखन तेहन ने सहज व्यवहार केलक जे बजरंगी हतप्रभ भ'

गेला। मुदा बजरंगी भीतरे-भीतर पूर्ण सतर्क भ' गेला।

फुलहसना काले खाँक पयर पकड़ि हबोढ़कार भ' कान' लागल आ हिचुकैत बाजल–"ओस्ताद! ई नया लोक हइ। एकर नाम हइ बजलूंगी। ई गिरि का भगिना हइ। यही लोग गाम-गाम, टोल-टोल मे घुम-घुम के चारा फेकैत हइ आरो लड़िकी को अपना जाल मे फँसाबैत हइ। एकरा मार देबहू ने त' हमरा बाप का बिजनेस चौपट हो जेतै। ओस्ताद! एकरा पर रहम करहू।"

फेर फुलहसना बजरंगीक कन्हा पर हाथ रखैत आ ओकरा पुचकारैत कहलक–"बजलूंगी भाइ। तोरा के निफिकिर रहै के ह'। जेतबा मे लहठी बाइ के इहाँ सौदा तय होलैहे ने उतना रकम तोरा मिल जेतौ। एकर गारंटी हइ। ओस्ताद का ओस्ताद के पास बहुत रूपैया हइ।"

कने काल लेल बजरंगी के छगुन्ता लागल रहलनि। सड़ल आ गनहाइत फुलहसनाक बाजब आ फूर्ती देखि ओ दंग रहि गेला। बजरंगी मैना दिस तकलनि। ओहो हिनके दिस ताकि रहल छलीह। हुनको आँखि मे विस्मय भरल छल।

काले खाँक गुर्राहटि यद्यपि कम भ'गेल छल, मुदा ओकर लाल-लाल आँखि सँ क्रोधक चिनगी ओहिना बरसि रहल छलै। ओ फुलहसना सँ कहलक–"तुम दोनों और यह तीनू छौंकड़ी जिस मारुति भान से यहाँ आये हो उसी मे चलकर चुपचाप बैठ जाओ। मैं भी साथ मे रहूँगा।"

फुलहसना तपाक सँ बाजल–"ओस्ताद, भान का भाड़ा आरो पेट्रोल का कीमत के दीहै।"

काले खाँ एहन गारि बाजल जकरा एतय लिखब ठीक नहि। मुदा ओ अपन कथन कैँ नरम करैत फुलहसना सँ कहलक–"रे हरमजादा! सभ कुछ मिलेगा। जल्द यहाँ से चलो।"

भाइ अक्खेलालक मारुति भान बिदा भेल। अगिला सीट पर पेस्तौल कैँ खिलौना जकाँ नचबैत काले खाँ बैसल। बीचला सीट पर बुरका पहिरने तीनू युवती आ अन्त मे दू टा स्टूल पर सुथनी सनक मुँह बनौने बजरंगी आ फुलहसना बैसल छल। रस्ता मे एकटा पेट्रोल पम्प पर मारुति भान मे पेट्रोल भराओल गेल। काले खाँ सँ टाका ल' जखन फुलहसना पेट्रोलक दाम चुकता करक लेल भान सँ नीचा उतरल छल, ताही काल साहस क' बजरंगी काले खाँ सँ कहलनि–"तीनू कन्या जल पीती से कहि रहल छथि।"

–"जाओ, सामने नल है। पानी ले आओ।"

जखन फुलहसना दाम चुकता क' भान लग वापस आयल त' बजरंगी कैँ अपन स्टूल पर बैसल नहि देखि मुँह कैँ टेढ़ केलक। मुदा ओकर मुँह टेढ़े रहि गेलै।

कारण ताही काल एक शीशाक गिलास मे जल लेने बजरंगी वापस अयला। गिलास कैँ मैनाक हाथ मे दैत कहलनि–"अही मे सँ थोड़े-थोड़े जल तीनू पीबि लिअ।"

गिलासक पेनी मे सटल एकटा कागतक टुकड़ा रहै जकरा मैना ओरिया क' बुरकाक भीतर नुका लेलनि। भान अपन गंतव्य स्थान लेल आगाँ बढ़ल।

भाइ अक्खेलाल बेलदारक मारुति भान एकटा लोहाक फाटकक आगाँ ठार भेल। पावानगर गामक अबादी सँ हटल निर्जन स्थान। घनगर आमक गाछी आ तकरबाद दूर-दूर तक पसरल चौर। कच्चा ईंटाक देवाल सँ घेरल बड़ी टा जगह। सामने दूर मे ईंटा पकबैक भठ्ठा आ तकर चारि गोट चिमनी देख' मे आबि रहल छल। लोहाक फाटकक भीतर वामा कात एकटा गुमती जकाँ घर जतय कारी वस्त्र पहिरने, राइफल हाथ मे टंगने ब्लैक कैट सदृश थोड़ेक गार्ड। मारुति भान कैँ रुकितहि चारुकात गाछी सँ विभिन्न तरहक पच्छी फरफरा क' उड़' लागल। स्थान थोड़े भयावह बनि गेल।

सूर्यास्त भ' चुकल रहै। बीतैत जाड़क धून्ध स्थान कैँ नीक जकाँ झाँपि अन्हार क'देने रहै। काले खाँक आदेश सँ ड्राइभर कैँ छोड़ि सभ कियो भान सँ नीचा उतरि ठार भेल। ताही काल फाटकक भीतर सँ दू गोट गार्ड ओतय पहुँचि गेल। काले खाँ दुनू गार्ड कैँ अपना लग बजा क' आस्ते सँ ओकरा किछु कहलक। एकटा गार्ड बजरंगी दिस आ दोसर भानक ड्राइभर दिस राइफल तानि देलक। काले खाँक हाथ मे पिस्तौल छलैहे। ओ फुलहसना कैँ आदेश देलक–"तीनों छौंकड़ी के साथ फाटक के अन्दर जाओ।"

बजरंगी रस्ता छेकैत विनती केलनि–"सौदा जे तय भेल छल ताहि अनुसारे जखन हमरा टाका भेटि जैत तखने तीनू कन्या डेग उठौती।"

काले खाँ एकटा नवका गारि पढ़लक आ एक लात बजरंगीक पेट मे मारलक। बजरंगी कुजरनीक सड़ल तरकारी जकाँ नीचा गरदा मे फेका गेला। काले खाँ कड़कि क' बाजल–"रे साला, यही तुम्हारा पेमेन्ट हुआ। अब और मुँह खोलोगे तो मेरे पिस्तौल का तमाम बुलेट तुम्हारे जिस्म मे पहुँच जाएगा।"

फुलहसना तीनू बुरका धारिनक संगे फाटकक भीतर प्रवेश क' गेल। ओकर पाछाँ काले खाँ आ आयल दुनू राइफलधारी गार्ड सेहो बिदा भ' गेल। फाटकक बाहर मे रहि गेला जमीन पर ओंधरायल पुजारी गिरिक भागिन बजरंगी आ मारुति भानक खिड़की सँ मूड़ी बाहर कयने कपचिया प्रखंडक विधायक लड्डू लाल आजादक ड्राइभर भाइ अक्खेलाल बेलदार।

मारुति भान सँ उतरि बेलदार बजरंगीक लग आयल आ डेन पकड़ि हुनका

उठौलक। बजरंगी देहक गरदा झारलनि, खुजल ढेका कैँ खोसलनि आ भान मे बैसि गेला। बेलदार आ बजरंगी कनखी नजरिए लोहाक फाटक दिस तकलनि। ओतय आब कियो नहि छल। बेलदार भान कैँ स्टार्ट केलक आ जेम्हर सँ आयल छल तकर विपरित दिशा मे बिदा भ' गेल।

थोड़बे आगाँ पावानगर गाँव छल। स्थान भेल बिहार आ नेपालक सीमा। सीमा लग पुरान मुदा चौरगर सड़क। एक कात भारत मे पावानगर नामक गाँव आ सीमाक ओहि पार नेपाल मे पीरमुहानी गाँव। पावानगर आ पीरमुहानी बुझू एकेटा गाँव, एक दोसरा मे घुसिआयल। विभाजन कर'बला सड़कक दुनू कात बजार। नेपाल मे आयात भेल विदेशी वस्त्र सँ भरल दोकान दुनू कात पतियानी मे। गहिंकीक भीड़। मोटरकार, मोटर साइकिल, साइकिल आ हेंजक हेंज पयरे मनुक्ख सँ भरल बजार। दोकान आ सड़क बिजलीक इजोत मे चमकि रहल छल।

बेलदार सड़कक कात मे खाली स्थान देखि भान कैँ ठार केलक। फेर बजरंगीक संग पयरे एक कात बिदा भेल। जतय नफा ततय मारवाड़ी। सीमा लगहक विदेशी वस्तु खास क' एलेक्ट्रोन बला समान सँ भरल दोकान आ सभटा दोकानक मालिक मारवाड़ी। मुदा एकटा एलेक्ट्रोनिक समानक दोकान एहनो छल जकर मालिक रहथि स्थानीय व्यापारी सुखदेव महतो। सुखदेव सूरी समुदायक सरगना, धनी-मानी आ पावानगरक सभटा धर्मशालाक अध्यक्ष। संयोग सँ सुखदेव चमेलीरानी द्वारा स्थापित 'लोक शक्ति जागरण परिषद'क बिहारी छला आ गुप्त रूपे 'लोशजाप'क सक्रिय कार्य केनिहार सेहो छला। सुखदेव पावानगर पंचायतक नायक रहथि। जखन बजरंगी एवं बेलदार सुखदेव बिहारीक दोकान मे पहुँचल त' दोकान खाली छल। गाहक त' मारवाड़ीएक दोकान दिस जाइत अछि।

बजरंगी एवं बेलदार कैँ देखिते सुखदेव बिहारी चौकन्ना भेलाह। तुरंत दोकानक औंघाइत नोकर कैँ कहलनि—"बटुआ, सट्टर खसा आ दोकान बन्द कर।" भीतरे सँ सट्टर खसा आ ओहि मे ताला लगा बटुआ सुखदेव लग आबि क' ठार भेल। सुखदेव जेबी सँ एकटा नेपाली दस टकही निकालि बटुआ कैँ देलनि आ कहलनि—"आइ तोहर छुट्टी। जो जा क' सिनेमा-तिनेमा देखै ग'। ओम्हरे सँ तौँ अपन गाम पर चलि जइहेएँ।"

दोकानक बगलबला गली मे जा क' बटुआ गायब भ' गेल। सुखदेव ओही गली बाटे बजरंगी एवं बेलदार कैँ भीतर आंगन मे ल'गेलाह। आंगन टपिक' बाड़ी आ बाड़ीक ओहि पार कच्ची सड़क। एखन ओतहि बेलदारक मारुति भान ठार छल। मुदा ओहि पर आब एकोटा मोबाइलक पोस्टर नहि छल। भानक बाहरी चदरा पर साटल पन्नी सेहो ओदारल छल। आब मारुति भानक रंग ब्लू नहि, हल्का

आसमानी छल। सभ कियो सड़कक ओहि कात एकटा धर्मशाला मे प्रवेश केलनि। धर्मशाला बेस पैघ, लगभग पन्द्रह कोठलीक, एतय सँ ओतय तक पसरल। धर्मशालाक कातक कोठली मे सँ पाछाँ दिस जयबाक रस्ता। ओतय सीमेन्ट सँ बनल पक्काक कोठली। कोठलीक सभटा देवाल पर विभिन्न किस्मक यंत्र एवं कम्प्यूटर टाँगल छल। कम्प्यूटर स्क्रीन मे आँखि सटौने, कान मे इयर फोन लगोने कोठलीक मध्य मे कुर्सी पर बैसल छलाह बी.एन. भट्टाचार्य उर्फ भाटाजी।

भाटाजी के.जी.बी.क जासूस रहितहुँ चमेलीरानीक विभिन्न योजना मे प्रमुखता सँ सहयोग द' रहल छलाह। सम्प्रति पावानगरक योजनाक संचालन हुनकहि जिम्मा छल। चमेलीरानी भाटा जी केँ बड़ बेसी स्नेह एवं आदर दैत छलथिन।

छोट-छोट स्टूल पर बजरंगी आ बेलदार बैसला। सुखदेव बिहारी वापस कच्चा सड़क लग एकटा कुर्सी पर बैसिक' सतर्क भेल चारुकात तकैत पहरा देब' लगलाह। भाटाजी समक्ष कम्प्यूटर पर एकटा नक्शा उभरल छल। ओ बजरंगी आ बेलदार दिस घुमैत कहलनि—"सहदेव आउरो उग्रदेव, तुम दोनो विनायक राम चंदवा के टेरीटोरी मे घुस नहीं सका? चलो, अच्छा ही हुआ।"

बजरंगी आब सहदेव तथा बेलदार उग्रदेव छला। सहदेव भाटाजी केँ जवाब देलनि—"जी नहि। हम दुनू चंदवाक भठ्ठाक घेराक भीतर जा नहि सकलहुँ। मैना, कामिनी आ रंजना केँ फुलहसना तथा काले खाँ बलजोड़ी भीतर ल' गेल हैँए।"

—"कोई बात नहीं। अकेला मैना काफी है। उसका कैलिवर को हम पहचानता है। फिर उसे साथ मे आउरो दो ठो ट्रेन्ड मेये (लड़की) तो है ही। अब तुम दोनो कम्प्यूटर 'क' स्क्रीन फैला नक्शा को देखो। तुम दोनो पहले भी इसे चमेली बिटिया के इहाँ देख चुका है। फिर भी इसे गौर से देखो। ई जगह हुआ विनायक राम चंदवा का ठीकेदारी का हेड क्वॉटर। ई जगह आधा मील लम्बा आउरो चौथाइ मील चौड़ा मे फैला हुआ है। इहाँ ईंटा पकाने का चार चिमनी है। आगे नदी बहता है। चंदवा को ईंटा बनाने के लिए प्रचुर माटी इसी नदी से मिलता है। सभी जगह मे कच्चा, पक्का ईंट्टा का ढेर है। जगह-जगह गढ़ा है। इहाँ-उहाँ ट्रैक्टर, बुलडोजर आउरो मशीन पड़ा हुआ है। छुपने आरो छुप कर काम करने का बहुत सारा जगह है। चँदवा अपना सभी मजदूर आउरो मुंशी को छुट्टी पर भेज दिया है। इहाँ जितना मानुष होगा सभी आइ.एस.आइ. का एजेन्ट होगा।

—"अब इहाँ देखो। इहाँ लोहा का गेट है। भीतर मे इहाँ बहुत सारा कच्चा ईंट्टा का घर है जिसमे चंदवा का मजदूर रहता है। ठीक उसके सामने थोड़ा हटकर कीचन आउर स्टोर है। अब इहाँ का घर पक्का है। यही चंदवा का रेजीडेन्स आउरो ऑफिस है। इसी जगह पर गुलाब आउरो नसरत का सेक्रेट मीटिंग होगी।

अब इहाँ देखो, यह नदी है। इस पर अँग्रेज के टाइम का काठ का पुल है। इसी पुल पर होकर सड़क जाती है। सड़क इन्डिया आउरो नेपाल को डिभाइड करता है। पुल का थोड़ा अगाड़ी नेपाल का टेरिटोरी मे कटबसवा भिलेज है। यह पूरा मोहम्डन का भिलेज है। इहाँ मस्जिद आउर मदरसा है। नेपाल का बोर्डर पर फैला सैकड़ो मदरसा मे कटबसवा का मदरसा सबसे बड़ा आउरो सभी तरहका आर्म्स से इकिप्ट है। इहाँ का वायरलेस ट्रान्समीटर भी बहुत पावरफूल है। इस मदरसा का इन्चार्ज मौलाना अमीर खाँ है। अमीर खाँ तालिबान का बहुत बड़ा कमान्डर है।"

भाटा जी कनेककाल लेल चुप भ' गेला। फेर बगल मे राखल चाहक गिलास कँ उठौलनि आ एक घोंट चाह पिलनि। तखन फेर बाजब आरम्भ केलनि–"आज दोपहर को तीन बजे नसरत फजले खाँ हवाइ जहाज से जनकपुर आया। फिर जनकपुर का तैनात आइ.एस.आइ. के एजेन्टों का टोली को साथ लेकर नसरत कटबसवा के मदरसा मे पहुँच गीया है। दूसरा तरफ इहाँ से आठ किलोमीटर पर इन्डिया मे ठनका जगह है। ठनका मे एरिगेशन डिपार्टमेंट का गेस्ट हाउस है। इहाँ हेलीपैड भी है। गुलाब इहाँ हेलीकाप्टर से पहुँच गीया है। माउल्डी, भीमा आउरो ड्राइभर बटोही डिपार्टमेंट का गाड़ी से इहाँ आ गीया है। लगभग दस ठो एम.एल. ए. जो अगाड़ी एलेक्शन मे गुलाब का पार्टी का कन्डीडेट भी है, ओ सभ अपना-अपना बडीगार्ड आउरो सेकुरिटी के साथ ठनका के गेस्ट हाउस आ चुका है। अब स्पेकुलेशन है कि रात का टाइम मे गुलाब आउरो उसका हजूम आउरो नसरत आउरो उसका फौज ठीकेदार चंदवा के अम्पायर मे आयेगा आउर मिटिंग करेगा। मिटिंग का टाइम फिक्स नहीं है। लेकिन मिटिंग आज रात मे ही होगा। इतना बात तुम दोनो समझ गीया है न? ठीक है।"

सहदेव आ उग्रदेव ध्यान सँ भाटाजीक कथन कँ सुनि रहल छल आ कम्प्यूटर पर पसरल चंदवाक भठ्ठाक स्थान कँ देखि रहल छल। भाटा जी फेर बाजब शुरू केलनि–"पावा नगर मे थाना है। बोर्डर सिकुरिटी फोर्स का हेड क्वार्टर इहाँ से पांच किलोमीटर पश्चिम है। इन सभी को गुलाब आउरो नसरत का मिटिंग का कुछ खबर नहीं है। आउरो है भी तो इन्टरफेयर करने का ऑडर नहीं है। अब उस बात को भूल जाओ। अभी तुम दोनों का एक्शन प्लान कीया होगा उसको मगज मे दाखिल करो।

–"तुम आउर उग्रदेव आउर रस्ता दिखाने के वास्ते सुखदेव का एक आदमी मारुति भान से जाएगा। चँदवा के गेट से दस फर्लांग का दूरी पर सड़क से हटकर आम के फोरेस्ट मे मारुति भान को छुपाकर उग्रदेव वहीं भान मे बैठा रह जाएगा। किसी इमरजेन्सी मे भान से काम लिया जाएगा। तुम सहदेव सुखदेव का भान के

साथ वहाँ से तीन किलोमीटर दूर नदी का किनारा मे पहुँचेगा। वहाँ अपना दस ट्रेन्ड बिहारी लोग है। सभी तरहक विस्फोट का सामान आउर आर्म्स वहाँ मौजूद है। रबर का बोट भी है। सभी सामान को रबर बोट मे भरकर आउर उसे उल्टा करेन्ट मे खींचकर तुम आ तुम्हारा भान नदी का किनारा-किनारा चलकर चँदवा के टेरीटरी मे दाखिल होगा। वहाँ पहुँचकर सहदेव तुमको क्या-क्या करना है उसका ब्रीफ तुमको मालूम है। ठीक?"

सहदेव आ उग्रदेव मूड़ी डोला क'भाटाजीक कथन कैँ स्वीकृति देलक। किछु सेकेण्ड चुप रहलाक बाद सहदेव सँ भाटाजी आकस्मिक रूपें प्रश्न केलनि– "सहदेव, सभी के साथ तुम लोग मुजफ्फरपुर से किस टाइम मे चला?"

–"दिनक साढ़े एगारह बजे।"

–"फिर फोलहसना साढ़े बारह बजे अपना हेड क्वार्टर मे मैसेज कैसे भेजा? तुमने उसको मैसेज भेजते तो नहीं देखा था?"

सहदेव हड़बड़ाइत बाजला–"नहि, हम फुलहसना कैँ संवाद पठबैत नहि देखलहुँ। मुदा पेट्रोलक दाम चुकता करैक लेल फुलहसना भान सँ उतरि क' पेट्रोल पम्पक ऑफिस मे असगरे गेल छल। तखन सही मे साढ़े बारह बाजल रहै। तखनहि ओकरा संदेश पठेबाक अवसर भेटल हेतै। कोन तरहक संदेश फुलहसना पठौलक?"

–"फोलहसना मैसेज भेजा कि वह ऑडर का हिसाब से मुजफ्फरपुर से तीन छौंकड़ी के साथ पावानगर मे चंदवा का जगह को जा रहा है। उसके साथ काले खाँ सूटर भी है। फिर वह तुम्हारा, उग्रदेव का आउर तीनो लड़िकी का फूल डिस्क्रीपसन भेजा आउर डिटेल तहकीकात करने को बोला। वह अपना डाउट को भी एक्सप्रेस किया। फोलहसना का मैसेज फार इस्ट मे इन्डोनेशिया का कैपिटल जकार्त्ता मे आइ.एस.आइ. का ऑफिस रिसिभ कीया। फिर वह मैसेज जकार्त्ता से काठमान्डू, काठमान्डू से दिल्ली आउरो दिल्ली से पटना का आइ.एस.आइ. का ऑफिस मे आया। इस मैसेज का कोडेड जवाब फोलहसना को तीन बज कर दस मिनट पर दिया गया। मैसेज था कि किस के ऑडर से वह तीन छोंकड़ी के साथ पावानगर जा रहा है उसको तुरत कन्फर्म करो। इसके साथ उसको ऑडर बोला गीया कि काले खाँ के मदत्त से बजरंगी, बेलदार आउरो तीनो छौंकड़ी को मार कर रास्ते मे फेंक दे आउरो वापस मुजफ्फरपुर चला जाए। उसको पावानगर जाने का जरूरत नहीं है।

–"लेकिन ई मैसेज फोलहसना रिसिभ नहीं किया। उसका मोबाइल बन्द था। अब मैटर डेन्जर मे आ गीया है। उसको तीनो छौंकड़ी को लेकर पावानगर जाने का ऑडर कौन दिया? जवाब था शालीग्राम, जो अब्दूल रसीद बनकर आइ.एस.

आइ. का जनकपुर कैम्प मे घूसा हुआ है, ऑडर दिया था। मैटर लीक होने पर शालीग्राम का लाइफ पूरा का पूरा डेन्जर मे चला जाएगा। इसीलिए मैं इहाँ का सभी मोबाइल को चोक कर दिया। इससे मोबइल मैसेज को रिसीभ तो कर सकता है लेकिन मैसेज बाहर नहीं भेज सकता है। इस चोक बाला काम मैं बहुत देर तक नहीं कर सकता था। पूछो क्यों? इससे कटबसवा का मदरसा मे फिट वायरलेस मशीन भी चोक हो गीया होगा। इससे मौलाना अमीर खाँ का चौकन्ना होने का चान्स बन गीया होगा। इसीलिए अभी-अभी मैं चोक को हटा दिया। अब गॉड जानता है कि अब्दुल रसीद का किया हुआ होगा?"

सहदेव भाटाजी कैँ आश्वासन दैत कहलनि–"फुलहसना कोनो संदेश पठाइओ ने सकैत अछि। पेट्रोल पम्प स्टेशन पर पानिक गिलास देबा काल हम मैना कैँ पुर्जा पकड़ा देने छी। पुर्जा मे आदेश छल जे जल्दी सँ जल्दी फुलहसना आ काले खाँ कैँ यमलोक पहुँचा देल जाय। मैना पटु छथि। दुनू अवश्ये मारल गेल हैत।"

–"तुम्हारा बात सच होगा इसका मैं काली माँ से प्रे करता है।" भाटाजीक संशययुक्त जवाब छल। सहदेव एवं उग्रदेव ओहि ठाम सँ उठि क' सुखदेव बिहारी लग पहुँचला आ अपन-अपन अगिला कार्यक्रम मे लागि गेला।

भाटाजी कैँ मैनाक केलिवर अर्थात क्षमता पर अत्यधिक विश्वास छलनि। मुदा एखन त' हुनका, कामिनी आ रंजना कैँ फुलहसना आ काले खाँ छागर-पाठी जकाँ हँकने आयल आ एकटा कोठली मे बन्द क' देलक। दुनू ओतय सँ कोनो आन ठाम चलि गेल। ओ कोठली भंडार घर छल। कोठली अन्हार छलै। मैना पेन्सिल टर्च निकालि क' घरक मुआयना केलनि। चाउर, आटा, तेल, मसाला इत्यादि सँ कोठली भरल छल। एक कात एकटा पटिया ओछाओल रहैक। मैना सहदेवक देल पुर्जा बाहर केलनि आ टर्चक रोशनी मे ओकरा पढ़लनि–"कारी फूल कैँ जल्दिए मसलि क' फेक दी।"

मैना ओहि पुर्जा पर लिखल बातक आशय कामिनी आ रंजना कैँ बुझौलनि– "कारी माने काले खाँ आ फूल माने फुलहसना कैँ शिघ्रातिशीघ्र यमलोक पहुँचाबक आदेश सहदेव देलनि अछि। सही मे फुलहसना आइ.एस.आइ.क प्रशिक्षित जासूस अछि। लहठीबाइक ओतय हमर सभहक उत्तेजित भाव कैँ ओ परखि नेने होयत आ सशंकित भ' गेल होयत। तैँ ओकर मरब जरूरी अछि अन्यथा योजना मे विघटन होयबाक सम्भावना।"

तीनू कन्या बुरका कैँ निकालि क' फेकलनि। तीनूक देह मे सटल कारी रंगक विन्ड सीट आ तकरा उपर कारी रंगक चुस्त पेन्ट शर्ट। तीनूक डाड़ मे डरकसक स्थान पर स्टेनलेस स्टीलक चमौटी छल। डाँड़ मे एक कात पेस्तौल आ दोसर कात

विभिन्न वस्तु सँ भरल बटुआ लटकि रहल छल। तीनूक छाती पर पेस्तौलक गोलीक माला पसरल छल। हुनका सभहक माथ कारी रंगक साफा सँ बान्हल छल।

कामिनी एवं रंजना अपन डाँड़क स्टेनलेस बला चमौटी खोललनि। स्प्रिंगक खट-खट अबाज भेलै। आब ओ चमौटी चमचमाइत तेज धारबला खंजर आकारक हथियार बनि गेल। मैनाक निर्देश पाबि कामिनी एवं रंजना मिलि ओहि खंजर सँ कोठलीक पाछाँ दिसका देवालक नीचा सँ ईंट्टा हटाबय लगलीह। लगले देवाल मे एतेक टा रस्ता बनि गेल जे मनुक्ख ओहि बाटे बाहर जा सकैत छल। मैना ओही सेन्ह बाटे बाहर अयलीह। अन्हार राति मे किछु देखि सकब मुश्किल छल। टर्चो ने जड़ाओल जा सकैत छल। किछुए कालक बाद मैनाक आँखि अन्हार मे देखैक अभ्यस्त भ' गेलनि। मैना गील माटिक बहुत रासढेरी देखलनि। प्रायः ई नदी सँ आनल गील माटि ईंट्टा बनेबाक लेल छल हैत। मैना थोड़े आगाँ बढ़ि चारुकात तकलनि। उभर-खाभर, स्थान-स्थान पर खाधि, ठाम-ठाम माटि, छाउर एवं काँच-पाकल ईंट्टाक ढेरी। सभ दिस निस्तब्धा त' रहबे करै मात्र चंदवाक मुख्य घर लग इजोत। आइ.एस.आइ.क गार्डक चहल-पहल सेहो साफ-साफ देखाइ पड़ि रहल छलै। ओ सभ जेना पिकनिकक मूड मे होअय तहिना ओकर सभहक ठहाकाक अबाज कैं मैना सुनलनि। ओ निश्चिन्त जकाँ भेलीह।

मैना वापस कोठली मे अयलीह। कोठली मे घूप-अन्हार त' छलैहे। तीनू युवती पटिया पर बैसि क' चुपचाप प्रतीक्षा कर' लगलीह। कनिए कालक बाद कोठलीक बाहर दिस सँ ककरो अयबाक आहट भेल। फुलहसना आ काले खाँ, दुनू मे सँ कियो अथवा दुनू भ' सकैत छल। तीनू युवती सावधान होइत ठार भ'गेलीह।

आब' बला आन कियो नहि फुलहसना एसगरे छल। ओ शायद अपन बॉसक ऑडर कैं मोबाइल पर सुनि नेने छल। बजरंगी आ बेलदार त' ओकरा आब भेटितै नहि, तखन बचल तीनू छौंड़ी जकरा ओ भंडार घर मे बन्दक' आयल छल, तकरा खतम करबाक उद्देश्य सँ पिस्तौल तनने ओ केबाड़क जंजीर खोललक। पयर सँ केबाड़क पल्ला कैं ठेलैत अन्हार कोठली मे फुलहसना पयर रखलक। एक अत्यन्त कठोर कैरठक प्रहार ओकर गरदनि पर पड़लै। हड्डी टूटबाक चटाक अबाज भेलै। तखने दुनू कात सँ कामिनी एवं रंजनाक हाथक खंजर फुलहसनाक छाती आ पेट कैं फारैत दोसर कात निकलि गेलै। फुलहसना कराहिओ ने सकल, कारण मैनाक हाथक तरहथ्थी ओकर मुँह के मजबूती सँ चपने छल। फुलहसना मुँहक बले फर्स पर खसल। तत्काल ओकर रुह (आत्मा) जन्नत (स्वर्ग) लेल प्रस्थान क' गेलै।

कोठलीक केबाड़ बन्द कयल गेल। टर्चक प्रकाश भेलै। मैना एकटक कामिनी

एवं रंजना कैँ निहार' लगलीह। हमरो प्रबल इच्छा दुनू कैँ देखैक भेल। मुदा हमर दृष्टि मे धुन्ध लागल छल। हम धूप, दीप, पुष्प, जल, अक्षत आ कुश सँ बनल फोटो-फ्रेम सँ अपना कैँ बाहर अनलहुँ। आब हम भगवतीक नव रूप कैँ देखलहुँ। महिषासुरक विदीर्ण भेल छाती के देखलहुँ। नियम आ परम्परा सँ व्यथित कामिनी एवं रंजना मे अबला नारीक कतहु अत्ता-पत्ता नहि छलनि। समाजक श्मशान मे भस्म भेलि आब दुनू मे नव दूर्गाक छवि कैँ स्पष्ट देखलहुँ जकर वर्णन करबाक लेल शब्दक निर्माण नहि भ' सकल अछि। मात्र भगवतीक छविक दर्शने टा कयल जा सकैत छल, तकर साक्षात दर्शन कयलहुँ। सम्प्रति कामिनी एवं रंजना अपन-अपन अस्त्रक शोणित कैँ फुलहसनाक मइल-चिकाइठ कुर्ता सँ पोछि रहल छलीह।

तखने फुलहसनाक शरीरक वस्त्र मे नुकायल मोबाइलक घंटी बाजल। मैना मोबाइल कैँ निकालि कैँ ऑन केलनि। आबाज आयल–'तुमको जो ऑडर दिया गया था वह पूरा हुआ कि नहीं। हेड ऑफिस से सम्पर्क करो।'

मैना मोबाइल कैँ बन्द केलनि। ओ फुलहसनाक वस्त्र कैँ आउरो खोदलनि। ओकर पहचान नहि होअय ताहि लेल मैना ओकर पिस्तौल, मोबाइल, आइडेन्टी कार्ड, डायरी आ थोड़ेक कैश, सभ किछु कैँ अपन अधिकार मे कयलनि। तकरबाद तीनू युवती फुलहसनाक मृत शरीर कैँ देवालक सेन्ह बाटे बाहर अनलनि। थालबला माटिक ढेरी रहबे करै। ओही थालबला ढेरीक बीच फुलहसना कैँ सुता क' तीनू युवती अन्हार मे एक कात आगाँ बढ़ि गेली।

एकटा छाउरक ढेरी लग पहुँचि मैना, कामिनी एवं रंजना आसन जमौलनि आ चंदवाक विश्रामगृह दिस ताक' लगलीह। चँदवाक मुख्य घर लग पहिने सँ इजोत छलैहे, आब आउरो बहुत रास भैपर लैम्प जड़ा देल गेल रहै। नतीजा ई भेल रहै जे ओ स्थान प्रकाश मे जगमगा रहल छलै आ बाँकी सभटा स्थान मे आउरो अन्हार पसरि गेल रहै।

तखनहि पूव दिस जेमहर काठक पुल छल आ कटबसवा गामक मदरसा छल, तेम्हरे सँ पतियानी मे मनुक्ख सभ आब'लागल। सभटा मनुक्ख कोनो ने कोनो वस्तु उठौने आबि रहल छल। बहुतो लोकक जमा भेला पर जेना धमौज बला अबाज होइत छै तेहन अबाज सुनाइ पड़' लागल। सभटा वस्तुजात नेने सभटा मनुक्ख चंदवाक मुख्य घरक लग पहुँच गेल।

करीब दू घंटाक बाद लकड़ीबला पुल दिस फेर इजोत भेलै। मैना आ हुनक सहयोगिन ओमहर तकलनि। आगू-आगू पेट्रोमैक्स उठौने दू गोट लोक, तकरबाद हाथ मे राइफल तनने आधा दर्जन गार्ड आ तकरबाद लुद-लुद क' अबैत एक गोट भीमकाय मनुक्ख। मैना मनहिमन निर्णय केलनि जे इएह राक्षस नसरत फजले

अली खाँ होयत। रस्ता संकीर्ण रहलाक कारणे काठक पुलक ओहि पार वाहन छोड़ि सभ पैदल आबि रहल छल। नसरतक पाछाँ-पाछाँ जे दाढ़ी बला व्यक्ति आबि रहल छल ओ अवश्ये कठबसनाक मदरसाक मुखिया मौलाना अमीर खाँ छल। अमीर खाँक पाछाँ फेर आधा दर्जन गार्ड छल। तकरबाद थोड़े आउरो लोक कैँ मैना देखलनि जे माथ पर कार्टून उठौने छल। भ' सकैत अछि जे ओहि मे नसरतक मन पसंद शराब एवं स्नैक्स होइक। नसरतक बाराती जे गनती मे पच्चीस-तीस होइतैक चंदवाक भठ्ठाबला आवास पर पहुँच गेल।

अही नसरतक दल मे शालीग्राम अर्थात अब्दुल रसीद सेहो होयताह। मुदा हुनका चिन्हत के? अब्दुल रसीद मात्र ओ व्यक्ति छलाह जे नसरत एवं गुलाबक बीच होब' बला गुप्त बैसकक गुप्त संवाद प्राप्त क' सकैत छलाह। एकर भार हुनके चमेलीरानी देने रहथिन। तैँ अब्दुल रसीदक पाट अभियानक सब सँ जरूरी हिस्सा छल।

मैना आँखि पर एकटा छोट मुदा पावरफुल दूरबीन रखलनि। ओ देखलनि जे चंदवाक विश्राम कुटीर सँ थोड़बे हटल आ पाछाँ दिस बहुतो पाकल ईंटाक ढेरी छैक। तकर माने भेल जे सहदेव नदीक काते-कात आबि, सभ चिमनी मे विस्फोटक कैँ स्थान पर राखि, अपन आदमी कैँ पुल लग पोजिसन मे बैसा क' अबस्से अहि ईंटाक ढेरीक लग अबैक प्रयास कयने हेताह। अब्दुल रसीद सँ भेंट करक स्थान वैहटा भ' सकैत छल। मैना निश्चय केलनि आ कामिनी एवं रंजना दिस घुमि फुसफुसैली—"हम ओहि ईंटाक ढेरी लग जाइत छी। अहाँ दुनू आउरो अधिक सतर्क रहू। कोनो मुश्किल भेला पर अथवा काले खाँ कैँ देखला पर सोझे गोली मारि देब। हम सहदेव सँ भेंट क' आ ओम्हुरका समाचार ल' फेर अही ठाम घुमि क' आबि रहल छी।" एतबा कहि मैना अन्हार मे बिलीन भ' गेली। कामिनी एवं रंजना अत्यधिक सतर्क भ' गेली। अन्हार राति मे जेना बिलाइक आँखि चमकैत अछि तहिना दुनूक आँखिक डिम्भा सँ प्रकाश छिटक' लागल।

मैना ईंटाक ढेरी लग पहुँचली। सही मे सहदेव ओतए नुकायल छलाह। सहदेवक सर्वाङ्ग शरीर कारी वस्त्र सँ झाँपल छल। फुसफुसाइत मैना सहदेवक कान मे कहलनि—"फुलहसनाक कार्य सम्पन्न भ'गेल। मुदा काले खाँ एखनो तक जीबतहि अछि।"

सहदेवो ओहिना फुसफुसाइत जवाब देलनि—"काले खाँ सूटर अछि। सूटर आ मानव-बम एकहि तरहक होइत छै। एकरा सभहक माथ कैँ नेनहि सँ एतेक ने चाटल जाइत छै जे जीवनक प्रति, धरती परहक कोनो वस्तुक प्रति एकरा सब मे आकर्षण रहिए ने जाइत छै। मृत्युक बाद जन्नत भेटत, आ रूह कैँ सभ तरहक

भोग भेटतै मात्र एतबेटा ई सभ बुझैत अछि। चंदवाक अहि विशाल आ अन्हार प्रांगण मे काले खाँ कतहु एकांत मे चुपचाप शराब पिबैत बैसल होयत। ओकरा जीबैत नहि छोड़ल जा सकैत अछि अन्यथा शालीग्राम लेल खतरा बढ़ि जेतनि। अहाँ अपन स्थान पर चलि जाउ आ काले खाँक खोज मे लागि जाउ। ध्यान राखब जे चारु चिमनी मे विस्फोटक भरि देल गेल छै। बाँकी अपन सभटा लोक नदीक कछेर मे काठक पुल सँ थोड़बे हटल मोर्चा सम्हारने अछि।

मैना सहदेवक आदेश पाबि फेर अपन पूर्वक स्थान लेल बिदा भ' गेलीह। एमहर ताहीकाल गुलाब मिसिरक हंसेरी चंदवाक साम्राज्य मे पहुँच' लागल। गुलाब मिसिर आ ओकर खास-खास लोक, सिकुरीटी, दस गोट विधायक आ तकर अंगरक्षक सभटा करीब पन्द्रह-बीस कार मे भरल कतार मे आयल। चंदवाक विश्राम कुटीर खचाखच भरि गेल। गुलाब मिसिर विनायक राम चंदवाक पाछाँ-पाछाँ एकटा हॉल मे प्रवेश केलक। हॉल सोफा आ कुर्सी सँ भरल छल। ओतहि एकटा सोफा पर नसरत फजले अली खाँ पसरल छल। ठीक ओकरा पाछाँ मौलाना अमीर खाँ ठार छल। गुलाब मिसिर नसरतक बगल बला सोफा पर बैसि गेल। सभटा विधायक सेहो एक-एक क' अबैत गेल आ सोफा आ कुर्सी पर बैसैत गेल। चंदवा गुलाब मिसिरक परिचय नसरत सँ करौलक। सी.एम. उठि क' नसरत कँ अभिनन्दन केलनि आ अपना कँ धन्य केलनि। तकरबाद सभटा सोफा आ कुर्सीक आगाँ राखल टेबुल पर शराबक बोतल, गिलास तथा चखनाक अनेक प्रकारक व्यंजन राखल गेल। एतहि अब्दुल रसीदक दर्शन भेल। खानसामाक हेड अब्दुल रसीदक देख-रेख मे खेबा-पिबाक सामग्री आनल जा रहल छल।

थोड़े काल तक मेहमाननवाजी चलैत रहल। गुलाब मिसिर कँ छोड़ि सभटा प्रत्याशी विधायक पिबै मे आ स्वादि-स्वादि व्यंजन कँ खेबा मे व्यस्त भ' गेल। ताही बीच नसरत फजले अली खाँ उठि क' ठार भेल। ओकर ऊँचाइ साढ़े छह फीट आ वजन चारि मोनक अवस्से रहल हेतै। नसरतक दानवी आकृति देखि विधायक समुदाय सिहरि उठल। ओकर सभहक खाय बला हाथ रुकि गेलै आ कण्ठ महक शराब कंठे मे अंटकि गेलै। नसरत कनफोड़ा अबाज मे बाजल— "गुलाब, पहले काम खतम करो। तफरी तो होता ही रहेगा।"

नसरत आ गुलाब निर्धारित बगलक कोठली मे गेल। कोठलीक दरवज्जा कँ बन्द क' मौलाना अमीर खाँ पहरा देब' लागल। करीब पन्द्रह-बीस मिनटक बाद नसरतक खरखराइत अबाज सुनि पड़ल—"अमीर, अन्दर आओ।"

अन्दर कोठली मे नसरत आ गुलाब आमने-सामने बैसल छल। बीच मे सफेद टेबुल-क्लॉथ सँ झाँपल एकटा टेबुल रहै जाहि पर फूलक छोट-छोट गमला, शराबक

बोतल, जार मे भरल बर्फ, गिलास एवं खेबाक वस्तु राखल रहै। दू गोट अति विशिष्ट व्यक्तिक गुप्त बैसकक स्थान चयन भेला पर अब्दुल रसीद अपन देख-रेख मे कोठली कैं सजौने छल। अमीर खाँ के देखितहि नसरत प्रश्न केलक–"अभी जो काफिला हमारे साथ यहाँ आया है, उसमे कोइ सूटर भी है क्या?"

–"हजूर, हमारे साथ हमारा सिकुरिटी, खानसामा और गुलाम आये हैं। सूटर और ह्यूमन बम का फरमाइस होता तभी तो मैं उनको साथ लाता? हाँ, कटबसना के मदरसा मे मैंने एक मैसेज रिसिभ किया था कि फुलहसना जो इस प्रांत मे प्लानटेड अपना सिनियर एजेन्ट है, तीन ब्यूटीफुल छौंकड़ी और काले खाँ नामक सूटर के साथ यहाँ पहुँच रहा है। फुलहसना को वापस मुजफ्फरपुर जाने का ऑडर दिया गया था। लेकिन उस मैसेज को उसने रिसिभ नहीं किया। इसलिए फुलहसना तीनो छौंकड़ी और काले खाँ के साथ यहाँ पहुँच गया होगा। मैं हजूर के खैरियत मे मसगुल हूँ, इसीसे उन सबों का तहकीकात करने का मुझे वक्त नहीं मिल पाया है। हजूर अगर हुकूम तामिल करें तो अभी मैं फुलहसना, काले खाँ और तीनो कबुतरी का खोज करके यहाँ हाजिर कर दूँ।"

–"क्या बकते हो? तीन छौंकड़ी का यहाँ क्या काम है। मैं तफरी के वास्ते तो यहाँ आया नहीं हूँ। मेरा मकसद गुलाब से अकेले मे मिलने का रहा है क्योंकि गुलाब ऐसा चाहता था। अमीर, अभी हम दुश्मन के टेरिटोरी मे हैं। इन्डिया का वोर्डर सिकुरिटी फोर्स का हेड क्वार्टर यहाँ से मुश्किल से पांच किलोमीटर पर है। थोड़ा सा गफलत खतरनाक हो सकता है। दुश्मन सभी जगह है और अभी तो गुलाब का दुश्मन भी अपना दुश्मन है। पूरा होश मे आकर फुलहसना का खोज करो और पता करो कि किसने उसको यहाँ आने का फरमान दिया था। अगर फुलहसना के साथ तीन छौंकड़ी यहाँ आ गइ हो तो उसे मेरे हजूर मे पेश करो। मैं भी तो देखूँ कि छौंकड़ी कितना ब्यूटीफूल है। जब्बह करने के लिए मुर्गियों का तलास मैं तो करता ही रहता हूँ।"

नसरतक अइयासी मिजाज सँ अमीर खाँ परिचित छल। मुदा ओकर क्रोध सेहो कम खतरनाक नहि छलै। अमीर खाँ कोठली सँ बाहर जेबा लेल घुमल कि नसरत फेर गरजि उठल–"अभी रुको। पूरी बात को सुन लो। गुलाब का मातहत मे काम करने वाला दो मर्द और एक औरत अभी यहाँ तीन सूटकेश के साथ आयेगी। सूटकेश मे साठ करोड़ रूपया होगा। गुलाब के एलेक्शन मे हमलोग जितना आर्म्स और गुंडा सप्लाइ करेगा उसी का यह रूपया पेमेन्ट है। गुलाब का ये तीनो गुलाम गुलाब के साथ वापस चला जायेगा, लेकिन एक घंटा के अन्दर वापस आयेगा। उनके साथ दो सूटकेश मे दो करोड़ रूपया होगा। रूपया को अपना कब्जा मे लेकर

तीनों को मार डालना है। इसी मर्डर के काम के वास्ते मैंने सूटर का डिमांड किया था। अब अगर काले खाँ सूटर तुमको नहीं मिले तो यह काम तुमको ही करना है। मैंने गुलाब से वादा किया है कि वे तीनों जिंदा यहाँ से नहीं जायेंगे। अब सभी बात तुम्हारा मगज मे आ गया होगा या फिर समझाना होगा?"

अमीर खाँ आज्ञाकारी बालक जकाँ नसरतक सभटा गप सुनि रहल छल। ओ बाजल–"समझ गया। अच्छी तरह समझ गया। हजूर का हुक्म का तामील होगा।"

तखने चंदवा कोठलीक दरबज्जा खोलि भीतर अयबाक लेल पयर उठौलक। ओकरा रोकैत गुलाब मिसिर बाजल–"नहीं, नहीं। चंदवा तुमको अन्दर आने का काम नहीं है। माउल्डी, भीमा और बटोही को सूटकेश के साथ अन्दर भेजो। तुम बाहर मे ही मेरा इन्तजार करो।"

फेर केबाड़ खुजल। हाथ मे सूटकेश नेने माउल्डी, भीमा आओर बटोही कोठलीक भीतर आयल आ तीनू सूटकेश कैँ नसरतक बगल मे राखि ठार भ' गेल। गुलाब मिसिर नसरत सँ सभहक बेराबेरी परिचय करौलक–"यह मेरा पर्सनल सेकेरेट्री माउल्डी है। यह मेरा बिश्वस्त बडी गार्ड भीमा है और यह मेरा खास ड्राइभर बटोही है।"

जेना बकरी कैँ हलाल कर' सँ पहिने हलाल केनिहार ओकरा देखैत अछि, तहिना अमीर खाँ तीनूक चेहरा कैँ निहारलक। गुलाब मिसिर नसरत सँ कहलक–"हजूर, इन तीनों सूटकेश मे साठ करोड़ है। बाँकी दो करोड़ लेकर ये तीनो अभी घंटा भरके अन्दर ही यहाँ पहुँच जायेंगे। तो अब हमे जाने की इजाजत दें।"

गुलाब मिसिर माउल्डी, भीमा एवं बटोही संग कोठली सँ बाहर हॉल मे आयल आ बैसल सभटा विधायक कैँ कहलक–"यहाँ का काम खतम हुआ। सभी कोई यहाँ से वापस चलो। चंदवा, तुम भी मेरे साथ वापस चलोगे।"

गुलाब मिसिरक हैँज जहिना आयल छल घुमि क' बिदा भ' गेल। अमीर खाँ फुलहसना एवं काले खाँक खोज मे निकलि गेल। ओतय रहि गेल एसगर नसरत।

गुलाब मिसिरक दल कैँ घुमि क' जाइते अब्दुल रसीदक फरमान भेल–"मसूद, जहीर! अरे, तुम कहाँ हो? गुलाब मिसिर और उसका सभी आदमी वापस चला गया, अब इतना खाना कौन खायेगा? खैर, भूल जाओ उन सालों को। अपना सभी आदमी को ईतला दो। इसी दो कमरों मे दस्तरखान बिछाओ और एक साथ सबको खाने पर बिठाओ।"

एकहि क्षण मे दुनू कमरा मे जाजीम ओछा देल गेलै। नसरतक बाराती मे आयल लगभग साठि गोटे भोजन करक लेल बैसि गेल। अब्दुल रसीदक मातहतक मसूद आ जहीर खाना परस' लागल। ड्रॉम सँ गिलास मे भरि-भरि क' ठर्रा सभहक

आगाँ राखि देल गेल। फेर जाजीम पर पोलाव, बिरयानी, गोस्त, सेवइ एवं आन-आन वस्तु परसि देल गेल। अहि तरहें एक घंटाक कार्यक्रम बनि गेल। बाढ़ि पीड़ित भूखायल मनुक्ख जकाँ सभ कियो भोजन कर' मे टूटि पड़ल।

अब्दुल रसीद बदना उठौलक आ लग मे ठार अपन खास असिस्टेन्ट सँ कहलक–"सलीम, तुम मेरी जगह ड्यूटी करो। सभी को अच्छी तरह खिलाओ-पिलाओ। मैं तब तलक फारिग होकर आ रहा हूँ।"

अब्दुल रसीद बदना कँ अँगुरी पर उठौने मकानक पाछाँ ईंटाक ढेरी दिस बिदा भ' गेल। ओतय सहदेव के ताक' मे ओकरा कनिओं विलम्ब नहि भेलैक।

योजनानुसार गुलाब आ नसरतक गुप्त मीटिंग मे कोन तरहक वार्तालाप भेलै तकर जानकारी प्राप्त करबाक भार शालीग्राम पर छल। चमेली रानीक संशय सही मे दुररुस्त छल जकर स्पष्टीकरण भ' गेल। आइ.एस.आइ. कतबो प्रसिद्ध आ कार्यकुशल किएक ने होअय, ओकरा मे सहस्रो छेद छलैहे। ओकर संसार भरि मे पसरल कारोबार एवं भ्रष्ट आ घमंडी कमान्डर ओकरा कमजोर बना देने छलै। गुप्त मीटिंगक स्थान मे अब्दुल रसीद आरम्भे मे यंत्र फिट क' चुकल छल। ओतय गुप्त रूपँ गुलाब एवं नसरत मे जे किछु वार्तालाप भेल से अब्दुल रसीदक शरीर मे बान्हल टेप रिकार्डर मे टेप भ' गेल छल।

टेपक वार्तालाप सुनि शालीग्राम अचम्भित भेलाह। सहदेव कँ भेटितहि शालीग्राम टेप कयल छोट सन टेपरिकार्डर हुनका हाथ मे दैत कहलनि–अहाँ अहि महक टेप कयल संवाद सुनि लिअ। सभटा जानकारी भेटि जायत। अगिला काज अहाँ कँ की करक अछि से अहाँ कँ बुझल अछि। सम्प्रति हमरा अमीर खाँ पर आँखि राखब अत्यन्त जरूरी अछि। हमरा समय नै अछि, हम जा रहल छी।

एतबा कहि शालीग्राम बदना कँ अँगुरी मे टँगने जेमहर सँ आयल छला ओम्हरे घुमि क'चलि गेलाह। सहदेव हेड फोन कँ कान मे फिट केलनि आ टेप रेकार्डर कँ ऑन केलनि। संदेश छल :

नसरत–"हाँ जी गुलाब, तुम अकेले मे मुझसे क्यों मिलना चाहते थे? तुम्हारे जरूरत के मोताबिक आर्मस और गुंडों का पलटन मैं वैसे भी भेज सकता था। चंदवा तो बीच में है ही। आइ.एस.आइ. उस पर पूरा यकीन रखता है। फिर इस गुप्त मीटिंग की क्या जरूरत आन पड़ी?"

गुलाब–"प्रांत का शासन चलाना कांटों में चलने जैसा है। कुछ खास तरह का काम आपसे करबाना है जिसकी जानकारी किसी को नहीं होनी चाहिए। चंदवा भी इसको जान नहीं पाये इसका बन्दोवस्त करना है।"

नसरत–"क्या काम है?"

गुलाब–"मेरा सेक्रेटेरी माउल्डी, मेरा पर्सनल बडीगार्ड भीमा और मेरा निजी ड्राइभर बटोही जो सभी मेरे साथ आया है, उस तीनों को जान से मार देना है। ये तीनों मेरा बहुत सारा राज जान चुका है और मेरे लिए खतरा बन चुका है।"

नसरत–"मैं वजह नहीं पुछूँगा। वजह जानना मेरे लिए जरूरी भी नहीं है। आपकी मदत होती रहे यही आइ.एस.आइ. का अभी की पॉलीसी है। लेकिन इसके लिए तुम्हें अलग से पेमेन्ट करना पड़ेगा।"

गुलाब–"हाँ, हाँ। अलग से पेमेन्ट मैं दूँगा। सभी बातों को मैं पहले से सोच रखा है। अभी ये तीनों तीन सूटकेश लेकर आपके पास आयगा। सूटकेश मे साठ करोड़ का पेमेन्ट है। मैं तीनों को साथ लेकर वापस चला जाउँगा। घंटे भर के अन्दर दो करोड़ का अतिरिक्त पेमेन्ट लेकर ये तीनो यहाँ आयगा। उस समय कार मे ये ही तीनो रहेगा दूसरा कोई नहीं रहेगा। ये तीनो अपना मौत का फरमान लेकर यहाँ आ तो जायगा, लेकिन इसको वापस मेरे पास पहुँचना नहीं है। इस तीनों का काम तमाम हो जाना चाहिए।"

गुलाब मिसिर आ नसरतक बीच भेल एतबा वार्तालाप सुनि सहदेवक दुनू भौं नमरि क' एक दोसरा मे सटि गेलनि। ओ टेप रेकार्डर कैँ ऑफ केलनि, हेडफोन कैँ कान सँ हटौलनि आ निर्भीक भेल चंदवाक भठ्ठा मे बनल लोहाक फाटक दिस बिदाह भ' गेलाह।

लोहाक फाटक सुनसान पड़ल छल। सभ टा खेबा-पिबाक समान लेल चलि गेल छल। सहदेव फाटक कैँ पार केलनि आ वामा कातक सड़क पर चलैत रहला। ओ ओहि स्थान पर पहुँचला जतय आमक गाछी मे मारुति भान कैँ नुकौने उग्रदेव रहथि। सहदेव उग्रदेव कैँ टेप देलनि आ कहलनि–अहाँ अहि टेप कैँ सुनि लिअ। सभटा बात अपनहि आप स्पष्ट भ' जायत। एखन कनिए काल मे गुलाब मिसिरक कैम्प सँ एकटा कार कैँ अबैत देखबैक। ओहि कार मे माउल्डी, भीमा आ बटोहीक अतिरिक्त आन कियो ने हेतै। अहाँ ओहि कार कैँ रोकि अहि टेपक संवाद कैँ बेराबेरी तीनू कैँ सुना देबनि। तकर बाद ओहि कार कैँ अही ठाम छोड़ि देबै आ अपन मारुति भान सँ तीनू कैँ संग लैत सुखदेव बिहारीक धर्मशाला मे चलि जायब। अहाँ सभ ओतहि रहब आ हमर सभहक प्रतीक्षा करब। आओर अधिक गप कहबाक ने समय अछि आ ने आवश्यकता।

एतबा कहि सहदेव पूर्ण बेग सँ चंदवाक भठ्ठा लेल वापस भ' गेलाह। एमहर मौलाना अमीर खाँक हालत बेहालत छलै। नसरतक बौखलाहटि उचिते छलै। अमीर खाँ स्वयं काबिल आ जिम्मेदार जासूस छल। मुदा नसरतक आगवानी मे ओ फुलहसना एवं काले खाँक खोज-पुछारि नहि क' सकल छल। ई एहन ने मिस्टेक

छल जकर परिणाम खतरनाक भ' सकैत छल। ओ तत्काल फुलहसना एवं काले खाँक पत्ता लगाब' लागल। गेट परहक पहरादार सँ जानकारी प्राप्त क' आ एसगरे फुलहसना एवं काले खाँक खोज करक लेल आगाँ बढ़ल। सभटा प्रकाश त' चंदवाक मुख्य विश्राम गृह लग रहै, तँ बाँकी स्थान कारी स्याह बनि गेल छलै। अमीर खाँ एकटा टर्च लेलक। ओ टर्चक स्वीच कैँ आङ्गुर सँ दबौलक आ ओकर क्षीण प्रकाश मे आगाँ अन्हारे मे डेग उठौलक।

अमीर खाँ सोझे छाउरक ढेरी दिस बढ़ि रहल छल जतय मैना, कामिनी एवं रंजना साँझे सँ पोजीशन पकड़ने छलीह। टर्चक भूकभूकी प्रतिक्षण छाउरक ढेरी लग पहुँचि रहल छल। ताही संगे मैना, कामिनी आ रंजनाक सतर्कता सेहो चरम पर पहुँचि रहल छल। तीनूक हाथक पिस्तौल अमीर खाँ दिस तनि गेल छल। मुदा अमीर खाँ एक ठाम पहुँचि रुकि गेल आ कने जोर सँ बाजल—"वहाँ कौन है? क्या तुम काले खाँ हो?"

छाउरक ढेरी सँ मात्र पांच छह लग्गा आगाँ एक छोट सन खाधि रहै। पूरा बोतल शराब पीबि ओही खाधि मे काले खाँ चित भेल पड़ल छल आ ओकर पिस्तौल ओकर छाती पर ओंघरायल रहै। अमीर खाँक अबाज सुनि रबरक स्प्रिंग जकाँ ओ छड़पि क' ठार भेल आ अमीर खाँ दिस पिस्तौल तानि देलक। घोंघियाइत अमीर खाँ बाजल—"नहीं रे नहीं। गोली मत चलाना काले। मैं हूँ मौलाना अमीर खाँ, कटबसवा मदरसा का इन्चार्ज। मेरी बात सुनो। नसरत फजले अली खाँ यहाँ तसरीफ ला चुके हैं और तुमको खोज रहे हैं।"

नसरतक नाम सुनितहि काले खाँक हाथक पिस्तौलक नाल नीचा मुँहे भ' गेलै। ओ खाधि सँ निकलि अमीर खाँक नजदीक पहुँचि ठार भेल। अमीर खाँ पुछलकै—"तुम फुलहसना और तीन छौंकड़ी के साथ मुजफ्फरपुर से यहाँ आये हो, वे लोग कहाँ है?"

काले खाँ चंदवाक मुख्य मकानक सामने सँ थोड़े हटल भंडार घर दिस हाथक इशारा करैत बाजल—"वहाँ उस कोठली मे फुलहसना तीनो छौंकड़ी को लेकर गया है। मुजफ्फरपुर मे जैसा वह मुझे समझाया वैसा सभी कुछ करता हुआ मैं यहाँ तक पहुँचा। जब मेरे जिम्मा कोइ काम नहीं बंचा तो मैं यहाँ आकर सो गया। अब फुलहसना तीनो छौंकड़ी का कबाब बनाकर खा गया या और कुछ किया, मुझे कुछ भी मालूम नहीं है।"

अमीर खाँ धड़फड़ाइत कहलक—"सुनो, सुनो काले। हजूर नसरत फजले अली खाँ हुक्म दे चुके हैं। उन तीनों छौंकड़ी को जान से मारना है। अभी यहाँ गुलाब का तीन जन, एक औरत और दो मर्द, कार से पहुँचेंगें। उन तीनों को भी दोजख

पहुँचाना है। काले, तुम्हारे लिए बहुत काम है। अभी उस घर की ओर चलो जहाँ तीनो छौंकड़ी है। मरने से पहले हजूर नसरत तीनो कबुतरी का कुतरु-कू, कुतरु-कू सुनना चाहते हैं।"

काले खाँ भभा क हँसल आ हँसिते बाजल—"सही मे खुदा का मेहरबानी मेरे साथ है। तीन और तीन, कुल छह को हलाल करना है। मेरा तकदीर का ताला ही खुल चुका है।"

काले खाँ आ अमीर खाँ भंडार घर दिस जेबा लेल घुमल मुदा एको डेग आगाँ नहि बढ़ि सकल। सामने सँ मैना चिचिआयलि—"सूट।" कामिनी आ रंजनाक पिस्तौल सँ एकहि संग फायर भेल। कामिनीक पिस्तौलक गोली काले खाँक ललाटक मध्य मे प्रवेश केलक आ रंजनाक गोली अमीर खाँक कानक नीचा छेद क' देलक। काले खाँ आ अमीर खाँ अर्राक' जमीन पर खसल आ ठामहि ओकर 'रूह' ओकर 'जिस्म' सँ अलग भ' गेलै।

पिस्तौलक डबल फायर अन्हरिया रातिक छाती चिरैत चारू दिशा कैँ थरथरा देलक। मुदा मामला ओतहि जा क' रुकल नहि। तखनहि मैनाक पिस्तौल सेहो गरजल। पिस्तौलक नाल अकाश मुँहे रहै। तँ फायर भेल गोली अकाश मे गेल आ तत्काल फूलझड़ी बनि रंग-बिरंगी ज्योति अकाश मे पसरैत बड़ी जोर सँ फटाक करैत मिझा गेल।

मैना द्वारा चलाओल गेल फूलझड़ी बला गोली प्रायः कोनो संकेत छलै। कारण किछुए सेकेण्डक अन्तर पर चंदवाक भठ्ठाक चारू चिमनी सँ एकक बाद एक भयंकर विस्फोटकक अबाज भेलै। धरती काँपि उठल। अन्हार राति भयाओन भ' गेल।

कानक झिल्ली कैँ तार-तार कर' बला ध्वनि सँ नसरत फजले अली खाँक पयरक नीचा सेहो धरती काँपि गेल। ओ आइ.एस.आइ.क बड़ पैघ ओहदाक कमाण्डर छल। मुदा एखन ओ निश्चिन्त भेल शराबक चुस्की ल' रहल छल। विस्फोटकक गर्जना सुनि ओकर मगज फरफरा उठलै। नसरत चिचिआयल—"अरे ओ सुअर के औलादो, भागो, भागो। दुश्मन का मुकाबला नहीं करना है। भागो, भागकर जान बचाओ।"

आइ.एस.आइ.क संगठन सिद्धान्त अपन रंगरूट के दुश्मन सँग सोझा-सोझी युद्ध करक लेल मना करैत अछि। ओकर ट्रेनिंगक मुख्य नसीहत रहैत छै जे नुका क' चलाकी सँ धोखा द' क' अल्लाक दुश्मन काफिर कैँ मार आ पड़ा क' अपना कैँ नुका ले। प्रायः सभटा आतंकवादी यैह जामा पहिरने अछि अही विधि सँ संसार भरिक निर्दोष प्राणी कैँ मारैत अछि आ आतंक पसारैत अछि। नसरत सेहो अही

संस्थाक औअल सदस्य छल। ओहो सामने-सामनी युद्ध सँ परहेज करैत छल। युद्ध-स्थली सँ कोना पड़ायल जाए तकर ओकरा नीक प्रशिक्षण भेटल छलै।

नसरत फजले अली खाँक पड़ेबा कालक दृश्य अनमोल छल। ओहि अनुपम दृश्य कँ जैह देखलक सैह ओकर प्रशंसा केलक। अबैत काल लाइट आ गार्डक बीच कोहबरक चालि सँ चलैत नसरत आयल छल। मुदा एखन ओकर भारी-भरकम शरीर एना हिलोरि ल' रहल छलै जेना बाघक डरे घोड़परास पड़ाइत होअय। आगाँ-आगाँ नसरत आ पाछाँ-पाछाँ ओकर सत्तरि-अस्सी गोट विश्वासी अनुचर सभटा अस्त्र-शस्त्र त्यागि प्राण बचेबाक लेल काठक पुल दिस फुल स्पीड मे दौड़ि रहल छल।

यद्यपि काठक पुल सँ कनिकबे हटल नदीक कछेर मे दस गोट बिहारी राइफल तनने अहि तरहें पोजीशन नेने छल जे जँ चाहैत त' नसरत तथा ओकर पार्टी के भुजि दैत। मुदा चमेलीरानीक निर्देश ओहि तरहक नहि छलनि। हुनक आदेश छलनि जे जान-मालक कम सँ कम नोकशान क' योजनाक पूर्ति कयल जाए।

नसरत फजले अली खाँ एवं ओकर पोसुआ जखन पड़ाक' दूर चलि गेल तखन ओहि ठामक वातावरण एकाएक शान्त आ स्थिर भ' गेल। मुदा ताही काल काले आ अमीरक लाश सँ थोड़बे पश्चिम दिस सँ अबाज आयल—"हम शालीग्राम छी। मैना, गोली नहि चलायब। हम अब्दुल रसीदक भेष मे शालीग्राम छी।"

जखन मैना चिचिया क' बाजल रहथि "सूट', तखनहि शालीग्राम जे अमीर खाँक पछोर धेने आगाँ बढ़ि रहल छलाह, भूमि पर लेटि गेल रहथि। शान्ति भेला पर ओ जमीन सँ उठैत मैना के चेतबैत बाजल रहथि। शालीग्राम सँ आओरो थोड़े पश्चिम सहदेव सेहो ओहने स्थिति मे रहथि। ओहो चिचिया क' मैना कँ सावधान केलनि।

सभ कियो एक ठाम जमा भेला। आपस मे मंत्रणा भेल। विस्फोटकक बज्रपात बला ध्वनि दूर-दूर तक पसरल हेतै, शीघ्रहि बोर्डर सिकुरिटी फोर्स एवं पावानगर गामक लोक एतय पहुँचि जायत, तँ समयक पूर्ण अभाव छल।

शालीग्राम, सहदेव एवं मैना गुलाब मिसिर द्वारा आनल तीनू रूपैया बला सूटकेश उठौलनि। बाँकी सभटा वस्तु कँ ओतए ओहिना छोड़ि देल गेलै। कामिनी एवं रंजना पिस्तौल तनने गार्ड बनलीह। सभ कियो नदीक कछेर मे अपन सहयोगी लग पहुँचलाह। राखल गेल सभटा सबूत मेटबैत सभ कियो वापस सुखदेव बिहारीक धर्मशाला अर्थात निर्दिष्ट स्थान लेल प्रस्थान केलनि।

रातुक लगभग तीन बजे सभ कियो धर्मशाला पहुँचि गेलाह। तकरबाद भोजन-साजन भेल। भीमा भोजन नहि केलक। ओ चारू कात घुमैत रहल—कहू

त'! ई गुलबा सार, हमरा तीनू कैँ यमलोक पहुँचेबाक सभटा बियोंत क' लेने छल। अच्छे सार! हमरो कहियो ने कहियो चांस भेटबे करतै?

धर्मशालाक एकटा कोठरी मे मैना, कामिनी एवं रंजना सूटकेश सँ रूपैया निकालि छोट-छोट बोरिया मे भरि रहल छलीह। दोसर कोठली मे सहदेव, शालीग्राम एवं भाटाजी छलाह। भाटाजी सैन्डविच खाइत-खाइत एक छोट मशीन सँ चमेलीरानी कैँ सभटा रिपोर्ट पठा रहल छलाह। मुदा भीमा एसगरे बरमदा पर चहल-कदमी क' रहल छल। तखने ओकरा उग्रदेव भेटलै। ओ धड़फराइत उग्रदेव सँ प्रश्न केलक– अएँ यौ उग्रदेव भाइ। अहाँ की पवन कुमार बटोही कैँ कतौ देखलियनि अछि? बटोहीक चाल-चूल नहि पाबि रहल छी।

उग्रदेव हाथ सँ इशारा करैत जवाब देलनि–हँ यौ भीम भाइ! बटोहीक अत्ता-पत्ता हमरा बुझल अछि। अहि धर्मशालाक अन्तिम कोठली दिस तकियौ। वैह कोठली माउल्डी कैँ विश्रामक लेल देल गेलनि अछि।

आब अहाँ कैँ त' बुझले होयत जे माउल्डी कैँ सुतै सँ पहिने पयर जँतेबाक हिस्सक छनि। अहाँ कैँ भीम भाइ इहो बुझले अछि जे बटोही जनानीक पयर जाँत' मे पटु छथि। एखन बटोही माउल्डीक पयर जाँतक लेल गेल छथि।

भीमा कैँ हँसी लगलै आ की क्रोध भेलै से के कहत? ओकर ठोर त' गल-मोच्छा सँ झाँपल रहै।

..4..

—“हम दुनू प्रेमी-प्रेमिका छी। बापक ठेंगाक डरे पड़ायल फिरि रहल छी। हमरा दुनू कें आसरा दिअ। अहाँ कें पुण्य हैत आ भ’ सकैत अछि जे जाहि संकल्प ल’ क’ अहाँ अहि विरान स्थान मे तप क’ रहल छी तकर पूर्ति सेहो भ’ जैत।”

आगन्तुक सुन्दर छवि-धारी युवक रहथि। हुनका संग एक गोट युवती सेहो रहथिन। दुनू टाइट पेन्ट-शर्ट पहिरने रहथि। युवतीक माथ आ छाती कारी कपड़ा सँ झाँपल रहनि। ओ दुनू कान मे कर्णफूल, नाक मे बुट्टा आ आँखि मे काजर कयने रहथि जाहि सँ हुनकर सुन्दरता बढ़ि गेल रहनि।

प्रेमी-प्रेमिका जनिका सँ अनुनय-विनय क’ रहल छला से संसार सँ विरक्त, दुखी आ तप्त धरती परहक ओ बून्द रहथि जे अपन अस्तित्वक रक्षार्थ स्वयं अपनहि कें आहुति बना होम क’ रहल छलाह। ओहि व्यक्तिक आयु तीस बर्खक समीप रहल हेतनि। हुनक दुनू आँखि गौतम बुद्धक आँखि जकाँ पैघ-पैघ मुदा तखन बन्द छलनि।

स्थान रहै हजारीबाग शहर सँ बहुत हटल एकटा विरान जगह। ओहि ठाम छल एकगोट पुरान आ ढहल-ढनमनायल महल। ओही महलक सामने बला बरामदा पर ओ तपस्वी बैसल छला। महलक आगाँ पगडन्डीनुमा रस्ता, रस्ताक ओहि पार पहाड़ीक ढलान पर करीब सय मीटर गहींर मे दूर-दूर तक पसरल पटेल ट्रान्सपोर्टक मुख्यालय।

प्रेमी-प्रेमिका बनल युवक-युवतीक करुण स्वर सुनि ओहि व्यक्तिक आँखिक पल मे स्पंदन भेलनि। कने काल तक शून्य एवं सपाट दृष्टिएँ ओ आयल युवक-युवती दिस एकाग्र भ’ तकैत रहला आ तखन बजला—अहि विकट आ एकांत स्थल मे अहाँ दुनू किएक अयलहुँ अछि? अहाँ दुनू अपन परिचय दिअ। ध्यान राखब जे अहि नश्वर संसार मे मिथ्या बाजब सभ सँ पैघ पाप थिक।

—हम दुनू असत्य बाजब तकर आशंका अहाँ कें किएक भेल?

—हमरो आगमन ओही ठाम सँ भेल अछि जतय सँ अहाँ दुनू एलहुँ अछि। बहुत दिनक बाद अहाँ दुनू कें अपन दिसका लोक कें देखिते ममता होइत अछि, अपन दिसुका भाखा सुनिते कान मे मधुर घंटी बजैत अछि। मुदा ताहि संगे मोन मे

आशंका सेहो होइत अछि। स्थान बदलला सँ स्वभाव मे फर्क थोड़बे होइत छैक। हमर प्राण एखन प्रेम मे अटकल अछि। इर्खा, घृणा आ कुचेष्टाबला प्रवृतिक संगत सँ हमर मनोरथ कहुँ सत्यानाश ने भ' जाए, तँ हमरा सतर्क होयब जरूरी अछि। अहीं कहू जे हमर संशय उचित आ की अनुचित?

बजनिहार व्यक्तिक आयु यद्यपि कमे छल मुदा हुनक गप करबाक अन्दाज मे प्रौढ़ता भरल छल। संध्या कालक डुबैत सूर्यक लालिमा ओहि व्यक्तिक मुखमंडल पर अजीबे वैराग्य पसारि देने छल। हुनका दिस ताक' मे प्रेमी-प्रेमिका कैँ असुविधा भ' रहल छलनि। तथापि आगुन्तक मे सँ प्रेमी जवाब देलनि—"सत्य कहै छी। हम दुनू प्रेमी-प्रेमिका छी। हमरा दुनूक हृदय मे प्रेम छोड़ि आन कोनो तत्त्वक बास नहि अछि। हम दुनू चकबा-चकै छी, चांद-चकोरी छी। एक दोसरा बिनु धरती पर जिबैत नहि रहि सकैत छी। मुदा हमर दुश्मन छथि आ ओ छथि हमर बाप। हमर सभहक प्रेम बिबाह हुनक क्रोधाग्नि कैँ एतेक ने प्रज्वलित क' देलक अछि जे ओ मोटका लाठी उठौने हमरा दुनूक कपार फोड़क लेल ताकि रहल छथि। हमर बाप कैँ दहेज प्राप्त नहि भेलनि आ तँ ओ हमरा दुनूक जीवनक काँट बनि चुकल छथि। हमरा दुनू कैँ राति भरि एतय रह' दिअ। प्रतिज्ञा करै छी जे काल्हि सूर्योदय सँ पहिनहि हम दुनू अहि स्थान कैँ त्यागि अन्यत्र चलि जायब। संसार बड़ी टा छै। हम दुनू नसीबक भोग कतहु आने ठाम जा क' भोगब, अहाँक तप मे कोनो तरहक विघ्न नहि होब' देब।"

प्रेमीक वाणी पूर्ण कारुणिक छल। मुदा एकांतवासी व्यक्तिक हृदय मे ओहि वाणीक कोनो टा असर नहि भेल। ओ मुस्की दैत प्रेमी-प्रेमिका सँ कहलनि—अहाँ दुनूक स्वागत अछि। उपर बरामदा मे आबि जाउ। अहि बरामदाक सटल जे कोठली छैक ओतय अपन-अपन मोटरी राखि दिऔ। कोठलीक आगाँ आङ्गन दिस फेर बरामदा देखबै। ओतय घैल मे जल छै। हाथ-मुँह धो लिअ आ स्थिर चित्ते एतय आबि जाउ। तखन गप-सप करब। एखन हमरा लग खेबा-पिबाक वस्तु नहि अछि। मुदा एक घंटाक भीतरे हमर भोजन आबि जायत। भोजन जे आओत तकरा तीन बखड़ा क' हम तीनू खा लेब। महल बड़ी टा छै। पुरान रहितो सुरक्षित छै। थोड़बे जगह मे हम रहैत छी। फर्स शंखमरमरक छै, तँ पवित्र छै। अहाँ दुनू लेल ओछौन-बिछौन सेहो अछि। हम आशा करैत छी जे राति बिताब' मे अतिथि कैँ कोनो तरहक कष्ट नहि होयतनि।

सभ तरहें निवृत भ' प्रेमी-प्रेमिका फेर सँ ओहि युवक लग मे आबि बैसि गेलाह। अहाँ के थिकहुँ आ की थिकहुँ सँ गप-सप प्रारंभ भेल। घमर्थनक बाद निर्णय भेल जे पहिने सँ रह' बला व्यक्ति पहिने अपन परिचय देताह। तकर बादे

प्रेमी-प्रेमिका अपन जीवनक मोटरी खोलताह। ताहि अनुसारे एकांतवासी युवक अपन जीवन-गाथा कहब आरम्भ केलनि।

युवकक नाम छल कालीचरण। दरभंगा शहर सँ थोड़ेक पश्चिम जाउ। मिथिलाक वैभव एवं ऐश्वर्य, दुनूक दर्शन भ' जायत। सालक पांच महिना बाढ़ि मे डुबल आ बाँकी समय मे काश पटेर सँ भरल कलपैत बिलखैत इलाका। ओही दरिद्रताक अनुपम नमूनाक बीच कतहु एकटा गाम छल चुरौठा। कालीचरण ओही चुरौठा गामक बासी छल।

ने पहाड़ आ ने झरना। ने कचनारक लाल-लाल फूल आ ने झुंडक-झुंड उड़ैत चिड़ै सँ सजल आकाश। ने ओस मे तीतल धरती आ ने कविक कल्पना। ई सभटा वैभव मिथिलाक नहि अछि। ई सभ किछु भेटत हरियाणा, पंजाब आ राजस्थान मे। ओतुका लोक वीर होइत छथि। प्रेम कर' मे त' ओ सभ बेजोड़ होइते छथि। लैला-मजनू, सीरी-फरहाद, हीर-राँझा सभटा ओही देशक खिस्सा अछि। अपन मिथिला त' जनकक समय सँ सहिष्णुताक प्रतीक रहल अछि। आचार-व्यवहारक बोझ तर दबल एतुका लोक सदिकाल सँ थकुचल रहल अछि। एतय सभटा काज अल्पे मे होइत रहल अछि। श्रम त' अल्प, उद्योग त' अल्प। गारि पढ़ब त' अल्प, प्रशंसा करब त' अल्प। तेँ प्रेम आ प्रेमक क्रिया करब सेहो अल्पे मे होइत रहल अछि। मुदा अपवाद कहियो-काल भइए जाइत छै। अही चुरौठा गाम मे कालीचरण एवं परमिलियाक प्रेम मिथिला मे अपवाद बनि अवतरित भेल। दुनू मे ततेक ने जबर्दस्त प्रेम भेलै जे अहि ठामक बान्हल परिपाटी केँ ओ तोड़ि देलक। दुनूक प्रेम केँ उद्दाम प्रेमक संज्ञा देल गेलैक।

कालीचरण छल महींसक चरबाह आ परमिलिया चरबै छल बकरी। कालीचरण बारह बर्खक आ परमिलिया मुस्किल सँ आठक। दुनूक मिलन स्थल भेल बाढ़िक हटला पर माल-जाल चरबाक स्थान, गामक पूवरिया च'र। भरि दिनक जलखै-पनपिआइक मोटरी बन्हने कालीचरण महींस नेने आ परमिलिया बकरी नेने बाध मे पहुँचि जाए। फेर एकहि संग खेल-कूद करय, गप-सप करय आ प्रेम सेहो करय। दुनू मे शारीरिक सम्बन्ध नहि रहै, कारण तकर वयसे ने भेल रहै आ ने तकर कोनो ज्ञाने। मुदा दुनू मे प्रेमक अंकुर तेना ने फुटि गेल रहै जे एको पल फराक-फराक रह' मे दुनू केँ असहनीय कष्ट होइत छलै। दुनूक प्रेम स्फटिक जकाँ पवित्र आ किसलय जकाँ कोमल रहैक। प्रेम-सुधा-रसपान करैत दुनू प्रेमक आँचर मे झपा गेल छल।

समय त' रोकनहुँ ने रुकैत अछि। चैत-बैशाख बितलै। जेठ मास सेहो अन्त पर एलै। आब अओतै आषाढ़। आषाढ़ अनतै बाढ़ि। सभ किछु डुबि जेतै।

चारि-पांच मास लेल कालीचरण अपन पिता आ महींसक संग बिछखोपड़ा नामक स्थान पर चलि जैत। बिछखोपड़ा उच्च जगह पर छै। महींस चरेबाक लेल ओतए पर्याप्त घास रहैत छै। परमिलियाक भाय सड़कक कात मे खोपड़ी बनाओत। परमिलिया चारि-पांच मास अपन बकरी संगे ओही खोपड़ी मे रहत। राहत बला अन्न भेटतै त' खैत नहि त' भुखले सूइत रहत। अहि तरहें कालीचरण आ परमिलिया चारि-पांच मास लेल फराक-फराक भ' जैत। मुदा आब जे प्रेमक प्रचण्ड बेग दुनूक मोन-प्राण मे बहि रहल छलै ओहि मे की दुनू अलग-अलग रहि सकैत छल? की दुनू अपन-अपन प्राणक रक्षा क' सकैत छल?

बाढ़ि ऐबा सँ पूर्व कालीचरण एवं परमिलिया एकहि ठाम बैसल अही बातक लेल घनघोर चिंता मे पड़ल एक-दोसराक आँखि मे टकटक ताकि रहल छल। पता नहि कोन तरहक बेग एलै, प्रेम अपन बिसात पर कोन तरहक कौड़ी भँजलक आ दुनूक नसीब कोन तरहक इशारा केलक जे कालीचरण अपन महींस केँ आ परमिलिया अपन बकरी केँ ओतहि छोड़ि बड़की सड़क पर पहुँचि गेल। बड़की सड़क समस्तीपुर दिस जाइत छलै। दुनू अनठेकानी ओही सड़क पर आगाँ जाइत रहल। चलैत-चलैत बहुत दूर तक गेल। प्रेमक डोरी मे बान्हल दुनू छौंड़ा-छौंड़ीक डेग उठिते रहलै। मुदा अन्त मे भुखल-पिआसल थाकल-चूड़ल दुनू सड़कक कात मे बैसि रहल।

प्रेमक निशा मे मत्त अजोह प्रेमी दिस विधाताक ध्यान गेलनि। विधाता कालीचरण एवं परमिलियाक मदति कोना होअय तकर इन्तजाम क' देलनि। माखन सिंह सहगल जे पटेल ट्रान्सपोर्टक ड्राइभर छला, दरभंगा मे माल पहुँचा क' वापस समस्तीपुर दिस जा रहल छलाह। ओ कालीचरण एवं परमिलिया केँ सड़कक कात मे बैसल देखलनि। एकरा विधाताक हुकूमे मानल जेतै जे सहगल ट्रक रोकि कुशल क्षेम पूछ' लेल दुनूक लग मे पहुँचला। एतहि प्रेम अपन करामति देखौलक। सहगल स्वयं सूफी समुदायक पहुँचल फकीर छलाह। हुनका हृदय मे करुणा एवं दयाक नदी त' सदिकाल बहिते रहैत छल। प्रेमक प्रतिमूर्त्ति कालीचरण एवं परमिलिया केँ देखिते सहगलक मोन द्रवित भ' गेलनि। ओ छौंड़ा-छौंड़ी दुनू केँ अपन ट्रक पर बैसा हजारीबाग ल' अनलनि। माखन सिंह सहगल अविवाहित छलाह। ट्रान्सपोर्ट कम्पनी दिस सँ हुनका डेरा भेटल रहनि। कालीचरण एवं परमिलिया केँ अपन संतान बना सहगल अपना डेरा मे राखि लेलनि।

जनिते छी जे माखन सिंह सहगल सूफी मार्गक पहुँचल फकीर रहथि। सूफी पद्धति यद्यपि इस्लाम धर्म सँ बाहर भेल छल आ भारत मे एकरा ख्वाजा मोहिउद्दीन चिस्ती अनलनि, मुदा भारतक माटि केँ छुबिते सूफी ने मुस्लमान रहल

आ ने हिन्दू। सूफीक अनुरूप भारत मे बहुतो मार्ग पहिनहि सँ प्रचलित छल। सहिष्णुताक प्रतीक भारत संसारक सभ तरहक दर्शनक स्वागत करैत रहल अछि आ अपना मे आत्मसात सेहो करैत रहल अछि। अहि देशक अनेको लोक सूफी मार्ग कँ अपनौलक जाहि मे माखन सिंह सहगल सेहो छलाह। भारत मे अदौ काल सँ प्रचलित उदासी मार्ग मे मिलि सूफी एकटा नव रूप, नव पद्धति तथा नव आदर्श ल' क' अवतरित भेल। ने स्वर्गक लोभ आ ने नरकक चिंता। प्रभु त' हमर प्रेमी छथि। हमरा त' हुनक दर्शन चाही। ई दर्शन सदिकाल चाही, सर्वत्र चाही आ चाहबे टा करी। मुदा से होयत कोना? सूफी मार्ग बतबैत अछि जे पहिने अहाँ इश्क मजाजी बनू। इश्क मजाजी खूदी अर्थात अहमूक त्याग करक लेल तत्परता आ मार्ग सुलभ करैत अछि। इश्क मजाजीक पूर्णाहुति भेल इश्क हकीकी। खुदी सँ मुक्त भेल आत्मा निर्लिप्त भ' मात्र अपन प्रेमी अर्थात ईश्वर मे लीन भ' जाइत अछि।

इश्क मजाजी सदृश बैष्णव पद्धति मे सेहो पहिने प्रेम तखन अभिसार, मिलन, नोंक-झोंक, उकटा-पैंची, रूसब-फूलब, मान-मनौअलि आ अन्त मे वियोग। फेर वियोग सँ उपजल उत्कट अभिलाषा, आत्माक अधीर होयब, समस्त चिंतन कँ प्रेमी मे आरोपित करब आ अन्त मे प्रेमी मे एकाकार भ' जायब। संसारक सभटा जीव राधा आ प्रेमी भेला कृष्ण। मार्ग भेल प्रेमक। तखन इश्क मजाजी इश्क हकीकी कोना नहि होइतै।

माखन सिंह इश्क मजाजी छलाह। हुनक विवाह ईश्वर सँ भ' चुकल छलनि। जहिना मीराक पति गिरिधर गोपाल तहिना सहगलक पति जगतक स्वामी महाप्रभु। ड्राइभरीक अतिरिक्त सहगल कँ जे समय भेटैत छलनि ओ सूफी संगीत मे मगन रहि बितबैत छला। जाबे तक सहगल इश्क मजाजी छला ताबे तक संसारक सुख, दुख, आनन्द, चिंता आदि सभटा प्रलोभन हुनकर समीपे रहैत छल। मुदा ओ अपन गुरु रबिया अल-बासरीक सदिखन गोहारि करैत छलाह जे ओ कृपा क' क' हुनका इश्क मजाजी सँ इश्क हकीकी मे पहुँचा देथि। गुरुक आशीर्वाद हुनका भेट' लागल छलनि। सहगल कँ संसार सँ उचाट होब' लागल छलनि।

प्रेमक जुगल जोड़ी कालीचरण आ परमिलियाक सेवा करक अवसर सहगल कँ भेटलनि। दू गोट संतान पाबि सहगलक हृदय-कूप सँ करुणाक धार बह' लगलनि। दुनू कँ आवास, भोजन, शिक्षा-दीक्षा भेटलै आ सभ सँ अधिक भेटलै सहगलक संगति। अनेक बर्ख बीति गेल। कालीचरण आब गमरु जवान बनि गेल छल आ ड्राइभरी विद्या मे निपुण सेहो भ' गेल छल। परमिलियाक त' बाते जुदा भ' क' प्रगट भ' गेल छलै। विद्यापतिक कविता कँ मोन पाड़ियौ "से फल अब परिणति

भेल सजनी गे, आँचर तर ने समाय।" परमिलियाक माथक खोपा पर जवानीक एहन ने मुकुट पड़लै जे ओकर सौन्दर्य विस्मयक कारण बनि गेल। प्रेमक जल सँ सिक्त ओकर रूप अदभुत निखार ल' क' आयल। जे देखलक से देखितहि रहि गेल। जवान कँ के कहय, बूढ़ो मनुक्ख कँ खोंखी होब' लगलै।

आब माखन सिंह सहगल जीवनक दायित्व सँ अपना कँ मुक्त कर' चाहैत छलाह। यद्यपि बहुत पहिनहि कालीचरण एवं परमिलिया प्राणनाथ एवं प्राणेश्वरी बनि चुकल छल तथापि सहगल दुनूक विधिवत विवाह करोनाइ आवश्यक बुझलनि। विवाहक आयोजन भेल। सूफी पद्धतिक अनुसारे कालीचरण एवं परमिलियाक विवाह सम्पन्न भेल। सहगल एवं हुनक संगहि आन-आन सूफी समुदायक लोक घघरी पहिरि राति भरि नाच केलनि। सहगल आब इश्क मजाजी सँ इश्क हकीकी मे पहुँच चुकल छलाह। ओ अपन पति-परमेश्वरक प्रेम मे सराबोर बताह भेल राति भरि गीत गौलनि आ नचैत रहलाह।

दोसर दिन भोजनक वृहत कार्यक्रम छल। लगपासक सैकड़ो सूफी समुदायक लोक, पटेल ट्रान्सपोर्टक सभटा ड्राइभर तथा कर्मचारी आ तकरा संगहि धनपाल पटेलक पौत्र महिपाल पटेल उर्फ बुलाकी लाल सेहो भोज मे आमंत्रित छल। बुलाकी लालक पिता तेजपाल पटेलक मृत्यु भ' चुकल छलै। तँ बुलाकीलाल धनपालक तथा ओकर सम्पतिक एकमात्र उत्तराधिकारी छल। धन-कुबेर धनपालक प्राण-प्रिय पौत्र बुलाकी अजीबे कायाक मनुक्ख छल। बानर पृथ्वी परहक सभ मनुक्खक परपितामह थिक से बुलाकी कँ देखने सत्य साबित होइत छल। रमानन्द सागर द्वारा निर्मित 'रामायण' मे किष्किन्धाक राजा सुग्रीवक छवि मोन पाड़ियौ। बस ओही सुग्रीव कँ कोट-पेन्ट पहिरा दियौ आ गरदनि मे ललका टाइ बान्हि दियौ त' बनि गेल बुलाकी लाल। बुलाकी धनपाल पटेलक आकूत धन सँ उपजल एकटा नमूना छल। सभ सँ अधिक आकर्षित कर' बला बात छलै जे बुलाकी सुग्रीवे जकाँ रसिक आ मौज-मस्ती कर' बला प्राणी छल।

भोज काल मे बुलाकी परमिलिया कँ देखलक आ कामान्ध भ' गेल। ओहुना जवानीक प्रस्फुटन परमिलियाक सौन्दर्य मे से ने लावण्य भरि देने छलै जाहि सँ बाँचब कोनो युवकक लेल कष्ट दायक छलै। बुलाकी त' सहजहि पटेल ट्रान्सपोर्टक मालिके छल आ ताहू पर सँ संसारक तमाम ओहन आदतिक स्वामी सेहो छल जे मनुक्ख कँ दुष्चरित्र बना देब' मे कोनो टा कसरि बाँकी नहि छोड़ैत छै। परमिलिया नववधुक परिधान मे परी बनल भोजकाल एमहर-ओमहर टहलि-बुलि रहल छल। ओही काल ओ बानरी काया मे बुलाकी कँ देखलक आ ठिठिया-ठिठिया क' हँस' लागल। वैह हँसब ओकर काल बनि गेलै।

प्रात भेने माखन सिंह सहगल इरान देशक परसिया प्रांत मे सूफी धर्मक महान कवि एवं आत्मा रुबिया-अल-बासरीक कब्रगाह मे बाँकी जीवन बितेबाक उद्‌देश्य सँ बिदा भ' गेला। सहगलक धर्म-पुत्र कालीचरण जे पटेल ट्रान्सपोर्टक ड्राइभरक पोस्ट पर नियुक्त भ' चुकल छल, सेहो चाइबासाक खनिज कैँ ट्रक पर लदबा दूर-दराज देशक लेल प्रस्थान केलक। क्वार्टर मे परमिलिया एसगरे रहि गेलि। बुलाकीक इच्छापूर्ति लेल धनपालक लठैत परमिलियाक लग मे पहुँचि गेल। ककरा मे एतेक सामर्थ रहै जे परमिलिया कैँ बचबितैक। परमिलिया बुलाकी महल मे पहुँचि गेलि। वापस अयला पर कालीचरण सभटा बात बुझलक। ओकर आँखिक आगाँ अन्हार पसरि गेलै।

अपन जीवन वृतान्त अन्त करैत कालीचरण कहलक–सामने देखियौ। हँ, हँ ओएह यौ पिअर ध्वजाबला भवन। ओतहि हमर जीवन-संगनी कैद अछि। पछिला एक बर्ख सँ हम अही बरामदा पर बैसल परमिलियाक प्रतीक्षा क' रहल छी। हमर एक-एक सांस मे परमिलियाक प्रेम बसल अछि। एकरा तपस्या नहि कहियौ। ई मात्र हमर दग्ध भेल हृदयक आर्तनाद छी। हमर एकमात्र सपना, एकमात्र कल्पना आ एकमात्र कामना एक क्षीण आशा मे अटकल अछि जे एक ने एक दिन हमरा परमिलिया सँ मिलन हेबेटा करत। मुदा अहाँ दुनू के थिकौं। अपन असली परिचय दिअ। संभव जे हम अहाँक मदति क' सकी अथवा अहाँक मदति सँ हमरा हेरायल मनोरथक पूर्ति भ' जाय।

कालीचरणक आँखिक पल नमरल रहै आ स्वर सँ पीड़ा झहरि रहल छलै। कोमल वाणी मे प्रेमी कहलनि–कालीचरण, सही मे हम अपन गलत परिचय अहाँ कैँ देलहुँ। क्षमा क' दिअ। असल मे हम दुनू पति-पत्नी छी। हमर नाम नकुल आ हिनकर नाम बेबी सुको रानी छनि। हम दुनू लोक शक्ति जागरण परिषदक कर्मठ सदस्य छी। हमरा सभहक अध्यक्षा एवं नेत्री छथि चमेलीरानी। किछुए दिन पहिने अहि बातक रहस्योद्‌घाटन भेल अछि जे ई ढहल महल चमेलीरानीक पिता राजा समरेन्द्र प्रताप नरायण सिंहक छियनि। एकटा षड्‌यंत्रक अधीन धनपाल पटेल जे राजा समरेन्द्रक खजान्ची छल, अहि ठामक सांसद सँ मिलि क' भयंकर कुकर्म केलक। धनपाल गुंडा राखि अहि महल मे अन्धाधुन फायरिंग करबौलक, जाहि मे राजा समरेन्द्र अपन सभ अमला संगे मारल गेल। राजा समरेन्द्रक पत्नी कौशल्या देवी अपन दासीक मदतिए चोर दरबज्जा बाटे पड़ाइ मे सफल भेलीह। कौशल्या देवी अपन अगिला जीवन गुमनाम रहि कनही मोदियानि बनि बितौलनि। हुनकहि एकमात्र संतान चमेलीरानी छथि। माओवादी चीफ कोठण्डा पाणि किछुए दिन पहिने अहि बातक जानकारी चमेलीरानी कैँ देलखिन अछि। सम्प्रति चमेलीरानीक

योजनाक अधीन हम दुनू धनपाल पटेलक सर्वनाश कर' लेल एतय आयल छी। अहूँक असीम दुखक कारण त' ओएह धनपालक पौत्र बुलाकिए अछि ने? तखन हमरा सभहक दुश्मन त' एके टा भेल ने? अहाँ परमिलिया कैं पुनः तखने प्राप्त करब जखन बुलाकी मरत। की हम सत्य कहैत छी ने?

कालीचरणक मुरझायल मुखाकृति मे एकाएक परिवर्तन भेलै। बर्ख भरि सँ प्रतारित ओकर संतप्त चेतना जागि उठलै। कालीचरण कहलक—"हँ यौ, अहाँ सभ किछु सत्ये कहैत छी। धनपाल एवं बुलाकी कैं नरकधाम पहुँचेनाइ हमर अहाँक एखुनका पुनीत काज भेल। यौ नकुल बाबू, सभ दिन हमर विश्वास कायम रहल जे एक ने एक दिन परमिलिया हमरा पुनः भेटबे टा करत। जाहि विश्वासक आश्रय ल' हम अपन प्राणक रक्षा क' सकलहुँ से सत्य भेल। ईश्वर कैं लाख-लाख प्रणाम। हम अहाँ सभहक संग जान-प्राण सँ सहयोग करब। हमरा राजा समरेन्द्रक सभटा खिस्सा सुनल-बुझल अछि। हँ, चमेलीरानी द' जानकारी एखने भेटलए।

आश्चर्य करैत नकुल पुछलनि—अहाँ कैं राजा समरेन्द्रक सभटा खिस्सा सुनल-बुझल अछि से कोना?

कालीचरण जवाब देलक—कौशल्या देवीक सभ सँ प्रिय दासीक नाम छलै महुआ। महल मे ओना त' बहुतो आदिवासी नोकर-चाकर रहै, मुदा सुकला छल सभ सँ अधिक काबिल आ बुधियार। एकरा संयोगे कहियौ जे महुआ आ सुकला मे नियर-डियरक सम्बन्ध भ' गेलै। कौशल्या देवी कैं अहि बातक आभास भ' गेलनि। ओ अपन प्राण-वल्लभ राजा समरेन्द्र सँ एकर चर्चा केलनि। राजा समरेन्द्र त' करुणावतारे छलाह। अपन सेवा मे नियुक्त सुकला आ रानीक सेवा मे नियुक्त महुआ कैं अहि प्रेम-कृत्य लेल राजा समरेन्द्र दुनू कैं पुरस्कार देलनि। राजाक अधीन जंगल मे एकटा दस बीघाक महुआ गाछक जंगल रहै। महुआक फूल सँ नीक देशी शराब बनैत अछि। मुदा ओहि महुआक जंगल मे एक तरहक विशेष औषधि गुण रहै जाहि सँ तैयार भेल शराब मादकता एवं सुगंधि मे बेजोड़ होइत छलै। सम्पूर्ण झारखण्ड मे अहि महुआक शराब प्रसिद्ध छल आ अहि सँ बड़ नीक आमदनी होइत छलै। राजा समरेन्द्र महुआ एवं सुकलाक विवाहक मंजूरी दैत ओहि दस बीघा मे पसरल महुआक जंगल सुकला कैं दान मे द' दानपत्र लिखि देलनि। महुआ आ सुकलाक विवाहक दिन सेहो तय भ' गेल रहै। मुदा विवाह नहि भ' सकलै। कारण ताही काल धनपाल पटेल नर-संहार करौलक। राजा समरेन्द्र मारल गेला। महुआ कौशल्या देवीक संग अन्तर्धान भ' गेलि। सुकला यद्यपि अत्यधिक वृद्ध भ' गेल मुदा एखनो जीवते अछि। जहिया सँ हम वियोगक दिन काटक लेल अहि स्थान मे एलहुँ अछि तहिया सँ ओएह सुकला हमरा लेल दुनू साँझक भोजन

लबैत अछि। सुकला घंटो हमरा संग गप-सप करैत अछि। ओकरा अहि ठामक जमीनक नीचा आ जमीनक उपरकाक सभटा खोह, सुरंग तथा महलक गुप्त रस्ताक जानकारी छैक। हमरा जेना सुकला सँ सुनल अछि जे अहि महल सँ जमीनक भीतरे-भीतर एखुनका धनपाल पटेलक निवास तक जेबाक रस्ता छैक। मुदा अहि रस्ताक सही-सही जानकारी मात्र सुकले टा कैँ छैक। यौ नकुल बाबू, अहाँक योजना जै मे आब हमहूँ छी ताहि मे सुकला बड़ पैघ मदतगार होयत से हमर सोचब अछि।

रातिक आरम्भे मे सुकला कालीचरणक भोजन ल' क आयल। तकरा संगे आयल महुआक मादक सुगंध। सुकला वृद्ध छल तँ की ओकरा देह मे फुर्ती भरल छलै। ओ जखन बाजब शुरू केलक त' ओकर दाँत चमकि उठलै। नकुल एवं बेबी सुको रानी कैँ देखि ओ कालीचरण दिस जिज्ञासा-भाव सँ तकलक आ आदिवासी भाषा मे किछु पुछलक। ओही भाषा मे कालीचरण दुनूक परिचय देलक आ प्रायः विस्तार सँ ओ बात सुकला कैँ बुझौलक जाहि हेतु नवागन्तुक आयल छलाह। तत्काल सुकलाक चेहरा पर खुशीक भाव अंकित भ' गेलै। प्रसन्न मुद्रा मे ओ शुद्ध हिन्दी मे बाजल—“पहले दोनो अतिथि के लिए तो भोजन चाहिए न? मैं वापस जा रहा हूँ और घंटे भर के अन्दर ही दोनो के लिए भोजन लेकर आ रहा हूँ।”

नकुल सुकला कैँ रोकलनि आ कालीचरण सँ कहलनि—“भोजन अनबाक आवश्यकता नहि, कारण पर्याप्त भोजन ल' क' हम दुनू आयल छी। हमरा सभहक संग सभ तरहक तैयारी सेहो अछि। समय कैँ अकारथ नहि क' उचित होयत जे जाहि काजक लेल एलहुँ अछि ताहि मे लागि जाइ। सभ सँ पहिने ओहि गुप्त रस्ताक जानकारी चाही जे धनपालक एखुनका महल तक गेल अछि। तँ सुकला कैँ अहाँ तैयार करू आ स्वयं अपनहुँ तैयार भ' जाउ।”

सुकला तैयार भेल। सभहक स्वभाव मे गति एवं चंचलता आबि गेल। खेबा-पिबा दिस ककरो ध्यान नहि रहलै। नकुल अपन झोड़ा सँ दू गोट पावरफुल टर्च निकाललनि। टर्च लेने आगाँ-आगाँ सुकला तकरबाद बेबी सुकोरानी आ कालीचरण। सभहक पाछाँ नकुल। नकुलक हाथ मे टर्चक अतिरिक्त ‘पाइन्ट टू-टू’क छोट सन पिस्तौल।

राजा समरेन्द्रक शयन कक्ष, बैठकखाना, दरबार, रशोइ घर, अतिथि घर खजाना घर इत्यादि सभटा जगहक ओइ पार लम्बा गलियारा। गलियारा समाप्त भेला पर भेटल प्रकृतिक अनुपम छटा। अहि पहाड़ी स्थानक सभटा जल विभिन्न तरहक रसायन युक्त रहलाक कारणे मनुक्खक उपयोग मे नहि अबैत छल। मुदा एतय त' पहाड़ीक दोग सँ निर्मल आ परिष्कृत जलक झरना बहि रहल छल। पता

नहि जलक स्रोत कत’ छलै मुदा ओ अनवरत झहरि-झहरि क’ खसि रहल छलै। जहिना झरनाक उद्‌गम अनजान छल तहिना सभटा जल एकटा खोह मे जा क’ विलीन भ’ रहल छल। सुकला कहलक जे अही झरनाक जल सँ महलक सभटा जलापूर्ति होइत छलै।

पाथरक डोलैत छोट-छोट टुकड़ा पर पयर रखैत सभ कियो झहरैत झरनाक स्रोतक पाछाँ पहुँचल। ओतय चौड़गर आ हरियर पात सँ आच्छादित नमहर-नमहर लत्ती सँ स्थान झाँपल रहै। एक खास जगहक लत्ती कैँ टारि क’ सुकला कात केलक। ओतय पहाड़ीक दड़ारि मे खोह देखाइ पड़लै। खोह प्रवेश सँ पहिने सुकला विशेष भाव सँ बेबी सुको रानी दिस तकलक। सुकलाक मोनक भाव कैँ परखि बेबी सुको रानी कहलनि—“आप थोड़ा भी चिन्ता नहीं करें सुकला जी। चमेलीरानी के फौज मे नारी कोमलांगी नहीं, भूतनी होती है। फिर भूतनी को डर कैसा? आप आगे-आगे चलते रहिए। पीछे-पीछे मैं भी निर्भय होकर चलती रहूँगी।”

बज्र सनक पाथर मे बनल सुरंग मे सभ कियो टर्चक इजोत मे प्रवेश केलक। सुरंग ठाम-ठाम पर फैल आ कतहु-कतहु अत्यन्त संकीर्ण छल। सावधान भेल सभ कियो आगाँ बढ़ैत रहल। घंटा भरिक परिश्रमक बाद सुरंगक अन्त भेल। ओ स्थान छल पहाड़ी पर बनल ढलान। ढलान सीधा नीचा मुँहे। तकरबाद दूर-दूर तक पसरल सघन जंगल। पहर भरि राति बीति चुकल हेतै। भयावह जंगल सँ विभिन्न तरहक जानवरक कर्कश ध्वनि ओहि ठामक कठोर पाथर सँ टकड़ा-टकड़ा क’ स्थान कैँ भयंकर बना रहल छलै। पहाड़ी ढलार पर नीचा दिस जेबाक टेढ़-मेढ़ रस्ता अत्यन्त खतरनाक छल। सुकला कहलक—“पहले-पहल इस जगह पर पहुँचकर मैंने सोचा था कि रानी और महुआ इसी रास्ते से यहाँ आकर नीचे ढलान होते हुए जंगल के रास्ते भागी होगी। लेकिन यह संभव कैसे हुआ होगा? यहाँ का जंगल तो खूंखार जानवरो से भरा हुआ है। क्या दो महिला उन खूंखार दरिन्दों से बचकर निकल पायी होगी? इसी संशय में मेरा अनेक वर्ष बीत गया। बहुत वर्षो के बाद मुझे मेरी भूल का पता चला। पहाड़ी के इसी खोह मे मुझे एक दिन अनायास दूसरा सुरंग मिल गया। वही सुरंग धनपाल के महल तक जाता है। आइए, हम लोग उस सुरंग में चलें।”

जाहि सुरंग बाटे सभ कियो पहाड़ीक ढलान तक पहुँचल छलाह ओही सुरंग मे पुनः सुकलाक अगुआइ मे सभ प्रवेश केलनि। थोड़बे आगाँ चौड़गर आ हरियर पात सँ झाँपल, लम्बा-लम्बा लत्ती सँ घेरल एकटा दोसर जगह छलै। लत्ती कैँ टारि क’ सुकला टर्चक प्रकाश मे दोसर दड़ारिक मुँह कैँ तकलक। नकुलक टर्चक फोक्सिंग ओहि दड़ारिक अन्हार फांक मे पड़लै। ओहि सुरंग मे गहींर तक रस्ता

नजरि एलै। आन-आन सुरंग जकाँ एकर रस्ता संकीर्ण नहि छलै। दू व्यक्ति एक संग आराम सँ चलि सकैत छल तेहन चौरगर रस्ता। सभ कियो सुरंगक अन्त मे पहुँचल। ओतए स्वच्छ जलक पोखरि छलै। ई पोखरि पहाड़ीक उपरो सँ देख' मे अबैत छलै। पोखरिक कात मे पहुँचैत देरी सुकला फुसफुसायल—"अब टर्च नहीं जलेगा। हम लोग आवाज भी नहीं करेंगे। पोखरी के उस पार धनपाल का ट्रान्सपोर्ट कम्पनी का मुख्यालय है। यहाँ की रोशनी और आवाज सुनकर हर वक्त तैनात सुरक्षा गार्ड चौकन्ना हो सकता है।"

ताबत रातिक बहुत अन्हार नहि रहि गेल रहै। चन्द्रमाक इजोत आ पोखरीक ओहि पारक भैपर लैम्पक रोशनी सँ चारूकात जगमग-जगमग छलै। मुदा जतय सुकला संग सभ ठार छल ओ स्थान पहाड़ीक अढ़ मे अन्हारे छलै। सुकला फुसफुसाइत फेर बाजल—"जब पहली दफा मैं यहाँ आया था तो दिन का टाइम था। मैं उस नाव को खोजने लगा जिस पर कभी राजा-रानी जल-विहार किया करते थे। मैंने उस नाव को देखा। पोखरे के उस पार नाव पानी मे उल्टा आधा डूबा हुआ था। तब इस जगह की मिट्टी को मैं अच्छी तरह निहारने लगा। यहाँ मुझे सोने का कंगन मिला। कंगन को मैं पहचान गया। इस कंगन को मैंने रानी के कलाइ पर देखा था। इससे मैंने यह अर्थ निकाला कि यहाँ पहुँचकर रानी अपना महारानी वाला पोशाक बदली होगी। वस्त्र बदलते समय भूल से कंगन नीचे गिर गया होगा। फिर साधारण पोशाक मे रानी और महुआ नाव से पोखर की दूसरी छोड़ पर गई होगी। उसके बाद...उसके बाद क्या हुआ होगा इसका मुझे पता नहीं है। सोने का कंगन अभी भी मेरे पास में है।"

अपन वस्त्र मे नुकायल सोनाक कंगन कैँ सुकला बाहर केलक आ कहलक—"इस कंगन को हमेशा मैं साथ में रखता हूँ। महुआ की याद से एक मिनट के लिए भी मैं अलग होना नहीं चाहता हूँ। मैं तो शायद महुआ की याद के सहारे ही आज तक जिन्दा हूँ ना।"

महुआक बिछुड़न सुकलाक पीड़ा छल। ओकर डबडबायल आँखि आ भहरल स्वर सुनि सभहक मोन दुःख सँ भरि गेलै। रानीक हाथक कंगन कैँ बेबी सुको रानी देखलनि। एक क्षण लेल सही मे ओहो भावुक भ' गेलीह। मुदा कर्तव्य-बोध सँ सदिकाल जागृत रह' बला नकुल अपन चेतना सँ विलग नहि भेलाह। ओ फुसफुसाइत सुकला सँ प्रश्न केलनि—राजा समरेन्द्रक मनोरंजन महल जे एखन धनपालक आवास अछि, से केमहर अछि? ताहि ठाम पहुँचबाक रास्ता कोमहर छैक?

सुकला किछु बाजल नहि, मुदा सभ कैँ संग ल' चारि-पांच लग्गा दायाँ कात

गेल। ओतय उपर दिस जैबाक सीढ़ी छलै। सभ सीढ़ी उपर पहुँचल। सीढ़ी उपर मे एक मजबूत सीमेन्टक देवाल लग जा क' समाप्त भ' गेल रहै। सुकला जानकारी देलक–"इस देवाल के उस पार राजा का मनोरंजन महल है। यह सीमेन्ट का देवाल धनपाल का बनबाया हुआ है। उसने इसी देवाल से घेरबा कर महल को किला के तरह सुरक्षित बना दिया है और उसी में रहता है। हाँ, अगर कोइ इस सीमेन्ट के देवाल को तोड़ दे तो सीधे धनपाल के आवास में पहुँच जायेगा।"

नकुल सीमेन्टक देवाल कैँ देखलनि आ बेबी सुको रानी दिस विशेष अन्दाज मे तकलनि। मौन भाषा मे दुनूक बीच संवादक आदान-प्रदान भेल। जाहि अभीष्टे नकुल एवं बेबी सुको रानी कालीचरण लग आयल रहथि से पूर्ण भेल।

यद्यपि प्रांतक चुनाव अत्यन्त समीप आबि चुकल छलै तथापि चमेलीरानी धनपाल कैँ बिसरि नहि रहल छलीह। हुनकर पिता राजा समरेन्द्रक निर्मम हत्या आ माता कौशल्या देवीक कनही मोदियानि बनि जीवनक शेष दिन बितौनाइ, चमेलीरानीक एहन व्यथा छल जकरा एको घड़ी लेल बिसरल नइं जा सकैत छल। नसरत फजले अली खाँ बला अभियान एखन समाप्तो नहि भेल छल। ताही बीच चमेलीरानी पन्ना भाइ कैँ धनपाल सम्बन्धी पूरा बात कहि सुनौलनि। कोठण्डा पाणि सँ प्राप्त खबरि कैँ जखन पन्ना भाइ सुनलनि त' ओ सन्न रहि गेलाह। सदिखन मृत्यु सँ निकटक द्वन्द युद्ध कर' बला पन्ना भाइ किछु काल तक मुँह बौने चुप रहि गेलाह। हुनक मुखाकृति पर क्रोध ज्वाला बनि धधकि उठल। ओ चमेलीरानी सँ कहलनि– "बिटिया, घबड़ाइक जरूरत नहि खे। सही मे धनपाल बहुत बड़ा पाजी बा। ओकर जैसन अपराध बा तइसने ओकरा सजा मिली। हजारीबाग हमर पुरना कार्यक्षेत्र रहल बानी। जब तलक नसरत फजले अली खाँ का अभियान पूरा होइ तब तलक हम हजारीबाग का एक चक्कर लगा के आब' तानी।"

करीब एक सप्ताहक बाद नसरत फजले अली खाँ बला अभियान समाप्त भेल। एमहर पन्ना भाइ सेहो किछुए दिनक भीतर घनपालक सविस्तार खबरि ल' हजारीबाग सँ वापस आबि गेलाह। वैद्यनाथ धाम स्थित कैलाश कुंज मे चमेली रानीक अध्यक्षता मे बैसार भेल। चमेलीरानीक फौजक सभटा महारथी जमा भेलाह। पन्ना भाइ कीर्तमुखक पांचो पुत्र, बज्रनाथ, शालीग्राम, उग्रदेव, पवन कुमार बटोही आ तकरा संगहि एखनो के.जी.बी. मे कार्यरत बी.एन. भट्टाचार्य उर्फ भाटाजी। तकरा संगे बेबी सुको रानी, मैना, आ नव प्रशिक्षित कामिनी एवं रंजना सेहो बैसार मे भाग लेलनि। सभटा विषयक बारीकी सँ अध्ययन कयल गेल। अहि अभियानक बागडोर पन्ना भाइ कैँ देल गेलनि। बैसार मे पन्ना भाइ धनपाल सम्बन्धी सभटा जानकारी प्रस्तुत केलनि जे अहि प्रकारक छल।

हजारीबाग शहर सँ लगभग चारि कोस हटल राजा समरेन्द्र प्रताप नारायण सिंहक महल छल। पहाड़, पहाड़ी तथा जंगल मे नुकायल महलक आगाँ रस्ता। रस्ताक ओहि पार करीब सय मीटर गहींर मे छोट सन दोसर महल। राजा समरेन्द्रक ई मनोरंजन महल छल। अही महलक एक कात निर्मल जल सँ भरल पोखरि। पोखरीक दोसर कात पसरल पटेल ट्रान्सपोर्टक ऑफिस, करीब चारि सय ट्रक कँ रखबाक लेल हैंगर, मरम्मतिक कारखाना, कर्मचारी लेल पतियानी मे छोट-पैघ क्वार्टर आ तकर अन्त मे धनपालक महलक बिजली आपूर्ति लेल ओकर नीजक डीजील जेनेरेटर। ई स्थान लगभग आधा किलोमीटर मे पसरल छल। पूर्व मे अही जगह पर राजा समरेन्द्रक कर्मचारी सभहक आवास छलै। पोखरिक स्वच्छ जल सँ सभ ठाम जलापूर्ति होइत छलै।

धनपाल गुजरात प्रांतक काइयाँ बनियाँ छल। षड्यंत्रक बले ओ मृत राजा समरेन्द्रक खजाना एवं अचल सम्पतिक स्वामी बनि गेल छल। मुदा राजा समरेन्द्रक मुख्य महल जतए ओ शोणितक धार बहौने छल तकरा ओ ओहिना विरान दशा मे छोड़ि देलक। पता नहि किएक ओहि दुष्ट कँ राजा समरेन्द्रक महल दिस तकबा मे भय होइत छलै। अपन आवास आओर आन-आन प्रयोजनक लेल ओ राजा समरेन्द्रक मनोरंजन महल कँ चुनलक। कारीगर राखि ओहि महल मे बहुतो फेर बदल क' अपन रुचि एवं जरूरतक हिसाबे महल कँ किलानुमा बनबा क' धनपाल अपन स्थायी निवास बनौलक।

पन्ना भाइ जतबा जानकारी अनलनि ताहि अनुसारे धनपालक निवास मे प्रवेश करब अत्यन्त कठिन छल। सीमेन्टक उँच्च देवाल सँ घेरल आ तकर बीच मे लोहाक फाटक। फाटकक भीतर दिस सँ आठ गोट पहरेदारक दिवा राति पहरा। फेर एकटा चहरदेवाली आ ओहू मे मजबूत फाटक। ओहि ठाम ब्लैक कैट सदृश चारि गोट धनपालक अंग रक्षक। तखन कनेटा गलियारा। गालियाराक अन्त मे एकटा हॉल। हॉलक फर्स कालीन सँ झाँपल। चारूकातक देवाल विभिन्न साइजक लोहाक आलमारी सँ भरल। हॉल आन सभ तरहें सजल आ ओकर बीच मे गद्‌दीदार बैसकी। अही ठाम धनपाल बैसैत छल। कने हटल धनपालक खास सहायक लाला कस्तूरी मल्लक कुर्सी छलै।

लाला कस्तूरी मल्ल सेहो गुजरात प्रांतक छल। छींक सँ पहिने जेना नाक, आँखि, भों आ ठोर सिकुरि जाइत छै तहिना अजीब सन सिकुरल चेहरा लाला कस्तूरी मल्लक छलै। ओ धनपालक एकमात्र सहायक, सचिव एवं परामर्श देनिहार छल। ओकर अगिला-पछिला जीवन द' ककरहु किछु नहि बुझल रहै। धनपालक ऑफिस मे लाला कस्तूरी मल्लक अतिरिक्त ओकर पौत्र बुलाकी लेल सेहो अलग

सँ कुर्सी-टेबुल रहै जतय कखनहु काल क’ ओ बैसैत छल।

ओही सजल हॉल सँ आगाँ धनपाल पटेल एवं बुलाकीक अलग-अलग शयन कक्ष छल जाहि मे प्रवेश करबाक ककरहु आज्ञा नहि छलै, लाला कस्तूरी मल्ल कैँ सेहो नहि। महलक ओही अज्ञात भाग मे धनपालक खजाना सेहो छलै। सुनल छल जे धनपाल एवं बुलाकीक आश्रमक सभ तरहक काज कर’ लेल किछु महिला महलक भीतरे मे छलीह जे प्रायः गुजराते दिस सँ आयल छलीह। ओ महिला लोकनि कखनहुँ बाहर दिस नइं जाइत छलीह। तैँ महलक ई भाग पूर्ण अन्धकार मे छल। मुदा एकटा जरूरी बात कहब त’ छुटिए गेल अछि। ओही बुलाकीक शयन कक्ष मे कालीचरणक प्राण-प्रिया परमिलिया बुलाकीक सेवा हेतु कैद छलि। धनपालक भीतरका कक्ष मे पहुँचब यद्यपि एकटा दुरूह काज छलै मुदा से चमेलीरानीक लेल नहि। चमेली रानीक नाव सदिखन ओही स्थान मे पहुँचैत छल जतय प्रचण्ड तूफान उठि चुकल होइक अथवा उठै बला होइ। चुनल-चुनल दानवक सत्यानाश कर’ लेल ओ कइएक टा योजना बना चुकल छलीह आ ओहि अभियानक सफलतापूर्वक निर्वहन सेहो क’ चुकल छलीह। नांगटनाथ, अहमदुल्ला खाँ संगहि गुलाब मिसिर पर हुनक अचूक प्रहार भ’ चुकल छल। सम्प्रति नसरत फजले अली खाँ कैँ खिहारि आब ओ धनपालक कच्छी टोपी उतारक लेल प्रयासरत छलीह। ताही योजनाक अधीन नकुल एवं बेबी सुको रानीक टीम कालीचरण एवं सुकलाक संग धनपालक महलक पुबरिया देवाल लग तक पहुँच चुकल छल। धनपालक महल मे सामना-सामनी प्रवेश करक लेल कीर्तमुखक प्रथम पुत्र युधिष्ठर फाँड़ बान्हि नेने रहथि। ओ करीब दस दिन पहिने पन्ना भाइक संग हजारीबाग पहुँच चुकल छलाह।

पन्ना भाइ असाधरण लोक रहथि आ मानवीय संवेदना सँ परिपूर्ण हुनक सोच स्पष्ट एवं यथार्थवादी रहनि। धनपालक कारोबार मे हजारो मनुक्ख कार्यरत छल। ओकर मदतगार मे विधायक, मंत्री एवं आला अफसरक पैघ पलटन छलै। तकर कारण छल जे पटेल ट्रान्सपोर्ट कैँ मुखौटा बना धनपाल ओकर पाछाँ बहुतो तरहक नजायज काज करैत छल जाहि सँ ओ धन त’ कमाइते छल, भ्रष्ट लोक कैँ उपकृत सेहो करैत छल। ओकर नजायज काज मे सँ एकटाक विवरण सुनि लिअ।

बहुत तरहक चिंता संसार मे पसरल अछि। एकटा चिंता अछि जे उपार्जित धन कैँ सुरक्षित कोना राखल जाय। अहि चिंता मे थोड़-बहुतो प्राणी छथि। मुदा जँ उपार्जित धन बेइमानीक होअय आ ओ धन बहुत अधिक होअय त’ ओकरा निरापद करब चिंताक संगहि कष्टक बात भ’ जाइत अछि। बहुत तरहक ‘फिनानसियल एक्सपर्ट’ अहि तरहक कष्ट निवारण हेतु ऑफिस खोलि क’ बैसल

छथि। इनकम टैक्स बचाब' लेल आ की काला-धन सुरक्षित राख' लेल विभिन्न तरहक तरीका ओ फीस ल' क' बतबैत छथि। शेयर खरीद, बैंक मे एफ.डी. करब, रियल स्टेट मे इनभेस्ट करब, दूरक शहर मे बेनामी फ्लेट कीनब आ विदेशक बैंक मे धन जमा करब सभटा त' जोगारे भेल ने। मुदा ई सभ त' पढ़ल-लिखल लोकक लेल अछि। एखन त' भारतक प्रजातंत्रक घंटी बजौनिहार तथा राजनीतिक कौड़ी भजनिहार ओहि तरहक मनुक्खक जमात अछि जे जन्मजात मूर्ख होइत अछि। अहि तरहक मूर्ख-मंडली जे करोड़ मे टाका कमाइत छथि पढ़ल-लिखल लोक जकाँ टाका राखक लेल तैयार भऐ ने सकैत छथि। धनपाल जे गुजरातक बनियाँक दिमाग रखैत छल, एहन मूर्ख राजनीतिज्ञक टाका कैँ सुरक्षित रखबा मे महारथी बनि गेल। कतबो ने कैश होअय धनपालक लग जाउ आ ओकरा सँ एक किलो, पांच सय ग्राम, दू सय ग्राम, सय ग्रामक सोनाक छड़ मे बदलि लिअ। अहि तरहे बोराक बोरा कागजी नोट सोनाक चलंत भाव मे सोनाक छड़ मे बदलि गेल। राख' मे सुभीता, देख' मे सुभीता आ बेर पर भजब'मे सुभीता। चुनावक टाइम आबि गेल अथवा आन तरहक जरूरी काज भ' गेल त' सोझे धनपालक ऑफिस मे पहुँच जाउ आ सोनाक छड़ कैँ कैश करा लिअ। कोनो हुज्जति नहि। मात्र पांच प्रतिशत बट्टा ल' क' धनपाल सेवा करक लेल सदिखन तैयार।

परोछ रूपे धनपालक कारोबार कइएक प्रांत मे पसरि गेल छलै। अहि हेरा-फेरी मे ओकरा करोड़ोक आमदनी होइत छलै। तकरा संगहि राजनीति एवं आर्थिक रूपे सम्पन्न बाहुबलीक एक विशाल वर्ग धनपालक जेबी मे रहैत छल। अहि तरहें सुरक्षित धनपाल पर सीधा-सीधी आक्रमण करब खतरनाक बात भेल ने, तँ पन्ना भाइ धनपाल कैँ मात करबाक आन तरहक मार्ग तकलनि। अहि काज लेल पन्ना भाइ एवं युधिष्ठिरक बीच एकांत मे बड़ी काल तक विचार-विमर्श भेल छल।

हजारीबाग शहरक सभ सँ प्रसिद्ध शिमला रेस्टोरेन्ट आ तकर मालिक छल सरदार इकबाल सिंह। मुरेठा आ दाढ़ी मे झाँपल सभटा सरदारक मुखरा एकहि तरहक लागत। नहि यौ, ध्यान सँ देखबै त' सभहक चेहरा मे फर्क नजरि आबि जायत। इकबालक दाढ़ी मे ठाम-ठाम सफेदी आबि गेल रहै। ओ उँच्च बनाओल कुर्सी पर बैसल छल। ओकर माथक उपर देवाल पर गुरु नानकक फोटो टाँगल छल। टेबुल-कुर्सीक खरखराहटि, गिलास-प्लेटक खनखनाहटि तथा विभिन्न खेबाक वस्तुक मिश्रित गंध सँ रेस्टोरेन्ट भरल छल। फिल्मी गीत 'इश्क गली बीच आ आ' बाजि रहल छल आ ओही गीतक धुन पर इकबाल मूड़ी डोला रहल छल। ठीक ओकर सामने जा क' युधिष्ठिर ठार भ' गेलाह। थोड़ेक कैंचा कैँ गनि क' इकबाल कन्तोर मे रखलक आ मूड़ी सोझ क' युधिष्ठिर दिस तकलक आ बाजल–"मने

सरदार इकबाल सिंह हूँ जी। बोल तने की गल है? खाने के वास्ते आया है तो खाली कुर्सी पर बैठ जा। आज शीश-कबाब गजब का बना है। जा, जाके भोजन कर। मने का मगज़ मत चाट।"

युधिष्ठिर स्थिर भेल ठारे रहलाह। थोड़े ठहरि आ इकबालक मोंछ मध्य देखैत युधिष्ठिर बजलाह—"सुखबिन्दर के इश्क मे सभ कुछ लुटा दिया। न घर का रहा और न घाट का। तब वाहे गुरु का किरपा हुआ जी। मन चंगा हुआ जी और शिमला रेस्टोरेन्ट का मालिक बन गया जी।"

—"अएँ, अएँ, तने क्या बोल गीया जी। सुखबिन्दर का नाम बोलकर तने मेरे दिल का जख्म पर छौंक मार दीया जी। अच्छा बादशाहो बता, तने सुखबिन्दर को कैसे जानता है जी। ओय, ओय, कहीं तूँ सी पन्ना भाइ का आदमी तो नही है जी? पन्ना भाइ! ओस्तादों का ओस्ताद और मने बाप का बाप। वाहे गुरु का किरपा। तेन यहाँ जो कुछ भी देखता है न जी, सभ कुछ पन्ना भाइ का परसाद है जी। अच्छा बेटा, जल्दी से मुँह का दरबाजा खोल। तने को पन्ना भाइ ने भेजा है क्या?"

युधिष्ठिर इकबालक प्रश्नक जवाब मे स्वीकृतिक मूड़ी डोलौलनि। इकबाल हड़बड़ाइत कुर्सी सँ नीचा उतरल आ गला फारि क' चिचिआयल—"अरे लाखन, ओ लाखन सिंह। पुत्तर! तू किथ्थे है? इधर आ। देख, पन्ना भाइ का शागिर्द आया है जी, मेरा तकदीर बनाने बाला का गुमास्ता आया है जी। लाखन बेटा, तूँ यहाँ का काम सम्हाल। मने इसके साथ गुफ्तगू करनी है जी।"

इकबाल युधिष्ठिर कँ ओही शिमला रेस्टोरेन्टक पाछाँ दिस बनल एकटा कोठली मे ल' गेल। कोठली मे राखल सोफा पर बैसैत ओ युधिष्ठिर सँ कहलक—"आओ जी बादशाह, तू भी यहाँ बैठ जा। बता तने की दरकार वास्ते आया है जी। तने पन्ना भाइका पठ्ठा है तो मेरा बाप है जी। पन्ना भाइ मने का सभ कुछ है। मैं सुखबिन्दर के इश्क मे बावला बन गीया था जी। हाय, सुखबिन्दर बड़ी खूबसूरत गुड़ी थी, लेकिन दूसरा सरदार ने साली को लपक लिया जी। सुखबिन्दर उस सरदार के साथ निकाह करके रुकसद हो गइ। इधर उसका दिवाना सरदार इकबाल यानी की मैं, गम को गला नहीं सका। सुखबिन्दर की जुदाइ मे कबूतर का माफिक घूटर-घू करने लगा। ओतो भला हो पन्ना भाइ का। उसीने मने को सहारा दीया जी, गोबिन्दर के साथ मेरा निकाह करबा दीयाजी । तब जाके ने, सरदार इकबाल सिंह फिर से पटरी पर आ गीया जी। इस रेस्ता के वास्ते पन्ना भाइ ने कैश दीया जी और मने इसका मालिक बन गीया जी। पन्ना भाइ के वास्ते जान हाजिर है जी। बोल, तने कोन काम के वास्ते तसरीफ लाया है जी।"

तखने रेस्ट्राँक कोनो बैरा सामने टेबुल पर दू गिलास लस्सी रखलक आ सलाम

क' वापस चल गेल। इकबाल लस्सीक चुस्की लैत रहल आ युधिष्ठिरक गप सुनैत रहल। अन्त मे खाली भेल लस्सीक गिलास कँ टेबुल पर पटकैत बाजल—"अरे, तू युधिष्ठिर है जी। पेशा से कम्पाउन्डर है जी और पन्ना भाइ का जिगर का टुकड़ा है जी। तूँ दीन-बंधु अस्पताल मे कम्पाउन्डरी का नौकरी चाहता है जी तो समझ ले पुत्तर, तुम्हारा काम हो गीया जी। दीन-बंधु अस्पताल का मालिक डा. पंडा है जी, जो सिर्फ डाक्टर है। अस्पताल का सभी कारोबार उसका कम्पाउन्डर मजीत हाकिमी देखता है जी। मने जब पन्ना भाइ का हप्ता वसुलता था न, तो यही मजीत सप्ताह का पांच हजार हाप्ता डाउन करता था जी। अब पन्ना भाइ हप्ता लेने का काम बन्द कर दीया है जी, फिर भी मजीत मेरा गुलाम है, मेरा खौफ खाता है जी। समझ ले बन्दा, तुम्हारा कम्पाउन्डरी का नौकरी आज ही फिक्स हो गीया जी।"

युधिष्ठिर दीन-बंधु अस्पताल मे कम्पाउन्डर बनि काज शुरू केलनि। डा. जे. एन. पंडाक निजक दीन-बंधु अस्पताल ओहि इलाकाक रोगीक बड़ पैघ आबलम्ब छल। अस्पताल तिमंजिला छल आ सभ तरहक रोगी सँ भरल छल। डा. पंडाक अतिरिक्त आधा दर्जन डाक्टर, एक दर्जन सँ अधिक नर्स, बहुत रास कम्पाउन्डर तथा आन-आन सभ तरहक काज लेल अनगिनत कर्मचारी। जहिना डा. पंडा कँ विभिन्न रोगक उपचार करबाक अतिरिक्त आन कोनो बात सँ मतलब नहि छलनि तहिना मजीत हाकिमी के अस्पतालक व्यवस्थाक देख-रेख मे एको मिनटक फुर्सति नहि रहै। मजीत चौबिसो घंटा अस्पताले मे रहैत छल तइयो काज बाँकिए रहि जाइत छलै। आब ई कहब उचित होयत जे किछुए दिन मे युधिष्ठिर मजीत हाकिमीक सभटा भार अपना कन्हा पर उठा लेलनि। अस्पतालक कर्मचारीक कोन कथा, आब त' डा. पंडा एवं मजीत कँ सेहो युधिष्ठिर सँ पूछि-पूछि क' काज कर' पड़ैत छलै। युधिष्ठिर सभहक हेड बनि अपन मिजाज सँ कर्मचारीक फेर-बदल कर' लगलाह। ताही, क्रम मे ओ तीन गोट नव नर्सक नियुक्ति केलनि। अस्पताल मे केहेन नर्स होबक चाही? हँसमुख, सुन्नरि, जकरा देखितहि रोगीक आधा दुख बिला जाइक। मैना, कामिनी एवं रंजना जनिका मात्र एक सप्ताहक नर्सक ट्रेनिंग भेटल रहनि ओहने काबिल आ फूर्तिगर नर्स बनि दीन-बंधु अस्पताल मे काज कर' लगलीह।

धनपाल पटेल बृद्ध छल, अरब पति छल आ छल सभ तरहक बीमारीक जकीरा। मुदा हाइ-ब्लड प्रेशर आ डायभिटिज ओकर आन-आन रोग मे अगुआ रहै। शहरक सभ सँ नामी तथा होशियार डाक्टर रहथि डा. पंडा। ओएह धनपालक चिकित्सक छलाह। ओना पटेल ट्रान्सपोर्टक समग्र कर्मचारीक स्वास्थ्य सम्बन्धी

काज दीन-बंधु अस्पताले मे होइत रहै आ अहि काज लेल सालाना तीन लाख टाका अस्पताल कैँ पेमेन्ट कयल जाइत छलै। एकर अलावा धनपालक प्रत्येक दिनक उपचार करबाक हेतु डा. पंडा कैँ अलग सँ एक मोट फीस देल जाइत रहनि। धनपाल कैँ डा. पंडाक हाथे नित्य दिन दू बेर इन्सुलिनक सूइ पड़ैत छलनि। भोर मे नवे बजे आ साँझ मे छह बजे डा. पंडा अपन कम्पाउन्डर संगे धनपालक महल मे जाइत छलाह। पहिने मजीत मुदा आब डा. पंडाक संगे कम्पाउन्डर मे सभ सँ पटु युधिष्ठिर आ नर्स मे सभ सँ चतुर मैना जाय लागलि छलीह।

चमेली रानीक योजना मे दू तरहें धनपालक महल मे प्रवेशक मार्ग ताकल गेल छल। पहिल द' हमरा सभ कैँ बुझल अछि जाहि मे नकुल आ बेबी सुको रानी सीमेन्टक देवाल तक पहुँचि गेलि छलीह। आब मात्र देवाल मे भूर करब बाँकी रहि गेल रहै। दोसर मे युधिष्ठिर एवं मैना धनपाल कैँ समय पर सूइ भोंकै लेल जाय लागल रहथि।

बिना मेकअप केनहि मैना रूपक जादूगरनी छलीह। मुदा एखन त' सहजहि हुनक सौन्दर्य मे खटमिठ्ठीक चटपटिया स्वाद आ चितवन मे प्रचंड काम वासना नामक बारूद भरल रहैत छलनि। धनपाल कैँ इन्सुलिन सूइ भोंकैत काल ओहि हॉल मे मात्र दू गोटे उपस्थित रहैत छल। पहिल धनपालक महामंत्री लाला कस्तूरी मल्ल आ दोसर एकमात्र वारिस महिपाल पटेल उर्फ बुलाकी लाल। जहिया सँ मैना नर्सक मेकअप मे महल मे जाए लागल रहथि तहिया सँ बुलाकी कैँ चैन नहि रहै। सूइ देब' काल अपन कुर्सी सँ उठि क' मैनाक समीप पहुँचि जाय आ टकटक मैनाक रूप लावण्य कैँ आँखि सँ चाटए। बुलाकी सुग्रीव कुलक रसिक राज त' छलै। ताहू पर सँ मैनाक आँखिक मटकी कखनहुँ काल ओकर छाती कैँ बन्द क' दैत छलै। ओहि दिन त' मैना मटकी संगे इशारा सेहो क' देलनि। बुलाकी पर एकर गजबे प्रभाव पड़लै। आब बुलाकीक इच्छा सभटा सीमा कैँ तोड़ि देलक।

धनपाल कैँ जखन इन्सुलिनक सूइ पड़ि जाइक त' ओ अविलम्ब भोजन कर' लेल चलि जाइत छल। ओइ दिन धनपालक गेलाक तुरंत बाद बुलाकी डा. पंडा लग पहुँच फरमाइस केलक—"डाक्टर मेरी पत्नी बीमार है। उसके परिचर्या के लिए आज एक दिन के वास्ते इस नर्स को यहीं रहने दीजिए।"

डा. पंडाक दिस सँ विरोध हेबाक सवाले नहि छलै। जँ विरोध होइतैक त' होइतइ लाला कस्तूरी मल्ल दिस सँ। ओकरा निश्चिते बुझ' मे आबि गेल होइतइ जे बुलाकी कैँ अपन पत्नीक नहि, अपन लेसल टेमीक उपचार हेतु नर्सक आवश्यकता छलै। लाला कस्तूरी मल्लक घोंकचल चेहरा पर खिंचाब त' भेलै मुदा ओ किछु बाजल नहि। एमहर युधिष्ठिरक स्वस्ति पाबि मैना अपन हाथक ट्रे कैँ हुनकर हाथ

मे पकड़ा बुलाकीक पत्नीक उपचार कर' लेल ओकरा संग ओकरा कक्ष दिस बिदा भ' गेलीह।

धनपाल एवं बुलाकीक कक्ष महलक ओहि भाग मे छल जतए भीतर जयबाक अनुमति ककरो नहि रहै। महलक ओहि अन्हार भागक जानकारी एखुनका अभियानक अत्यन्त जरूरी काज छल। सोचल-बिचारल प्रयासक अनुरूप मैना बिना कोनो बाधाक भोरक सवा नौ बजे महलक एकांत भाग मे पहुँचि गेलीह जतए धनपाल एवं बुलाकीक आवास छल आ छल धनपालक अकूत धनक खजाना।

अरबपतिक पौत्र बुलाकीक ड्राइंग रूम सिनेमाक हिरोइन जकाँ सजल छल। वाल टू वाल कारपेट, थरमो हिटिंग सिस्टम सँ रूमक कन्ट्रोल टेम्प्रेचर, कीमती सोफा, शीशाक पारदर्शी मॉडल, खिड़की सँ पोखरिक मनमोहक दृश्य, डब डोर फ्रीज, टेलीभीजन आदि आदि। एक कात सनमइकाक आकर्षक डिजाइन सँ बनल सेल्फ जाहि मे संसार भरिक नामी आ कीमती शराबक बोतल भरल रहै। दोसर सेल्फ मे विभिन्न साइजक सुन्दर-सुन्दर शीशाक गिलास सजाओल। लिभिंग रूमक एक कात बाथरूम। बाथरूमक फर्स सेहो फर्रबला कारपेट सँ झाँपल छल। पर्दा मे नुकायल दरबज्जा जे बुलाकीक बेडरूम मे खुजैत छल। बेड रूमक सजाबट आरो उम्दा। कीमती एवं बहुरंगी टाइल्सक उपर पातर आ मुलायम रेशमी कालीन। तकर उपर डबल स्प्रींगबला किंग साइजक बेड। देवाल मे पतियानी मे कॉभर, मैग्नीज सेल्फ आ वस्त्र सँ भरल वार्ड रोब। सभ किछु दुधिया बल्बक मधीम इजोत मे झलकैत। रेशमी आ रंगीन पर्दाक ओहि पार कनेटा बालकनी। ओही बालकनीक एक चेयर पर परमिलिया चुपचाप बैसलि छलि।

परमिलिया रेशमी आ पारदर्शी गाउन पहिरने छल। ओकर देहक एक-एक मन्चूरियन कर्म ओहिना झलकि रहल छलै जेना विश्व-सुन्दरीक झलकैत छैक। परमिलियाक केश खुजल आ पीठ पर छिड़िआयल रहै। ओकर पयर लग नक्कासी कयल कमानीदार राजस्थानी चप्पल उनटल पड़ल रहै।

मैना केँ धाह लगलनि। रूपक धाह, परमिलियाक रूपक धाह। आइए भोर मे नकुल आ बेली सुको रानी राजा समरेन्द्रक पुरना महल सँ आबि क' रिपोर्ट देने छलथिन। महल तथा महलक गुप्त रस्ताक जानकारी दैत-दैत नकुल कालीचरण एवं परमिलियाक प्रेमक खिस्साक विस्तृत जानकारी सेहो देलथिन। सत्य मे बकरीक चरबाहिन परमिलियाक सौन्दर्यक लपट मे एक नहि हजारो कालीचरण केँ भस्म करबाक ताप छलै। बानरे सही, मुदा बुलाकी केँ सेहो दोख देब उचित नहि। दोख देबनि त' दियौन विधाता केँ। ओ एहन धधकैत रूपवती केँ धरती पर किएक पठबैत छथि जाहि सँ संचित अनुराग एवं उदण्ड वासना, दुनूक एकहि संग विस्फोट

भ' जाए।

साधारणतः एक नारी कैँ दोसर नारीक सौन्दर्य मे कोनो आकर्षण नहि होइत छै। होइत छै स्पर्धा आओर डाह। चमेलीरानीक कर्तव्य वेदी सँ बाहर भेलि मैना यद्यपि स्वयं रूपक रानी छलीह तथापि सौन्दर्यक झरना सँ झहरैत आ बिना कोनो आडम्बरक परमिलियाक रूप देखि हुनका डाह नहि भेलनि। हँ, ओ अवस्से अबाक रहि गेल छलीह।

बुलाकी परिचय करौलक—"आजकल यही मेरी पत्नी है। इसका नाम है परम लीलीया। तुम्हारा क्या नाम है नर्स?"

—"मैना।"

—"बहुत खूब। अगर मिलकर रह सको तो मुझे दो पत्नी रखने मे कोइ परेशानी नहीं होगी।"

—"हम दोनों मिल-जुलकर रहूंगी।" मैना संक्षिप्त उत्तर देलनि। मैना एकटक परमिलियाक आँखि मे ताक' लगलीह। यद्यपि परमिलियाक दृष्टि शून्य आ भावहीन छल तथापि नजरिक एक कोण सँ घृणा टपकि रहल छलनि।

परमिलिया सेहो मैना दिस तकलनि। ओ मैनाक आँखि मे की देखलक से त' ओएह जाने, मुदा ओकर मोनक छोड़ पर किछु अद्‌भुत आभास भेलै। हँ, हँ! किछु अजगुत बात होब' जा रहल छै तेहन सन विश्वास ओकरा होब' लगलै। परमिलियाक चेहरा पर आवेश पसरि गेलै।

थोड़बहि समय मे मैनाक माया-जाल पसरि गेलनि। बुलाकी ललमुँहा रहु जकाँ मुँह बाब' लागल। आरम्भ त' शराबक पैग सँ हेबे टा करैत छै। बोडगा नामक शराब बुलाकीक हाथ मे छलै। ओकरा सँ सटि क' मैना आ थोड़े हटि क' परमिलिया बैसलि छलि। मैनाक गपक चासनी मे बुलाकी चटपट-चटपट क' रहल छल। मैना बुलाकीक कान पर जनमल केश कैँ तिरैत कहलनि—"सचमुच बुलाकी, तुम एक खूबसुरत नौजवान हो। एक तो तूँ अरबपति हो और दूसरा तुम जवाँमर्द हो। औरत को अपनी ओर खींचने का सभी जलवा तुम में भरा हुआ है।"

बानरक सुच्चा औलाद बुलाकी प्रसन्न भ' गेल। ओ बोडगाक चारिम गिलास कैँ उदरस्थ केलक। खाली गिलास ल' क' मैना सेल्फ लग गेली। बोतल सँ वोडगा कैँ गिलास मे ढारलनि आ डीप-फ्रीज सँ बर्फक टुकड़ा कैँ निकालि-निकालि गिलास कैँ उपर तक भरलनि। ताही क्रम मे मुठ्ठी मे दाबल एल.एस.डी. नामक उज्जर कैपसूल कैँ सेहो मैना गिलास मे खसा देलनि। छिलकैत शराबक गिलास कैँ बुलाकीक रोइयाँ सँ भरल हाथ मे पकड़ा ओकरा सँ आरो सटि क' मैना बैसि गेलीह।

बुलाकी शराबक नमहर घोंट घोंटलक आ बाजल–"तुम जैसी छौंकड़ी को मैं पसंद करता हूँ। तुम चुलबुली हो, कटीली हो और तुम्हारी अदा! हाय...बेमिशाल है। परम लीलीया ठण्डी लड़की है, घासलेट है। मैना डार्लिंग, तुम शाकी बनकर पैग का पैग पिला रही हो। मेरा मन बाग-बाग हो रहा है।"

–"अरे! तुम्हें चुलबुली छौंकड़ी पसंद है न तो मेरी बात को गौर से सुनो। मेरे साथ और दो नर्स दीन-बंधु अस्पताल में काम कर रही है। एक है कामिनी जो झारखण्ड ब्यूटी कन्टेस्ट मे औअल का खिताब पा चुकी है। दूसरी है रंजना। गजब की चुलबुली और शरारती है। उन दोनों को भी बुला लो, फिर तो तुम्हारी चार-चार पत्नियाँ हो जाएगी। सच मे तुम्हारे जैसा अमीर छोंकड़े को चार पत्नियाँ होनी भी चाहिए। कामिनी और रंजना जैसी खूबसूरत छौंकड़ी को तुमने आज तक देखा भी नहीं होगा। अगर वे दोनों भी यहाँ आ जायँ तो तुम चाँद-सितारे के बीच पहुँच कर मौज-मस्ती करने लगोगे। टेलीफोन करके उन दोनों को भी बुला लो।"

–"यह हुइ न कोई बात।" बुलाकी उत्साह मे उठि क' बैसि गेल। फेर मेमियाइत बाजल–"लेकिन एक मुश्किल है। यहाँ टेलीफोन नहीं है। ददू के हुक्म से महल मे टेलीफोन, मोबाइल या वैसा कोई यंत्र रखा नही जा सकता है।

–"तब कामिनी और रंजना यहाँ कैसे आ सकती है?" मैना किछु बेसिए अफसोच करैत कहलनि।

एल.एस.डी.क आविष्कार एखुनका संसारक सभ सँ महान देश अमेरिका कयलक। जान अमेरिकाक नवतुरिया सभ तरहक निशा कँ पचा गेल आ आब ओकरा सभ कँ निशाक 'कीक' भेटब दुर्लभ भ' गेलै तखन ओहि देशक सरकार कँ स्वाभाविके चिंता भेलै। अलग सँ बजटक प्रावधान कयल गेल आ रिसर्च कराओल गेल। तखन रिसर्च स्कॉलर एल.एस.डी. नामक निशाक कैपसूल बना ओतुका धिया-पूता कँ उपहार स्वरूप देलक। एल.एस.डी.क निशा साइकेडेलिक होइत छैक। ई आस्ते-आस्ते माथक सेन्टरल नर्भ लग पहुँचि घंटी टनटनाब' लगैत छै। प्रथम चरण मे जखन एल. एस. डी.क पूरा असरि भ' जाइत छै तखन एकर सेवन केनिहार सनकि क' जानवर बनि जाइत अछि। संयोग सँ बुलाकी पहिने सँ जानवर छल। ओकरा समक्ष पुरान पत्नी परम लीलीया आ नव पत्नी मैना छलैहे। मुदा ओकरा तैयो संतोख कत'। ओकरा दू गोट पत्नी आओरो चाहबे टा करी से भेटि गेल छलै। एल.एस.डी.क प्रभावे बुलाकी कने काल तक सोचलक। फेर मैग्जीन सेल्फ सँ पैड आ कलम आनि मैनाक हाथ मे देलक आ कहलक–"तुम एक पुर्जा लिखो जिसमे कुछ दवाओं का फरमाइस करो। पुर्जा मे दोनो नर्स का नाम लिखकर यहाँ भेजने की बात भी लिख दो। मैं पूर्जे को अस्पताल तक भेजने का

कोई न कोई तरीका अवश्य ही खोज लूँगा। मैं उन दो छौंकड़ियों को यहाँ बुलाकर ही रहूँगा।”

मैना कैँ जे अवसर चाही से भेटि गेलनि। करीब दू घंटा सँ ओ बुलाकी आवास मे छलीह आ थोड़-बहुत धनपालक भीतुरका कक्षक जानकारी हुनका भेटि चुकल छलनि। ओ सांकेतिक भाषा मे पुर्जा लिखि बुलाकीक हाथ मे देलनि। तखन बुलाकी एल.एस.डी.क प्रथमे चरणक प्रभाव मे छल। ओ पुर्जा ल’ क’ ओहि हॉल मे पहुँचल जतय एखन धनपाल एवं लाला कस्तूरी मल्ल आयल गाहक संगे व्यापार क’ रहल छल।

एमहर मैना कैँ एकान्त भेटलनि। ओ परमिलियाक दुनू हाथ पकड़ि आवेश करैत एखुनका अभियानक ओकरा पूर्ण जानकारी देलनि आ कहलनि—हयै परमिलिया दाइ! अहाँक प्राणनाथ कालीचरण सही सलामत छथि। पछिला एक बर्ख सँ ओ अहींक नामक जाप करैत अहाँक प्रतीक्षा मे तपस्या क’ रहल छथि।

परमिलिया कालीचरणक नामे सुनि भाव-विह्वल भ’ गेलि। अवरुद्ध भेल गला सँ ओ कुहरैत बाजलि—“हा, हा, हमर प्राणनाथ जीबैते छथि। हुनक वियोग मे हम कोना जीबैत रहलहुँ से मात्र ईश्वरे टा जनैत छथि? ओ ड्राइभरी कर’ गेला आ एमहर अहि हरशंखाक गुंडा हमरा पकड़ि क’ ल’ अनलक। तकर बाद सँ हम एतय कैद मे छी। हुनकर समाचार हमरा आइए भेटल अछि। दीदी, हम अहाँक पयर पर माथ राखि कने काल तक कान’ चाहैत छी तखने हमर जी हल्लुक हैत।”

परमिलिया मैनाक कोरा मे माथ राखि हिचुकि-हिचुकि कान’ लागलि। मैना चुपचाप ओकरा पुचकारैत छलीह। कने कालक बाद परमिलिया अपन मूड़ी उठा-मैना दिस तकैत बाजलि—“ऐ यै दीदी एकटा बात कहू त’। सभटा बात बुझि क’ की कालीचरण हमरा फेर सँ स्वीकार करताह?”

—“अहाँ दुनू पति-पत्नी थोड़बे छी! अहाँ दुनू त’ प्रेमी-प्रेमिका छी। प्रेम त’ आत्मा मे रहैत छै शरीर मे नहि। शरीर कैँ ने समयानुसार सभटा नीक-बेजाय कर्म कर’ पड़ैत छैक आ एक दिन ई शरीर गलि-पचि क’ समाप्त भ’ जाइत छै। मुदा प्रेम त’ अक्षुण्ण अछि, पूर्ण अछि आ ईश्वरी गुण सँ भरल अछि। तखन चिंता किएक करैत छी। कालीचरण अहाँक प्रेमक अधीन आ अहींक प्रेमक अवलम्बे ने जीबि रहल छथि। मुदा एखन अइ तरहक वार्तालापक समय नहि अछि। जाबे तक बनरबा अपन दद्‌दू लग सँ घुमि क’ आओत ताबत तक अहाँ हमरा अहि ठामक सभटा जानकारी द’ दिअ।”

परमिलिया मैना कैँ धनपालक सभ महलक जानकारी देलक। बुलाकीक आवासक बादे भोजन करक स्थान छल। भनसा घर फराक मे रहैक। भोजन गृहक ओहि

कात धनपालक शयन-कक्ष छल आ तकरा सटले ओकर खजाना घर। पूब दिस बड़ी टा आँगन। आँगन सीमेन्टक मजबूत देवाल सँ घेरल। सुरक्षित आँगनक एक कात फूलक बगीचा। दोसर कात कनेटा मंदिर। मंदिरक सटले दू गोट कोठली। एकटा मे अमृता बेन रहैत छलीह। धनपालक जवानीक सहचरी आब बृद्धा छलीह आ भरि दिन पूजा-पाठ मे व्यस्त रहैत छलीह। मुदा धनपाल कैँ भोजन करक काल थारी लेने मोस्तैज रहैत छलीह। बाँकी कांता बेन आओर मोनी बेन भानस-भात, साफ-सफाइ तथा आन तरहक टहल-टिकोरा करैत छलीह। ओहि तीनू महिलाक अतिरिक्त परमिलिया आइ तक आन ककरो नहि देखने छलि।

मैना पूछलनि—खजाना घर धनपालक शयन-कक्ष सँ सटल छै की?

—"सटल! सटल नहि, सन्हिआयल छै। खजाना घरक देवाल स्टील आ सीमेन्ट सँ बनल छै। एकर दरबज्जा सेहो लोहाक छैक। दरबज्जा मे अंकबला ताला छै जकरा खोलक लेल मूठबला हूक लागल छैक।"

—ई अंकबला ताला खुजैत कोना छै?

—"से के कहत? एकर जानकारी बुलाकी आ ओकर दद्दू कैँ छोड़ि ककरो नहि छै। आइ-काल्हि त' बुलाकिए अपन दद्दूक आदेश सँ खजाना घर मे किछु राख'आ निकाल' लेल जाइत अछि।"

आश्वस्त होइत मैना कहलनि—"तकर माने भेल जे बुलाकिए खजानाक घरक चाभी अछि। ओ कामी आ लोभी त' अछिए। ताहि पर सँ डपोरशंख सेहो अछि। ओकरे मे जुगुत लगाब' पड़तै तखने अंकबला तालाक नम्बर भेटतै। खैर, छोडू अहि प्रसंग कैँ। ई बताउ, भोजन मे एतय की सभ बनैत छै?"

—"एतय माँउस-मांछ खेबाक प्रथा नहि छै। बानर कैँ चाहबे की करी? साग-पात, फल-सब्जी सभ मे प्रचूर खर्च होइत छै। भात-रोटी, दूध-दही संगे मिठाइ। डालडाक स्थान पर देशी घी आ मधुर मे गूंड़क प्रधानता छै। कनिएँ काल मे मोनी बेन भोजनक थाड़ अनबे करती तखन देख लेबै।"

—"ई बात अहाँ सत्ये कहलहुँ परमिलिया दाइ जे बुलाकीक काया आ व्यवहार, दुनू सँ बानरे अछि।"

—"दीदी यै दीदी! नेनहि मे सुनने रहियै जे बानर कैँ राक्षसक शक्ति होइत छैक। कामान्ध बुलाकी कैँ जँ कहियो देखि लेबै त' जीवन भरि नइं बिसरबै। एकरा जँ हम कण्ठ दाबि क' मारि सकितहुँ त' हमर जीवनक संताप मेटा जाइत।"

परमिलिया नारी जातिक कोमल संवेदना सँ भरलि छलि, फफकि फफकि क' कान' लागलि। मुदा मैना कठोर संकल्प मे तप-तपायल नारी छलीह। हुनका सभ तरहक अन्तर्वेदना पर अधिकार छलनि। ओ कहलनि—"हमरा कामान्ध बुलाकी कैँ

देखक कोनो टा विचार नहि अछि। अहाँ अपन आँखिक नोर कैँ पोछि लिअ। अबला नारीक पाट खेलाइ बालीक लेल हमर सभहक सोच मे निम्न स्थान अछि। आइए राति बुलाकी कैँ सजाय भेटि जेतै आ रंग महल उजरि जेतै। अहूँ कैँ आइए राति मुक्ति भेटि जायत तकर हम विश्वास दिअबैत छी। एखन सावधान भ' हमरा मदति मे रहू।"

एतेक बात भेले छल की बुलाकी कुदैत-फनैत वापस आबि गेल। यद्यपि बुलाकी कैँ मैना द्वारा तैयार कयल पुर्जा कैँ अस्पताल पठबै मे करीब घंटा भरिक समय लागि गेल रहै तथापि एखन ओकरा चेहरा पर विजयक तथा अइयासीक भाव हबसी जकाँ पसरि गेल रहै। दू गोट जपानी गुड़िया ओकरा लग मे रहबे करै। दू गोट आओरो गुड़िया आबि रहल छै। आब ओ चारि गोट पत्नीक स्वामी बनत, ओकरा देखत, भोगत आ तोड़ि-फोड़ि क' फेकत। अहि उपलब्धिक अतिरिक्त ओकरा चाहबे की करी। धनपाल सनक लोकक धन मे केहन बरकैत होइत छै तकर बुलाकी सभ सँ पैघ उदाहरण छल। आब एखन तक ओ एल.एस.डी.क प्रभावक दोसर चरण मे पहुँच चुकल छल। ओकर हाव-भाव उचित अनुचित सँ परे 'साइकेडेलिक' मे पहुँचि गेल छल। सत्य मे अहि संसार मे समय आ स्थान मे तरह-तरह कैँ राग-रागिनीक अलाप कराहिते रहैत अछि।

अजीत कनौजिया नामक व्यक्ति पटेल ट्रान्सपोर्टक जेनरल मैनेजर छल आ लाला कस्तूरी मल्लक नीचा धनपाल स्टेटक सभ सँ पैघ हाकिम, स्वयं दीन-बंधु अस्पताल पहुँचल। ओ मैना द्वारा पठाओल पुर्जा युधिष्ठिरक हाथ मे राखि देलक। पुर्जाक उपर मे लिखल रहै, 'जय रामजी।' तकर माने भेल जे पुर्जा मैनाक हाथक लिखल अछि। पुर्जा मे आगाँ लिखल रहै—"बुलाकी की पत्नी बिमार है। रोग की पहचान हो चुकी है। आक्सीजन सिलीन्डर आ पर्चे मे लिखा हुआ दवा भेज दें। रोगी महिला है और धनपाल स्टेट के राजकुमार की पत्नी है। इसलिए हाँ, हाँ इसलिए दो और नर्स को भेज दें जिससे परिचर्या मे सुविधा हो। चिंता की बात नहीं है। आज ही रात सभी काम को समाप्त कर लेना है।"

दबाइ, स्ट्रलाइज्ड तूर-पट्टी, आक्सीजन सिलिन्डर आओरो दू गोट नर्सक संग युधिष्ठिर कनौजिया कैँ बिदा केलनि। कनौजियाक गेलाक बाद ओ मकान पन्ना भाइक एखुनका अड्डा छल। ओतय पन्ना भाइ, बी.एन. भट्टाचार्य उर्फ भाटाजी तथा पन्ना भाइक सभ तरहें प्रशिक्षित एक दर्जन सहायक मोस्तैज छल। नकुल एवं बेबी सुको रानी राजा समरेन्द्रक पुरना महल मे कालीचरण एवं सुकलाक संग सभटा काज कैँ निपटा क' आबि चुकल रहथि। ओ दुनू निशि भेर एकटा कोठली मे ओत' पहुँचलाह। युधिष्ठिर मैनाक पठाओल पर्चा कैँ सभहक सामने पढ़लनि। ओ अपन

मंतव्य कैँ स्पष्ट करैत कहलनि—"धनपालक महलक भीतरका भागक पूर्ण जानकारी मैना कैँ भेटि चुकल छनि। ओ अपन कार्यक्रम तय क' चुकल छथि। मदति लेल नर्सक भेष मे कामिनी एवं रंजना कैँ हम ओतए पठा चुकल छी। हुनके दुनूक संग आवश्यक आ जरुरति मोताबिक अस्त्र-शस्त्र सेहो जा चुकल अछि। आइए राति हमरा सभ कैँ सभटा काज समाप्त करक अछि।"

सभहक बीच थोड़े काल तक सोच-विचार होइत रहल। एखुनका अभियान पूर्तिक हेतु सभटा आवश्यक सामान ल' पन्ना भाइ, हुनकर सहायक, भाटा जी, नकुल एवं बेबी सुको रानी राजा समरेन्द्रक पुरना महलक लेल बिदा होइत गेला। अड्डा पर कोनो वस्तु छोड़ल नहि गेल। ओकरा खाली क' देल गेल। अगिला अड्डा राजा समरेन्द्रक पुरना महले रहत तकर निश्चय भ'गेल। कम्पाउन्डरक हेड युधिष्ठिर दीन-बंधु अस्पताल वापस अयलाह। तखने हुनका लग हहाति मजीत हाकिमी पहुँचल। मजीतक संग अजीत कनौजिया सेहो छल। कनौजियाक माथक जुल्फी छिड़ियायल रहै आ ओकर चेहरा पर बदहबासी पसरल रहै। कनौजिया कैँ देखि क' युधिष्ठिर कैँ स्वभाविक रूपे थोड़ेक चिंता भेलनि।

मजीत हाकिमी कैँ 'युधिष्ठिर' नामक उच्चारण कर' मे ओकरा नानी मोन पड़ि जाइत छलै। लाचारी मे युधिष्ठिर कैँ ओ दोसरे नाम सँ सम्बोधित करैत छल। मजीत बाजल—"अरे ओ झूठामल! तुम कहाँ गायब हो गया था? पिछला एक घंटा से मैं तुमको अस्पताल का कोना-कोना मे ढूंढ़ता घुम रहा हूँ। खैर छोड़ो उन बातों को। इनका कोइ बहुत जरूरी काम है उसको पूरा करो।"

फेर अजीत कनौजियाक कनन मुँह भेल चेहरा दिस देखैत मजीत कहलक—"यह मेरा असिस्टेन्ट झूठामल है। यह आदमी कम फरिस्ता ज्यादा है। इसके पास सभी दुखों की दवा है। आप घबड़ाइए नहीं, यह आपका काम कर देगा। मेरे पास अस्पताल का बहुत काम पड़ा है, मैं जा रहा हूँ।"

मजीत कैँ गेलाक बाद युधिष्ठिर कुर्सी पर बैसला आ कनौजिया कैँ सेहो बैसक लेल इशारा केलनि। तखन पुछलनि—"थोड़ी देर पहले आपके साथ दवा, आक्सीजन और दो नर्सों को मैं भेज चुका हूँ। अब कौन सा काम बाँकी रह गया?"

कुर्सी पर पोन रोपैत कनौजिया जवाब देलक—"मैं बहुत बड़ा मुसीबत में फँस गया हूँ। आप ही मेरी मदत कर सकते हैं। बात यह है कि पटेल ट्रान्सपोर्ट के सभी ऑफिस, गैरेज, हैंगर, कारखाना और कर्मचारी के क्वार्टर मे झारखण्ड सरकार द्वारा बिजली आपूर्ति होती है। बिजली का बिल समय पर चुकता कर दिया जाता है। लेकिन हमारे मालिक धनपाल पटेल के महल मे बिजली आपूर्ति का अलग इन्तजाम है। एक बड़ा सा डिजल मशीन से बिजली जेनेरेट करबा कर महल मे

बिजली दिया जाता है। वहाँ डिजल जेनेरेटर की दो मशीन है। एक बिजली जेनेरेट करता है और दूसरा स्टैण्ड-बाइ में रहता है। मालिक का हुक्म है कि एक सेकेण्ड के लिए भी महल का बिजली बाधित न हो।"

कनौजिया कैँ बजैत-बजैत सांस फुलि गेलै। ओ अपना कैँ स्थिर केलक आ तखन अगिला बात कहलक–"दो जेनेरेटर चालक, सोहन घंटीवाल और प्रभाकर तनेजा जेनेरेटर के काम पर तैनात थे। दोनों को कम्पनी की तरफ से क्वार्टर और मोटी तनखाह मिलता रहा है। आज जब मैं दोनो नर्स और दवा आदि को महल में पहुँचा कर वापस अपना ऑफिस में पहुँचा तो मुझे सूचना मिली कि सोहन घंटीवाल और प्रभाकर तनेजा गायब है। उन दोनों की खोज सभी जगहों पर की गई लेकिन दोनों का अत्ता-पत्ता नहीं मिल सका है। दोनों का क्वार्टर भी खाली पड़ा है और जेनेरेटर बिना चालक का चल रहा है। मैं नर्वस हो गया। क्या करुँ क्या न करुँ कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। एकाएक ध्यान में आया कि दीन-बंधु अस्पताल जो आकार में बड़ा है, उस में बिजली मिस्त्री जरूर काम करता होगा। क्यों न वहीं से बिजली मिस्त्री लाकर कुछ समय के लिए जेनेरेटर पर नियुक्त कर दिया जाय जिससे महल में जाने वाली बिजली बाघित न हो। उसके बाद नये सिरे से घंटीवाल और तनेजा की खोज की जाय। इसी काम के लिए मैं दीन-बंधु अस्पताल में फिर से आया हूँ। मेरा आपसे निवेदन है कि जब तक मैं जेनेरेटर चालक को खोज नहीं लेता हूँ तब तक यहाँ का बिजली मिस्त्री मुझे उधार में दी जाय। आपके ऑपरेटर को मैं भरपूर इनाम दूगाँ और आपके उपकार को कभी भी नहीं भूल पाउँगा।

कनौजियाक प्रार्थना सुनि युधिष्ठिरक चिंता अन्त भेल। ओना एखुनका अभियान मे ओहि जेनेरेटर चालकक खास भूमिका छलै। तैँ पन्ना भाइ द्वारा घंटीवाल आ तनेजाक अपहरण होयत से निश्चिते छल। जेनेरेटर चालकक स्थान पर काज कर' बला पहिने सँ अस्पतालक जेनेरेटर पर काज क' रहल छल आ काज कैँ नीक जकाँ सीख सेहो रहल छल।

कनौजियाक कातर भेल वाणी कैँ युधिष्ठिर सहानुभूति सँ कनेकाल तक सुनैत रहला तथा हूँ, हाँ करैत रहला। तकरबाद कहलनि–"पटेल ट्रान्सपोर्ट के सब से बड़े ओहदे पर आप बिराजमान हैं कनौजियाजी। फिर छोटी-छोटी बातों से आप नर्वस हो जाते हैं, यह अच्छा नहीं लगता है। खैर, आप चिंता न करें। पांच मिनट आप यहीं इन्तजार करें। मैं जेनेरेटर चालक को लेकर तुरंत आ रहा हूँ।"

मुश्किल सँ पांच मिनटक अन्दरे युधिष्ठिर एक व्यक्तिक संगे अयलाह आ ओकर परिचय कनौजिया सँ करबैत कहलनि–"इसका नाम है पवन कुमार बटोही।

यह बिजली सम्बन्धी कार्यो के लिए पोली टेकनिक इन्स्टीच्यूट से डिप्लोमा प्राप्त ओवरसियर है। यह काम के खोज में ही दीन-बंधु अस्पताल आया था। यहाँ भी भेकेन्सी है। लेकिन आपका काम अधिक जरूरी है। इसे आप ले जाइए और एक सप्ताह तक काम करबाइए। अगर आप संतुष्ट हो जाएँ तो इसे परमानेन्ट रख लीजिए। मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी, बल्कि प्रसन्नता ही होगी।"

कनौजिया प्रसन्न भेल। सही मे युधिष्ठिर लग सभ तरहक दुखक दवाइ छलै। एमहर अजीत कनौजिया कैँ जेनेरेटर चालक भेटि गेलै आ ओमहर पवन कुमार बटोही सहजहि ओतय पहुँचि गेल जतय होयब ओकरा लेल योजना मे काजक निश्चय कयल गेल रहै।

छ' बजे धनपाल कैँ सँझुका इन्सुलिनक सूइ पड़ैत छलै। पांच बाजि क' बीस मिनट, युधिष्ठिर सिरींज, तूर, ब्लड-प्रेशर जाँच कर' बला मशीन, इन्सुलिनक एम्पूल आ ठोर पर मुस्की लेने डा. जे.एन. पंडा लग पहुँच गेल। डा. पंडा कैँ खेबा तकक फुर्सति नहि। तखन ओ टमाटो सूप मे पॉवरोटी कैँ डुबा-डुबा मुँह मे राखि रहल छल। क्षुधा शान्ति लेल किछुओ आहार त' चाही ने।

युधिष्ठिर कैँ देखतहि डा. पंडा हाञि-हाञि अपन भोजन समाप्त केलनि आ प्रश्न पुछलनि–"साथ मे कोई नर्स नहीं जाएगी क्या?"

–"वहाँ अपने अस्पताल का तीन-तीन नर्स तो है ही। जरूरत होने पर उसी में से किसी को बुला लेंगे।"

–"ठीक है चलो।"

डा. पंडा एवं युधिष्ठिर जखन धनपालक ऑफिस मे पहुँचलाह त' पौने छह बाजल रहै। ओतय पहिने सँ कोनो विधायक सोनाक छड़ ल' क' आयल छल। ओ अगिला चुनावक प्रत्याशी छल आ ओकरा सोना छड़क बदला कैश जरूरी छलै। ओकरा हाथ सँ सोनाक छड़ ल' क' लाला कस्तूरी मल्ल जोखलक आ बाजल–"दो किलो में सय ग्राम कम है।"

चुनावक प्रत्याशी खद्दरक धोतीक खूँट सँ नाक पोछलक आ आक्रोश मे बाजल–"आहि रे बा! सय ग्राम कोमहर गेलै?"

लाला कस्तूरी मल्लक नाक सिकुड़ा गेलै। युधिष्ठिर कैँ भेलनि जे आब ओ छीकत। मुदा हुनकर अनुमान गलत भेलनि। छींकैक बदला लाला कस्तूरी मल्ल कड़क आबाज मे बाजल–"दरिदर कहीं का। अरे, यहाँ सौ-सौ किलो सोना का छड़ लेकर विधायक, मंत्री और अफसर बदलने का काम से आते हैं। वे सभी धनपाल पटेल के विश्वास के तराजू पर अदला-बदली का काम निपटाते हैं। जब वे सभी कुछ नहीं बोलते हैं तो तुम क्यों कुत्ते की तरह भौंकते हो। अरे बेवकूफ, चुपचाप

रहो।”

चुनाव प्रत्याशीक मोटरगाड़ी, अंग-रक्षक आ ड्राइभर सभ कियो बाहरे छल। एहन काज कैँ गुप्त राखब जरूरी। तैँ विधायक असगरे भीतर आयल छल। पछिला दस बर्ख सँ ओ विधायक छल। ओकरा गारि पढ़बाक आदति रहै, गारि सुनैक नहि। मुदा ओ मांजल राजनीतिज्ञ छल। सभटा बिपरीत भेला पर गदहो कैँ बाप बनब' मे ओकरा सिद्धान्ततः कोनो आपति नहि रहै। चुनाव प्रत्याशी चुपे रहल।

लाल कस्तूरी मल्ल हिसाबक तेरीज केलक–“नौ हजार प्रति दस ग्राम तो दो किलो सोना का मूल्य हुआ अठ्ठारह लाख। उसमें सौ ग्राम का मूल्य नब्बे हजार बाद किया तो बच गया सतरह लाख दस हजार। दलाली का पांच प्रतिशत को घटाया तो सोना का कुल मूल्य रह गया सोलह लाख बीस हजार।”

विधायक मनहि मन विचार कर' लागल–“सोलह लाख बीस हजार सँ होयत की? पार्टी फण्ड मे दस लाख चंदा देबहि पड़त तखने टिकट भेटत। आइ काल्हि विधायक चुनाव लड़बाक लेल कम सँ कम एक करोड़ टाका चाही। बचलाहा छह लाख बीस हजार सँ की सुथनी होयत? राजधानी बला दुनू फ्लैट बेचि देबै, पछिला दस बर्खक अर्जल जमीन-जथ्था कैँ गिरबी राखि देबै, मुदा चुनाव त' लड़बे टा करबै। हे ईश्वर, केंशर आ राजनीतिक रोग मरले पर छुटै छइ से धरि पक्का। चुनाव प्रत्याशीक करेज मे टीस बढ़ि रहल छलै।

भीतरक कक्ष मे बुलाकी चारि-चारि गोट सुन्नरि पत्नीक बीच स्वर्गक भोग भोगि रहल छल। ताही काल ओकर शयन कक्ष मे ललका बल्ब भूक द' जड़लै। एल.एस.डी. आओर बोडकाक निशा मे फुदकैत बुलाकी एकाएक साकांक्ष भ' गेल। ललका बल्ब जड़ैत देखि ओकर निशा किछु समयक लेल फुर्र भ' गेलै। ओ उचकि क' ठार भेल आ अपन चेतना कैँ बटोरैत बाजल–“दद्दू बुला रहे हैं। अरे बाप रे बाप! शाम का छह बज गया है। हटो, तुम लोग हटो। रास्ता दो। मुझे दद्दू के पास पहुँचना है।”

धनपालक महल मे धन सँ अधिक भय बरसैत छलै। बुलाकी कँपैत धनपालक लग मे ठार भ' गेल। धनपाल बलबल करैत किछु कहलकै। ओहि बलबली भाषाक अर्थ बुलाकी तुरंत बुझि गेल। लाला कस्तूरी मल्लक हाथ सँ सोनाक छड़ ल' क' ओ खजाना मे गेल आ कनिकबे कालक बाद एकटा बोरिया उठौने वापस आयल। बोरिया मे सँ लाला कस्तूरी मल्ल सोलह लाख बीस हजार रूपैया निकालि चुनाव प्रत्याशीक हाथ मे देलक। बाँकी टाका सँ भरल बोरिया कैँ बुलाकी फेर खजाना घर मे राखि आयल। एतबे काज करबा मे बुलाकी कैँ एल.एस.डी.क कइएक गोट झोँक कैँ सहन कर' पड़लै। मुदा ओ अपना कैँ कहुना क' सम्हारने रहल आ एकटा

कुर्सीक हथ्था कैँ पकड़ि ठार भ' गेल।

विधायक टाकाक मोटरी कैँ ल' क' गेल। धनपालक व्यापारक काज समाप्त भेल। मुदा अहि काज मे आधा घंटाक समय लागि गेल छलै।

करीब सवा छह बजे डा. पंडा इन्सुलिनक सूई भोंकक लेल धनपालक बाँहि पकड़लनि। सिरींज मे पहिने सँ दवाइ भरल छल। युधिष्ठिर इन्सुलिन भरल सिरींज डा. पंडाक हाथ मे देब' लगला, ठीक ताही काल महल मे जे कहियौ ने भेल छल से भ' गेल। अर्थात बिजली गुम भ' गेलै। चारूकात कूप अन्हार भ' गेलै। तखनहि गड़ाम, गड़ाम बला बड़ी जोरक अबाज सेहो भेलै जाहि सँ महल काँपि उठल छल।

भेल की रहै से सुनिए लिअ। ठीक अवसर देखि युधिष्ठिर अपन जेबी मे पड़ल मोबाइल सदृश यंत्र जे बी.एन. भट्टाचार्य उर्फ भाटाजीक आविष्कार छल, कैँ बटन दबौलनि। पुरना महल मे बैसल भाटाजीक यंत्र मे ठकठूक भेल। पहिने सँ साकाँक्ष भाटाजी सतर्क भेला। ओ बेराबेरी अपन यंत्रक दू गोट बटन दबलनि। पहिल बटन सँ जेनेरेटर घर मे चालकक जगह नियुक्त पवन कुमार बटोहीक यंत्र मे घननन क' घंटी बाजल। ओ आज्ञाकारी बालक जकाँ जेनेरेटरक स्वीच ऑफ क' देलक। महल मे अन्हार व्याप्त भ' गेल। भाटाजी दोसर बटन दबलनि। पोखरीक कात मे जतय धनपालक महलक अन्तिम छोर लग सीमेन्टक देवाल छल नकुल एवं बेबी सुकोरानी ठारि छलीह, सीमेन्टक देवाल मे कइएक गोट छिद्र बना क' ओहि मे बारुद भरि देल गेल रहै। ओहि ठाम सँ तार निकलल रहै जे नकुलक हाथ मे डेटोनेटर सँ जोड़ल रहै। एमहर महल मे अन्धकार भेलै आ ओमहर नकुलक यंत्र मे भाटाजी द्वारा घंटी बजाओल गेल। नकुल डेटोनेटरक स्वीच दाबि देलनि। गड़गड़ाहटिक अवाज भेलै आ सीमेन्टक देवाल मे बड़ी टा छेद बनि गेलै। छेद एते टा बनलै जाहि मे दू गोट मनुक्ख एकहि संग महलक भीतर जा सकैत छल।

ई सभटा काज आधा मिनट अर्थात तीस सेकेण्ड मे भ' गेलै। तखने महल मे इजोत सेहो आबि गेलै। मुदा महल मे बिजलीक प्रकाश अबैक पूर्व एकटा आरो बात भ' गेल रहै। युधिष्ठिर हाथक इन्सुलिनबला सिरींज बदलि गेल रहै।

धनपालक कैँ सूई पड़ल। ओकर ब्लड-प्रेशर ठीक छलै, हर्टबीट सेहो सही छलै। डा. पंडा कैँ संतोख भेलनि। ओ वापस जेबा लेल पाछाँ हटला। धनपालक कान मे गड़ाम गड़ाम बला अबाज प्रवेश कयने रहै। कनिएँ काल लेल सही, महलक बिजली गुम भेल रहै। एतबा बात ओहि बनियाँ कैँ संशय आ शंका मे अनबाक लेल काफी छल। धनपाल प्रायः ओही द' लाला कस्तूरी मल्ल कैँ किछु कह' चाहलक। मुदा ओ गोंगिया क' रहि गेल। धनपाल कैँ इन्सुलिनक स्थान पर कोन तरहक सूई पड़लै से त' कोनो केमिस्टे कहि सकैत छल, मुदा ओकर देह मे हड़कम्प

मचि गेल रहै। किछु बाज' सँ पूर्व ओकरा एकाएक कपकपी होब' लगलै आ ओकर चेहरा उज्जर-सफेद भ' गेलै। अविलम्बे ओ गों गों करैत नीचा फर्स पर खसि पड़ल आ अचेत भ' गेल।

डा. पंडा धड़फरा क' धनपालक छाती मे कान सटौलनि आ चिचियाति युधिष्ठिर सँ कहलनि–"हर्ट एटैक। एम्बुलेन्स बुलाओ।"

धनपालक कार्यालय मे ओकरे बुड़िपना दुआरे टेलीफोन नहि रहै। मुदा युधिष्ठिरक जेबी मे मोबाइल छल। मोबाइल मजीत हाकिमीक नामे रजिस्टर्ड छल। युधिष्ठिरक कार्यप्रणाली जाहि प्रकारक रहनि ओहि मे ओ धूमकेतु जकाँ प्रगट होइत छला आ काज समाप्त क' एकाएक अन्तर्धान भ' जाइत छला। तखन ओ अपना नामे मोबाइल कोना रखितथि। खैर दीन-बंधु अस्पताल मे एम्बुलेन्स पठेबाक सूचना पहुँच गेलै। जाबे तक एम्बुलेन्स आयल ताबे तक डा. पंडा धनपालक छाती कैँ पम्प करैत रहला।

एम्बुलेन्स आयल। अचेतावस्था मे धनपाल कैँ एम्बुलेन्स मे लादल गेल। ओकर बेहोश शरीरक रक्षार्थ ओकर चारि अंग रक्षक एम्बुलेन्स मे बैसि गेल। 'बोल हरि, हरि बोल' नामक सायरन बजबैत एम्बुलेन्स बिदा भेल। एम्बुलेन्सक पाछाँ-पाछाँ डा. पंडा एवं युधिष्ठिरक कार सेहो प्रस्थान केलक।

सुन्न भेल धनपालक ऑफिस मे बुलाकी आ लाला कस्तूरी मल्ल रहि गेल। एखन तक धनपालक ऑफिस मे की-की भेल रहै ताहि सँ बुलाकी कैँ कोनो मतलब नहि रहै। ओ निर्विकार कुर्सीक मूठ पकड़ने ठार छल। ओकर आँखि खुजल रहै मुदा ओ किछु देख नइं रहल छल। एल.एस.डी.क 'साइकेडेलिक' प्रभाव समाप्त भ' चुकल छलै। बुलाकी कैँ आब चारि पत्नीक आवश्यकतो नहि रहि गेल रहै। एल.एस.डी.क अन्तिम चरणक निशा नशेरी कैँ अनन्त आकाश मे ल' जाइत छैक आ ओ बौक बनल भगवानक बनाओल सृष्टि कैँ देख' मे निमग्न भ' जाइत अछि। वर्तमान संसार मे घुमि क' आबक लेल ओकरा कम सँ कम चौबीस घंटा लगैत छै। एखुनका बुलाकीक जे दशा रहै तकर जानकारी मात्र मैना कैँ छलनि।

धनपालक ऑफिस मे दोसर व्यक्ति लाला कस्तूरी मल्ल छल। धनपालक गेलाक बाद ओ बरामदा सँ निकलि गलियारा मे गेल आ ओतुका लोहाक फाटक कैँ भीतर सँ बन्द क' किल्ली लगा देलक। ओ घुमि क' अपन जगह पर आयल। मुदा ताबे तक ओकर हुलिया एकदम सँ बदलि चुकल छलै। आब लाला कस्तूरी मल्लक चेहराक थकुचल सिकुरन गायब भ' गेल रहै आ ओतए क्रूरता बरसि रहल छलै। ओ अपन सामनेक टेबुलक दराज सँ पिस्तौल निकाललक। सोझ निशाान

बुलाकी दिस करैत कड़क आबाज मे बाजल–“बुलाकी, खजाना खोल दो।”

बुलाकीक शयन-कक्षक पर्दाक पाछाँ मैना ठार छलीह। हुनकर पाछाँ परमिलिया, कामिनी एवं रंजना नुकायल छलीह। सभहक नजरि ऑफिसक दृश्य पर केन्द्रित छल। मैना कैँ आश्चर्य भ' रहल छलनि। लाला कस्तूरी मल्लक अभिप्राय कैँ ओ सही-सही बुझबाक प्रयास क' रहल छलीह। तखने लाला कस्तूरी मल्ल फेर गर्जना केलक–“महिपाल, देर मत करो। चुपचाप खजाना खोल दो।”

दोसर बेर लाला कस्तूरी मल्ल बुलाकी कैँ ध्यान आकृष्ट करक लेल महिपाल कहि सम्बोधन केलक। मुदा बुलाकीक उपर लाला कस्तूरी मल्लक शब्दक कोनो टा प्रभाव नहि पड़लै। ओ त' एल.एस.डी.क प्रभाव मे अलगे दुनियाँ मे भ्रमण क' रहल छल। कुर्सीक मूठ पकड़ने ओ अविचल ठारे रहल। लाला कस्तूरी मल्ल चिचियाति बाजल–“सुन रे छौंकड़ा! अब बूढ़ा धनपाल अस्पताल से वापस नहीं आयेगा। एक दिन तो उसे मारना ही था और वह दिन आज का ही है। मैं आज के दिन का इंतजार वर्षों से करता रहा हूँ। तुम खजाना खोल दो जिससे मैं उतना घन निकाल सकूँ जिससे बाँकी आगे मेरा दिन आराम से कट सके। जल्दी करो.... खजाना खोल दो...नहीं तो तुम गोली खाने के लिए तैयार हो जाओ।”

धनक लिप्सा मे विवेक ओहुना शून्य भ' जाइत छै। मैना कैँ बूझ' मे आबि गेलनि जे बुलाकी एखन निशा मे अचेत अछि आ ओ लाला कस्तूरी मल्लक मंशा कैँ बुझि नहि पाओत। तँ ओ अवस्से मारल जायत। बुलाकी कैँ जीवित रहब परम जरूरी छल कारण खजाना खोलैक मंत्र ओकरेटा अबैत छलै। मैना पाछाँ घूमि क' कामिनी एवं रंजना सँ कहलनि–“अहाँ दुनू पहिने सँ निश्चय कयल ड्यूटी पर जाउ।”

दुनूक गेलाक बाद मैना परमिलियाक हाथ पकड़ि क' फुसफुसाइत कहलनि–“अहाँ हमरा सभहक बीच नव छी आ खतराबाला खेल सेहो नइं खेला सकैत छी। तइयो हम कहब जे अहाँ अपना कैँ कठोर बना लिअ। सावधान भेल हमरा संग रहू आ हम जे जे कही से करैत रहू।”

अहि बीच लाला कस्तूरी मल्ल बुलाकीक लग सटि गेल आ ओकर कनपट्टी मे पिस्तौलक नाल सटबैत चेतावनी देलक–“मुझे वैसे भी मरना ही है। अगर तुमने खजाना नहीं खोला तो तुम्हारी हत्या करने के बाद खुद को मैं गोली मार लूगाँ।”

मुदा कस्तूरी मल्लक पिस्तौल फायर नहि क' सकल। फायर भेल मैना हाथक पेस्तौल। गोली लाला कस्तूरी मल्लक माथ मे लगलै। ओ अर्रा क' फर्स पर खसल। तत्काले ओकर प्राणान्त भ' गेलै।

पिस्तौलक फायरक आबाज सनसनाइत बाहरो गेल। मुख्य फाटक लग तैनात

आठ गोट पहरुदारक सम्मलित चिकरब शुरू भ' गेल—"क्या हुआ, क्या हुआ?"

मैना हाँइ-हाँइ बुलाकी कैँ झझकैत कहलनि—"बुलाकी! बुलाकी!! बाहर के पहरुदार से बोलो कि अन्दर सभ कुछ ठीक है। बोलो, जल्दी बोलो"

मुदा बुलाकी किछु बाजक बदला भुस्साक भरल सड़ल बोरा जकाँ नीचा फर्स पर खसल आ पसरि गेल। मैना एक क्षण लेल असमंजसक स्थिति मे पहुँचि गेलीह। मुदा ओ अबिलम्ब अपना कैँ सम्हारि लेलनि। ओ परमिलिया सँ कहलनि—"पछिला एक बर्ख सँ अहाँ एतय छी। अहाँक नाम आ आवाज सँ पहरुदार अवस्से परिचित भ' गेल होयत। अहाँ लोहाक फाटक लग जा क' जोर सँ पहरुदार कैँ कहियौ जे दद्दूक बीमारीक चलते नर्वस भ' बुलाकी फायर क' देलनि अछि। ककरो किछु नै भेलैए। अन्दर सभ किछु ठीके-ठाक अछि। जल्दी करू, नहि त' दोसरे बखेरा शुरू भ' जायत।"

परमिलिया फाटक लग गेल आ जेना मैना बतौने रहथिन तहिना सभ बात पहरुदार कैँ चिकड़ि क' कहि देलक। बाहर सँ आब' बला पहरुदारक चिकड़ब शान्त भ' गेल।

एमहर कामिनी आ रंजना अपन ड्यूटी कर' गेलीह। ओ दुनू मिलि क' तीनू महिला यथा अमृता बेन, कांता बेन एवं मोनी बेन कैँ त' जबर्दस्ती एकटा कोठली मे बन्द क' केबाड़ बन्द क' देलनि। कामिनी पिस्तौल तनने बंद दरबज्जा लग मोस्तैज भ' पहरा देब' लगली। रंजना दौड़िक' ओतय पहुँचली जतय डेनामाइटक कारणे सीमेन्टक देवाल मे भूर भ' गेल रहै। रंजना अबाज द' नकुल आ बेबी सुको रानी कैँ भीतर आब' कहलनि।

रंजनाक संग नकुल आ बेबी सुको रानी ओतए पहुँचली जतय फर्स पर मैना आ परमिलिया बैसलि छलि। दुनूक आगाँ मे निशा मे बेहोश बुलाकी पड़ल छल। कनिकबे हटल शोणित मे भीजल लाला कस्तूरी मल्ल मरल पड़ल छल। नकुल बुलाकी दिस इशारा करैत प्रश्न केलनि—"ई सार मरि गेल की?"

—"नहि, ई मरल नहि अछि। मरल अछि लाला कस्तूरी मल्ल। बुलाकी त' एल. एस.डी.क प्रतापे बेहोशे टा अछि।"

—"तखन?"

—"बुलाकी कैँ मरले बुझू। एकर मूर्छा ओहुना बारह घंटा सँ पहिने नहिए टुटतै। सभ सँ मुश्किल बात ई जे धनपालक खजानाक अंकबला तालाक अंक द' एकरे टा बुझल छै। इएह खजानाक चाभी थिक। आब खजाना कोना खुजत से कठिन बात भ' गेल अछि।"

सभ कियो खजाना घरक मुख्य दुआरि लग आयल। खजानाक केबाड़ रहै

लोहाक। ओहि मे तीन गोट मूठ रहै। अही मूठ केँ एक निश्चित अंकक हिसाबे वाम-दाहिन अमेठलाक बादे खजाना खुजैत छल। सभ कियो बौक भेल ओहि मूठ दिस ताक' लागल।

परमिलिया जेना पहिने मैना सँ कहि चुकल छलि ताहि अनुसारे अजीत कनौजिया ठीक नौ बजे राति मे अबैत छल आ पटेल ट्रान्सपोर्टक भरि दिनक हिसाब दैत छल। ओइ काल लाला कस्तूरी मल्लक अलाबे धनपाल स्वयं उपस्थित रहैत छल। हिसाबक ब्यौराक अन्त मे धनपाल अपन शयन कक्ष दिस जाइत छल। एमहर लाला कस्तूरी मल्ल एवं अजीत कनौजिया अपन-अपन क्वार्टर लेल बिदा होइत छल।

तखन घड़ी मे सात बाजल रहै। तकर माने भेल जे मात्र दू घंटाक समय बाँचल छल जाहि बीच खजानाक ताला खोलि ओहि महक करोड़ो-अरबोक सोना एवं कैश केँ उघि क' महलक पुबरिया देबालक भूर बाटे सुरंग मे पहुँचा देल जाए।

मुदा ई होयत कोना? चारि पत्नीक सोहाग बानर राज चित्त बेहोश पड़ल छल। एत' पहुँचि चमेलीरानीक अभियान एक विकट परिस्थिति मे फँसि गेल छलनि। सभ कियो चुपचाप फर्स पर बैसि गेल। ऑफिसक देवाल घड़ीक टकटकक ध्वनि आब साफ-साफ सुनाइ पड़ि रहल छल। जँ जँ घड़ीक सूइ आगाँ बढ़ैत छलै तँ तँ सभहक करेजक धुकधुकी माथक घंटी बजा रहल छलै। आब किछु करब अखन संभव नहि छलै।

जाए दिऔ जे भेलै से भेलै। चमेलीरानीक मुख्य दुश्मन धनपाल अस्पताल मे अन्तिम हिचकी लैत होयत अथवा नरकधाम पहुँचि गेल होयत। ओकर पौध बुलाकी जखन होश मे आओत तखन भीख मांगत सैह ने। खजानाक मालिक बनतै झारखण्ड सरकार। नइं यौ, पहिने ओकर अधिकारी सभ मे खजानाक सम्पतिक बन्नर बाँट हेतै। तखन जे जूड़-गूंड़ बचतै से सरकारी खजाना मे जमा कयल जेतै। अहिना होइत आबि रहल छै आ आगुओ अहिना होइत रहतै।

एहने सन भावक संसार मे सभ कियो झूला झूलि रहल छल आ कि परमिलिया हड़बड़ा क' उठल आ चिचिआइत मैना सँ बाजलि—"दीदी, यै दीदी! हमरा किछु मोन पड़ल अछि। हमरा संगे कनिक आउ त'...।"

ओतए बैसल सभ प्राणी अकचका गेल। मैना परमिलियाक संगे बुलाकीक बेडरूम मे पहुँचलि। देवाल मे फिट वार्डरोब केँ ओ खोललक। ओहि वार्डरोब मे सभटा कपड़ा-लत्ता परमिलिएक छलै। ओ कपड़ाक ढेरी सँ एकटा डायरी निकालक। हाजि-हाजि डायरीक पन्ना उनट'बैत परमिलिया एक पन्ना मैनाक सोझा मे रखलक। डायरीक ओहि पन्ना पर लिखल रहै—1922, 1947, 1982।

डायरी मे तीन गोट इस्वीक नाम लिखल देखि मैना जिज्ञासु भेलि परमिलिया दिस तकलनि। परमिलिया झट सँ बाजलि–"दीदी, अहि तीनू इस्वीक सम्बन्ध खजाना सँ छै। ई त' हमरा सभकेँ बुझ' मे आबि गेल अछि जे खजाना मे किछु राखब आ निकालब मात्र बुलाकिए टा करैत रहल अछि। ओ सुतल-जागल मे अही तीन इस्वीक जाप करैत रहैत छल। हम कइएक बेर अइ द' पुछने छलियै त' ओ एकबरे एतबे टा बाजल छल जे तीनू इस्वी ओकर बाबाक, पिताक आ ओकर जन्म इस्वी थिक। ताहि सँ बेसी ओ कहियो किछु ने बाजल छल। मुदा हमरा मोन मे संशय जागल जे खजाना खोल' काल आओर बन्द करक बाद ओ तीनू इस्वीक जाप किएक करैत अछि। अनजाने सही हम ओहि तीनू इस्वीक साल केँ अहि डायरी मे टिप लेलहुँ। आइ एखन जखन खजाना खोलक विकट समस्या सँ हम सभ जूझि रहल छी, हमरा अहि डायरी मे लिखल तीनू इस्वीक दिस ध्यान गेल अछि। एकर अर्थ ई भेल जे अहि तीनू इस्वीक सम्बन्ध अहि खजानाक ताला सँ अबस्से छै।"

ताबत तक नकुल एवं बेबी सुको रानी सेहो ओतए पहुँचि गेल रहथि। ओ दुनू सेहो ध्यान सँ परमिलियाक कथन केँ सुनि रहल छला। एकाएक नकुल परमिलियाक हाथ सँ डायरी ल' लेलनि आ कहलनि–"सभ कियो खजाना घर लग चलू त'।"

सभ कियो ओतए पहुँचल जतए खजानाक लोहाक बन्द केबाड़ छलै। केबाड़ मे वामा-दाहिना कात आ दुनूक बीच उपर मे क्रमशः तीन गोट मूठ छलै। नकुल किछु काल तक चुपचाप सोचैत ठार भेल रहलाह। फेर ओ किछु विचार केँ स्थिर क' लोहाक केबाड़ लग अयला। बाबाक जन्म इस्वी 1922 केँ ओ वामा मूठ पर अजमाइस केलनि। इस्वीक अंक अनुसारे ओ एक बेर वामाकात दिस, नौ बेर दहिना दिस, दू बेर वामा आ तखन फेर दू बेर दहिना दिस मूठ केँ घुमौलनि। खट सन अबाज भेलै। उत्साहित भ' नकुल अही क्रमे दहिना कातक मूठ केँ ओकर पिताक जन्म इस्वीक अनुसारे तथा उपर उठलाहा मूठ केँ बुलाकीक जन्म इस्वीक मोताबिक अँइठलनि। दुनू मूठ सँ खट-खट क' अवाज भेलै। तकरबाद नकुल सोझ भेलाह आ खुल जा सिम-सिम बजैत केबाड़क दुनू हैण्डिल केँ दुनू हाथे पकड़ि क' घींचलनि। खजाना खुजि गेल।

बेबी सुको रानी मुस्की छोड़ैत एक खास अन्दाज मे अपन दियादनी मैना दिस तकलनि जेना कहि रहल होथिन–'देखलियै ने, हमर घरबाला कतेक बुधियार अछि!'

खजाना सँ दूषित वायु बाहर भेल। नकुल भीतर गेला। खजानाक फाटक खुजिते भीतरक सभटा बल्ब जड़ि गेल रहै। पतियानी मे सभ किछु सैंतल छलै।

छोट-छोट प्लास्टिकक मजगूत बोरा मे सोनाक छड़ तथा पैघ-पैघ बोरा मे नगदी कैश लोहाक रैक पर सिलसिलेबार राखल छल। मात्र कनेकाल पहिने बुलाकी द्वारा आनल सय ग्राम कम दू किलो सोनाक छड़ आ थोड़े खाली भेल रूपया बला बोरा खजानाक फर्स पर पड़ल छल। बुलाकी करबे की करैत? एल.एस.डी.क झोंक कैँ अपन दद्‌दूक डरे कहुना रोकैत ओ जतबे काज क' सकल छल सैह की कम छलै।

चमेलीरानीक धनपाल पटेल नामक अभियान आब अन्त पर आबि गेल। धनपालक खजानाक सभटा सोना रूपयाक मूल्यांकन करब कठिन छल। मुदा अन्दाजे ई कइएक हजार करोड़ हेतै, से धरि पक्का। पन्ना भाइ आ भाटा जी राजा समरेन्द्रक पुरना महलक भीतर सुरंग बला रस्ताक मुहानी पर रहि गेला। बाँकी पन्ना भाइक एक दर्जन सहायक, मैना, बेबी सुको रानी आ नकुल खजाना खाली कर' मे लागि गेला।

कालीचरण एवं परमिलियाक मिलन भेल। एक बर्खक विरह मे औंटल वासना आ वासना मे फेंटल प्रेमक रूप त' अद्‌भुत होइते अछि। परमिलिया कैँ अग्नि-परीक्षा देब जरूरी नहि भेलै। कालीचरण सय नहि हजार चुंबन सँ परमिलियाक अभिनन्दन केलक। परमिलिया अपन प्रेमीक आलिंगन मे पहुँचि विभोर भ' गेलि। खजाना सँ सोना उघ' काल सभ कियो एक नजरि ओहि प्रेमी-प्रेमिका कैँ देखलक आ मधुर मिलनक दृश्य देखि-देखि आनन्दित होइत रहल। मुदा कालीचरण एवं परमिलियाक मिलन खजुराहोक भीति चित्र नहि बनि सकल। दुनू कैँ तत्काल होश आबि गेलै। दुनू मधुर-मिलन बला काज कैँ टारि खजानाक बोरा उघ' मे व्यस्त भ' गेल।

सुकला बूढ़ छल तैँ की? ओ चालिस किलो सोनाक छड़बला बोरा कैँ असगरे उठा लैत छल आ सुरंगक भीतर मे राखि अबैत छल। कामिनी एखनो तीनू गुजराती बेन कैँ कोठली मे बंद केने पहरा पर छलीहे। एमहर रंजना दोसर काज पर तैनात छलीह। धनपाल ऑफिसक बाद बनल गलियारा मे रंजना पिस्तौल तनने मोस्तैज छलीह। जँ कोनो फाटकक पहरेदार भीतर अयबाक प्रयास करत त' ओकरा सोझे सूट क' देबाक आदेश हुनका मैना देने छलथिन्ह।

खजाना खाली भेल। सभटा सोना एवं नगदी अपन नियत स्थान पर पहुँचि गेल। धनपालक महल कैँ खाली क' देल गेल। ओतए मरल प्राणी मे लाला कस्तूरी मल्ल तथा जिबैत प्राणी मे धनपालक कुकर्मक उत्तराधिकारी बुलाकी रहि गेल छल। हँ, हँ, महलक दोसर कात कोठली मे बंद तीनू बेन सेहो जीविते छलीह। भाटाजी मोबाइल सनक यंत्र सँ घंटी टनटना क' दीन-बंधु अस्पताल सँ युधिष्ठिर तथा जेनेरेटरक घर सँ पवन कुमार बटोही कैँ अएबाक संदेश पठा चुकल छला।

धनपालक समस्त पूंजी ल' क' चमेलीरानीक फौज राजा समरेन्द्रक महलक

आगाँ नहि जा क' पहिल सुरंगक अन्त मे पहुँचल। ओतए पहाड़ी सँ नीचा ढलान पर उतरबाक रस्ता बनल रहै। ओत' मार्ग दर्शक छल सुकला। ढलानक नीचा लगभग चारि कोस तक घनघोर जंगल छलै। भोर होइत-होइत सभ कियो जंगलक ओहि पार पहुँचल। जतए पन्ना भाइक टीम सुरक्षित पहुँचल ओहि स्थानक नाम छल गरबा। गरबेक पहाड़ी सोन-नदीक उद्गम थिक। एतय कनेटा बाजार आ चहुँ दिस जयबा लेल पक्की सड़क छल। ओतहि पक्की सड़कक कात मे पन्ना भाइक लीलेण्ड ट्रक प्रतीक्षा मे ठार छलै। ई सभटा स्थान पन्ना भाइक इलाका छल तखन कोनो बातक कमी रहबे किएक करितैक।

सभ किछु ट्रक पर लादल गेल। सभ फ्रेस भ' आ चाह-बिस्कुट खा-पी क' ट्रक पर बैसल। परमिलिया आ कालीचरण एक दोसरा मे सटिए क' बैसल। ड्राइभरक बगल मे पन्ना भाइ एवं भाटाजी बैसलाह। मुदा ट्रक कँ खुजबा मे कनेक बाधा भेलै। बाधा ठार केलक सुकला। ओहि घड़ी सुकलाक जीवन भरिक संचित अभिलाषा ओकर पैघ पिआस बनि प्रगट भेल। ओ क्रंदन करैत पन्नाभाइ सँ कहलक–"आप चमेली बिटिया के फौज का सिकन्दर हो। मैं आपको सैलूट करता हूँ। अब मैं भी तो आपके फौज का एक सिपाही हूँ। मुझे भी अपने साथ में ले चलो। मैं महुआ के गाँव तक जाना चाहता हूँ। हो सकता है महुआ के गाँव की माटी मे महुआ की सुगन्धि अभी तक बरकरार हो।"

पन्ना भाइ सुकलाक अवहेलना नहि क' सकलाह। ओ सुकला कँ अपना बगल मे बैसा लेलनि। लीलेण्ड ट्रक आगाँ मुँहें बिदा भ' गेल।

❀❀

..5..

—"भाइ, हम बिआह केलहुँ आ अहाँक भौजी कैँ अनलहुँ। अहाँ मात्र आठ दिन पहिने पहिले-पहिल पानापुर एलहुँ अछि, मुदा एखन अहाँ हमर सभ सँ पैघ यार छी। तैँ काल्हि राति हम अहाँ कैँ अपन कनियाँ देखैक नोत देने छलहुँ, अहाँ ठूसि-ठूसि क' पनपिआइ खेलहुँ मुदा कहलहुँ नहि जे अहाँ कैँ हमर रानी केहन लगलीह?"

वसुदेवा अपन आजुक परम प्रिय मित्र नकछेदी सँ पूछि रहल छल। वसुदेवा एवं नकछेदी पानापुर गामक पूबरिया च'र मे छल। भोरका समय छलै। सूर्य उगै मे घंटा भरिक विलम्ब रहै। ओतहि फतुरनक दमकलक पानि सँ कुर्रा केलक, गमछा सँ रगड़ि-रगड़ि क' मुँह पोछलक आ शुतुरमूर्ग जकाँ मूड़ी नमरा क' वसुदेवा दिस तकलक। प्रश्नक उत्तर नहि पाबि वसुदेवा फेर पूछलक—"नकछेदी भाइ, मुँहक केबाड़ खोलियौ। सरिपों बजबै जे हमर महरानी अहाँ कैँ केहन लगलीह?"

नकछेदी गंभीर होइत जवाब देलक—"वर सँ एक हाथ उच्च कनियाँ। भाइ, अहाँ कनियाँ अनलहुँ अछि आ की मोकनी हथनी। हम विचार देब जे अगिला चुनाव मे अहाँ हिनका सरपंच मे ठार क' दिअनु। पानापुर कैँ लाभ त' हेबे करतै, अहूँ अठन्नियाँ सँ एक टकही बनि जायब। कहलकै की ने रानी आ महरानी! हिनकर घरवाली हमरा हिनकर काकी सन लगलीह आ ई हमर विचार पूछै छथि।"

वसुदेवाक कद ठमकल आ खिलखिल पातर छलै। ओकर ढेका ढील रहै आ कुर्ता ठेहुन सँ नीचा नमरल रहै। पानापुर मे वसुदेवा अपन उपनाम अठन्नियाँ सँ प्रसिद्ध छल। ओना ओ साफी समुदायक महामंत्री एवं ब्रजनंदन बाबूक 'मिथिला कल्याण एवं विकास परिषद'क उपमंत्री छल, मुदा पानापुर मे ओकर एकोटा मित्र नहि छलै। ओ जकरा लग जाइत छल सैह ओकरा पिहकारी द' बैला दैत रहै। अग्निपुष्पक मसिऔत नकछेदी थोड़बे दिन पहिने पानापुर आयल छल। गाम मे आयल नव मनुक्ख नकछेदी सँ वसुदेवा भरि ठेहुन-छाबा दोस्ती क' लेने छल। जखन बिदागरी करा क' वसुदेवा अपन कनियाँ कैँ अनलक त' नकछेदी कैँ नोत द' क' अपन घरबाली कैँ देखबाक लेल ल' गेल छल। एखन नकछेदीक बाजब आ बेसी क' अपना लेल अठन्नियाँ शब्दक सम्बोधन सुनि वसुदेवा हतप्रभ भ' गेल। एक क्षण तक वसुदेवा नकछेदीक कहल कथनक मर्म कैँ बिचारलक। तामस ओकरा टिकासन पर पहुँचि गेलै। वसुदेवा

फुफकारैत बाजल—"अएँ रौ खचरहा, की कहलही? हमर बहु बहु नै, हमर काकी सन छै। अएँ रौ, तखन त' तोँ सोझ क' हमरा गारि देलए हएँ। आने जकाँ तोँ हमरा अठन्नियाँ सेहो कहलए हएँ। आइ तोरा नइं छोड़बौ। फारिक' दू फांक नइं क' दिऔ त' वसुदेवा हमर नाम नहि।"

नकछेदी पड़ायल आ वसुदेवा खिहारलक। नकछेदी जी जान सँ भागि रहल छल आ वसुदेवा विभिन्न अलंकार मिश्रित गारि पढ़ैत ओकरा खिहारि रहल छल। यद्यपि दू गोट यार एक दोसरा केँ पछाड़े लेल घोड़-दौड़ मे बाझि गेल छल मुदा ओहि काल वसंतक प्रभात कालीन बेलाक दृश्य अत्यन्त रमणीय छल। हवा मे हलकापन रहै आ वातावरण मे मस्त कर' बला ऋतुराजक सिहरन। चारूकात रबियात फसिल जेना मसुरी, बूट, मकइ, खेसारी आ गहुमक पाकल-काँच शीश सँ झहरैत सुगन्धि, नवजात कुशियारक किसलय सन हरियर-हरियर पात सँ झाँपलि धरती, घुघरूक ध्वनि मे मंद-मंद बहैत वसंती हवा आ झुण्डक झुण्ड चिड़ैक कलरव सँ प्रकृति विभोर भेलि पसरल रहथि। पानापुर गामक माटि दोमट, उचाँस आ रबियातक अन्न लेल सभ तरहेँ उपयुक्त। धरती फाटि क' उपजल छली आ गामक लोक आनन्दे चहकि रहल छल। पानापुरक गामवासी केँ वसंतक हिल्लोरिक अतिरिक्त एक गोट बात आरो रहै जे सभ केँ उद्वेलित कयने छलै। ओ बात रहै आब' बला कल्हुका दिन पानापुर मे प्रांतक चुनावक दिन छलै।

बहुत पहिने घोषणा भ' चुकल रहै जे प्रांतक चुनाव चारि चरण मे हैत। पांच मार्च, एगारह मार्च, चौदह मार्च आ अन्तिम चरण अठ्ठाइस मार्च। काल्हि अठ्ठाइस मार्च थिकै आ काल्हिए पानापुर मे सेहो चुनाव हेतै। पानापुरक लोक अहू लेल प्रसन्न छल जे फगुआ बाइस मार्च क' छलै। ह' ह' ताबे चुनावक झंझटिया काज समाप्त भ' गेल रहत। गाम मे सभ साल जकाँ धमगज्जर फगुआ हेबे टा करत। भोटक गिनती अठ्ठाइस मार्च क' छियै। हुअ दियौ, अहाँक पेट मे दरद किएक भ' रहल अछि। कियो जीतय, हमर बंगौर साती लए।

गामक सटले पूवारी कात फतुरनक खरिहान छल। नीपल-पोतल, साफ-सुथरा। चारूकात परती आ तीन-चारि गोट आम-कटहरक गाछ। बीच मे एकटा खर सँ छाड़ल चौघारा घर। घर मे एक कात थ्रेसर आ डिजिल मसीन राखल छल। फतुरनेक खरिहान मे गाम भरिका गहूमक दाउन होइत छल।

फतुरनक बाप छल पिअक्कड़। ओ जमीन जथ्था बेचि क' पीबि गेल। बँचलै दस धूरक घड़ारी, गामक सटल दू कठ्ठा आ बीचला च'र मे एक कठ्ठा जमीन। बस ओतबेटा सम्पति फतुरन केँ अपन बापक मरला बादे हाथ लगलै। पानापुर गामक माटि मे अजबे ताशीर। कियो भूखे मरिए ने सकैत अछि। उद्योगी मनुक्खक भाग्य

विधाता दोसरे कलम सँ लिखैत छथि। फतुरन सेहो उद्योगी पुरुष छल। गामक सटल दू कठ्ठा जमीन कँ फतुरन खरिहान बनौलक। ओकर सासुर रहै पूर्णिया जिलाक धमदाहा गाम मे। एकेटा सार आ सारक नाम रहै गोखुला। फतुरन गोखुलेक मदति सँ अपन खरिहान मे थ्रेसर आ डिजिल मशीन बैसौलक। आब गाम भरिक गहूमक दाउन फतुरनक खरिहान मे होब' लागल छल। प्रत्येक बर्ख रबियात अन्नक दाउनक शुरूए मे गोखुला आबि जाइत छल आ सार-बहिनो मिलि क' दौनी मे भीड़ जाइत छल। कोनो हील-हुजैत नहि। घंटाक बीस टाका आ भुस्सा मे तेहाइ सभ खुशी-खुशी दैत छलै।

बिचला च'र महक एक कठ्ठा जमीनक आधा भाग कँ फतुरन गहींर क' क' खत्ता खुनलक आ बाँकी आधा भाग कँ उच्च क' भरलक। ओतए ओ चारि इन्चबला बोरिंग करबा क' दमकल बैसा लेलक। आब बाध भरिक रबियात फसिलक पटौनी फतुरनक बोरिंग सँ होब' लागल। एखन फतुरनेक बोरिंग लग वसुदेवा आ नकछेदी कँ कहा-सुनी भेल छलै।

नकछेदी पांच हाथक पठ्ठा आ वसुदेवा बौंकची। वसुदेवा कँ बहुत पाछाँ छोड़ि नकछेदी फतुरनक खरिहान लग पहुँचि गेल। खरिहान सँ हटल कटहरक गाछ तर पानापुरक किछु छौंड़ी सभ बैसलि छलि। सभहक आगाँ छीट्टा रहै आ हाथ मे खुरपी। तकर माने भेल छौंड़ीक झुण्ड घास छिलक लेल बिदाह भेल छलि।

छौंड़ीक झुण्ड मे छल ललिया, चनियाँ, रमकलिया, शरबतिया, खोपाबाली गेनिया आ सिनेही मास्टरक बेटी कुसमी। छौंड़ीक झुण्ड मे एकटा नव छौंड़ी सेहो छलि जकर नाम रहै सोमनी। ओना त' सभटा छौंड़ीक जवानी उठानी पर रहै आ तँ सभ सुन्नरिए छलि। मुदा, नवकी छौंड़ी सोमनीक सुन्दरताक महमही अजबे रहै। सोमनीक रंग गोर, आँखि कटोरिया आ नाक मे बुलकी छलै। पानापुरक छौंड़ा सभ कँ के बुझाबए। एक नजरि सोमनी कँ देखलक आ फेर-फेर देखबा लेल उताहुल। गूंड़क भेली पर उड़ैत बिढ़नी जकाँ छौंड़ा सभ सोमनीक आगाँ-पाछाँ मर्राय लागल छल।

सोमनी तिरलोकी गुरुक भतिजी छलि। अइ बेर फतुरनक सार गोखुला जखन अपन गाम धमदाहा सँ पानापुर लेल बिदाह होब' लागल तखने चिंता ओकरा घेरि लेने छलै। फतुरनक सभटा डिजिल मशीन, दमकल, थ्रेसरक मरम्मतिक काज ओकरे जिम्मा रहैक। ओना त' गोखुला अपनहि भंगठीक मास्टर छल। मुदा अहि बेरक भंगठीक काज ओकरा बूत्ता सँ बाहर रहै। डिजिल मशीन, दमकल आ थ्रेसरक बीमारीक अन्त नहि। कखनहुँ रींग-पिस्टन खिआ-खिआ क' मशीनक पेट मे घर्ड़-घर्ड़िक' भरि दैक त' कखनहुँ पम्प पानि फेकब बिसरि जाइक। थ्रेसर त' बुझू दौनिए काल थर्र-थर्र काँपए लागए। अहि बेर सभटा मशीन कँ जड़ि सँ छीप तक दुरुस्त कर'

पड़तै। सभटा बेरिंग आ बूश कैँ बदल’ पड़तै। एकरा लेल काबिल मिस्त्रीक प्रयोजन छलै।

काबिल मिस्त्रीक पता गोखुला कैँ भेटि गेलै। धमदाहा सँ सटले भैरबा टोल। ओतहि छला तिरलोकी गुरु। बिजखोपड़ा डैम सँ रिटायर तिरलोकी गुरूक टक्करक मिस्त्री भेटब दुर्लभ। एखन तिरलोकी गुरु अपन भतिजी सोमनी कैँ संग कलकत्ता जेबा लेल तैयार भ’ रहल छला। सोमनीक वर कलकत्ते मे मैकनिक छल। तिरलोकी गुरु सोमनी कैँ अपन घरबला लग पहुँचा अपनहुँ लेल काजक जोगार करताह तेहने विचार रखने छला। बिचहि मे गोखुला हुनक पयर छानि लेलक आ अपन अरजेन्ट बेगरता द’ कहलक। तखन निश्चय भेल जे तिरलोकी गुरु पानापुर पहुँचि फतुरनक सभटा कल-कारखानाक मरम्मति क’ ओतहि सँ सोमनी संग गंगा सागर गाड़ी पकड़ि कलकत्ता जेताह। टिकट कटेबाक भार गोखुला गछि लेने छल।

सोमनी कैँ पानापुर गाँव बड़ नीक लगलै। सभ वयस्क सभटा छौंड़ी संगे हिल-मिल गेल। एखन ओहो घसबाहिनीक गोल मे बैसलि हँसी-ठठ्ठा क’ रहल छलि। नकछेदी कैँ पहुँचतहि छौंड़ी सभ विशेष सिनेह सँ ओकरा दिस ताक’ लागलि। एक त’ नकछेदी आन गामक छौंड़ा आ ताहू पर सँ जवान, हट्टा-कठ्ठा आ देखनुक। पानापुरक छौंड़ी सभ कैँ नकछेदीक प्रति आकर्षण स्वाभाविके छलै। शरबतिया पुछलकै–“एँ यौ नकछेदी बाबू, अहाँ गर्दा मे नेहायल किएक छी? एखन त’ फगुओ ने भेलैए आ अहाँ जूड़-शीतल खेला क’ आबि गेलहुँ। अहाँक देह पर आध मोन गर्दा लादल अछि, से किएक?”

नकछेदी अपन कपार आ देह परहक गर्दा कैँ गमछा सँ झाड़ैत जवाब देलक–“की पूछै छी। वसुदेवा कैँ कनिएँ हँसी केलियै। ओ मार’ दौड़ल। ओकरे सँ बचबाक लेल हम पड़ेलहुँ। पड़ायल अबिते रही की चुल्हाइक खेत मे अल्हुआक लत्ती मे ओझड़ा क’ खसि पड़लहुँ। ओतहि गर्दा मे लेढ़ा गेलहुँ।”

ओही काल छौंड़ीक झुण्ड मे सँ कुसमी बफारि काट’ लागलि–“बाप रौ बाप! देखही गइ, अठन्नियाँ दौड़ल एम्हरे आबि रहल छै।”

सभटा छौंड़ी एक दोसरा मे सटिक’ बैसल छलि। नकछेदी छौंड़ी सभहक पाछाँ जा क’ नुका गेल। हहाइत-फुफुआइत वसुदेवा आयल आ गर्जल–“नकछेदिया त’ एमहरे आयल छल, गेल कत? आइ अगीन पुष्पाक सार कैँ हम जिवैत नइं छोड़बै।”

शरबतिया बैसले-बैसलि पूछलक–“नकछेदिया हिनका की केलकनि हएँ जे गोहि जकाँ ई सोंसिया रहल छथि?”

–“ओ की केलक हएँ से सुनबै! काल्हि राति ओकरा हम अपन कनियाँ देखैक नोत देने छलियै। हमर कनियाँ ओकरा केहन लगलथिन ताहि द’ पुछलियै। ओ की

जवाब देलक? ओ कहलक जे हमर कनियाँ हमर बहु सनक नहि, हमर काकी सन लगैत छथि। कहू त' अहू सँ पैघ गारि भ' सकै छै?"

ललिया ठोर पटपटौलक–"मर्र, नकछेदी कोन बेजाए कहलखिन हएँ। ई बिआह थोड़बे केलनि हएँ? ई त' सम्बन्ध केलनि हएँ। हिनकर तेसर त' हुनकर चारिम। तइ पर सँ दू गोट चिल्का लैए क' ओ एलखिन हएँ।"

वसुदेवा पहिने सँ तमसायले आयल छल। ललिया आ गेनियाक कटाक्ष सुनि क्रोधे काँपय लागल। ओ अकाश दिस मुँह बबैत बाजल–"आब अइ गाम मे हमर रहब दूभर भ' गेल। कल्हुका जनमलि छौंड़ी सेहो हमरा गारि दैत अछि। हौउ दैव, आब हम कत' जाउ, की करू?"

तखने शरबतिया अनघोल केलक–"देखहीन गइ, भोटबला रक्षसबा एमहरे आबि रहल छौ। भागै जो गइ छौंड़ी सभ। जकरा ओ रक्षसबा देखि लेतौ तकरा सिसोहि लेतौ, छोड़तौ नहि। पानापुर मे एखन ई रूपैया बाउग क' रहल छै। एकर मुकाबला के करतै? पड़ा, पड़ा क' जान बचबै जो गइ छौंड़ी सभ।"

सभ छौंड़ी पड़ा क' इत्तर-तीत्तर भ' गेलि। ओतए रहि गेल बेकल भेल वसुदेवा आ गर्दा मे सानल नकछेदी। ओ दुनू सेहो झगड़ा बिसरि गेल। गाम दिस सँ एकटा जुलूस आबि रहल छलै। कबूतर छाप जिन्दाबाद, गुलाब मिसिर जिन्दाबादक कनफोड़ा नारा संगे जुलूस ल'ग मे पहुँचलै। आगू-आगू छल भोटक राक्षस अच्छे लाल पकड़ी। तकर पाछाँ छलाह मिथिला कल्याण एवं विकास परिषदक अध्यक्ष ब्रजनंदन बाबू। ब्रजनंदन बाबू थुलथुल चालि चलि रहल छलाह। धन्नु चौधरी दुनू हाथ कैँ भँजैत एसगरे नाराक पहिल पाँती मे चिचिया रहल छलाह। करीब दू दर्जन छौंड़ा नाराक अन्तिम चरण कैँ दोहरा रहल छल। परिषदक कार्यकारणीक किछु सदस्य आ पानापुर गामक थोड़े मनुक्ख जुलूस मे सम्मिलित छल। सभहक अन्त मे गोगुल्स पहिरने अग्निपुष्प चुपचाप आबि रहल छल।

ल'ग अयला पर वसुदेवा कूदि क' जुलूस मे सामिल भ' गेल आ कंठक सिरा कैँ फुला क' गुलाब मिसिरक जयजयकार कर' लागल। नकछेदी ओहि कौतुहल सँ हटले रहल।

अच्छे लाल पकड़ीक अगुआइ मे जुलूस फतुरनक खरिहान मे पहुँचल। ओतए खर सँ छारल घर मे पहिने सँ तिरलोकी गुरु हाथ मे रिंच नेने बैसल रहथि। थ्रेसर दू फांक भेल छल आ चारूकात ढेबरी, बेरिंग तथा आन-आन पुर्जा जहिं-तहिं छिड़िआयल रहै। ओतहि एकटा जौड़खट्टा खाट पर अच्छेलाल पकड़ी बैसि गेल। ओकर ठीक सामने कल जोड़ने ब्रजनंदन बाबू नीचा माटि पर बैसि गेलाह। धन्नू चौधरी नारा लगबैत पब्लिक कैँ इशारा सँ चुप करौलनि आ पकड़ीक आगाँ नीचा जमीन पर एना बैसि

गेलाह जेना ओ स्वयं पोसुआ कुकुर होथि तथा पकड़ी 'मेरे नगपति, मेरे विशाल' होथि।

अच्छे लाल पकड़ीक हाथ मे एकटा फूलल बैग छलै जकरा ओ खोललक। करकराइत नोटक गट्टी बाहर निकालक। सय टकही नोटक गट्टी कैँ उनटा-पुनटा क' देखैत पकड़ी ओकरा ब्रजनंदन बाबूक हाथ मे देलक। ब्रजनंदन बाबू सेप घोंटैत बजला–"पछिला तीन एलेक्शन सँ हम आ हमर ग्रामीण भाइ लोकनि कबुतरे छाप मे भोट दैत आबि रहल छी। अहू बेर अहि गामक बच्चा-बच्चा गुलाब मिसिरक जयजयकार कइए रहल अछि। मंत्री, मुख्य मंत्री बहुतो भेल। मुदा गुलाब मिसिर सनक कर्मठ एवं इमानदार ने भेल आ ने आगाँ हैत। हम सभ हुनके भक्त छी। महानुभाव, अहाँ कान मे तूर द' क' निश्चिन्त भ' जाउ। हम विश्वास दिअबैत छी जे पानापुर गामक एक-एकटा भोट कबुतरे छाप मे पड़त।"

अच्छे लाल पकड़ी अपन मुँह खोललक–"से बात का पता हमरा पहिने से बा। कहै के जरूरत नहिखे। रौआ इतना बड़ा संस्था के हाँक रहली हऽ त' अपने से बड़का के होत? आब रौआ ओकर नाम बता दीं जे भोटक काम करत। पानापुर मे कुल पांच बूथ बा। दस गोट नीमन लड़िका चाही जे पोलिंग एजेन्ट के काम करत। से के के बा?"

सदिखन बाचाल रह' बाला धन्नू चौधरी ताबत चुपे रहला। ब्रजनंदन बाबू अग्निपुष्प कैँ शोर पाड़लनि। लोक कैँ टारैत अग्निपुष्प पकड़ीक खाट लग आबि क' ठार भेल। ब्रजनंदन बाबू परिचय देलनि–"सरकार! एखन हिनकर टक्करक युवा कार्यकर्त्ता हमर गाम मे आन कियो नहि अछि। हिनक नाम छनि अग्निपुष्प आ ई दलित जातिक छथि। हमर परिषदक ई प्रचार मंत्री सेहो छथि। हमरा गाम मे तीन-चौथाइ भोटर दलित जातिक छथि आ सभहक नकेल हिनके हाथ मे छनि। पोलिंग एजेन्टक संग-संग भोट सम्बन्धी सबटा भार हिनके देल जाए। मदति लेल हम तथा हमर परिषद तैयारे अछि।"

अच्छे लाल पकड़ी लम्बा-तगड़ा, मोश्चण्ड टाइपक मनुक्ख छल। ओकर देहक चमड़ा कटहरक छिलका जकाँ खरखर रहै। बेमाय पयर मे फटै छै मुदा पकड़ीक करिया चेहरा मे नीक जकाँ बेमाय फाटल रहै। आजुक नेता सदृश पकड़ी दाढ़ी बढ़ौने छल। ओकर आँखिक डिम्हा लाल आ माथक केश ठार रहै। पकड़ी कैँ चारि आंगुरक छाती आ बाँकी मेघडम्मर जकाँ फूलल पेट रहै जे एखन खद्दरक कुर्ता सँ झाँपल छलै। ओ क्रूर, धूर्त आ निर्दयी किस्मक लोक छल। मुदा आधुनिक चुनाव-युद्धक ओ सफल आ अनुभवी सिपहसलार छल। बिलाइबला आँखि सँ ओ अग्निपुष्प दिस तकलक।

जाति दलित, नाम अग्निपुष्प, गोगुल्स आँखि पर। तखन पकड़ी कैँ आरो

क्वाइलिफिकेशन चाहबे की करी? ओ अपन बैग खोललक। पांचो बूथक अलग-अलग भोटर लिस्ट, दस गोट पोलिंग एजेन्टक फार्म, भोट समाप्त भेला पर ई.भी.एम. भोटर मशीन कैँ सील कर' लेल मोहर तथा चपड़ा, सादा कागत आओर मूठा भरि पेन्सिल निकाललक। ओही बैगक दोसर कोन सँ पकड़ी नमरीक एकटा थाक सेहो बाहर केलक। सभटा कैँ अग्निपुष्पक हाथ मे रखैत पकड़ी पूछलकै—"बुझाब' के पड़ी आ की तोरा बुझले बा?"

—"सिरीमान, हमरा बुझबैक जरूरी नहि अछि। हम मुसहर होइतो मैट्रिक प्रथम श्रेणी मे उतीर्ण केने छी। जखन हमर गुरु ब्रजनंदन बाबू आ धन्नू चौधरी सनक बुद्धिमान एवं महान पुरुष छथ त' हमरा कमी कोन बातक रहत। अहाँ पानापुर बूथक काज सँ बेफिकिर भ' जाउ। सभटा काज फस्ट किलास फस्ट भ' के रहत।"

अग्निपुष्पक बात सुनि अच्छे लाल पकड़ी निश्चिन्त भेल। ओ खाट पर ओलरि गेल। ताही काल तिरलोकी गुरुक भतिजी सोमनी पकड़ीक हाथ मे चाहक कप पकड़ा देलक। सकपकाइत पकड़ी सोमनी दिस तकलक आ तकिते रहि गेल। ओकर कच्छा ढील भ' गेलै। चाह देब' काल सोमनीक आंगुर पकड़ीक हाथ सँ सटि गेल रहै। भस्मासुर भस्म होब' लेल तैयार भ' गेल। अच्छे लाल पकड़ीक देहक मोटका चमड़ी मे लहरि उठ' लगलै। ओ बिसरि गेल जे एखन ओ पब्लिकक बीच बैसल पब्लिक मैन अछि आ ओकर कपार पर टुमाही विधान-सभाक चुनावक पूरा जिम्मेदारी छै। पकड़ीक माथक शिरा मे शोणितक प्रवाह तेज भ' गेलै।

अहाँ कैँ जिज्ञासा होयत जे अच्छे लाल पकड़ी छल के? पकड़ी कोन जातिक टाइटिल भेल? हमरो नै बुझल अछि। जे सुनल अछि से कहै छी। जखने गुलाब मिसिर प्रांतक मुख्य मंत्री बनल छल तखने सँ धरतीक पाताल सँ अनेको दानवक आगमन होब' लागल छल। अलग-अलग दानव अलग-अलग मंत्रीक चहेता बनल। पकड़ी नामक दानव चौहान नामक मंत्रीक लग मे सटि गेल। प्रत्येक बेर चौहान अपन चुनाव क्षेत्र बदलि लैत छल। अहि बेर ओ टुमाही विधान-सभा कैँ चुनने छल। तँ पकड़ी सबेरे-सकाल टुमाही प्रखण्ड मे अपन अड्डा बना नेने छल। आब ओहि हलकाक तमाम अफसर एवं थाना-प्रभारी पकड़ीक गुलाम बनि गेल। पकड़ी टुमाही विधान-सभाक प्रत्येक बूथक प्रजाइडिंग अफसरक लिस्ट बनौलक आ सैह पास भेलै। पर्यवेक्षक बाहर सँ अबैत छथि। आब' दियौन। पकड़ीक पकड़ द' हुनका किछुओ की पता चलतनि? ओ सरकारी अफसरक जन्म-कुंडली मे ओझरा क' रहि जेताह। आजुक प्रजातंत्रक राक्षस पकड़ीक लग मे कोनो पर्यवेक्षक पहुँचिए ने सकैत अछि।

अच्छे लाल पकड़ी एके सुरकिया मे सभटा चाह कैँ सुरकि लेलक आ जी सँ ठोर चाट' लागल। खाली भेल चाहक कप कैँ सोमनीक हाथ मे पकड़ा ओ सोमनीक आँखि

मे तकलक। काजर पोतल आँखि सँ रंग-बिरंगी अबीरक फुहार झहरि रहल छलै। पकड़ी युवतीक रस मे सराबोर डुबि गेल। पानापुरक जनता अच्छे लाल पकड़ीक निर्लज्जता कैँ आँखि गरा क' देखि रहल छल। तखने समूचा देह मे गर्दा पोतने नकछेदी ओतए पहुँचि गेल। ओ ओहि ठामक लीला देखि क' खटाँउस जकाँ खोंखिआयल। पकड़ीक तंद्रा भंग भेलै।

नकछेदीक बिना छेदल नाक परहक रंज कैँ देखि सकपकाइत पकड़ी ब्रजनंदन बाबू सँ कहलक—"रौआ इहाँ बैठल-बैठल का क' रहल बानी। खर्चा-पानी त' मिलिए गेल हेएँ। हियाँ से जा के भोटबा के बन्दोबस्त मे लाग जाँइ।"

सभाक सभ जनता बिदाह भ' गेल। अग्निपुष्प एवं नकछेदी सेहो गाँव मे प्रचार हेतु प्रस्थान केलक। फतुरनक खरिहान मे रहि गेल खाट पर बैसल पकड़ी, ठार भेलि सोमनी आ कने हटल हाथ मे रिंच रखने तिरलोकी गुरू। तिरलोकी गुरु गोल गला गंजी पहिरने छला जाहि मे जरल मोबीलक छीट्टा ठाम-ठाम पर पोतल छल। ओ अपन हाथक रिंच कैँ जमीन पर रखलनि, उठि क' पकड़ीक लग मे अयलाह आ सोमनी सँ कहलनि—"हगै सोमनी, एतय ठार नहि रह। साहेब लेल किछु खेबाक वस्तु ला। देखै नै छहीन जे सरकारक मुँह केहन क' सुखा गेलनि अछि। हिनका चुनावक काज सँ की एको मिनटक फुर्सति छनि। ई त' भूखल-पिआसल देशक सेवा मे बेहाल छथि। जो, जा क' हिनका लेल किछु जलखै ला ग'।"

तिरलोकी गुरुक बाजब पकड़ी कैँ बड़ नीक लगलै। ओ प्रश्न केलक—"रौआ के? आइ से पहिले रौआ कैँ कभीयो ने देखले बानी।"

तिरलोकी गुरु सविस्तार अपन परिचय देलनि। अन्त मे कहलनि—"चुनाव-तुनाव सँ हमरा कोनो टा सरोकार नहि अछि। गोखुलाक काज सम्पन्न क' हम अपन भतिजी सोमनी कैँ ल' क' कलकत्ता चलि जायब।"

बिचहि मे सोमनी पकड़ीक हाथ मे एकटा बट्टा पकड़ा देने छलि। बट्टा मे मखानक खीर रहै आ खेबा लेल चम्मच सेहो छलै। अच्छे लाल पकड़ी एक चम्मच खीर मुँह मे रखलक। ओकर आत्माक कोन कथा परमात्मा तक कैँ तृप्ति भ' गेलै। ओ खीर खाइते-खाइते पुछलक—"खीर सोमनी बनौलक हेएँ की? बड़ा नीमन बा। वाह, वाह एकरा जेतना बड़ाइ करीं ओ कमे बा।"

तिरलोकी गुरु एक डेग आगाँ बढ़ि क' कहलनि—"हजूर, असल बात की छै से सुनि लिअ। कपि जोड़ इन्द्र भेल कपीन्द्र। पहिने ओ छल कपीन्द्रा आ हमर असिस्टेन्ट बनल टायरक पंचर सटैत छल। कोना पूंजी उपरौलक से वैह जानत। मुदा ओ पूर्णियाँ मे महराज टेन्ट हाउस खोलि लेलक। जरूरतमंदक मुड़न, उपनयन, बिआह आओर सराध कालक एकमात्र सहायक महराज टेन्ट हाउस आ ओ बनि गेल कपीन्द्र नाथ

ठाकुर। रिटायर भेलाक बाद हमरा अपन पुरना चेला कपीन्द्रा सँ भेंट भेल। हमर खास्ता हालत देखि ओ अपन कैटरींग मे हमरा भनसियाक काज पर नौकर बना क' राखि लेलक। ओतहि हम भानस विधाक सभटा गूड़ सिखलहुँ। मांछ, माँउस एवं विभिन्न प्रकारक व्यंजन बनबैक लूरि हमरा महराज टेन्ट हाउसे मे सिखा गेल। हम सदिकाल लोहिया-करौछक मल्ल युद्ध मे बाझल रही। नफा कमाइत रहल कपीन्द्रा आ हमरा सूच्चा दरमाहा भेटै मे आफद। कपीन्द्रा संगे मतान्तर भेल आ मतान्तर ओहि सीमा तक पहुँचि गेल जे बुझि लिअ लाठी-सोंटा निकलि गेल। हम महराज टेन्ट हाउसक नौकरी छोड़ि फेर सँ रिंच पकड़ि लेलहुँ। खैर अहि दुखनामा कैँ एतहि छोड़ि दिऔ। सोमनीक माय-बाप सर-सम्बन्धी मे मात्र हमहीं टा। ओ हमरे संग रहलि। सोमनी सेहो महराज टेन्ट हाउस मे भानस-भात मे पटु भ' गेलि। हँ, हँ खीर सोमनीए बनौलक हएँ।"

तिरलोकी गुरुक खिस्सा मे ने करुणा छल आ ने पीड़ा। मुदा पकड़ी अजीबे भाव-सागर मे डुबि-उगि रहल छल। वसंतक मधुरिमा आ सोमनीक जवानी सँ झहरैत पराग ओकरा असहाय बना देने छलै। ओ नजदीकी बढ़बैक लेल आर्द्र वाणी मे कहलक–"बस, बस, औरो कुछो कहै के जरूरत नहिखे। हमनी रौआ कैँ दुःख सुनली आ दुखी भइली। लकिन एक बात का हमरा खुशी भइल। हम जकरा खोज मे रहली हेएँ से रौआ मे मिल गइल। हमार बात धियान से सुनीं। पानापुर मे पांच बूथ बा। प्रिजाइडिंग अफसर से चपरासी, सीमा सुरक्षा के बंदूकधारी फोर्स से लठधर सिपाही, कुल मिला के पचास-साठ जन त' हेबे करिहन। हिनका सभ के रात का खाना आ सुबह का नास्ता का इन्तजाम हमरे कर' के पड़ी। ना, ना, एकरा सभ के खाइ-पिबैक खर्चा सरकार देले बारन। ई त' हमरा पार्टी का कन्डिडेट के तरफ से ओकरा सभ के मिलाबे खातिर एक किश्म का घूस बा। सरौं जब दाना चुगिहेएँ तो हमार कन्डिडेट के तरफ खिंचा जेबे करिहेएँ। डिटेल गप के अभी रौआ छोड़ दीं। केवल इतना बताओल जाउ जे रौआ से एकर बन्दोबस्त हो सकेला? पचास-साठ जन का भोजन तैयार करब छोटा-मोटा काम नहिखे?"

–"हयौ पकड़ी बाबू, जँ खर्चा भेटै त' हम पचास की सय मनुक्खक भोजन तैयार क' सकैत छी। हमर मदति मे सोमनी हमरा संगहि अछि।"

सोमनीक ब्लाउज ठाम-ठाम पर मसकल रहै। अच्छे लाल पकड़ीक नजरि ओही मे अटकल रहै। तिरलोकी गुरुक जवाब सुनि ओकरा अति प्रसन्नता भेलै। बट्टाक खीर कैँ समाप्त क' ओ बट्टा के नीचा मे रखलक। तखन अपन बैग खोलि पकड़ी करकरौआ सय रूपैयाक गट्टी निकालि तिरलोकी गुरुक हाथ मे देलक। गट्टीक मोटाइ देखि तिरलोकी गुरु अन्दाज केलनि जे सात-आठ हजार सँ उपरे हेतैक कम नहि।

अच्छे लाल पकड़ी बाजल—"रौआ इतना राखल जाँइ। इन्तजाम शुरू क' देल जाँइ। रातका भोजन करैक टेम मे हम आरो खर्चा देब। न, न गनइक काम नहिखे। चुनाव का टेम मे हमर पार्टी पानी माफिक रूपैया बहाबे ला। तबहिए ने हमर कन्डिडेट अगिला पांच बर्ख घी चुप्पर कँ रोटी खैहैएँ। एकटा आरो बात सुनल जाउ। रौआ कलकता जाइब आरो कोनो कारखाना मे नौकरी करब से हमरा तनिको पसिन नहिखे। टुमाही प्रखण्ड का ऑफिस का ठीक सोझा मे हमर दस कठ्ठा का लीची का बगान बा। रौआ ओही जगह अपन नीज का कारखाना खोल लीं। हम जमीन देब, रूपैया देब आरो सरकारी गहिंकी का इन्तजाम करब। जब पकड़ी आ गुरु मिल जइहँ त' कमीए कोन बात का रहत।"

पकड़ीक नजरि सोमनीक बुलकी मे फँसल झूला झूलि रहल छलै। पकड़ीक बात सुनि सोमनीक ठोर पर मुस्की पसरि गेलै। पकड़ी नेहाल भ' गेल। ओ अपन अगिला-पछिला जिनगी सोमनीक पाजेब पहिरल पयर पर राखि देलक।

अच्छे लाल पकड़ीक नजरिक कमानी सोमनीक फाटल आँगीक आओर गहींर तक जइतैक, मुदा ताही काल फट फटियाक आवाज आब' लगलै। पकड़ी फतुरनक खरिहान सँ आगाँ देखलक। खरिहान सँ थोड़बे हटल खरंजा बला सड़क छलै जे आधा किलोमीटर दूर पानापुर हाइ स्कूल तक गेल छलै। ओही ठाम मिडिल स्कूल तथा प्राइमरी स्कूल सेहो छलै। ओतहि चुनावक पांचो बूथ अवस्थित छल। एखन ओम्हरे सँ फटफटिया आबि रहल छल।

फटफटिया आयल। फटफटिया पर सँ दरोगा उतरल। ओ पयर पटकैत पकड़ी कँ सैलूट ठोकलक। पकड़ी पुछलकै—"तूँ के ह' भाइ?"

—"सरकार हमरा नै चिन्हलथिन। हम टुमाही थाना का इन्चार्ज बानी। रौए का किरपा भइल तभिए ने हमरा कँ थाना मे पदस्थापना भइल।"

—"एतना कइसे याद राखब। हाँ, हाँ याद पड़ गइल। तूँ सार डूमरी सिंह बा नू? अच्छा बताब,' कोन काम खातिर तूँ आइल बाटे?"

—"एखनी ड्रग इन्सपेक्टर कामता प्रसाद चुनाव मे मजिस्ट्रेट का ड्यूटी मे हथिन ने। हुनके हुकूम भइल हएँ जे सरकार के मोटर साइकिल पर बैठा के सरकार जहाँ-जहाँ जैथिन हुनका ल' जाइ के बा। सरकारे के खिदमत मे हम आइल बानी। सरकार चली। जे जे पंचायत अभिओ बाँकी बा वहाँ सरकार के हम ले जाइब।"

अच्छे लाल पकड़ी कने काल पहिने तक सोमनीक रूपक पसाही मे घेरायल छल। ओकरा एकाएक चुनाव द' मोन पड़लै। ओ तिरलोकी गुरु दिस तकलक। सोमनी ओतए सँ अदृश्य भ' चुकल छलि। पकड़ी तिरलोकी गुरु कँ सभ किछु बुझबैत अन्त मे कहलक—"बाँकी पंचायत मे भोटर लिस्ट आ खर्चा-पानी बांट के शाम तलिक हम

इहाँ पहुँच जाइब। खीर का सबाद अभियो मुँह मे भरले बा। अच्छे त' हम जात बानी।"

अच्छे लाल पकड़ी डुमरी सिंह दरोगाक मोटर साइकिल पर पाछाँ बैसल आ गेल। फतुरनक खरिहानक फूसक घर मे रहि गेला तिरलोकी गुरु आ सोमनी। कतहु सँ नकछेदी सेहो पहुँचि गेल। खरिहानक मालिक फतुरन बीचला च'र मे पटौनीक काज मे बाझल छल। ओकर सार गोखुला मशीनक पाट-पुर्जा लाब' शहर गेल छल। फतुरनक पत्नी धमदाहाबाली सेहो फुर्सति मे नहि छलि। फतुरनक उद्योग मे पटौनी आ दौनीक अलाबे आन-आन किश्मक व्यापार जोड़ल छलै। फगुआ मे भांग पिअब आ खस्सीक माँउस खायब अनिवार्य। तँ फगुआ सँ बहुत पहिने दस-बीस कोस घुमि-फिरि क' फतुरन एक दर्जन सँ बेसिए छागर कीन क' जमा क' लैत छल। धमदाहाबाली च'र मे पसरल रबियात फसिलक हरियर-हरियर गाछ-पात कँ नोंचि-नोंचि क' सभटा छागर कँ खुआबैत छलि। कनिएँ दिन मे छागर दोबर भ' जाइक। फगुआ मे अहि छागरक माँउस मनमाना दाम मे बेचि क' फतुरन दुगुणा-तेगुणा नफा कमाइत छल। एखन धमदाहाबाली ओही छागर के चराब' मे ओझड़ायल छलि। ओहुना खरिहान मे मरम्मतिक काज भ' रहल छलै। तखन धमदाहाबाली खरिहान मे की कर' जइतै। अहि भनसाक काज मे मौगीक कोन काज?

एकांत होइते तिरलोकी गुरु, सोमनी आ नकछेदी पटिया पर बैसि आपस मे गप-सप शुरू केलनि। जिज्ञासा होयब स्वाभाविके। प्रात भेने पानापुर मे प्रांतक चुनाव होयत आ तीन गोट नव लोक एकांती क' रहल छलाह, से किएक? तँ तीनूक परिचय प्राप्त करब जरूरी भ' गेल।

तिरलोकी गुरु जे दमकल आ थ्रेसरक मिस्त्री बनि पानापुर मे आयल रहथि आन कियो नहि, भूखन सिंह डकैतक दाहिना हाथ आ सम्प्रति चमेलीरानीक सिपहसलार बज्रनाथ रहथि। मैल नुआ, फाटल आंगी आ नाक मे बुलकी पहिरने सोमनी असल मे मैना छलीह। नकछेदी अग्निपुष्पक मसिऔत बनि पानापुर मे ढुकल छल। ओ छला कीर्तमुखक पांचम पुत्र तथा चमेलीरानीक फौजक महारथी सहदेव।

प्रांत मे पछिला तीन चरणक चुनाव सम्पन्न भ' चुकल रहै। अन्तिम चरणक चुनाव होब' बला छलै। चमेलीरानीक फौजक विभिन्न तरहक दस्ता जहिं-तहिं नियुक्त छल। हुनकर सभहक अभीष्ट मात्र एकेटा छल जे चुनाव मे धांधली तथा बोगस भोट नहि होब' दी। लोक शक्ति जागरण परिषदक कार्यक्रम प्रत्येक विधान सभा क्षेत्र मे सफलता पूर्वक चलि रहल छल। लोशजाप पार्टीक जीत करीब-करीब निश्चिते छल। तँ चुनाव मे गड़बड़ी रोकबाक निमित्ते चमेलीरानीक सभटा प्यादा साकाँक्ष भ' कार्यरत छल।

सहदेव एवं मैना खरिहानक दुनू कात अलग-अलग दिशा मे जा क' पहरेदारी कर' लागल। दू फांक भेल थ्रेसर मे सँ बज्रनाथ यंत्र निकाललनि। यंत्र मे तार जोड़लनि आ एकटा छोट मैक्रोफोन कान मे सटौलनि। बज्रनाथ सांकेतिक भाषा मे सूचना पठाब' लगलाह। संदेश प्राप्त केलनि निर्मली मे स्थापित नीहारिका रेडीमेड स्टोरक मालिक एवं के.जी.बी. मे कार्यरत बी.एन. भट्टाचार्य उर्फ भाटाजी। भाटाजी बज्रनाथक संदेश चमेलीरानी तक पहुँचौलनि। फेर चमेलीरानीक आदेश बज्रनाथ कँ कहलनि। बज्रनाथ यंत्र कँ समेटि सहदेव एवं मैना कँ लग मे बजा चमेलीरानीक आदेश दोहरौलनि– “रास्ता सही अछि। अच्छे लाल पकड़ी सँ सभटा काज होयत, पकड़ीक नांगरि पकड़ने आगाँ बढ़ैत रहू आ काज करैत रहू। जरूरत भेला पर अगिला आदेश पठाओल जायत।”

आब काज छल पकड़ीक पचास-साठि पूतक भानस-भातक इन्तजाम करब। पानापुर आर्थिक रूपे संभ्रान्त लोकक गाँव छल। ओतए बाजार छलै। चाउर दालि, पिआउज, मसल्ला, खेबा लेल पात, भोजन तैयार कर' लेल वर्तन इत्यादि सभ किछु भेटैत छलै। धमदाहाबाली कँ अधिक मूल्य द' क' दू गोट छागर कीनि लेल जेतै तकरो विचार क' लेल गेल। गाम मे अखनो जारनिक कोनो समस्या नहि छल। चूल्हा फतुरनक खरिहान मे बनि जेतै। तथापि अग्निपुष्प कँ मदति चाही।

नकछेदी बनल सहदेवक सर्वाङ्ग शरीर मे एखनो गर्दा पोतले रहनि। ओ अग्निपुष्प कँ ताकक लेल बिदा भेला। नकछेदी कँ गामक आरम्भे मे छौंड़ा सभहक जुलूस भेटलनि। पोखरिक पक्का घाट पर जुलूस बैसल छल। सभटा छौंड़ा गुलाब मिसिर पार्टीक कबूतर छाप बला टोपी पहिरने छल। ओतहि एक कात मे नकछेदी सेहो बैसि गेलाह। दू गोट छौंड़ा गीतक पहिल पांती कँ गाबि रहल छल–‘दुनियाँ मे आये हो तो जीना ही पड़ेगा।’ बाँकी सभटा छौंड़ा सम्मलित स्वर मे गीतक अगिला पांती कँ दोहरा रहल छल–‘जीवन है अगर जहर तो पीना ही पड़ेगा।’

अनवरत यैह गीत सभटा छौंड़ा गाबि रहल छल। सभहक आँखि तरेरल आ भों तानल रहै। नकछेदी कँ पूछला पर एकटा छौंड़ा फुसफुसा क' जवाब देलक–“अच्छे लाल पकड़ी बाकुटक बाकुट रूपैया परसलक। मुदा हमर सभहक नवजवान पार्टी कँ पानो खेबा लेल एकोटा टाका नहि देलक। हम सभ कबूतर छाप मे भोट नहि देबै। उपर सँ गुलाब मिसिरक सत्यानाश करक लेल महामृत्युन्जय मंत्रक जाप सेहो शुरू क' देलियै हेएँ। नकछेदी भाइ, अहूँ अष्टजाम मे सम्मलित भ' जाउ।”

बजनिहार छौंड़ा खीं, खीं करैत हँस' लागल। ओकर कबूतर छाप टोपी मे कौआक पाँखि खोंसल रहै।

–“मुदा ई त' महामृत्युंजय मंत्र नहि थिकै। ई त' सिनेमाक गीत थिक।

—"अनगौंआँ कँ बुद्धिक अभाव रहिते छै। हयौ नकछेदी भाइ, संस्कृतक श्लोके सँ ने सिनेमाक गीत बनैत छै। एतबो अहाँ कँ नइं बुझल अछि, अफसोचक बात। औरो प्रश्न नहि पूछब। हम अन्दाजे उत्तर देलहुँ अछि। सभ बातक सत्यापन भेले ताके की?"

बाज' बला छौंड़ा दिस नकछेदी सचेत भ' तकलनि। सभटा छौंड़ाक आचरण संदिग्ध रहै। नकछेदी ओतए सँ ससरि गेला। ओ अग्निपुष्प कँ ताकि रहल छलाह।

गामक मध्य मे बनल दुर्गा मंदिरक पछिला परिसर मे ब्रजनंदन बाबू मिथिला कल्याण एवं विकास परिषदक आपात बैसार बजौने छला। परिषदक कार्यकारिणी सदस्यक मिटिंग भ' रहल छल। ओतहि अग्निपुष्प गोगुल्स पहिरने बैसल छल। नकछेदी ओकरे बगल मे जा क' बैसि रहला।

धन्नू चौधरीक मुँह उसनल अल्हुआ सनक भेल छलनि। ओ ब्रजनंदन बाबू सँ कहि रहल छलाह—सम्पूर्ण ग्रामवासी गुलाब मिसिर कँ भोट देथि तकर परिषदक दिश सँ अपील तैयार करक भार अहाँ देने रही। हम त' एको मूठ्ठी शनेचरी कहियो कोनो मास्टर कँ देलियै नहि। तखन अग्निपुष्पक मदतिए अपील तैयार कयल। जा क' फनी कका कँ देलियनि आ निवेदन केलियनि—"ई अपील थिकै। एकरा देखियौ आ भाषा सम्बन्धी त्रुटि कँ सही क' दिऔ। फनी कका अपीलक चारि लाइन पढ़लनि आ पढ़िते अग्निश्च-वायुश्च भ' गेला। ओ कहलनि—"अहि मे हिज्जेक अशुद्धिक बाढ़ि छह। सम्बन्ध कारक चिन्हक कतौ प्रयोग भेबे ने कैल' अछि। सभटा बात हेतु-हेतु मदभूत मे कहलहक अछि जे सर्वथा अनर्गल एवं अमान्य अछि। तौँ मूर्ख छह, ब्रजनंदन मूर्ख अछि आ तौँ सभ मिलि क' महामूर्खक परिषद बनौने छह। हमर अमूल्य समयक तौँ नाश क' देल'। बूड़ि नहि तन।' एतबा कहि फनी कका अपील कँ कुट्टी-कुट्टी क' फारि फेकि देलनि।"

सभा मे सभ चुपे रहल। तखने परिषदक संयुक्त मंत्री बोल भाइ विश्वकर्मा कछमछाति बजला—"हम कोन तरहक निरर्थक काज मे ओझड़ा गेलहुँ अछि से नै कहि। भोर सँ एखन दुपहरिया भ' गेल मुदा हमरा एक गिलास गायक दूधक इन्तजाम नहि भ' सकल। हौ अग्निपुष्प तौँ एखन पानापुर मे अपन परिपत्यक झंडा गारने छह। तौँही हमर सहायता क' सकैत छह। कने जा, जा क' काली कांत ओझाक पत्नी सँ एक गिलास आ की अधहो गिलास गायक दूध मांगि क' आनि दए। हम परसौतीक विपत्ति मे फँसल छी।"

—"ई कैयम छी? फेर बेटिए भेल हएँ की?"

—"छठम कन्या कँ विधाता पठौलनि अछि।"

—"एखन सरकार बाप-बाप क' डिरिया रहल अछि। समाचारक बीचहि कइएक

टा उपायक परचार करैत अछि। कोनो एक उपाय क' क' बेटीक बाढ़ि कैँ किएक ने रोकि दैत छियै यौ बोल भाइ?"

—"केहन चपाट बला गप बजैत छह। सृष्टि कर्त्ताक काज मे बाधा देब सभ सँ पैघ पाप। बेटिए छथि तैँ की? भ' सकैत अछि जे अही मे सँ कियो आगाँ जा क' इन्दिरा बनि जाथि। भविष्य कैँ के देखल अछि।"

नाक परहक गोगुल्स कैँ आंगुर सँ ठेलैत अग्निपुष्प कहलक—हमरा एखन फुर्सति नै अछि। दूध माग' अहाँ अपनहि किएक ने जाइत छी?

—"जइतहुँ, अवश्य जइतहुँ। मुदा किछुए दिन पहिलका घटना थिक। पुजारीक पत्नी महरानी। ओ गाय कैँ बन्हिते ने छथि। हुनक गाय हमर नव जनमल सजमनिक लत्ती कैँ चरि गेल। उपराग देबा काल रंज मे हम हुनका कतेको ने गारि द' देलियनि। हम जँ अपने जायब त' निश्चय ओ दूध दैक बदला हमर देल गारि कैँ सूद-मूर संगे वापस क' देतीह।"

तखने टप द' बसुदेवा बाजल—"परिषदक अध्यक्ष बताबथु जे अच्छे लाल पकड़ी हिनका परिषदक निमित्ते कतेक टाका देलकनि? परिषदक उपमंत्रीक हैसियत सँ एकरा जनबाक अधिकार हम रखैत छी।"

धन्नू चौधरी पहिने सँ पिनकल छला। बसुदेवाक गप सुनि हुनका बेशुमार क्रोध भेलनि। ओ शब्दक कान अइँठैत बजला—"हेरौ अठन्नियाँ, परिषदक अही बैसार मे रिजोलूशन आनि तोरा उपमंत्री सँ कान पकड़ि क' निकालि देबौ।"

वसुदेवा रंज कैँ कन्ट्रोल नै क' सकल। ठार भेल आ थरथराइत बाजल—"परिषद ककरो बपौती नहि छियै। हमरा जे निकालत तकरा हम छाउर लगा सट्ट द' जी खींच लेबै। टुमाही प्रखण्डक साफी समुदायक हम महामंत्री छी। हमरा कियो कम क' नइं बुझए।"

अग्निपुष्प सहदेवक कान मे कहलक—"एतय एखन ताण्डव हैत। एतय सँ घसकैए मे नीक रहत नकछेदी भाइ।"

अग्निपुष्प आ नकछेदी गामक चौबटिया लग पहुँचला। पोखरीक ओइ पार सँ अबैत चिकरै-भोकरैक आवाज कैँ दुनू सुनलनि। अग्निपुष्प नकछेदी कैँ कहलक—"ई सभटा अच्छे लाल पकड़ीक खचरपाना छै। ओ जहँ-तहँ रूपैया छिटैत गेल हएँ। सुखदेव भाइ ब्रजनंदन बाबूक परिषदक संगठन मंत्री छथि। हुनको पकड़ी सँ एक गोट रूपैयाबला लिफाफ हाथ लगलनि। हुनक दुनू बेटा जे एखुनका हुनक सभ सँ पैघ दुश्मन अछि, लिफाफक रूपैया मे हिस्साक मांग पसारि देलक हएँ। सुखदेव भाइ हिस्सा दै लेल तैयार नै छथि। भोरहि सँ धमगज्जर मचल अछि। हम दुनू ओमहर नहि जायब, रस्ते बदलि क' चलब। एखन लोशजापक ऑफिस मे पहुँचब जरूरी अछि।

अपन पार्टी दिस सँ विधायक मे खड़ा छथ मल्लिक जी बिहारी। ओ टुमाही प्रखण्डक महानायक सेहो छथ। ओ सभ पंचायतक दौरा समाप्त क'आबि गेल होयताह।"

बभन टोल, सोनार टोल, मलहटोली कैँ पार करैत देरी मस्जिद। मस्जिदक आगाँ मुसलमानक टोल आ तकरा शुरूए मे परिषदक उपाध्यक्ष फजले खाँक पक्का मकान। फजले खाँ मुसलमानक अलावा सम्पूर्ण पानापुरक एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहथि। ओ दुनू कैँ आग्रहपूर्वक अपन दरवज्जा पर ल' जा क' कुर्सी पर बैसौलनि आ कहलनि– "अरे ओ अगनी पुपी! हम त' तोरे ताकै खातिर बिरजी ननन का मीटिंग मे जा रहल छलियै। अच्छा होलै तौँ हमरा दुरे पर मिल गेलहु। एकटा जरूरी बात कहै का ह'। लेकिन तोरा साथे ई अनारकली का आशिक के ह'? एकरा आगे भोट का बात हम कैसे करब।"

–"ई अनारकलीक आशिक नहि, हमर मसिऔत भाइ छथि। हिनकर नाम छनि नकछेदी। ई सज्जन लोक छथि। हिनका पानापुरक राजनीति सँ कोनो टा सरोकार नइं छनि। अहाँ कैँ जे किछु कहबाक हो हिनका सोझे मे कहि सकैत छी।"

नकछेदीक समूचा देह पर गर्दा रहबे करनि। ताहू पर सँ ओ अपन बतिसी पसारने अपन मुखमंडल पर एहन भाव पसारने छला जेना मिथिलांचलक ओ सभ सँ पैघ डपोरशंख होथि। फजले खाँ नकछेदी कैँ महामूर्ख मानैत अग्निपुष्प सँ कहलनि– "मुसलमान का वोट खसबै का फरमान उपर से आबै हइ। फरमान आ गइलै। फरमान रिसिभ केलिकै दरगाह का मौलवी। आज नवाज के बाद मौलवी फरमान सुना देलकै। तमाम मुसलमान के 'लोशजाप' पार्टी का छाप 'आग के लपट मे चमकैत सितारा' मे वोट डालकर ओकरा फतह करबै का फरमान हइ। कन्डिडेट का नामो मोलवी बोल देलकै–"मल्लिक जी बिहारी। उपर का फरमान हमरो मुराद के पूरा कर देलकै। हमरो मोन मे लोशजाप समा गइलै हेएँ। बोलहू अगनी पूपी, हमरा खबर तोरा कैसन लगल?"

खेलायल राजनीतिक पंडित जकाँ अग्निपुष्प मुँह बिचकौलक आ तखन बाजल– "हमरा केहन लागल? हम दलित जातिक लोक। हमरा लेल सभ पार्टी बरोबरि। हम ककरा भोट देबै तकर एखन तक हम फाइनलो ने केलहुँ हएँ।"

–"अइ देख'। अएँ हौ अगनी पूपी! तूँ कल का लौंडा हमरा झाँसा दै छह। हमरा रत्ती-रत्ती का खबर हइ। मुसहर टोली मे जे लोशजाप का ऑफिस हइ, ओइ मे जेतना जो कुछ हो रहलइ हइ, तकर खबर गाम का बाबू-बबुआन के ना हइ लेकिन फजले से कुछो छुपल ना हइ। साफ-साफ बात करह। वोट का कीमती बकत हइ, जिआदा टेम ना हइ। गुलबा तो प्रांत का नाश कर देलकै। हिन्दू-मुसलमान, सब के सब पिसा गइलइ। ओकरा बदलै के अभिए ने बखत हइ आरो तूँ टाल-गुल्ली खेलाइ छह। ई

अच्छा बात ना होलै रे अगनी पूपी।

फजले खाँ नकछेदी दिस तकलक आ फेर कहलक—"का हौ अनारकली का दामाद, हम सही कहलियै हइ की ना? मुसलमान जवान आरो इमान, दुनू का पक्का हुअ हइ।"

नकछेदी चुपे रहला। अग्निपुष्प बाजल—"बहुत नीमन बात अहाँ कहली। आब जनानी भोट खसबै लेल टायरगाड़ी चाही ने? ओइ लेल कतेक खर्चा अहाँ कैं चाही?

—"ई तूँ का-का इलजाम लगबै छहू। ओत' गुलबा से रूपैया टानै के वास्ते का बात ह'। तोहर नया पार्टी ह'। तोरा फजूल खर्चा करैक कूबत कहाँ से अइह। दोसर एगो बात। तोहर पार्टी के मुसलमान का वोट मुहब्बत के खातिर होइ ह' ना की रूपैया का खातिर। वैसे पकड़ी साला हमरो तीन हजार दे के गेलै ह'। ओतना मुसलमान का लौंडा का खातिर पूरा हइ।"

अग्निपुष्प फजले खाँक गप सुनि प्रसन्न भ' गेल छल। ओ कहलक—"फजले बाबू, पानापुरक पांचो बूथ मे मुसलमानक आठ सय चौबालिस भोट छै। अहाँ जँ प्रयास करबै त' एक-एक गोट भोट लोशजाप कैं भेट जेतै।"

—"अब तू पटरी पर आ के बात बोलै ह'। तोरा इतमिनान राखै के ह'। जर्रा-जर्रा से आती आवाज, मल्लिक बिहारी जिन्दाबाद। आब तूँ जाहू। इहाँ का काम हमरा पर छोड़ दहू।"

अग्निपुष्प एवं नकछेदी मुसहर टोली मे बनल 'लोशजाप'क ऑफिस मे पहुँचला। टुमाही विधान-सभाक उम्मीदवार मल्लिक जी बिहारी पहुँचल रहथि। सैकड़ो महिला-पुरुष हुनका घेरने हुनक कथन कैं ध्यान सँ सुनि रहल छल। धिया-पूता जे चारू भाग मे छिड़िआयल ठार छल सेहो शान्त आ साकाँक्ष छल। अग्निपुष्प संगे नकछेदी ऑफिसक भीतर गेला। ओतए साबिर बिहारी, प्रभुचंद बिहारी, कारी बिहारी तथा मीरा भारती, मधु भारती आ बुचिया भरती बैसलि छलि। सभहक सामने सतरंजी पर पांचो बूथक भोटर लिस्ट पड़ल छल।

अग्निपुष्प एकटा सादा कागत पर नकछेदी सँ पूछि-पूछि क' वस्तुक लिस्ट तैयार केलक। फेर ओ सभटा बिहारी एवं भारती कैं आदेश देलक—"अहाँ सभ नकछेदी बाबू संगे बाजार जाउ। लिस्टक मोताबिक खेबा-पिबाक सामग्री कीनल जेतै। उधारी नहि, सभटाक किमत नगदी मे नकछेदी दैत जेताह। अहाँ सभ मिलि क' सभटा वस्तु कैं फतुरनक खरिहान तक पहुँचा दिऔ। कियो कोनो टा प्रश्न नहि करब आओर हँ, साबिर बिहारी अहाँ जहूरबा खटीक कैं बजा क' फतुरनक खरिहान मे तिरलोकी गुरु लग पहुँचा दिऔ। प्रायः दू गोट खस्सीक माँउस जहूरबा कैं बनब' पड़तै। ओकरा मजदूरी भेटि जेतै। बचल एतुका काज से हमरा जिम्मा छोड़ि दिअ।

आठ बजे राति मे अच्छे लाल पकड़ी फतुरनक खरिहान मे वापस आयल। ओकर पहुँचा कँ डुमरी सिंह दरोगा फटफटिया लेने वापस चलि गेल। पकड़ी खाट पर अपन आसन पकड़लक। तिरलोकी गुरु रिपोट देब शुरू केलनि—लगभग साठि जन भोजन क' चुकला हए...।

बीचहि मे पकड़ी हुनका रोकैत कहलक—"हँ, हँ, हमनी के सभ पता बा। हम स्कूले से आ रहली बानी। मांस-भात खा-खा के सभ अघा के गइलन हेएँ। सभ रौआ का प्रशंसा मे पुल बाँध रहलन हेएँ। जान' ता गुरु ई हमर कमाल बा जे हम तोरा के चुनली। हम त' रौआ के देखली आ बूझ गइली जे गुरु कोनो मामूली आदमी नहिखे। गुरु मे गुण बा आओरो ओ हमर काम मे फिट बा। गुरु, तूँ त' हमरा के निहाल कर देल'। आब पोलिंग बूथ का सभ सार हमरा मुठ्ठी मे बा। एलेक्शन मे जब हमनी जीतब ने, तब तोरा इनाम देब, बिसरब ना।"

पकड़ीक आँखि चारूकात घुमि रहल छलै। ओ सोमनी कँ ताकि रहल छल। ओकर कोढ़ी सन फूलल पेट फूलि आ सटकि रहल छलै।

सोमनी त' नहि, अग्निपुष्प पकड़ीक आगाँ मे आबि क' ठार भेल। ओ अपन गोगुल्स कँ नाकक उपर ठेलैत बाजल—"सिरीमान जेना-जेना आदेश देली तेना-तेना हम कइली। दस गोट नीमन लड़िका कँ कबूतर छापक पोलिंग एजेन्ट बना देली हेएँ। एक हेंज छौंड़ा सभ कँ तैयार क' देली हेएँ जे भोटर कँ चरिया-चरिया क' बूथ पर ल' जायत। मुदा पकड़ी बाबू, अहाँ जे रूपैया देलियै सभटा निघटि गेल। काल्हि सेहो खर्चा हेबे करतै तकर अहाँ इन्तजाम क' दिऔ।"

—"हँ, हँ सभटा इन्तजाम ने हो जेतै रे बबुआ, घबड़ाइ का सवाले नहिखे।" पकड़ी तिरलोकी गुरु दिस देखैत पुछलक—"पहिने रौआ बताबीं जे खर्चा-बर्चा का का पोजीशन बा?"

तिरलोकी गुरु संयत भेल जवाब देलनि—"एक त' ओहिना समय महग आ ताहि पर सँ चुनावक गर्मी, लूट, लूट मचल अछि पकड़ी बाबू। दोबर, तेबर मूल्य चुका क' वस्तु कीनल अछि। धमदाहा बालीक छोट-छोट तीन छागरक दाम सोझ क' तीन हजार चुकाब' पड़ल अछि। हिसाब नै केलियै अछि, मुदा अहाँक देल सभटा टाका भुस्सा भ' गेल आ तखनो दोकानक उधारी छैहे।

—"बस, बस। हम सभ बात बुझ गइली। चुनावक टेम मे ककर बाप का दिन बा जे हिसाब राख सकिहएँ।"

पकड़ी बैग सँ नोटक एकटा थाक निकाललक। ओकरा मरोरि क' दू फांक केलक। बड़का फांक गुरूक हाथ मे आ छोटका फांक अग्निपुष्पक हाथ मे द' क' बाजल—"हमर पार्टीक उम्मीदवार छथ गुलाब मिसिर का दरबार का तुरूप चौहान,

सहकारिता मंत्री। तबे खर्चा का कमी कैसन होत। रौआ, मन लगा के काज करीं आ खर्चा का परवाह नहिखे करीं।"

थोड़े छौंड़ा ओतए पहुँच गेल छल। ओही बीच मे वसुदेवा सेहो छल। सही अवसर देखि ओ एक डेग आगाँ बढ़ल आ तराक सँ बाजल–"सीरीमान, कने हमरा सन लाचार, गरीब आ दलित पर ध्यान दिऔ। बंटबारा चालू अछि आ हमरा एको गोट पाइओ ने भेटल अछि। हमहूँ त' कबूतरे छापक भोटर छी।"

छौंड़ा सभहक हजूम सँ नकछेदी प्रतिवाद केलनि–"अठन्नियाँ सरासर झूठ बजैत अछि। ई तराजू छापक पोलिंग एजेन्ट बनि चुकल अछि। एकरा तकर खोराकी सेहो भेटि चुकल छै।"

वसुदेवा पानापुरक खिलौना छल। कनिको चाभी अइंठला सँ ओ घंटो तक नाच करैत छल। मुदा एखन त' नकछेदी वसुदेवाक चाभीक स्प्रिंगे तोड़ि देलनि। वसुदेवा नकछेदी पर झपटल–"ई सार भोरे सँ हमरा पर कन्हुआयल अछि। ठहरि जो रे खचराहा। हम तोहर पंच्चर निकाली दैत छियौ तखन बाप-बाप करिहेएँ।"

भीड़ मे सभटा छौंड़ा जुआयले छल। मखौल कर'क सभ कँ अवसर भेटलै। सभटा छौंड़ा मिलि वसुदेवा कँ लोकि लेलक आ पिहकारी दैत ओकरा लेने-देने फतुरनक खरिहान सँ बाहर चलि गेल। कतहु सँ सोमनी प्रगट भेलि आ पकड़ीक हाथ मे चाहक कप द' ओतहि ठार भ' गेलि। खरिहान मे पैट्रोमैक्स लाइट जड़ि रहल छलै। इजोतक कोनो कमी नहि रहै। पकड़ीक नजरि सोमनीक फाटल आंगीक आर-पार होब' लागल। पकड़ी भरि दिन गुलाब मिसिरक ताबेदारी करैत-करैत थाकि क' कदिमाक भुजिया बनि चुकल छल। मुदा सोमनी कँ अबिते ओकर ठेही उतरि गेलै। उसनल करैलक फाँक जकाँ ओ सोमनी कँ निहार' लागल।

तखने एकाएक फतुरनक खरिहान मे जुलूसक नारा सुनाइ पड़' लागल। नारा अन्हरिया रातिक छाती कँ चिरैत आबि रहल छल–"बोल बम का नारा है, सीढ़ी छाप हमारा है। जो हमसे टकराएगा, चूर-चूर हो जाएगा।"

नारा सुनतहि अच्छे लाल पकड़ीक गात मे भयक भूत पैसि गेलै। ओ कँपैत तिरलोकी गुरु कँ कहलक–"हमनी के बुझल बा, ई रूपा यादव का जुलूस ह'। ई सब मुँह से कम, लाठी से अधिक बात करेला। सुनीं ओ गुरूजी बाबू, एकरा से हम टक्कर लेब तकर पोजीशन मे हम नहिखे बानी। रौआ, सीढ़ी छाप जुलूस के ओम्हरे रोकै का इन्तजाम करीं।"

–"बस, बस। अहाँ मिसियो भरि चिन्ता नै करू यौ पकड़ी बाबू। हम पांच गोट नमरी धमदाहा बाली कँ सकाले द' क' आदेश द' देने छियै 'खबरदार, कबूतर छाप छोड़ि आन कियो तोहर खरिहान मे पयर नै दिअय।' धमदाहा बालीक गारि मे

बन्दूकक गोली सन मारुक क्षमता छैक। मात्र एक गोट गारि सँ तीन-चारि मनुक्खक छाती छलनी भ' जाइत छै। ओ सदिकाल सय सँ बेसी गारि अपन स्टॉक मे रखैत अछि। सीढ़ी छापक कोन कथा, बज्र छाप सेहो अहि खरिहान मे पयर नहि राखि सकैत अछि। पकड़ी बाबू, अहाँ इतमिनान सँ चाह पिबू, अपन कनस्तर साफ करू आ हाथ-पयर धोउ। ताबे हम अहाँक खयबाक लेल पात पर माँउस-भात परसै छी।"

पकड़ीक मोन ठेकाना पर एलै। ओ चाहक कप नीचा मे राखि बैग सँ नोटक गट्टी निकाललक। तिरलोकी गुरुक हाथ मे नोटक गट्टी रखैत बाजल—"चुनावक काम मे खतरे-खतरा। कहूँ से कियो अइहन आ सरौं कपारे ढाह दिहन। मुदा गुरुजी बाबू, रौआ पर हमर पूरा भरोसा बा। रौआ जिम्मा उठा ले लीं तबे हमरा कोनो चिन्ता करैक जरूरत नहिखे।"

अच्छे लाल पकड़ीक नसीब मे माँउस-भात खायब नहि लिखल छलै। ताही घड़ी एकटा एम्बेसेडर फतुरनक खरिहानक आगाँ आबि क' ठार भेलै। कारक उपर सर्च लाइट लागल रहै जकर फोकस चारूकात छिड़िया गेल छलै। सोमनीक पायर महक पाजेब चमकि उठलै। सोमनी अन्हार मे चलि गेलि।

कार सँ एक गोट मनुक्ख उतरल। मानि लिअ ओ सहकारिता मंत्रीक पी.ए. छल। पी.ए. पकड़ीक खाट लग पहुँचल आ पांच मिनट तक ओकर कान मे फुसफुसाइत रहल। पकड़ी बिजलीक करेन्ट बला फुर्ती सँ ठार भेल आ तिरलोकी गुरु कैँ शोर पाड़ि लग मे बजौलक आ कहलक—"बड़ा दुखक घटना घटित हो गइल हेएँ। आब अइ देश मे प्रजातंत्रक रक्षा कोना होत? कोनो सार हमर कन्डिडेट चौहान पर बम से हमला कर देलक हेएँ। परमेसर के किरपा से चौहान बच गइलन हेएँ, लेकिन वातावरण टेन्स हो गइल हेएँ। हमरा तुरन्ते जाइ के पड़ी। हम कब तक लौटब तकर ठेकाना नहिखे। तब तलक रौए इहाँ का इन्चार्ज रहब। सभ बात त' रौआ कैँ बुझले बा।"

पकड़ी बैग सँ नोटक एकटा आओरो गट्टी निकालि तिरलोकी गुरुक हाथ मे रखलक आ कार मे बैसि बिदा भ' गेल।

पकड़ीक गेलाक बाद अन्हार मे बैसलि सोमनी लग नकछेदी पहुँचला आ ओकर कान मे कहलनि—"हे गै सोमनी, किछु हमरो लेल बचा क' राख। तोहर पजेबक खनक सँ हमरो मोन डोलि गेल हेएँ।"

सोमनी चिचिआइत बाजलि—"गुरु जी, हमरा बचाउ। नकछेदियाक आचरण विश्वास योग्य नहि छै। कहूँ किछु अनर्गल ने क' दिअए।"

तिरलोकी गुरु भभा के' हँसि देलनि। सोमनी बनल मैना एवं नकछेदी बनल सहदेव पति-पत्नी छलाह से सभ कैँ बुझले अछि। दुनू एखन मिशन पर रहथि तखन आदर्शक अलगे परिभाषा बनि गेल छल। केहनो विकट परिस्थिति हौउक, थोड़-बहुत

हँसी ठठ्ठा कर्त्तव्यक पूर्ति मे सहायके होइत छैक।

प्रांतक जाहि भाग मे टुमाही विधान-सभा छल ततय ने नहरि छल आ ने सिंचाइक कोनो साधन। मुदा सरकार निर्मित एरिगेशन विभागक रेस्ट हाउस डेग-डेग पर छल। मखना रेस्ट हाउस टुमाही प्रखण्ड सँ कनिके पश्चिम मुख्य सड़कक कात मे छल। एकर इन्चार्ज छला जूनियर इन्जीनियर बैद्यनाथ पूर्वे। पूर्वेक एक्सक्यूटिभ हुनका गूढ़ मंत्र सिखा गेल रहथिन—"हमर तोहर बुनियाद तनखाह पर नहि, ठीकाक कमीशन पर आधारित अछि। हमरा सभहक रक्षाक लेल भक्ष नहि, मगरमच्छक वरदहस्तक सदिकाल आवश्यकता अछि। चुनावक समय निर्वाचन आयोग रेस्ट हॉउसक उपयोग कर' लेल उम्मीदबार कँ बर्जित कयने अछि। मुदा मगरमच्छ किश्मक उम्मीदवार ऐन-केन प्रकारे रेस्ट हाउस मे पहुँचिए जाइत अछि। जँ ओहन मगरमच्छ रेस्ट हाउस मे पहुँचि जाय त' ओकर नीक जकाँ सत्कार होबक चाही। जरूरत भेला पर वैह मगरमच्छ हमर सभहक उद्धारकर्ता होइत अछि।

चौहान पुरना सोशलिस्ट छल आ आधुनिक चुनाव-युद्धक विद्या ओ मायक पेटे सँ सिखि क' जनमल छल। केन्द्र सँ आयल टुमाही विधान-सभाक पर्यवेक्षक छल विलियम डी कोस्टा। चौहान विलियम डी कोस्टा कँ फँसबैक ब्योंत मे लागि गेल छल। साँझक समय असल पियाकक मुँह दिया-बातीक चुक्का जकाँ गोल बनि जाइत छै। चौहान स्वयं पहुँचल पारखी छल। ओ विलियम डी कोस्टा कँ चिन्हि गेल आ अवसर देखि ओकरा गछाड़लक। शुरू मे विलियम डी कोस्टा नव कनियाँ जकाँ आना-कानी केलकै। मुदा अन्त मे चौहान लग समर्पण क' देलक।

चुनावक ठीक एक दिन पहिने टुमाही विधान-सभाक उम्मीदवार चौहान एवं पर्यवेक्षक विलियम डी कोस्टा मखना रेस्ट हाउसक एक सजल एयर कन्डिशन कमरा मे मदिरा सेवन क' रहल छल। चखना मे ललमुँहा रहुक पेटी रहै आ अतिरिक्त सेवा लेल कोठलीक दरबज्जाक ओहि पार बैद्यनाथ पूर्वे ठार छल। साँझ भेले रहै। कर्णभेदी आवाज भेलै। समूचा रेस्ट हाउस थरथरा गेलै। बाहर मे कियो चिचिआयल-बाप रौ बाप, ई त' बम फुटलै अए। पड़ाइ जो रे भाइ सभ, पड़ा क' जान बचा।

कुकुर कहूँ आगि मे पाकलए? चौहान आ डी कोस्टा रेस्ट हाउस सँ पड़ायल। दुनू अलग-अलग अपन-अपन कार मे बैसल। आइ-काल्हि अखबार तथा टी.भी.क संवाददाता जमीनक तर-उपर मौजूदे रहैत अछि। मखना रेस्ट हाउस मे भेल बम-आक्रमण काल जँ चौहान एवं डी कोस्टाक उपस्थिति दर्ज भ' जाइत त' बुझि लिअ फराके तरहक झंझट ठार भ' जाइत। तँ फुल स्पीड मे दुनूक कार मुख्य सड़क पर जा रहल छल। एकमात्र अभीष्ट रहै जे मखना रेस्ट हाउस सँ जतेक दूर जा

सकी ततेक नीक।

मुदा चौहान साधारण मनुक्ख नहि छल। सोशलिस्टक आगि मे पाकल ओ पुरान राजनीतिक खेलाड़ी छल। ई बमक हमला छल राजनीति शतरंजक चालि मे घोड़ाक सह। ई सहक चालि चलनिहार के छल? चौहानक कान मे सनसनी पैसल छलै। ओकर मस्तिष्कक सभटा तंतु मे बिहारि उठि गेल रहै। रेलवे गुमती कैँ पार करैत चौहान ड्राइभर कैँ वामा घुमैक निर्देश देलक।

लगभग चारि कोस आगाँ रूपा यादवक भातिज मटकू यादवक गाम सुगना रहै। मटकू यादव अपन काका कैँ पराजित क' वर्तमान मे टुमाही विधान-सभाक सीटिंग एम.एल.ए. छल। मुदा अहि बेर ओकरा पार्टीक टिकट नहि भेटल रहै। अन्तिम समय मे मटकू यादव कैँ बजा क' गुलाब मिसिर कहने छलै—"चौहान चाहता है तो उसी को टुमाही विधान-सभा का उम्मीदवार बनने दो। घबड़ाने बाली बात नहीं है। तुमको एम.एल.सी. में खींच लिया जाएगा।"

चौहान अहि प्रांतक तेसर विधानसभाक एलेक्शन लड़ि रहल छल। सभ बेर ओ अपन क्षेत्र बदलि लैत छल। गुलाब मिसिरक दरबारक रत्न छल चौहान। ओकरा चुनाव क्षेत्र बदल' मे कोनोटा समस्या नहि होइत छलै। मुदा मखना रेस्ट हाउस मे बमक हमला, की मटकू यादवक चुनाव क्षेत्र छीनि क' ओ गलती त' नइं केलक? संशय पहिने सँ छलै। एखुनका बमक आक्रमण ओकर संशय कैँ सत्य मे बदलि देलकै।

मटकू यादवक दूरा पर कोनो हलचल नहि, मरघटक शान्ति व्याप्त रहै। संयोग सँ बिजली छलै। समूचा खरिहान मे मात्र एकटा बल्ब जरि रहल छलै। बाँकी सभटा स्थान अन्हार मे डुबल छलै। चौहानक कार मटकूक कम्पाउन्ड मे प्रवेश केलक। आवाज सुनि मटकू अपन कोठली सँ बाहर आयल। मात्र औपचारिकतावश ओ चौहानक स्वागत केलक। चौहानक चेहरा पर बदहवासी आ मटकूक चेहरा पर हारल खेलाड़ीक वेदना। दुनू कोठली मे गेल आ सोफा पर बैसल।

वार्तालाप चौहान आरम्भ केलक—"तुम्हारी सीट मैंने नहीं छीनी। फैसला मुख्यमंत्री का था। पार्टी का सर्वेसर्वा तो वे ही हैं। तुम्हें वे एम.एल.सी. बनायेंगे इसका आश्वासन दे चुके हैं। फिर इतना गुस्सा क्यों?"

मटकू जवाब देलक—"हम गुस्सा मे नै छी। रंज होयबाक हमरा अधिकारो नहि अछि। रहल नेताजीक गप। ओ हमरा एम.एल.सी. बना देबे करता। राजनीति मे एहन आश्वासन भेटिते रहैत छै। समयक संग आश्वासन भसिया जाइत छै। हम पार्टीक समर्पित कार्यकर्त्ता छी आ रहब। हम तन-मन-धन सँ अहाँक सेवा क' रहल छी। तखन की अहाँक संशय उचित अछि?"

वस्तुस्थिति की छलै तकर ज्ञान चौहान कैँ छलै। ओ अपन अकुलाहट कैँ दाबि क' बाजल—"अभी मेरे उपर बम का हमला हुआ है।"

—"हँ, हँ, टी.भी.क समाचार मे देखलहुँ अछि। ताहि काल की अहाँ मखना रेस्ट हाउस मे छलहुँ। अगर अहाँ छलियै त' समाचार मे अहाँक चर्चा किएक ने भेल?"

चौहान अपमान कैँ घोंटि गेल आ सोझ प्रश्न केलक—"कौन मुझ पर बम का हमला कर सकता है?"

—"कहब कठिन अछि। हम आ हमर काका, रूप यादव अहिंसक छथि। एकरा संसार भरिक लोक जनैत अछि जे राजनीति मे रहितहु हमरा सभ कैँ हिंसा सँ परहेज अछि। तखन मखना रेस्ट हाउस पर बम के फेकलक तकर अनुमानो करब हमरा लेल असंभव अछि।"

चौहान आ मटकू अलग-अलग सोफा पर बैसल छल। दुनूक चेहरा पर विभिन्न तरहक भावक छिना-झपटी भ' रहल छलै। कोठलीक बाहर बहुतो लोक जमा भ' गेल छलै तकर आभास होब' लागल रहै।

थोड़े काल तक चुप रहलाक बाद चौहान शक्त वाणी मे मटकू सँ कहलक—"तुम गुस्सा मे हो यह मैं समझ रहा हूँ। लेकिन तुम एक बात को जान लो। तुम्हारे लिए अच्छा रहेगा। हो सकता है कि मैं एलेक्शन हार कर भी राजनीति में जिन्दा रह जाउँ। लेकिन तुम मेरे हारने के बाद एम.एल.सी. कभी भी नहीं बन पाओगे। तुम्हारी राजनीतिक मौत हो जाएगी।"

चौहानक गप मटकूक माथ मे ठनाक सँ बजरलै। चौहानक कहब शत प्रतिशत सही छल। चौहान एलेक्शन हारलोक बाद जिबैत रहि जायत। ओ पछिला पन्द्रह बर्ख सँ मनीस्टर छल। ओ गुलाब मिसिरक बहुत निकटक सहयोगी छल। ताइ पर सँ ओकरा लग अम्बोहि धन संग्रह हेबे करतै।

मुदा ओ त' एखन तक प्रखण्डक राजनीति सँ आगाँ नहि बढ़ि सकल छल। राजधानीक राजनीति मे ओकर पहचान नइंक बरोबरि छलै। हे ईश्वर! मटकू कैँ किछु करक चाही।

मटकू जागि गेल। ओ फुर्र फर्रा क' ठार भेल आ कहलक—"काल्हि सात बजे भोर मे भोट खसनाइ शुरू होयत ने? एखन त' राति भरिक समय छै। टुमाही विधान-सभाक गाम-गाम, टोल-टोल मे हमर भोटर भरल अछि। मात्र सभ कैँ सचेष्ट करबाक काज छै। एखनहुँ बहुत समय छै। हम तैयार छी चौहान बाबू। मुदा हमरा धनक कमी अछि। जँ थोड़ेक धन...?

चौहान मटकूक आँखि मे एक किश्मक चमक देखलक जाहि मे ओकर जीतक झंडा पहरा रहल छलै। एखन तक ओ मटकू कैँ बादे क' क' चुनावक प्रचार क'

रहल छल। ओकरा अच्छे लाल पकड़ीक दक्षता पर पूर्ण विश्वास रहै। मुदा बम बला घटनाक बाद ओकर माथक कपाट खुजि गेल रहै। एखन मटकूक सहायताक बिना काज होब' बला नहि छलै।

चौहान अपन कार सँ बैग मंगबौलक। फेर कोठली कैं बन्द क' मटकू सँ कहलक, "इस बैग मे बाइस लाख रूपैया है। गुलाब मिसिर के पार्टी मे क्या कभी धन की कमी हो सकती है? तुम सारा रूपैया ले लो और अपने ढंग से खर्च करो। मैं सिर्फ इतना चाहता हूँ कि तुम होश और जोश में आ जाओ। मैं आज भी तुम्हारा हूँ और कल भी तुम्हारा ही रहूँगा। मटकू, अभी मेरा और तुम्हारा इम्तहान की घड़ी है।"

पता नहि कोना खबरि प्रसारित भेलै? मटकूक सभटा पठ्ठा ओकर दरबज्जा पर अपनहि आप जमा भ' गेलै। आधा घंटाक भीतरे अच्छे लाल पकड़ी सेहो ओतए पहुँच गेल। सभहक बैसार भेल। सभहक काज अलग-अलग बाँटल गेल। सभ कैं टाकाक खोराकी देल गेलै। मटकूक तीन दर्जन पठ्ठा सोलह मोटर साइकिल पर लदि क' क्षेत्रक विभिन्न मार्ग लेल कूच केलक।

अच्छे लाल पकड़ी करीब आठ बजे दिन मे वापस फतुरनक खरिहान मे पहुँचल। ओ थाकि क' थकुचा भ' गेल छल। तिरलोकी गुरु हड़बड़ाइत पकड़ीक खाट लग पहुँचला आ रिपोर्ट देब शुरू केलनि—"करीब चारि छीट्टा पूड़ी आ दू छीट्टा आलूक दम पोलिंग बूथ पर हम पठा चुकल छी। भोट खसेबाक काज शुरू भ' चुकल छै। आब आरो कतबा पूड़ी-तरकारी पठाओल जाए? हम श्रीमानक हुकूमक गुलाम छी।"

—"ना हौ गुरु, आब आरो पूड़ी-तरकारी पठाबै का जरूरत नहिखे। सरौं सभ केतना खैहन।"

पकड़ी खाट पर चित पड़ल छल। औंघी ओकरा पछाड़ने छलै। बजिते-बजिते ओकर आँखि मुना गेलै। पकड़ीक नाकक फोंफी सँ फों-फोंक ध्वनि बहार होब' लगलै।

फतुरनक खरिहान सँ आधा किलोमीटर दूर पानापुरक हाइ स्कूल, मिडिल स्कूल तथा प्राइमरी स्कूल एकहि कम्पस मे छल। पानापुर धनिक लोकक बस्ती, तैँ अही गामक चंदा एवं प्रयास सँ सभटा स्कूलक निर्माण भेल छलै। जखन प्रजातंत्र व्यवस्था मे स्थापित सरकार कैं शिक्षाक प्रति जागरूकता बढ़लै त' सभटा स्कूलक सरकारीकरण भ' गेलै। तकर प्रतिफल ई भेलै जे सभटा स्कूलक देवाल ढहि-ढहि क' खसि पड़लै आ ओकर छत कैं अकाश गिरि गेलै। ओ त' भला होअय प्रखण्डक वी.डी.ओ. कैं। ओ खरही-खर-बाँसक प्रबंध केलक, मांगि-चांगि क'

टेबुल-कुर्सी जमा केलक, खैरात बला तिरपाल अनलक आ टाट लगा-लगा क' पांचो बूथक स्थापना केलक। ओतहि एखन शांतिपूर्ण चुनाव भ' रहल छलै।

राति मे मखना रेस्ट हाउस मे बम-कांड भेल छल। तेँ सरकारक सभटा अफसर चुस्त-दुरुस्त आ सक्रिय भ' गेल छलाह। टुमाही विधान-सभा मे एक सय बियालिस बूथ, सभ कैँ अति संवेदनशील घोषित क' देल गेल। अतिरिक्त सैन्य दलक इन्तजाम कयल गेल। उपद्रवी कैँ देखिते गोली मारि देबाक आदेश सेहो निर्गत क' देल गेल छल।

बूथ सँ बहुत हटल आमक गाछी छलै। लोशजाप पार्टी कैँ छोड़ि बाँकी सीढ़ी छाप, तराजू छाप, कबूतर छाप, मुर्गा छाप, उगैत सूरज छाप आदि आन-आन सभटा छापबला पतियानी मे अपन-अपन बैनर टाँगि जगह पकड़ि लेने छल। सभहक आगाँ बूथ लिस्ट, सादा कागत तथा पेन्सिल राखल रहै। तराजू छापक इन्चार्ज वसुदेवा अपन नवकी कनियाँ कैँ बिआहबला पटोर साड़ी पहिरा क' अपना बगल मे बैसौने छल। ओकरा अपन कनियाँक सुन्दरता पर बड़ गर्व रहै। भ' सकैत छल जे कियो ओही कारणें तराजू छाप मे भोट द' दैक। तराजू छापक बगले मे कबूतर छापक खेमा छल। ओतए धन्नू चौधरी एसगरे बैसल छलाह। भोरे ओ डबल डोज मे भांग खा क' आयल रहथि। हुनकर कंठ सुखा गेल रहनि। बगल मे बैसल वसुदेवा एवं ओकर कनियाँ कैँ देखि हुनकर रंज टिकासन पर छल। मुदा चुनाव अधिकारिक डरे ओ चुपचाप छला। कोन ठेकान, कोनो सिपाही आबि गोली ने चला दिअए। एखन तक भोट खसबै बला मे एकोटा टिटही बसंतो ने कबूतर तथा तराजू छाप दिस गेल छल।

भोट देनिहारक हुजूम त' जमा छल मुसहर टोलीक 'लोशजाप' कार्यालय मे। चुट्टीक धारी जकाँ पतियानी मे मुसहर टोली सँ बूथ दिस लोक जा रहल छल। सभहक हाथ मे ओकर नामक क्रमांक संख्या एवं परिचय पत्र रहै। फजले खाँ फराके व्यस्त छलाह। ओ एक-एक टा मुसलमान भोटर कैँ बुझा रहल छलथिन– "कन्डिडेट का नाम ह' अविनाश कुमार मल्लिक। हुनकर हनि आग के लपट मे तारा छाप। बस एक नम्बर मे तारा छाप हइ ओकरे बटन दाबै के ह'।" लोशजाप भोटरक पांतीक दृश्य प्रजातंत्र कैँ दीर्घायु बना रहल छल।

लगभग एक बजे मोटर-साइकिल सँ दू गोट मनुक्ख फतुरनक खरिहान मे पहुँचल। एकटा छल कामता प्रसाद ड्रग इन्सपेक्टर। ओ एखन मजिस्ट्रेटक ओहदा पर छल। पानापुरक पांचो बूथ ओकरे चार्ज मे रहै। दोसर छल सीताराम अकेला। अकेलाक अँग्रेजी अनुवाद भेल ओनली। ओ पी.डब्ल्यू.डी. क एकाउन्ट्स क्लर्क छल। एखन ओनली एक बूथक प्रिजाइडिंग अफसर छल।

कामता प्रसाद एवं ओनली बदहवास भेल आयल छल। अच्छे लाल पकड़ी अखरा खाट पर चीत भेल फोंफ काटि रहल छल। फतुरनक खरिहान मे तिरलोकी गुरु, नकछेदी एवं सोमनी सेहो छलि। मुदा तकरा दिस तकबाक होश ओहि दुनू बंधु कैँ नहि छलनि। पकड़ी कैँ सुतल देखि दुनू आगत मनुक्ख कछमछ कर' लागल। ओकर सभहक बेगरता कैँ जरूरी बुझि तिरलोकी गुरु मदति केलथिन। ओ एक चुरूक पानि पकड़ीक नाक पर छिटि देलथिन। पकड़ी फुरफुरा क' उठल आ फूलल आँखिए कामता प्रसाद एवं ओनली दिस देखैत, पूछलक–"का बात है? भोटबा ठीक से गिर रहल बा की ना?"

पहिल वायु त्याग ओनली केलक–"एखन तक एकोटा भोट कबूतर छाप मे नहि पड़ल हएँ।"

कामता प्रसाद केलक–"हम पांच बूथक इन्चार्ज छी। पांचो बूथ मे पांचो गोट भोट कबूतर छाप कैँ नहि भेलैए।"

ओनली अपन व्यथा प्रदर्शन करैत आगाँ कहलक–"हम अपना बूथ मे जाहि टेबुल पर भोटर मशीन रखबौलहुँ तकर पाछाँ टाट मे अइना टाँगि देलियै। हम अपन कुर्सी अहि हिसाबे रखलहुँ जे भोटर मशीनक छाँह साफ-साफ हमरा देखाइ पड़ि जाए। बटन दाबि क' के कतए भोट देलक हएँ तकर जानकारी तखने हमरा होइत रहल अछि। सत्य मे एखन तक एकोटा भोट कबूतर छाप मे नै पड़लैए।"

पकड़ीक कपार पर बज्रपात भेलै। ओकर ललाट पर चिंताक डरीर खिंचा गेलै। ओ दुनू हाथे माथ पकड़ि क' हकमैत बाजल–"ई का हो गइल हो भगवान! का गुलाब मिसिर का सूरजे डूब गइल। ई' त' गजबे भइल। हम अब का करब? हमरा त' फुराइए ने रहल बा।"

भारत आजाद भेल। संविधान बनल। प्रजातंत्र कायम भेल। भोट देबाक अधिकार सभ कैँ भेटलै। मुदा लिअ, यज्ञक आरम्भे मे राक्षसक उपद्रव शुरू भ' गेल। प्रजातंत्रक सत्यानाश कर' लेल पकड़ी सदृश अनेक दानव अहि धरती पर जनमि गेल। तैँ एतुका प्रजातंत्र गुलाब मिसिर सन भ्रष्ट व्यक्तिक चेरी बनि गेल। हम लूटै छी, लूट' क सिद्धान्त मूल-मंत्र बनि गेल। एतुका जनता कैँ एकर जानकारी सभ दिन रहलै। मुदा पकड़ी सनक दानवक मुकाबला करबाक साहस आ की क्षमता ओकरा कहियो ने भेलै। जनता कराहि उठल, प्रजातंत्र कराहि उठल आ समूचा प्रांतक कराह सँ दिशा-दिशान्तर भरि गेल। चमेलीरानी 'लोक शक्ति जागरण परिषद' राजनीतिक पार्टी बना पकड़ी सन दैत्यक सत्यानाश कर' लेल तत्पर भेल छलीह। भोटक राक्षस कैँ भोटेक माध्यम सँ परास्त कयल जाए तकर ओ प्रण कयने छलीह। आब ओकर प्रमाण भेटि रहल छल। कबूतर छाप कैँ एकोटा

भोट नइं पड़लै से सुनि चमेलीरानीक चतुराइ, क्षमता तथा नेतृत्वक हम प्रशंसा करैत छी।

पकड़ी थोड़े काल तक अर्धमूर्छित भेल बैसल रहल। तखन ओकर दानवी बुद्धि ओकरा किछु कहलकै। ओ सावधान भेल। दुष्ट कैँ खुरापात करक लूरि अबिते रहैत छैक। पकड़ी भोजपुरी छोड़ि हिन्दी बाज' लागल—"कामता प्रसाद और सीताराम ओनली तुम दोनो ने समय रहते मुझे सभ कुछ बताकर बहुत अच्छा किया है। हम सस्ते मे हारने वाला नहीं हूँ। मेरे तरकश मे अभी और तीर है। मेरे पास चुनाव रिजल्ट को पलट देने की ताकत है। तुम दोनो मोटर-साइकिल को यहीं छोड़कर पैदल बूथ पर जाओ और अपना-अपना ड्यूटी करो। आगे क्या करना है उसका आदेश तुम्हें समय पर मिल जाएगा।"

कामता प्रसाद एवं सीताराम ओनलीक प्रस्थानक बाद अच्छेलाल पकड़ी थोड़े काल तक तिरलोकी गुरु दिस अपलक तकैत रहल। प्रायः अनेक तरहक विचार ओकर मोन कैँ उद्वेलित कयने छल। ओ अपना कैँ स्थिर केलक आ बाजल—"नहीं चाहते हुए भी मुझे तुम पर विश्वास करना ही पड़ेगा। गुरु! क्या तुम मोटर-साइकिल चलाना जानते हो?"

—"हँ, हँ हजूर। हम मोटर-साइकिल, मोटर, ट्रक सभ किछु ड्राइभ क' सकैत छी।"

—"ठीक, तुम मेरे साथ चलो। अभी-अभी तुमने सुना है कि मेरे आका गुलाब मिसिर का नैया डूबने वाला है। चौहान का जमानत जप्त होने वाला है। मैं ऐसा होने नहीं दूँगा। अगर ऐसा हुआ तो मेरा भी बेड़ा गर्क हो जाएगा।"

नकछेदी आ सोमनी देखिते रहि गेलि। तिरलोकी गुरु माँजल, मिस्त्री माँजल भनसिया तथा माँजल ड्राइभर रहथि ताहि मे कोनो भांगट नहि छल। ओ पकड़ी कैँ पाछाँ बैसोलनि आ बिदा भ' गेलाह।

अच्छे लाल पकड़ी विभिन्न स्थान मे गेल, विभिन्न तरहक लोक सँ सम्पर्क कयलक। ओकर शक्ति एवं पहुँच कैँ देखि तिरलोकी गुरु कैँ चकचौन्ही लागि गेलनि। पैघ-पैघ अफसर आ कानूनक रक्षक पकड़ी कैँ देखिते सावधान भ' जाइत छल, पयर छुबि पकड़ीक आशीर्वाद ग्रहण करैत छल आ चुपचाप ओकर आदेश शिरोधार्य क' अपना के धन्य करैत छल। प्रजातंत्रक तहसीलदार, जागीरदार आ बरखुरदारक व्यवहार एवं आचरण गंभीर विषय छल।

करीब पांच बजे पकड़ी तिरलोकी गुरु कैँ मोटर साइकिल रोकि लेबाक इशारा केलक आ कहलकै—"हँ, हँ कम्पाउन्डे मे मोटर-साइकिल कैँ घुसा क' खड़ा करीं। जे किछु लौकता सभ मिलकियत हमनिएँ के बा।"

तिरलोकी गुरु जाहि कम्पाउन्ड मे प्रवेश कयने रहथि ओ सिनेमा घर छल। ओकर नाम रहै छबिला छवि गृह। भोजपुरी सभ्यता, संस्कृति एवं शुचिता कँ उजागर करैत एकटा बड़ीटा पोस्टर टांगल रहै जाहि मे विशालकाय वक्षक प्रदर्शन करैत आ बिन्दी सटने हिरोइन ठारि छलि। पोस्टर मे सिनेमाक नाम लिखल रहै– 'छोटकी ननद'।

छबिला छवि गृह एकटा बजारक नुक्कड़ पर बनल छल। बजारक नाम रहै चोरबा बजार। नेपालक सीमा पर रहलाक कारणें बजार एक समगलिंगक हेडक्वार्टर छल। बजार चीनी वस्तुक सेहो माल गोदामे छल। चुनावक दुआरे सिनेमा गृह एवं बजार बन्द रहै। सड़क पर एक-दू गोट कुकुर कँ छोड़ि सबतरि सन्नाटा पसरल रहै।

चोरबा बजार टुमाही प्रखण्ड सँ तीन किलोमिटर उत्तर मे रहै। टुमाही विधान-सभाक सभटा कच्ची-पक्की सड़क अही ठाम मिलि जिला मुख्यालय दिस जेबाक मुख्य सड़क सँ मिलैत छल। छबिला छवि गृहक कम्पाउन्ड बड़ी टा। एक गेट बाटे मोटर मशीन लदने ट्रक पैसैत आ दोसर गेट बाटे निकलि जिला मुख्यालय लेल बिदा भ' जाइत। ने कोनो रुकाबट हेतै आ ने पकड़ल जेबाक अंदेशा। गुलाब मिसिरक सेवक सभ ठाम मोस्तैज, तखन परवाह कथिक?

छबिला छवि गृह मे डुमरी सिंह दरोगा पहिने सँ पहुँचल छल। ओकरा संगे लगभग एक दर्जन सिपाही सेहो छलै। डुमरी सिंह अच्छे लाल पकड़ी कँ स्वागत करैत सैलूट ठोकलक। पकड़ी पूछलकै–"अरे! कम्प्यूटर ओस्ताद आइल की ना?"

डुमरी सिंह सिनेमा गृह दिस इशारा करैत जवाब देलकै–"ओस्ताद आ गइलन हएँ। भीतरे मे ओ अपना मूड के ठीक कर रहलन हएँ। औरो सभ कुछ का बन्दोबस्त हो गइल हएँ।"

सिनेमाक परिचालन बन्द रहलाक दुआरे सभटा स्टाफ छुट्टी पर छल। सिपाहिए दू गोट कुर्सी अनलक। एकटा कुर्सी पर बैसैत पकड़ी तिरलोकी गुरु सँ कहलक– "ई सिनेमा घर अपना ही न ह। यहीं भोटवा का सभ काम होइ। तौँ खड़ा काहे बार', कुर्सिया पर बैठ जा।"

तिरलोकी गुरु छबिला छवि गृहक स्वामी कँ नीक जकाँ निहारलनि। हाथ जोड़ि निवेदन केलनि–"सरकार! अहाँक शक्ति अपरम्पार अछि। अहाँक बुद्धि महान अछि। हम एकटा गरीब मिस्त्री छी। हमर काज भ' गेल होअय त' हमरा क्षमा कयल जाओ। हम वापस जाए चाहैत छी। सोमनी, हमर भतिजी हमर प्रतीक्षा करैत हैत।"

–"हई सुन' गुरु का गप। ई इतने मे घबड़ा गइलन। अरे बूथ से भोटर मशीन

चलिहँ, इहाँ पहुँच के रुकिहँ, फेर जादू-मंतर बला काज होइ, तब हमर मालिक गुलाब मिसिर के चानन-टीका लगावल जइहँ आओर तब जाके हमनी देखब जे कोन सार चौहान कँ हरबै का साहस करिहँ। अई फतह का जशन मे तोँ भाग नहिखे लइब' का?"

—"नइं, नइं। हमरा राजनीति सँ कोनो टा जुराब नहि अछि। ई सभटा धनबानक खेल छियै, एतय त' बुझू आगिक लपट उठि रहल छै। हम रुकब त' झरकि जायब। हमरा सन गरीब पर, लाचार पर पकड़ी बाबू, अहाँ दया करू। हमरा जेबाक आज्ञा दिअ।"

पकड़ीक अहम ओकर माथक मुकुट बनि चुकल छल। ओ शक्तिक मद मे आन्हर भ' चुकल छल। ओ मनहि मन सोच' लागल—'एतुका जनता जकाँ तिरलोकी गुरु सेहो डरपोक अछि, पामर अछि। एकरा सँ डर करक जरूरत नहि।'

पकड़ी अपन बैग सँ नोटक गड्डी निकालि तिरलोकी गुरुक हाथ मे देलक आ बाजल—"जा, जा कँ खुश रह'। रिजल्ट के बाद हमरा से भेंट करैक तोहर काम बा। अभी तूँ जा। तोरा के छुट्टी हो गइल।"

चोरबा बाजार मे तिरपित गुरु ओहि खास घरक तलाश कर' लगलाह जाहि घरक चौखटि मे हनुमानक फोटो साटल छलै। लोशजापक प्रशिक्षित बिहारी एवं भारतीक सम्प्रति इएह निशान छल। पासवर्ड रहै' जय हनुमान'।

बिना कोनो परेशानीक तिरलोकी गुरु एक गोट बिहारीक घर मे जगह पकड़लनि। ओतहि सँ ओ अच्छेलाल पकड़ी सन विभूतिक सभटा क्रिया-कलापक सूचना चमेलीरानी कँ पठौलनि।

तिरलोकी गुरुक संवाद चमेलीरानी कँ भेटलनि। शहरक कात मे भोटर मशीन राख' लेल बनल बज्रगृहक नजदीके कोनो अज्ञात स्थान मे चमेलीरानी छलीह। एखन हुनका संग पन्ना भाइ, बी.एन. भट्टाचार्य एवं अर्जुन छलथिन। हुनक बाँकी सेनानायक अन्य-अन्य विधान-सभाक चुनाव-क्षेत्र मे तैनात रहथि। तिरलोकी गुरुक संवाद कँ विचारल गेल। चमेलीरानी कँ केन्द्रीय मुख्य चुनाव अधिकारी, सुदामा मित्र गुप्ता पर बहुत अधिक भरोस रहनि। विचार भेल जे अच्छे लाल पकड़ीक कुकृत्यक समाचार सुदामा मित्र गुप्ता कँ देल जानि। जँ कोनो कारणे गुप्ता आवश्यक कारवाइ नहि करैत छथि त' लोसजाप कँ सोझा-सोझी भिड़न्त करक आदेश देल जेतै।

तिरलोकी गुरु चमेलीरानीक आदेश पाबि बिहारी एवं भारती कँ एकत्र करक काज मे लागि गेलाह। आवश्यकता भेला पर हुनक फौज कँ अच्छे लाल पकड़ीक उपर हमला कर' पड़तै, तेँ सभ तरहक तैयारी जरूरी छल। नकछेदी एवं सोमनी कँ

चोरबा बाजार मे निश्चित ठेकाना मे पहुँचैक संदेश तिरलोकी गुरु पठा देलनि।

एस.एम. गुप्ता अर्थात सुदामा मित्र गुप्ता। गुप्ता केन्द्रीय निर्वाचन आयोग दिस सँ मुख्य चुनाव अधिकारी बनि क' प्रांत मे आयल छलाह। पहिल चरणक चुनाव मे राजधानीक क्षेत्र पड़ैत छल। तेँ राजधानीक रेस्ट हाउस मे गुप्ता अपन आवास एवं ऑफिस बनौलनि। गुप्ताक अधिकार क्षेत्र मे प्रांत सरकारक सभटा अमला, सैनिक, अर्द्धसैनिक एवं पुलिस फोर्स छल। दू गोट हेलीकॉप्टर आ दर्जन भरि सरकारी मोटरकार गुप्ताक उपयोगक लेल तैयार छल। हुनका सँ भेंट करबाक अनुमति ककरो नहि छलै। मुदा सुदामा मित्र केँ जकरा ककरो सँ प्रयोजन हेतनि तकरा ओ बजा सकैत छलाह। कहबाक अर्थ जे चुनाव तक प्रांत सरकारक सभटा तंत्र सुदामा मित्र गुप्ताक अधीन स्वतः आबि गेल छल।

सुदामा मित्र गुप्ताक आबक पहिने हुनक निजी काज लेल खानसामाक एकटा टीम केँ तैयार कयल गेल छल। सभ तरहक जाँच-पड़तालक बाद ओ खानसामाक टीम बनल छल। आब ई कोना संभव भेल हेतै से कल्पनो करब कठिन अछि, मुदा गुप्ताक सेवा लेल बनल खानसामाक टीम मे युधिष्ठिर प्रधान खानसामा छलाह। गुप्ताक अयलाक बाद अपन अद्‌भुत क्षमताक कारणें युधिष्ठिर सुदामा मित्रक सभ सँ लगक लोक बनि गेल छलाह। युधिष्ठिर कनिकबे समय मे गुप्ताक पसंद एवं नापसंदक अध्ययन क' लेलनि। भोजन, वस्त्र, बाथरूम मे तौलिया, साबुन, पेस्ट, दाढ़ी काटक सामिग्री, साफ कयल ककबा, गरम पानि, साफ जाजीम, एक सँ अधिक तकिया आ मथदुखीक पारासिटामोल नामक गोली सभ किछु अपन-अपन स्थान पर सुदामा मित्र केँ भेटैत रहलनि।

सुदामा मित्र नित्य ब्लड प्रेशरक दवाइ खाइत छलाह। अत्यन्त व्यस्त कार्यक्रम मे समय पर दवाइ खायब एकटा कठिन काज भेल। मुदा युधिष्ठिर लेल कोनो टा काज कठिन नहि छल। ओ ठीक समय पर गुप्ता केँ ब्लड प्रेशरक दवाइ खुआ दैत छलाह।

सुदामा मित्र गुप्ता सीनियर आइ.ए.एस. अफसर रहथि। अहि सँ पहिनहुँ ओ कइएक गोट प्रांत मे सफलतापूर्वक चुनाव सम्पन्न करा चुकल रहथि। ओ इमानदार, कर्मठ, कर्तव्य मे समर्पित एवं चरित्रवान व्यक्ति रहथि। सशक्त अफसरक ख्याति मे सुदामा मित्रक नाम दर्ज छल। चुनाव काल हुनक कतेक व्यस्त समय हेतनि तकर अनुमाने टा कयल जा सकैत अछि। खेबा-पिबाक तथा आराम करक फुर्सति आकी सुधि हुनका नहिएक बरोबरि छलनि। मुदा युधिष्ठिर नामक खानसामा हुनक गार्जियन बनि चुकल छल। समय पर भोजन करा गुप्ता केँ ओछाओन तक पहुँचेबा मे युधिष्ठिर कठोर अनुशासन विधिक प्रयोग करैत छलाह। अहि लेल

गुप्ताक आत्मा सँ युधिष्ठिरक ऋणी बनि चुकल छलाह। दोसर, तेसर आ एखन चारिम चरण मे बनल गुप्ताक अलग-अलग आवास एवं ऑफिस मे युधिष्ठिर संगे रहला। एकर व्यवस्था स्वयं गुप्ते केलनि। आइ चारिम चरणक चुनावक काज समाप्त भेल आ एखनो युधिष्ठिर सुदामा मित्रक सेवा मे कार्यरत रहबे करथि।

करीब छह बजे सुदामा मित्र गुप्ता जिलाक सर्किट हाउस जे एखनो हुनकर आवास छल, मे पहुँचला। आध घंटा तक ओ बाथरूम मे स्नान आदि काज मे व्यस्त रहलाह। तकर उपरान्त ओ नव पैजामा-कुर्ता पहिरि लिभिंग रूम मे अयलाह। टी.भी. कैँ ऑन केलनि आ सोफा पर बैसि रहलाह। युधिष्ठिर गर्म आ भफाइत काफीक कप गुप्ताक आगाँ राखल टेबुल पर राखि देलनि आ चुपचाप एक कात मे ठार भ' गेलाह। टी.भी. पर न्यूज चलि रहल छलै। छिटपुट हिंसा कैँ छोड़ि अन्तिम चरणक चुनाव शांति-पूर्वक सम्पन्न भ' चुकल छल। पचास सँ पचपन प्रतिशत भोट कास्ट भेल छलै। विभिन्न टी.भी. चैनल पर चुनावक रिजल्टक अनुमान लगाओल जा रहल छल।

सुदामा मित्र गुप्ता टी.भी. सँ नजरि हटा युधिष्ठिर दिस तकलनि आ कहलनि– "खानसामा, आज मैं डिनर जल्द लूँगा। थक गया हूँ। आज मैं भरपूर नींद का मजा लूँगा। अरे हाँ, कॉफी अच्छा है, थैंक्यू।"

सुदामा मित्र गुप्ता टी.भी.क न्यूज मे फेर सँ लीन भ' गेला। युधिष्ठिर ठार रहलाह। गुप्ताक ध्यान भंग भेलनि। ओ युधिष्ठिर सँ कहलनि–"चुनाव का काम समाप्त हुआ। यह काम सचमुच थका देने वाला होता है। लेकिन, लोकतंत्र तो चुनाव के कन्धे पर ही जिन्दा है। भ्रष्टाचार रहित स्वच्छ चुनाव देश के हित मे है। मुझे संतोष है कि मैंने अपना कर्त्तव्य सही-सही निभाया। हाँ, हाँ एक और बात मैं कहना चाहूँगा। खानसामा, तुम्हारा भी योगदान है। तुमने पूर्ण तन्मयता के साथ अपना सहयोग दिया। तुम्हारी सहायता के बिना शायद इतनी बड़ी जिम्मेदारी का काम मैं उचित ढंग से क्या कर पाता? मैं इसे याद रखूँगा।"

युधिष्ठिर चुपचाप बूत जकाँ ठारे रहि गेलाह। गुप्ताक नजरि टी.भी. दिस गेलनि। मुदा ठार भेल युधिष्ठिर दिस देखैत ओ पुछलनि–"क्या बात है खानसामा? क्या तुम कुछ कहना चाहते हो?"

–"अहाँ सनक पैघ अफसर कैँ किछु कहै मे एक मामूली खानसामा कैँ असुविधा भ' रहल छै, ठीक ओहिना जेना पहाड़ पर चढ़ै काल खसि पड़बाक भय।"

सुदामा मित्र गुप्ता इलाहाबादी छलाह। चारिम चरणक चुनाव काल हुनका मैथिली भाषा सुनबाक अवसर भेटल रहनि। अहि भाषाक मधुरता हुनका सम्मोहित

कयने छलनि। युधिष्ठिरक कथनक अभिप्राय कँ बुझैत ओ कहलनि—“मैं और तुम, दोनो ही मनुष्य जाति के हैं। फिर छोटा कौन, बड़ा कौन? छोटा और बड़ा तो मनुष्य को मनुष्यता बनाता है। खैर, उन बातों को छोड़ो। तुम निर्भीक होकर अपनी बात कहो। मैं तुम्हारी बातों का कद्र करूँगा।”

—“जी, हमर कहब अछि जे चुनाव कँ एखन समाप्त नहि मानल जाए। भोट कँ खसब’ आ भोट कँ गनब’, दुनूक बीच बहुत किछु भ’ जाइत छैक। अहि प्रांतक इतिहास रहलै अछि जे अही दुनू क्रियाक बीच एहन-एहन बात होइत रहलै अछि जे प्रांतक भाग्य कँ बदलि देलकैए। एखन अही तरहक क्रिया भ’ रहलै अछि जकर हम अहाँ के सूचना देब’ चाहैत छी।”

खानसामाक शब्द सँ वेदना टपकि रहल छलै। सुदामा मित्र एक खास किस्मक चुभन कँ अनुभव केलनि। हुनकर अन्तरात्मा तक सिहरि उठलनि। ओ सोफा पर सोझ होइत कहलनि—“तुम्हारे पास कैसी सूचना है? कहो।”

—“अहाँक स्पष्ट निर्देश अछि जे भोटिंगक बाद सील-मोहर कयल भोटिंग मशीन कँ सुरक्षित बज्र गृह तक पहुँचा देल जाए। रास्ता मे भोटिंग मशीन कँ कतहु रोक ने भ’ जाय आ ने ओहि मे छेड़छाड़ कयल जाए। अहाँक निर्देश कँ मजाक उड़बैत टुमाही विधान-सभाक पोलिंग भेल सभटा भोटिंग मशीन कँ एक खास स्थान पर बेराबेरी उतारल जा रहल अछि। यद्यपि भोटक इ.भी.एम. कम्प्यूटर मशीन पूर्ण दक्षता सँ बनाओल गेल अछि। तथापि मानव मस्तिष्क त’ ओहि मे हेर-फेर करक बुद्धि रखिते छथि। टुमाही प्रखण्डक तीन किलोमीटर आगाँ चोरबा बाजार मे बनल छबिला छवि गृह मे कम्प्यूटरक ओस्ताद टुमाही विधान-सभाक भोटर मशीन मे एखन करामात क’ रहल छथि। एखन आठ बाजल हएँ, मुदा ई काज त’ छह बजे सँ अनवरत भ’ रहल अछि। सभटा भोटर मशीनक तस्वीर बदलि तीन बजे तक बज्र गृह मे पहुँचा देल जेतै, तेहने विघटनकारी तत्व अपन मंशा बनौने छथि।”

सुदामा मित्र गुप्ता सभ सँ पैघ चुनाव अधिकारी रहथि। ओ अपन कर्त्तव्य निष्ठापूर्वक केलनि तकर घमंड एखन हुनकर आचरण मे स्वाभाविके प्रतिबिंबित भ’ रहल छल। मुदा खानसामाक सूचना प्राप्त क’ हुनक अहम बौना बनि गेल। हे ईश्वर! एतेटा समाचार खानसामा कँ छैक आओर हुनका नहि, से कोना संभव भेलै? गुप्ता उठिक’ टी.भी. बन्द केलनि आ अचैन भेल सोफा पर बैसला। कोनो पुरनका बात हुनक माथक बन्द दरबज्जा कँ ठकठका रहल छल। एकाएक गुप्ता कँ गणपति चौबे, केन्द्रीय गृह राज्य मंत्रीक गप मोन पड़लनि।

जखन सुदामा मित्र गुप्ता चुनावक आला अधिकारी बनल छलाह तखन

गणपति चौबे हुनका चाय पर आमंत्रित कयने छलथिन आ कहने रहथिन– "संविधान प्रदत निर्वाचन आयोग स्वतंत्र सत्ता अछि। विशेष क' चुनावक समय आयोग सरकारक अधिकार क्षेत्र सँ अलग रहि काज करैत अछि। हम एकटा मित्रक हैसियत सँ एकटा खास बातक जानकारी अहाँ कैँ देब' चाहैत छी। एखन तक खुफिया तंत्र अन्हारे मे अछि। ककरो किछु खबरि नहि छै। तँ अधिकारिक तरहें हमहूँ किछु नहि जनैत छी। मुदा व्यक्तिगत हमरा सभटा बातक जानकारी अछि। प्रांत मे एकटा राजनीतिक पार्टी अछि 'लोक शक्ति जागरण परिषद' अर्थात 'लोशजाप'। लोशजापक अध्यक्ष छथि चमेलीरानी। चमेलीरानीक व्यक्तित्वक प्रशंसा करब एखन ने उचित आओरो ने अहाँ कैँ जानक चाही। लोशजाप पार्टी प्रांतक सभटा सीट पर चुनाव-लड़ि रहल अछि। चमेलीरानी पूर्णतः देशक संविधान मे आस्था रखैत छथि आ लोशजापक कार्य पद्धति कानून सम्मत अछि। चुनावक समय चुनाव सम्बन्धी कोनो अनियमितता कैँ रोकक शक्ति लोशजाप रखैत अछि। मुदा चमेलीरानी से नहि क' चुनावक धांधलीक खबरि कोनो ने कोनो तरहें अहाँ लग पहुँचौती। अहाँ द्वारा कार्रवाइ कानूनक दायरा मे हेतै। जाहि सम्बन्धी गड़बड़ीक अहाँ कैँ सूचना प्राप्त होअय त' अहाँ अविलम्ब अहि पर ध्यान देबै। प्रांतक चुनाव भ्रष्टाचार रहित एवं स्वच्छ होइक ताहि मे हमरो दिलचस्पी अछि।"

गणपति चौबेक कथन मोन पड़लाक बाद सुदामा मित्र गुप्ताक आगाँ आब खानसामा ठार नहि छल। ओ छल देशक प्रजातंत्रक ललाट पर चानन लगबैत एकटा महात्मा। एखनहुँ देश मे गंगाक निर्मल आ पवित्र जल बहिते छैक। एखनहुँ देशक चरित्र बँचले छैक। सुदामा मित्र नतमस्तक होइत मात्र एकटा शब्द बजला– "चमेलीरानी।"

युधिष्ठिर किछु जवाब नहि द' खाली भेल कॉफीक कप कैँ ट्रे मे रखलनि आ कक्ष सँ बाहर चलि गेलाह।

सुदामा मित्र गुप्ता कैँ अपना कैँ सम्हार' मे बहुत समय नै लगलनि। सम्प्रति प्रांतक सभटा शक्ति हुनके मे सन्निहित छल। तखन हुनका सँ भेल कृति कैँ ओ कोना बर्दास्त करितथि। एक नवजवान एस.पी.क नेतृत्व मे फोर्स तैयार भेल। रातिक दस बजे छबिला छवि गृह कैँ घेरि लेल गेल। पांत मे अबैत सभटा वाहन कैँ यथास्थान ठार रहैक आदेश द' देल गेल। सुदामा मित्र गुप्ताक गाड़ी सभ सँ आगाँ छल। कमान्डो सदृश फौज जखन छबिला छवि गृह मे प्रवेश केलक त' ओहि ठाम मौजूद सभटा हाकिम-हुकाम कम्प्यूटर विशेषज्ञ एवं आन-आन लोक जहँ-तहँ पड़यला, किछु पकड़ल गेला मुदा अधिकांश पड़ाइ मे सफल भेला। अच्छे लाल पकड़ी सेहो पड़ाइ मे सफल भेल छल। मुदा ओ अपने बनाओल खाधि मे खसि

पड़ल।

छबिला छवि गृहक बाउन्डरी देवाल बड़ ऊँच मे रहै। मुदा सिनेमा हॉलक पहरुदार हाथक सोंगर बले पकड़ी कैं ठेलि-ठालि क' देवालक उपर पहुँचा देलकै। देवालक ओहि पार गहींरगर खाधि छलै। ओही ठामक माटि सँ छबिला छवि गृहक कम्पाउन्ड भरल गेल रहै। हड़बड़ीक दुआरे पकड़ी ओही साधि मे खसि पड़ल फेर बड़ी दूर तक गुड़कल गेल। आगाँ रेलवेक पुल छलै। पुलक सीमेन्टक पाया सँ टकरा क' पकड़ीक काया स्थिर भ' गेलै।

खाधिक ओइ पार तिरलोकी गुरु मोर्चा सम्हारने अगिला आदेशक प्रतीक्षा मे रहथि। हुनका संगे नकछेदी एवं सोमनी सेहो छलि। तकरा अतिरिक्त करीब पचास गोट बिहारी तथा भारतीक फौज अस्त्र-शस्त्र सँ सुसज्जित सेहो हुनक सभहक लगे मे छल। तिरलोकी गुरु सुदामा मित्रक सिपाही द्वारा छबिला छवि गृह पर भेल आक्रमण कैं देखलनि। अच्छे लाल पकड़ी देवाल पर सँ खसल, तकरो अवलोकन केलनि। अंत मे ओ नकछेदी एवं सोमनीक संग रेलवे पुलक पाया लग अयलाह। पकड़ीक क्षत-विक्षत भेल शरीर कैं सभ देखलनि। संसार माया थिक। प्रत्येक प्राणी अपन-अपन माया पसारि जिबैत अछि। पकड़ीक माया समाप्त भ' गेल छलै।

अगिला दिन 'स्वयं प्रकाश' मैथिली भाषाक दैनिक समाचार पत्र मे छबिला छवि गृहक चमत्कार एवं अच्छे लाल पकड़ीक सविस्तार समाचार छपल। एतुका लोक कैं समाचार पढ़' मे नीक लगलै। आगामी बीस मार्च क' टुमाही विधान-सभाक सभटा बूथ पर फेर सँ चुनाव भेल। अठ्ठाइस मार्च क' गिनतीक काज सेहो समाप्त भेल। राजधानीक गेस्ट हाउसक एकटा कोठली मे गणपति चौबे एवं सुदामा मित्र गुप्ता एकहि सोफा पर बैसल सामने टी.भी.क स्क्रीन पर प्रांतक चुनाव रिजल्ट देखि रहल छलाह—कुल सीट : 230, चुनाव भेल : 229, लोशजाप : 221, क.प. : 0, ज.प.म. : 0 ह.प. : 0, निर्दलीय : 8।

टी.भी. पर्दा पर दृश्य बदलि गेल। ओतए पहिल बेर 'लोशजाप' अध्यक्षा चमेलीरानी प्रगट भेलीह। लाल पाढ़िक उज्जर साड़ी पहिरने ओ चुपचाप कुर्सी पर बैसल छलीह। अपार बहुमतक आत्मविश्वास हुनक चेहरा कैं गंभीर बनौने छल। हिन्दी मे गीत छै—'आइना ओही रहता है, चेहरे बदल जाते हैं।' सत्य मे प्रांत वैह छल मुदा ओकर चेहरा बदलि गेल छलै। चमेलीरानीक आगमन सँ वातावरण मे आशा, विश्वास आ सुखद भविष्यक कल्पना भरि गेल छल। गणपति चौबे सुदामा मित्र गुप्ता दिस तकलनि। बिस्मयक संगहि संतोषक भाव दुनूक मुखमंडल कैं अभिभूत कयने छल।

❀❀❀